अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

प्रमाणों और चमत्कारों का विश्वकोश

मुहम्मद ﷺ की नुबूवत और क़ुरआन के सत्य होने के प्रमाण

वैज्ञानिक चमत्कार · ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य · पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

तौरात और इंजील की शुभसूचनाएँ · जिन्न, जादू और अदृश्य का संसार

इतनी सरलता से समझाया कि बच्चा भी समझ ले · 151 रंगीन चित्र

151 प्रमाण, अपनी शक्ति के क्रम में

शुरू करने से पहले — यह पढ़ लीजिए

यह बहस की किताब नहीं है। यह प्रस्तुति की किताब है: हम प्रमाण आपके सामने रख देते हैं, उसे जितना सरल हो सके उतना सरल करके समझा देते हैं, और फिर फ़ैसला आपकी अपनी बुद्धि पर छोड़ देते हैं।

हर पृष्ठ को कैसे पढ़ें

- **सुनहरे चौखटे के भीतर का पाठ** — क़ुरआन की एक आयत, नबी ﷺ की एक हदीस, या किसी प्राचीन ग्रन्थ का एक अंश।
- **रंगीन चित्र** — एक तस्वीर जो बात को बिना शब्दों के समझा देती है।
- **सीधी-सादी बात में** — पूरी बात दो पंक्तियों में, मानो हम किसी दस साल के बच्चे को समझा रहे हों।
- **उस समय लोग क्या मानते थे?** — जिस दिन यह पाठ आया, उस दिन समूचे संसार की हालत।
- **आज विज्ञान क्या कहता है?** — सदियों बाद जो खोजा गया।
- **यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?** — वह निष्कर्ष जिससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं।

आप देखेंगे कि हम "फ़लाँ तफ़सीर वाले ने कहा" कहकर लम्बी बात नहीं छेड़ते। कारण सीधा है: पहले के मुफ़स्सिरीन — अल्लाह उन पर दया करे — ने पाठ को अपने युग के औज़ारों से समझाया, और उनके पास न दूरबीन थी न सूक्ष्मदर्शी। यह बिलकुल स्वाभाविक है कि वे उस बारीक अर्थ तक न पहुँचे जो एक हज़ार वर्ष बाद खोजा जाना था। इससे उनकी शान में कोई कमी नहीं आती — बल्कि **यही तो स्वयं प्रमाण है**: यदि यह पाठ किसी मनुष्य की ओर से होता, तो उसमें ऐसा अर्थ न होता जो उसके अपने युग के सबसे बुद्धिमान लोगों की पहुँच से बाहर हो।

“हम उन्हें अपनी निशानियाँ क्षितिजों में भी दिखाएँगे और स्वयं उनके भीतर भी, यहाँ तक कि उन पर स्पष्ट हो जाए कि यही सत्य है।”

“चमत्कार” का अर्थ आख़िर है क्या?

चमत्कार केवल कोई अनोखी बात नहीं होती। चमत्कार वह है जिसके जैसा ला सकने में मनुष्य असमर्थ हों, जिसे कोई नबी लेकर आए, इस निशानी के तौर पर कि जिसने उसे भेजा है वही इस सृष्टि का रचयिता है।

किसी बच्चे को यूँ समझाइए

कल्पना कीजिए कि पहली कक्षा का एक बच्चा तख़्ते पर ऐसा समीकरण लिख दे जिसे केवल विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर समझते हों — और हज़ार वर्ष बाद पता चले कि वह बिलकुल सही था। आप यह नहीं कहेंगे “कितना होशियार बच्चा है!” आप कहेंगे: **“यह उसे किसने लिखवाया?”** क़ुरआन का मामला ठीक यही है।

तीन शर्तें जिन पर हम हर पृष्ठ पर क़ायम हैं

- **पाठ खोज से पहले का, और अटल है।** क़ुरआन चौदह सदियों से लिखा, सुरक्षित और तवातुर के साथ नक़्ल होता आया है, और हमारे पास कार्बन-तिथि से जाँची गई पांडुलिपियाँ हैं जो इसे सिद्ध करती हैं। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि यह बाद में लिखा गया।
- **अर्थ शब्दों में साफ़ मौजूद है।** हम किसी शब्द को खींचते-मरोड़ते नहीं; हम वही अरबी अर्थ लेते हैं जो शब्दकोशों में दर्ज है।
- **उस समय के लोग इसके उलट मानते थे।** यही सबसे प्रबल पहलू है: पाठ अपने युग की संस्कृति से सहमत नहीं था — उसने उसका **खंडन** किया, और फिर सही सिद्ध हुआ।

“तो क्या वे क़ुरआन पर विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो वे इसमें बहुत विरोधाभास पाते।”

विषय-सूची

1	महान प्रमाण	75 प्रमाण	पृ. 5
2	मुहम्मद ﷺ की वे भविष्यवाणियाँ जो सच निकलीं	18 प्रमाण	पृ. 81
3	तौरात और इंजील की पूर्वसूचनाएँ	12 प्रमाण	पृ. 100
4	नबी ﷺ के प्रत्यक्ष चमत्कार	16 प्रमाण	पृ. 113
5	जिन्न, जादू और ग़ैब की दुनिया	18 प्रमाण	पृ. 130
6	भाषा का चमत्कार और खुली चुनौती	12 प्रमाण	पृ. 149

कुल: 6 भागों में 151 प्रमाण

भाग एक

महान प्रमाण

पुस्तक का हृदय: आकाशों में, धरती में, मनुष्य के शरीर में और इतिहास के अभिलेख में बिखरी निशानियाँ, एक ही भाग में इकट्ठी और **सबसे प्रबल प्रमाण से लेकर सबसे हलके तक क्रम में रखी हुई**। जो आप सबसे पहले पढ़ेंगे वही वह है जिससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं; और ज्यों-ज्यों आप भाग में आगे बढ़ेंगे, प्रमाण का भार कुछ हलका होता जाएगा।

75 प्रमाण

भ्रूणविज्ञान

1 सात चरण — और क्रम में रत्ती भर का अन्तर नहीं

> फिर हमने उस बूँद को अलक़ा बनाया, फिर अलक़ा को मुज़ग़ा बनाया, फिर मुज़ग़ा से हड्डियाँ बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया।
>
> **सूरह अल-मोमिनून — आयत 14**

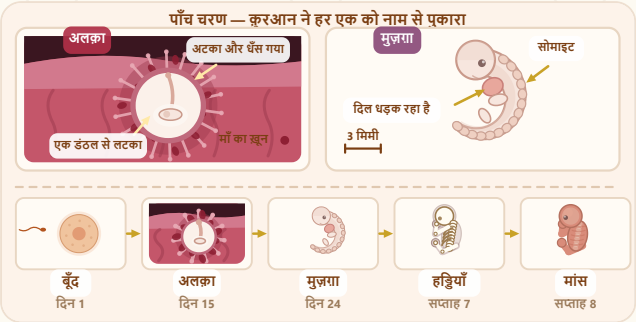

कार्नेगी चरणों और असली भ्रूण की तस्वीरों से बनाया गया — वही अनुपात, वही पैमाना। चरण नाम से और क्रम से, ठीक वैसे ही जैसे आज की चिकित्सा पाठ्यपुस्तकें देती हैं

सीधी-सादी बात में

पाँच चरण, जिन्हें क़ुरआन ने चौदह सदी पहले एक-एक कर नाम से पुकारा: पानी की एक बूँद, फिर **अलक़ा** — एक चीज़ जो गर्भाशय की दीवार में धँस जाती है और फिर उसमें डाली पर लगे फल की तरह लटकी रहती है — फिर **मुज़ग़ा**, एक छोटा-सा टुकड़ा जिस पर गड्ढे पड़े हों **मानो दाँतों ने उसे चबाया हो**, फिर हड्डियाँ जो रखी जाती हैं, फिर मांस जो हड्डियों पर कपड़े की तरह चढ़ता है। ऊपर का चित्र **स्वयं भ्रूणों की तस्वीरों से उतारा गया है** — अपनी आँखों से देखिए, फिर लौटकर आयत दोबारा पढ़िए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

गर्भाशय के भीतर क्या होता है, इसका किसी को पता न था। प्रचलित मत — अरस्तू का, और उसके बाद सबका — यह था कि भ्रूण **जमे हुए माहवारी के ख़ून** से बनता है। एक दूसरा मत जालीनूस (गैलन) का था: हड्डी और मांस **एक ही समय, साथ-साथ** बनते हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अलक़ा — लगभग पहले दो सप्ताह: तीन प्रमाणित बातें एक साथ घटती हैं: भ्रूण-पुटिका **गर्भाशय की दीवार में अटकती और उसमें धँसती** है, यहाँ तक कि ऊतक में पूरी तरह गड़ जाती है; फिर वह **अपनी थैली के भीतर एक जोड़ने वाले डंठल से लटकी** रहती है — यही आप ऊपर के चित्र में देख रहे हैं; और उसके चारों ओर **ख़ाली जगहें खुल जाती हैं जो माँ के ख़ून से भर जाती हैं**, तो वह ख़ून से घिर जाती है।

मुज़ग़ा — लगभग चौथा सप्ताह: भ्रूण की पीठ पर **सोमाइट** कहलाने वाले खंड उभरते हैं, एक के बाद एक जुड़ते जाते हैं जब तक चालीस जोड़ों के क़रीब न पहुँच जाएँ, और उनके बीच गहरी नालियाँ होती हैं, जिससे उसकी सतह गड्ढों भरी दिखती है — और वह उस समय केवल तीन मिलीमीटर का होता है, बिना आवर्धन के दिखाई ही नहीं देता।

फिर हड्डियाँ, फिर मांस: कंकाल पहले उपास्थि के नमूनों के रूप में रखा जाता है, और उसके बाद माँसपेशियाँ उस पर लिपटती हैं और अपना आकार उसी से लेती हैं — यानी जो पहले से खड़ा है उसी पर कपड़ा पहनाना, ठीक वैसे ही जैसे उसने कहा।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इन दो शब्दों पर ठहरिए। इन्हें यूँ ही हलके से मत गुज़र जाने दीजिए। **केवल दो शब्द** — "अलक़ा" और "मुज़ग़ा" — ने वह वर्णन कर दिया जिस पर उसके बाद चौदह सदियों तक किसी मनुष्य की आँख नहीं पड़ी, और जो सूक्ष्मदर्शी और कैमरे के बिना देखा ही नहीं जा सकता था।

पहला: "अलक़ा"। मुझसे मत लीजिए — शब्दकोशों से लीजिए। अल-जौहरी, जिनका देहान्त **एक हज़ार वर्ष** पहले हुआ, "अस-सिहाह" में लिखते हैं: "**और अलक़ा पानी का वह कीड़ा है जो ख़ून चूसता है**।" ठीक यही शब्द "लिसानुल-अरब" में भी खड़े हैं। और शब्द की जड़ स्वयं **अटकने और चिपकने** के, तथा **लटकने और झूलने** के अर्थ पर घूमती है।

अब निगाह उठाकर इस पृष्ठ के सिरे पर बने चित्र को देखिए। आपको क्या दिखता है? आपको वह चीज़ दिखती है जो गर्भाशय की दीवार में **अटक** गई है और इतनी धँस गई है कि उसके मांस में दब चुकी है; फिर अपनी थैली के भीतर एक डंठल से **लटकी** हुई है, जैसे फल डाली से लटकता है; और **माँ का ख़ून हर ओर से उसे घेरे** हुए है। एक ही नाम, और तीनों निशाने पर। **यह किसने बताया उन्हें?**

दूसरा: "मुज़ग़ा"। यह **चबाने** से निकला है। ख़ालिद बिन जंबा का कथन "लिसानुल-अरब" में है: "**मांस का मुज़ग़ा वह टुकड़ा है जितना आदमी अपने मुँह में रखता है**" — यानी एक कौर, चबाने के लिए। फिर चौदह सदी बाद सूक्ष्मदर्शी आता है और चौथे सप्ताह के भ्रूण की तस्वीर लेता है, और मानक विश्वविद्यालयी पाठ्यपुस्तक "द डेवलपिंग ह्यूमन" कहती है कि ये खंड उसकी पीठ पर **बाहर से मनकों जैसे उभारों के रूप में दिखाई देते हैं**, और उनके बीच गहरी नालियाँ होती हैं। चित्र देखिए: मानो उसे दो जबड़ों के बीच दबा दिया गया हो! और याद रखिए वह **तीन मिलीमीटर** लम्बा है — कोई आँख उसे देख नहीं सकती, और उस आवर्धन के बिना उसका आकार जाना ही नहीं जा सकता जो उस समय मौजूद नहीं था।

और तीसरा: पहले हड्डियाँ, फिर मांस। कौन-सा मनुष्य किसी नरम लोथड़े को देखकर यह कहेगा कि हड्डी पहले बनती है?! बुद्धि तो इसका उलटा कहती है। पर विज्ञान कहता है: कंकाल पहले रखा जाता है, और माँसपेशियाँ फिर उस पर लिपटकर अपना आकार उसी से लेती हैं। और यही तो उसका कथन है: **"फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया"** — और कपड़ा सदा उसी पर पहनाया जाता है जो पहले से वहाँ खड़ा हो!

एक ही आयत में चार क्रमिक शब्द। **चार चोटें, एक के बाद एक।** इनमें से कोई एक भी ग़लत होती तो अकेले वही पूरे पाठ को गिरा देने के लिए काफ़ी थी — और इनमें से एक भी ग़लत न निकली। रेगिस्तान का एक निरक्षर व्यक्ति, जो न पढ़ सकता था न लिख सकता था, उन चरणों के नाम गिनाता है जिन्हें कोई आँख देख नहीं सकती... और हर एक को उसके नाम से ठीक निशाने पर मारता है। **तो यह उन्हें किसने सिखाया?**

गहरा समुद्र

2 अँधेरे, एक के ऊपर एक

या फिर जैसे किसी गहरे समुद्र में अँधेरे हों, जिसे एक लहर ने ढाँप रखा हो, उसके ऊपर एक और लहर हो, उसके ऊपर बादल हो — अँधेरे, एक के ऊपर एक।

सूरह अन-नूर — आयत 40

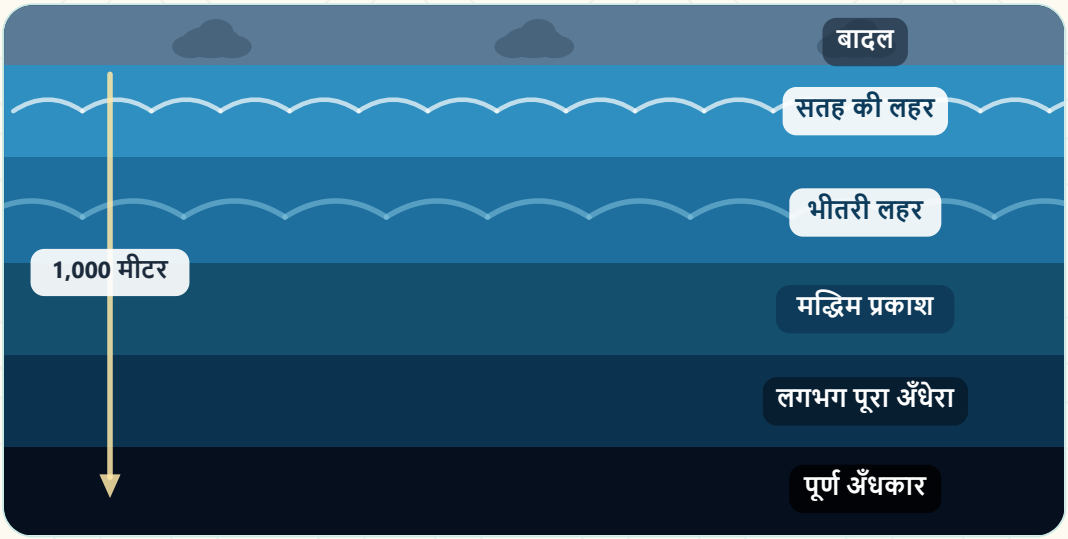

प्रकाश परत दर परत निगला जाता है, यहाँ तक कि एक हज़ार मीटर के नीचे वह बिलकुल लुप्त हो जाता है

सीधी-सादी बात में

समुद्र की गहराइयों में अँधेरे पर अँधेरा है: पहले बादल रोकता है, फिर लहर रोकती है, फिर पानी रंगों को एक-एक करके निगल जाता है, यहाँ तक कि ज़रा-सा भी प्रकाश बाक़ी नहीं रहता।

उस समय लोग क्या मानते थे?

कोई मनुष्य साँस रोककर कुछ मीटर से अधिक गहरा नहीं उतरा था। समुद्र की गहराइयाँ बिलकुल अनजान थीं। किसी को न यह पता था कि वहाँ नीचे का अँधेरा **क्रमबद्ध परतों** में आता है, और न यह कि दिखाई देने वाली लहर के नीचे एक और लहर है जो दिखाई ही नहीं देती।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पानी में प्रकाश चरणों में सोख लिया जाता है: लाल लगभग पन्द्रह मीटर पर ग़ायब होता है, फिर नारंगी, फिर पीला, फिर हरा, और केवल हलका नीला बचता है जब तक वह भी लगभग दो सौ मीटर पर मिट न जाए। एक हज़ार मीटर से नीचे **पूर्ण अँधकार है, एक भी फ़ोटॉन नहीं**। विज्ञान ने **आन्तरिक तरंगें** भी खोजीं, जो भिन्न घनत्व वाली जल-परतों की सीमाओं पर चलती हैं — यानी लहरों के नीचे की लहरें।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत तीन परदों को ऊपर से नीचे सही क्रम में सजाती है: बादल, फिर लहर, फिर **उसके नीचे एक और लहर**। समुद्र की सतह के नीचे दूसरी लहर का होना एक ऐसा तथ्य है जो बीसवीं सदी तक ज्ञात ही नहीं था। फिर वह इस व्यापक वर्णन पर बन्द होती है: "अँधेरे, एक के ऊपर एक" — यानी **परतदार, एक पर एक चढ़ा हुआ अँधेरा**, कोई एक अकेला अँधेरा नहीं। और यही पानी में प्रकाश के सोखे जाने का ठीक-ठीक भौतिक वर्णन है।

मौसम विज्ञान

3 वर्षा बनने के तीन चरण

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को हाँकता है, फिर उन्हें आपस में जोड़ता है, फिर उन्हें तह-पर-तह ढेर बना देता है, फिर तुम देखते हो कि वर्षा उसके बीच से निकल रही है?

सूरह अन-नूर — आयत 43

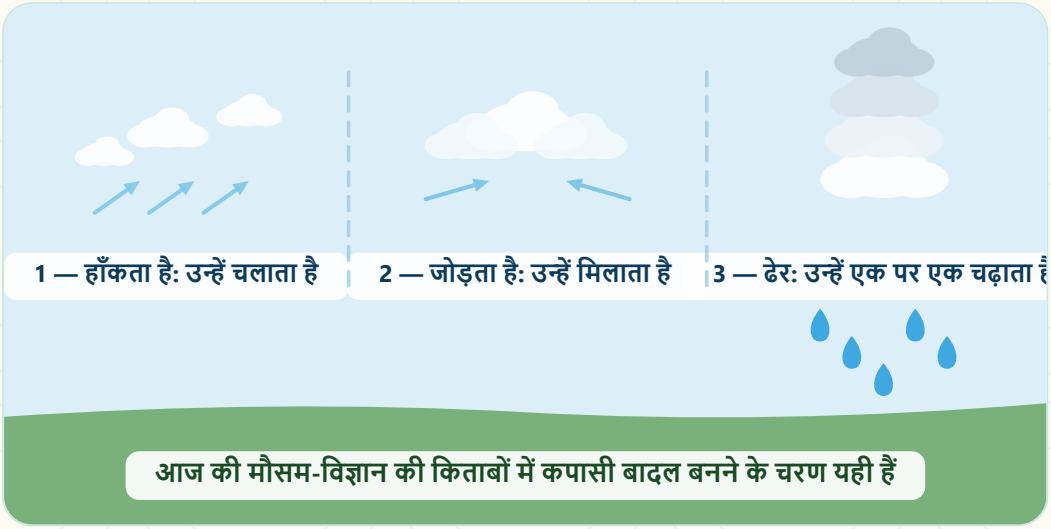

हाँकना, फिर जोड़ना, फिर ऊपर की ओर ढेर लगाना — और तब वर्षा गिरती है

सीधी-सादी बात में

वर्षा यूँ ही नहीं गिर जाती। उसके तीन क़दम हैं, क्रम से: हवा बादल के छोटे टुकड़ों को **हाँकती** है, फिर उन्हें एक-दूसरे से **जोड़ती** है, फिर उन्हें एक-दूसरे के ऊपर पहाड़ की तरह **ढेर** कर देती है — और तभी वर्षा होती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा एक अकेली घटना समझी जाती थी: बादल, फिर पानी। किसी को न यह पता था कि बादलों के बनने के **क्रमबद्ध चरण** होते हैं, और न यह कि बरसने वाला बादल न बरसने वाले से अपनी बनावट में अलग होता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मौसम विज्ञान **कपासी-वर्षा मेघ (क्यूम्युलोनिम्बस)** के बनने के बारे में ठीक यही पढ़ाता है: वायु-धाराएँ छोटी बादल-कोशिकाओं को आपस में हाँक लाती हैं, फिर कोशिकाएँ मिलकर एक हो जाती हैं, फिर वह पिंड परतों में ऊपर की ओर बढ़ता है और पन्द्रह किलोमीटर तक पहुँच सकता है। **केवल इसी चरण पर** बूँदें इतनी बड़ी होती हैं कि गिर सकें।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीन क्रमिक क्रियाएँ, और उन्हें जोड़ने वाला वह अव्यय जो अन्तराल के साथ क्रम बताता है: "हाँकता है" (धीरे-धीरे चलाता है) → "जोड़ता है" (टुकड़ों को मिलाता है) → "ढेर बना देता है" (ऊपर की ओर तह पर तह चढ़ाता है)। यह ऐसा क्रम है जिसे **न उलटा जा सकता है न छोटा किया जा सकता है**, और यह ठीक वैज्ञानिक क्रम है। फिर आती है अन्तिम बारीकी: वर्षा **"उसके बीच से"** निकलती है — यानी पिंड के भीतर के छिद्रों और सिलवटों से, उसके नीचे से नहीं। और रडार की तस्वीरें यही दिखाती हैं।

शरीर रचना विज्ञान

4 तीन सौ साठ जोड़ — चीर-फाड़ से पहले गिने हुए

> आदम की सन्तान में से हर मनुष्य तीन सौ साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है।
>
> **मुस्लिम की रिवायत — सहीह**

हर वह जगह जहाँ दो हड्डियाँ मिलती हैं... गिनी हुई और नाम रखी हुई

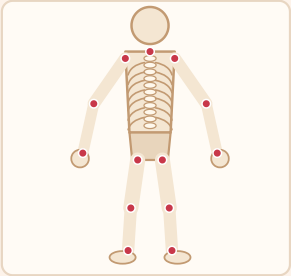

147	रीढ़
24	वक्ष-पिंजर
86	ऊपरी अंग
92	निचले अंग
11	श्रोणि
360 जोड़	

एक सादा संख्या जिसमें व्याख्या की कोई गुंजाइश नहीं — पहली क्रमबद्ध चीर-फाड़ से नौ सदी पहले कही गई

सीधी-सादी बात में

आपके शरीर में **तीन सौ साठ जोड़** हैं — न एक अधिक, न एक कम। नबी ﷺ ने यह चौदह सदी पहले कहा, और इनमें से हर एक के साथ **हर दिन दिया जाने वाला एक सदक़ा** जोड़ दिया। आधुनिक शरीर रचना विज्ञान उन्हें गिनता है और ठीक वैसा ही पाता है जैसा उन्होंने कहा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब में न कोई चीर-फाड़ थी, न चिकित्सा का कोई विद्यालय, न कोई छुरी जिससे शरीर खोला जाता। अधिकतर प्राचीन सभ्यताओं में मानव-शव का चीर-फाड़ वर्जित था — यहाँ तक कि **जालीनूस**, जिसने पन्द्रह सौ वर्ष तक चिकित्सा पर राज किया, उसने अपनी शरीर रचना बन्दरों और सूअरों पर खड़ी की, और ऐसी ग़लतियों में पड़ा जो सदियों तक पढ़ाई जाती रहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शरीर के जोड़ एक-एक करके गिने जा चुके हैं — हर वह जगह जहाँ दो हड्डियाँ मिलती हैं, चाहे वह हिले या न हिले — और वे इस प्रकार निकलते हैं: **रीढ़, 147**; **वक्ष-पिंजर, 24**; **ऊपरी अंग, 86**; **निचले अंग, 92**; और **श्रोणि, 11**। कुल: **तीन सौ साठ**।

और स्वयं हदीस के शब्द तय कर देते हैं कि कौन-सी गिनती अभिप्रेत है, क्योंकि पूरी रिवायत में उन्हें **सुलामा** कहा गया है — अरबी में यह शब्द शरीर के हर जोड़ को समेटता है, छोटे और बड़े, हिलने वाले और जमे हुए। तो यह संख्या पाठ पर थोपी गई कोई आधुनिक परिपाटी नहीं है — **बल्कि पाठ ने ही तय किया कि क्या गिनना है**। और मानव इतिहास का पहला सटीक शरीर-रचना मानचित्र 1543 तक नहीं आया, **वेसालियस** के हाथों।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि यह किस प्रकार का कथन है। यह न कोई ऐसा वर्णन है जिसमें व्याख्या की गुंजाइश हो, न कोई उपमा जो अर्थ को साफ़ करने के लिए लाई गई हो — यह एक **संख्या** है। और संख्या या तो निशाने पर बैठती है या गिर जाती है; तीसरी कोई सूरत नहीं।

यदि कहने वाला सुरक्षा चाहता तो कह देता "बहुत से जोड़", या "सैकड़ों जोड़", और उस पर कोई पकड़ न होती। पर उसने कहा: **तीन सौ साठ**। एक निश्चित, गिनी हुई संख्या — उस शरीर के बारे में जो कभी खोला ही नहीं गया था, उस युग में जिसमें न छुरी थी न सूक्ष्मदर्शी।

और सबसे विचित्र बात यह है कि संख्या अपने आप में कहने के लिए नहीं आई। वह एक आदेश के सिलसिले में आई: उन जोड़ों में से हर एक पर **हर एक दिन एक सदक़ा** है — कोई ज़िक्र का शब्द, या रास्ते से किसी कष्टदायक चीज़ को हटाना, या कोई भली बात। तो यह आँकड़ा **हुक्म में भार उठाने वाला है, वाक्य की सजावट नहीं**; यदि वह ग़लत होता तो उस पर खड़ा हुक्म भी उसी के साथ गिर जाता। और कोई व्यक्ति जो धर्म गढ़ रहा हो, वह एक दैनिक इबादत को ऐसी शारीरिक संख्या पर नहीं टाँगता जिसे सदियाँ बाद में झुठला सकती हैं।

कोई कह सकता है: सम्भव है यह चीनी चिकित्सा से आया हो, वहाँ भी मिलती-जुलती संख्या है। यही पहली बात है जिसे टालने के बजाय जाँचना चाहिए — और जाँचने से तर्क तीन कारणों से और मज़बूत होता है:

संख्या स्थिर नहीं है: «ह्वांगदी नेइजिंग» में 365 है, 360 नहीं; और उसके भिन्न अध्यायों में 365, 360 और 354 — तीनों आते हैं। **और जो गिना गया वह भी वही नहीं है:** चीनी «जिए» ऊर्जा-मार्गों पर सुई चुभाने के स्थान हैं, दो हड्डियों के जोड़ नहीं; और स्वयं मूल पाठ कहता है कि वे **वर्ष के दिनों की संख्या के अनुरूप** ठहराए गए — यह ब्रह्माण्डीय संगति है, शरीर की गिनती नहीं; यहाँ तक कि चीनी चिकित्सा के शोधकर्ता स्वयं कहते हैं कि इस संख्या से «पूर्णता» अभिप्रेत है, कोई वास्तविक गणना नहीं। **और रास्ता बन्द था:** चीनी चिकित्सा के इस्लामी जगत् में पहुँचने का सबसे पुराना प्रलेखित प्रमाण रशीदुद्दीन हमदानी की «तंसूक़नामा» है, जो 1313 ई. में पूरी हुई — **हदीस के सात सदी बाद**।

और निर्णायक बात यह रह जाती है: हदीस ने जो गिना जाना है उसे **«सुलामा»** कहा, और यह अरबी शब्द स्वयं ही तय करता है कि क्या गिनना है — यदि यह उधार लिया गया होता तो शब्द भी साथ आता।

एक निरक्षर व्यक्ति जिसने कभी कोई शरीर नहीं खोला, जिसने ज़बह किए हुए जानवर के सिवा कभी नंगी हड्डी नहीं देखी, अपनी क़ौम के हाथ में एक शारीरिक आँकड़ा थमाता है और उस पर एक दैनिक इबादत खड़ी कर देता है... और फिर नौ सदी बाद छुरी आती है, गिनती है, और उसे ठीक वैसा ही पाती है जैसा उसने कहा था। **तो यह उसके लिए किसने गिने?**

भ्रूण-विज्ञान

5 पुच्छास्थि — इसी से मनुष्य बनाया गया

आदम की सन्तान का सब कुछ मिट्टी खा जाती है, सिवाय पुच्छास्थि के; इसी से वह बनाया गया और इसी से फिर जोड़ा जाएगा।

अल-बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया — सर्वसम्मत

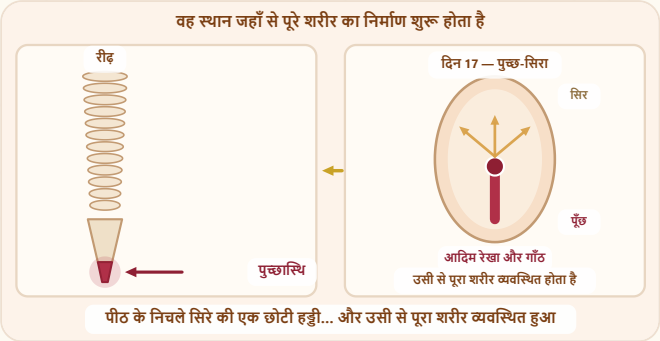

आदिम रेखा भ्रूण के पुच्छ-सिरे पर उभरती है, और उसी से शरीर के सारे अक्ष और तीनों जनन-स्तर बनते हैं

सीधी-सादी बात में

पुच्छास्थि वह **छोटी-सी हड्डी है जो रीढ़ के बिलकुल निचले सिरे पर होती है**। नबी ﷺ ने कहा कि मनुष्य **इसी से बनाया गया**। और आज का भ्रूण-विज्ञान कहता है: पूरे शरीर का निर्माण **भ्रूण के पुच्छ-सिरे पर उभरने वाली एक रेखा** से शुरू होता है, और उसके सिरे पर एक गाँठ होती है जिसे **«संगठक»** कहते हैं — उसी से तीनों जनन-स्तर और शरीर के सारे अक्ष व्यवस्थित होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस समय भ्रूण की पहली अवस्था के बारे में कुछ भी ज्ञात न था; वह दो मिलीमीटर से भी छोटा है और किसी आँख की पकड़ में नहीं आता। रही पुच्छास्थि, तो उसे **बिना किसी काम का बचा-खुचा अंश** समझा जाता था — एक सिकुड़ी हुई पूँछ; यहाँ तक कि उन्नीसवीं सदी के वैज्ञानिकों ने उसे «**अवशेषी अंगों**» की सूची में गिना, जिनका कोई लाभ नहीं। ठीक इसी स्थान को **रचना का मूल** ठहराना स्वयं सहज बुद्धि के विरुद्ध है: बुद्धि सिर से या हृदय से शुरू करती है, पीठ के सबसे निचले सिरे से नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सत्रहवें दिन भ्रूणीय चक्रिका पर एक रेखा उभरती है जिसे **आदिम रेखा** कहते हैं, और उसका स्थान भ्रूण का **पुच्छ-सिरा** है। उसके सिरे पर **आदिम गाँठ** है, जिसे भ्रूण-विज्ञान में **«संगठक»** कहा जाता है: यह दोनों ओर की सममिति स्थापित करती है, गैस्ट्रुलेशन का स्थान निश्चित करती है, तीनों जनन-स्तरों को आरम्भ करती है, और शरीर के अक्ष खींचती है — पूँछ से सिर, और बाएँ से दाहिना।

श्पेमान और मांगोल्ड ने 1924 में सिद्ध किया कि केवल इस गाँठ को दूसरे भ्रूण में प्रत्यारोपित करने से उसमें **एक पूरा दूसरा भ्रूण** बन जाता है — और इसी पर श्पेमान को 1935 में नोबेल मिला।

फिर रेखा सिकुड़ती है और उसका शेष बीसवें दिन **पुच्छ-कलिका** बन जाता है। और एक ज्ञात नैदानिक सम्बन्ध आज भी बचा है: **त्रिकास्थि-अनुत्रिक टेराटोमा** को आदिम रेखा के अवशेषों से जोड़ा जाता है, और उसकी शल्यक्रिया में केवल गाँठ निकालना पर्याप्त नहीं माना जाता — **पुच्छास्थि भी उसके साथ निकाली जाती है**, क्योंकि उसे छोड़ देना ही गाँठ को लौटा लाता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अकेले उस परसर्ग को देखिए। यह नहीं कहा गया «उसमें बनाया गया», और न «वह दूसरों से पहले बनाया गया», बल्कि **«इसी से बनाया गया»** — अर्थात् उस स्थान को वह **स्रोत** ठहराया गया जिससे निर्माण निकलता है। और संगठक का वर्णन ठीक यही है: वह पहला बनने वाला अंग नहीं, बल्कि वह स्थान है **जिससे शेष अंग व्यवस्थित होते हैं**।

फिर जो स्थान चुना गया उसे देखिए: पीठ का सबसे निचला सिरा। सातवीं शताब्दी के किसी अवलोकन में ऐसा कुछ नहीं जो उसे रचना का मूल कहने की ओर ले जाए; सब कुछ ध्यान को उससे हटाता है। और उसे कोई देख भी नहीं सकता था: सत्रहवें दिन का भ्रूण नंगी आँख की पहुँच से कहीं छोटा है।

और यहाँ एक सीमा पर रुकना आवश्यक है। हदीस का दूसरा भाग — «**इसी से फिर जोड़ा जाएगा**» — पुनरुत्थान की सूचना है, और वह अदृश्य का विषय है जहाँ कोई प्रयोग नहीं पहुँचता; हम यहाँ उस पर कुछ भी नहीं खड़ा करते। और जो यह प्रचलित है कि विज्ञान ने «सिद्ध कर दिया कि पुच्छास्थि नष्ट नहीं होती», उसका हमें कोई प्रकाशित और समकक्ष-समीक्षित शोध ज्ञात नहीं — **और जिसका प्रमाण न हो उसे छोड़ देना तर्क के लिए उसे बढ़ाने से अधिक लाभकारी है**। सारा भार पहले भाग में है: शरीर के एक स्थान के बारे में एक छोटा-सा वाक्य, जाँचा जा सकने वाला, सूक्ष्मदर्शी से एक हज़ार वर्ष पहले कहा गया... और वह सही निकला। **तो उसे किसने बताया?**

निवारक चिकित्सा

6 संगरोध — चिकित्सा से एक हज़ार वर्ष पहले

> यदि तुम सुनो कि किसी भूमि में महामारी फैली है तो वहाँ मत जाओ; और यदि वह उस भूमि में फैल जाए जहाँ तुम हो, तो उससे भागकर वहाँ से मत निकलो।
>
> **बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत**

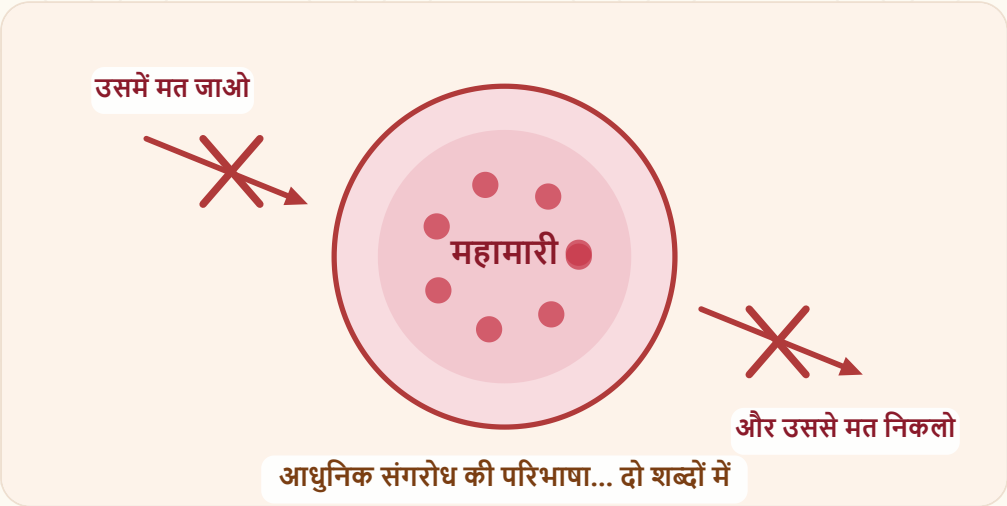

सातवीं सदी में गढ़ा गया एक वैश्विक जन-स्वास्थ्य सिद्धान्त

सीधी-सादी बात में

यदि किसी देश में महामारी फैले तो: बाहर हो तो **उसमें मत जाओ**, और भीतर हो तो **उससे बाहर मत निकलो**। यह ठीक-ठीक **संगरोध** की वही परिभाषा है जिसे समूचे संसार ने कोरोना महामारी में लागू किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

महामारियों को प्रकोप, या दुष्ट आत्माएँ, या बिगड़ी हुई हवा समझा जाता था। जब कोई महामारी पड़ती तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया **सामूहिक पलायन** होती — और यही सबसे बुरा काम है, क्योंकि यह संक्रमण को हर जगह पहुँचा देता है। कीटाणुओं का पता ही न था, और न यह पता था कि रोग सम्पर्क से फैलता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कीटाणु सिद्धान्त उन्नीसवीं सदी तक स्थापित नहीं हुआ, पाश्चर और कोख़ के हाथों। यूरोप में पहला संगठित संगरोध 1377 में वेनिस में हुआ — इस कथन के सात सदी बाद। और यहाँ कहा गया सिद्धान्त **दोतरफ़ा संगरोध** है: न प्रवेश, न निकास — ठीक वही जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियम निर्धारित करते हैं, और जिसे पूरी दुनिया ने 2020 में लागू किया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

कथन का दूसरा आधा भाग कहीं अधिक कठिन और कहीं अधिक सूक्ष्म है। महामारी-ग्रस्त भूमि में प्रवेश से रोकना तो अकेली सावधानी भी सुझा सकती है। पर **वहाँ से निकलने से रोकना** स्वयं जीवित रहने की प्रवृत्ति के विरुद्ध जाता है, और तभी अर्थ रखता है जब यह मालूम हो कि निकलने वाला व्यक्ति रोग को **बिना महसूस किए** साथ ले जा सकता है — यानी **मौन संक्रमण-वाहक** की धारणा। यह धारणा बीसवीं सदी तक समझी ही नहीं गई थी। उमर बिन ख़त्ताब ने अमवास की महामारी में इसे व्यवहार में लागू किया और सेना को शाम से लौटा दिया; जब उन पर आपत्ति की गई तो कहा: "हम अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की ही तक़दीर की ओर भाग रहे हैं।"

एक राजनीतिक भविष्यवाणी

7 रोमी हार गए — और वे जीतेंगे

अलिफ़ लाम मीम। रोमी सबसे नीची भूमि में हार गए, और वे अपनी हार के बाद कुछ ही वर्षों में विजयी होंगे।

सूरह अर-रूम — आयतें 1-4

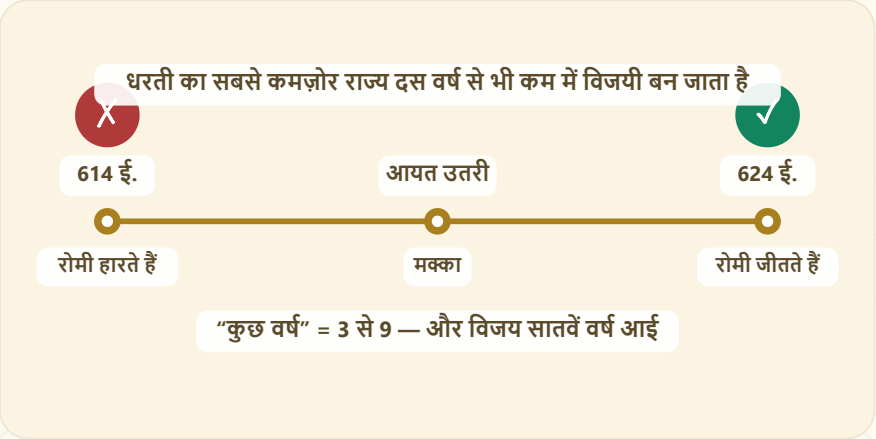

मक्का में उतरी एक ख़बर, उस युद्ध के बारे में जो हज़ारों मील दूर लड़ा जा रहा था

सीधी-सादी बात में

रोमी एक युद्ध इतनी बुरी तरह हारे कि लोगों ने मान लिया कि अब उनका अन्त हो गया। फिर एक आयत उतरी जिसने कहा: **रोमी कुछ ही वर्षों में जीतेंगे**। और यह सात वर्ष बाद हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

614 ईस्वी में फ़ारसियों ने रोमियों को कुचल दिया: शाम, मिस्र और यरूशलम छीन लिए, और पवित्र क्रूस उठा ले गए। रोमी राज्य पूर्ण पतन के कगार पर था — ख़ज़ाना ख़ाली, सेना चूर-चूर, भीतर विद्रोह। धरती पर कोई उसकी वापसी पर दाँव नहीं लगा रहा था। मक्का के मुशरिकों ने अबू बक्र से शर्त लगाई कि यह आयत झूठी है — और उस समय शर्त लगाना अभी वर्जित नहीं हुआ था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

622 में हिरक्ल ने जवाबी अभियान छेड़ा, और **दिसम्बर 627** में उसने मोसुल के पास नैनवा के युद्ध में फ़ारसी सेना को कुचल दिया, फिर ख़ुसरो को गिराया और क्रूस लौटाया। यह बीज़ान्तीनी, फ़ारसी और सुरयानी स्रोतों में, किसी भी इस्लामी स्रोत से स्वतंत्र रूप से दर्ज है। और यह बद्र में मुसलमानों की विजय के साथ जा मिला, जैसा अगली आयत ने कहा था: "और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह न कोई हिकमत की बात है न कोई वर्णन — यह **एक निश्चित विषय और एक निश्चित समय-सीमा वाली भविष्यवाणी** है, जो उस पक्ष के लिए सबसे बुरे सम्भव क्षण पर जारी हुई जिसके हक़ में थी। अवधि के लिए जो अरबी शब्द आया है वह तीन से नौ वर्ष के बीच बँधा हुआ है — एक बन्द खिड़की, जिसे झुठलाया जा सकता था। यदि दस वर्ष बिना विजय के गुज़र जाते तो पूरा सन्देश अपने विरोधियों के सामने ढह जाता। और इससे भी अधिक बारीक: **"सबसे नीची भूमि में"** — युद्ध मृत सागर के क्षेत्र में हुआ, जो समुद्र तल से 430 मीटर नीचे, **इस ग्रह की सूखी ज़मीन का सबसे निचला बिन्दु** है — एक भौगोलिक तथ्य जिसे उन्नीसवीं सदी तक नापा ही नहीं गया था।

8 एक झूठी, पापी पेशानी

हरगिज़ नहीं! यदि वह बाज़ न आया तो हम अवश्य उसे पेशानी से पकड़कर घसीटेंगे — एक झूठी, पापी पेशानी से।

सूरह अल-अलक़ — आयतें 15-16

इस खंड के काम

- निर्णय लेना
- झूठ और सच
- ग़लत व्यवहार को रोकना
- योजना और पहल

झूठ बोलने का इरादा मस्तिष्क में और कहीं पैदा ही नहीं होता

क्रियात्मक प्रतिबिम्बन दिखाता है कि झूठ बोलने के क्षण पर अग्र-ललाट प्रांतस्था सक्रिय होती है

सीधी-सादी बात में

"पेशानी" सिर का अगला हिस्सा है। क़ुरआन उसे "झूठी और पापी" कहता है — यानी **झूठ और अपराध ठीक इसी जगह से निकलते हैं**। और तंत्रिका विज्ञान ने यही सिद्ध किया है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सिर के किसी विशेष हिस्से और झूठ जैसे किसी नैतिक कार्य के बीच कोई सम्बन्ध ज्ञात न था। दार्शनिक तो बुनियादी बातों पर भी बँटे हुए थे: अरस्तू ने सोच का केन्द्र **हृदय** में रखा, मस्तिष्क में नहीं। मस्तिष्क के क्षेत्रों को कार्यों से जोड़ने का काम उन्नीसवीं सदी से पहले शुरू ही नहीं हुआ।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अग्र-ललाट प्रांतस्था — जो ठीक माथे के पीछे है — निर्णय लेने, योजना बनाने और व्यवहार रोकने का केन्द्र है। क्रियात्मक एम॰आर॰आई॰ अध्ययन दिखाते हैं कि **जान-बूझकर बोला गया झूठ विशेष रूप से इसी क्षेत्र को सक्रिय करता है**, क्योंकि उसके लिए सच को दबाना और उसकी जगह कोई विकल्प गढ़ना पड़ता है। इस क्षेत्र को क्षति पहुँचे तो व्यक्ति की अपने आचरण पर शासन करने की क्षमता नष्ट हो जाती है — जैसा 1848 के प्रसिद्ध फ़िनियस गेज के मामले में हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

निस्बत की बारीकी पर ध्यान दीजिए। आयत यह नहीं कहती "किसी झूठे और पापी की पेशानी" — यानी उसके मालिक की। वह **स्वयं पेशानी** को झूठी और पापी कहती है, और इस तरह कर्म को व्यक्ति के बजाय अंग से निकलता हुआ दिखाती है। यह कार्य का शारीरिक स्थान-निर्धारण है। और इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात: जिस व्यक्ति को यहाँ सम्बोधित किया गया उसे उसी चीज़ में धमकाया गया जिसे वह सबसे अधिक सम्मानित समझता था — और न उसका दिल चुना गया न उसकी ज़बान, बल्कि उसके सिर का अगला हिस्सा: मस्तिष्क में निर्णय और झूठ का ठिकाना।

9

कीट विज्ञान

काम करने वाली मधुमक्खियाँ सब मादा हैं

और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी: तू पहाड़ों में अपने लिए घर बना ... फिर हर प्रकार के फलों में से खा और अपने रब के बनाए हुए सुगम रास्तों पर चल।

सूरह अन-नहल — आयतें 68-69

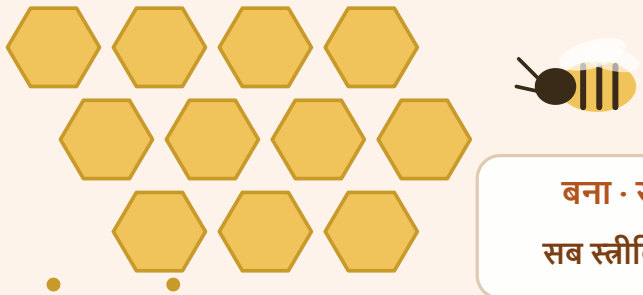

बना · खा · चल

सब स्त्रीलिंग रूप में

श्रमिक मधुमक्खियाँ बिना अपवाद मादा हैं

हर वह मधुमक्खी जिसे आप रस इकट्ठा करते और मोम बनाते देखते हैं, मादा है

सीधी-सादी बात में

इन आयतों में अल्लाह मधुमक्खी को जो भी आदेश देता है वह सब **स्त्रीलिंग रूप** में है: "बना", "खा", "चल"। और विज्ञान कहता है: जो मधुमक्खियाँ बनाती हैं, इकट्ठा करती हैं और शहद बनाती हैं वे **पूरी की पूरी मादा** हैं, उनमें एक भी नर नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पूरे प्राचीन संसार में यही आम धारणा थी कि छत्ते का मुखिया एक **नर राजा** होता है। अरस्तू ने यह स्पष्ट रूप से कहा और उसे राजा कहकर पुकारा, और यूरोप वाले सदियों तक उसके पीछे चलते हुए उसे "राजा मधुमक्खी" कहते रहे। यह 1668 तक सिद्ध नहीं हुआ था कि छत्ते का मुखिया मादा है — यह डच वैज्ञानिक यान स्वामरडम ने सिद्ध किया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मधुमक्खियों की एक बस्ती में तीन वर्ग होते हैं: एक **मादा रानी**, हज़ारों **मादा श्रमिक** — और वही मोम बनाती हैं, रस इकट्ठा करती हैं, शहद बनाती हैं, पहरा देती हैं और सफ़ाई करती हैं — और कुछ सौ **नर**, जिनका एकमात्र काम रानी से सम्भोग करना है, जिसके बाद वे मर जाते हैं या निकाल बाहर किए जाते हैं। नर न कभी चारे के लिए निकलता है, न कुछ बनाता है, और शहद बनाने में उसका रत्ती भर भी हाथ नहीं होता।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीन लगातार क्रियाओं में स्त्रीलिंग रूप का पूरी तरह पालन — और वह भी उस भाषा में जो दोनों लिंग मौजूद होने पर पुल्लिंग की ओर लौटती है — कोई व्याकरणिक संयोग नहीं है। और निर्धारण इससे भी अधिक बारीक हो जाता है: ये तीनों क्रियाएँ ठीक **मादा श्रमिक** के ही काम हैं — घर बनाना, फलों पर चरना, और आने-जाने के रास्ते तय करना। यदि पूरी प्रजाति अभिप्रेत होती तो पुल्लिंग बहुवचन आता। और यह उसके विरुद्ध है जो उस समय धरती के सबसे विद्वान लोग मानते थे।

10

इन्द्रियाँ

सुनना, देखने से पहले — हर एक बार

और उसने तुम्हें कान दिए और आँखें दीं और दिल दिए, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

सूरह अन-नहल — आयत 78

कान काम कर रहा है

सप्ताह 24

आँख काम कर रही है

सप्ताह 28

सुनना देखने से चार सप्ताह पहले पूरा हो जाता है

पूरे क़ुरआन में, मनुष्य की रचना के सन्दर्भ में देखना कभी एक बार भी सुनने से पहले नहीं आया

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन सुनने का उल्लेख **सदा** देखने से पहले करता है, हर एक जगह, बिना किसी अपवाद के। और विज्ञान कहता है: भ्रूण का कान उसकी आँखों के काम करने से महीनों पहले काम करता और सुनता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आँख वही इन्द्रिय है जिसे हर मनुष्य सहज रूप से पहले रखता है: "मैंने अपनी आँखों से देखा" "मैंने सुना" से ऊपर है, और चश्मदीद गवाही सुनी-सुनाई बात से ऊपर मानी जाती है। हर भाषा में स्वाभाविक क्रम देखने से शुरू होता है। और यह तो पता ही न था कि भ्रूण कुछ सुनता भी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कर्णावर्त (कॉक्लिया) की बनावट लगभग बीसवें सप्ताह में पूरी होती है, और भ्रूण **चौबीसवें सप्ताह** से ध्वनि पर प्रमाणित प्रतिक्रिया दिखाता है। इसके विपरीत दृष्टिपटल और दृष्टि-पथ **अट्ठाईसवें सप्ताह** से पहले काम करने लायक़ नहीं होते। नवजात शिशु जन्म के क्षण से अपनी माँ की आवाज़ पहचान लेता है, जबकि महीनों तक साफ़ देख नहीं पाता।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार किसी एक जगह में नहीं, बल्कि **पूर्ण निरन्तरता** में है। यदि यह क्रम संयोग होता तो तेरह अलग-अलग स्थलों में कम से कम एक बार तो बदलता। फिर भी वह बिना किसी अपवाद के क़ायम रहता है, हालाँकि वह भाषा की आम प्रवृत्ति के विरुद्ध जाता है। और बारीकी यहीं नहीं रुकती: "सुनना" **सदा एकवचन में** आता है और "देखना" **सदा बहुवचन में** — क्योंकि सुनना एक ही शक्ति है जो हर दिशा से एक ही प्रकार का आगत ग्रहण करती है, जबकि दो आँखें दो भिन्न चित्र बनाती हैं जिन्हें मस्तिष्क में जोड़ा जाता है।

ऊतक विज्ञान

11 पीड़ा त्वचा में बसती है

जब भी उनकी खालें जल चुकी होंगी, हम उन्हें दूसरी खालों से बदल देंगे, ताकि वे यातना का स्वाद चखते रहें।

सूरह अन-निसा — आयत 56

सतह के पास घनी मुक्त तंत्रिका-सिरे

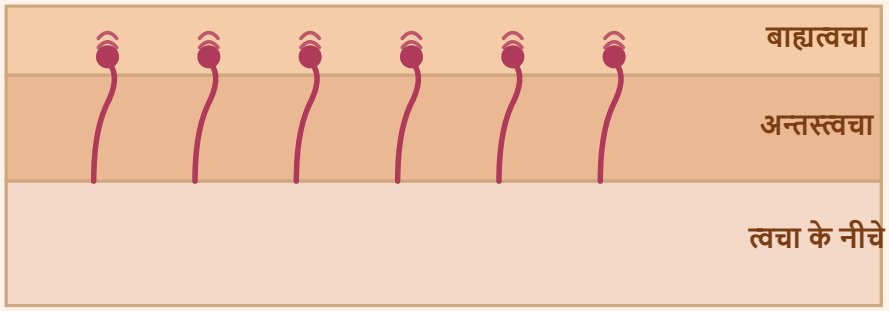

पीड़ा-ग्राही सब त्वचा में हैं — वह जल जाए तो अनुभूति चली जाती है

गहरी तीसरी श्रेणी की जलन में दर्द नहीं होता — क्योंकि पीड़ा-ग्राही जल चुके होते हैं

सीधी-सादी बात में

पीड़ा की अनुभूति पूरे शरीर में फैली हुई नहीं है — वह विशेष रूप से **त्वचा** में है। इसीलिए जब त्वचा गहराई तक जल जाती है तो उस जगह अनुभूति बन्द हो जाती है। आयत त्वचा को बदल देती है ताकि अनुभूति बनी रहे।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पीड़ा को पूरे शरीर की, या दिल की, या आत्मा की एक आम अनुभूति समझा जाता था। यह पता न था कि उसके **विशेष तंत्रिका-ग्राही** होते हैं, और न यह कि उन ग्राहियों का कोई ख़ास स्थान है। पीड़ा-ग्राहियों का वैज्ञानिक वर्णन 1906 तक नहीं हुआ था — चार्ल्स शेरिंगटन के हाथों।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पीड़ा-ग्राही (नोसिसेप्टर) मुक्त तंत्रिका-सिरे हैं जो **त्वचा की परतों** में केन्द्रित होते हैं। तीसरी श्रेणी की जलन में, जहाँ त्वचा अपनी पूरी मोटाई में नष्ट हो जाती है, **रोगी जली हुई जगह में पीड़ा की अनुभूति पूरी तरह खो देता है** — और यह एक मान्य नैदानिक संकेत है जिससे चिकित्सक जलन की गहराई पहचानते हैं। अनुभूति लौटाने के लिए त्वचा का प्रत्यारोपण करना पड़ता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

कारण स्वयं आयत में दिया गया है: **"ताकि वे यातना का स्वाद चखते रहें"**। त्वचा का बदला जाना दंड में कोई बढ़ोतरी नहीं है — वह **अनुभूति के जारी रहने की शर्त** है। और इसके लिए दो बातें एक साथ जाननी पड़ती हैं: कि पीड़ा की अनुभूति त्वचा में स्थित है, और कि जब त्वचा पूरी तरह जल जाए तो **अनुभूति रुक जाती है**। आयत केवल पीड़ा का वर्णन नहीं करती; वह उस पर एक तार्किक परिणाम खड़ा करती है जो तभी टिकता है जब यह चिकित्सकीय तथ्य सही हो।

शरीर क्रिया विज्ञान

12 गोबर और ख़ून के बीच से निकला शुद्ध दूध

और निस्सन्देह तुम्हारे लिए चरने वाले पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उसमें से पिलाते हैं जो उनके पेटों में है — गोबर और ख़ून के बीच से — शुद्ध दूध, पीने वालों के लिए सुपाच्य।

सूरह अन-नहल — आयत 66

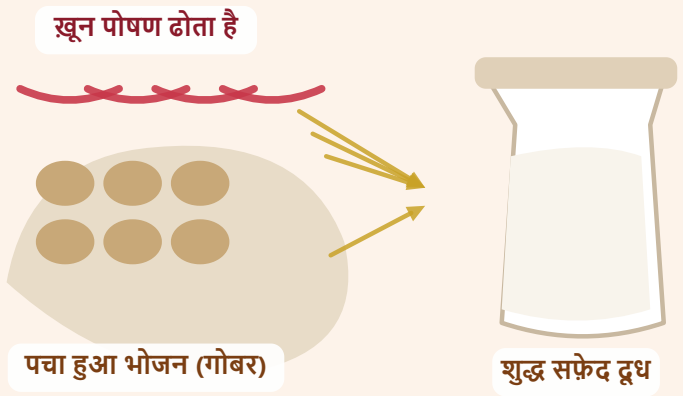

ग्रन्थि ख़ून से वही चुनती है जो उसे चाहिए, और दूध में उन दोनों का कुछ नहीं जाता

दूध थन में उन सामग्रियों से बनाया जाता है जिन्हें ख़ून आँत से लाकर देता है

सीधी-सादी बात में

वह शुद्ध सफ़ेद दूध जो आप पीते हैं, गाय के भीतर ठीक उस बिन्दु पर बनता है जो आँत में पचे हुए भोजन और नसों में दौड़ते ख़ून के **बीच** है। और फिर भी वह **शुद्ध** निकलता है, उन दोनों में से किसी का रंग लिए बिना।

उस समय लोग क्या मानते थे?

दूध बनने की क्रियाविधि बिलकुल अज्ञात थी। यही मान लिया जाता था कि दूध थन में उसी तरह इकट्ठा होता है जैसे मशक में पानी। रहा उसे पचे हुए भोजन और ख़ून दोनों से जोड़ना, और उसे **उन दोनों के बीच** रखना — इसका किसी को कोई ज्ञान ही न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

भोजन आँत में पचता है, फिर उसके अवयव ख़ून में सोख लिए जाते हैं। ख़ून उन्हें थन की दुग्ध-ग्रन्थि तक ले जाता है, जहाँ उपकला कोशिकाएँ ख़ून से वे शर्कराएँ, अमीनो अम्ल, वसा और लवण लेती हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है, और फिर **नए सिरे से दूध बनाकर** उसे स्रावित करती हैं। इसलिए दूध न छना हुआ ख़ून है न घुला हुआ भोजन, बल्कि एक निर्मित पदार्थ है जिसके बनने का स्थान पाचन-तंत्र और रक्त-परिसंचरण के बीच पड़ता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार **"के बीच से"** इस वाक्यांश में बैठा है। आयत यह नहीं कहती "गोबर और ख़ून से", जिससे दूध उन्हीं से निकाला हुआ और उन्हीं में मिला हुआ ठहरता; और न यह कहती है "गोबर और ख़ून के बाद"। वह कहती है "उन दोनों के बीच से" — यानी बनने का स्थान **क्रम में उन दोनों के बीच पड़ता है**: पचने के बाद और ख़ून के उन्हें ले चलने के बाद, और दूध के निकलने से पहले। फिर वह उत्पाद को **"शुद्ध"** कहती है — यानी जिससे वह आया उसका कोई निशान तक उसमें नहीं। यह एक ऐसे शरीर-क्रियात्मक मार्ग का वर्णन है जो 1628 में रक्त-परिसंचरण की खोज तक समझा ही नहीं गया था।

13

निवारक चिकित्सा

हाथ धोइए — इससे पहले कि आप जानें क्यों

जब तुममें से कोई नींद से जागे तो अपना हाथ बर्तन में तब तक न डाले जब तक उसे तीन बार धो न ले, क्योंकि उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

"उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी" — अदृश्य पर टिका एक कारण

1	2	3	4
पाँच बार वुज़ू	**हाथ धोना**	**मिस्वाक**	**मुँह धोना**
हर दिन	जागने पर	हर नमाज़ पर	और नाक तथा चेहरा

हाथ धोना चिकित्सा का सबसे महत्वपूर्ण एकल निवारक उपाय है
विश्व स्वास्थ्य संगठन

पवित्रता की एक दैनिक व्यवस्था, जो हर मुसलमान पर दिन में पाँच बार लागू है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने जागने पर, भोजन छूने से पहले हाथ धोने का आदेश दिया, और एक विलक्षण कारण बताया: **"उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी"** — यानी एक सम्भावित हानि है जो **आँख से दिखाई नहीं देती**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

कीटाणु किसी भी रूप में ज्ञात न थे। सफ़ाई **रूप और गंध** की बात थी: यदि हाथ साफ़ दिखे तो वह साफ़ है। छूने से फैलने वाली किसी छिपी गंदगी की कोई धारणा ही न थी। यूरोप में तो चिकित्सक उन्नीसवीं सदी तक मुर्दों का चीर-फाड़ करने के बाद बिना हाथ धोए प्रसव कराने चले जाते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हाथ धोना आज विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्वीकृति से **पूरी चिकित्सा का सबसे महत्वपूर्ण एकल निवारक उपाय** है, और अकेले यही हर वर्ष करोड़ों संक्रमण रोकता है। इसकी खोज 1847 में हंगरी के चिकित्सक **ज़ेमेलवाइस** ने की, जिन्होंने देखा कि चिकित्सकों के हाथ धुलवाने से नई माताओं की मृत्यु लगभग 18 प्रतिशत से घटकर लगभग 2 रह गई — **और उनके सहकर्मियों ने उनका उपहास किया, उन्हें पद से निकाल दिया गया, और वे एक पागलख़ाने में मरे**। उधर मुसलमान दिन में पाँच बार अपने हाथ, चेहरा, मुँह, नाक, बाँहें और पैर धोता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

महत्व **बताए गए कारण** में है, आदेश में नहीं। सफ़ाई के आदेश को रुचि या रिवाज कहकर टाला जा सकता था। पर ये शब्द — **"उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी"** — उसे किसी **अज्ञात और अदृश्य** चीज़ से उचित ठहराते हैं, यानी ख़तरा तब भी क़ायम है जब हाथ साफ़ दिखाई दे। और यही तो छिपी गंदगी की उस धारणा का मूल है जिस पर समूची निवारक चिकित्सा खड़ी है। इसमें बाक़ी व्यवस्था भी जोड़ लीजिए: हर नमाज़ पर मिस्वाक, वुज़ू में मुँह और नाक की सफ़ाई, बर्तन ढँकने का आदेश, पेय में साँस लेने की मनाही, ठहरे हुए पानी में पेशाब करने की मनाही, और ग़ुस्ल की अनिवार्यता। कीटाणु सिद्धान्त से बारह सदी पहले गढ़ी गई एक समन्वित स्वच्छता व्यवस्था।

14

एक खुली चुनौती

अबू लहब के हाथ टूट जाएँ — नौ वर्ष की चुनौती

अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएँ और वह ख़ुद भी नष्ट हो। न उसका माल उसके काम आया और न जो उसने कमाया। वह भड़कती लपटों वाली आग में जलेगा।

सूरह अल-मसद — आयतें 1-3

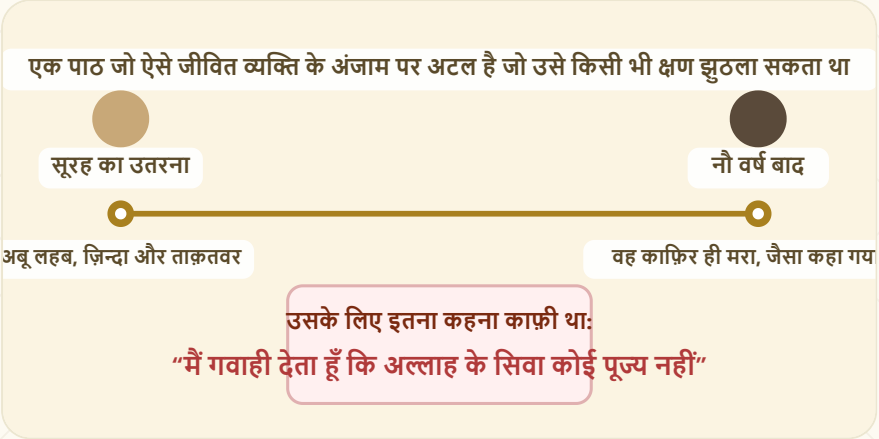

सबसे ख़तरनाक पाठ जो लिखा जा सकता था: एक ऐसे व्यक्ति पर अन्तिम फ़ैसला जो अभी मरा ही नहीं

सीधी-सादी बात में

एक सूरह उतरी जिसने कहा कि स्वयं नबी ﷺ के चाचा — अबू लहब — **आग में जाएँगे**। यानी वे कभी मुसलमान नहीं होंगे। वे उसके बाद नौ वर्ष जीवित रहे, और उनके लिए इतना काफ़ी था कि कलिमा-ए-शहादत ज़बान से कह देते, चाहे झूठ ही सही, और पूरा क़ुरआन गिर जाता — और उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अबू लहब इस सन्देश के सबसे कट्टर दुश्मनों में थे और उसे नुक़सान पहुँचाने की सबसे अधिक क्षमता रखते थे, और वे स्वयं नबी ﷺ के चाचा तथा क़ुरैश के सरदारों में से थे। आने वाले दिनों में कोई व्यक्ति क्या बन जाएगा, यह कोई नहीं जान सकता था — कितने ही कड़वे दुश्मन लम्बी शत्रुता के बाद मुसलमान हुए, जैसे उमर बिन ख़त्ताब, ख़ालिद बिन वलीद और इकरिमा बिन अबी जहल।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अबू लहब बद्र के युद्ध के कुछ ही दिन बाद मरे — सूरह के उतरने के लगभग नौ वर्ष बाद — **तब भी काफ़िर ही**, एक ऐसी बीमारी से जिससे उनके अपने घर वाले भी दूर भागे। यह सीरत और इतिहास की सभी किताबों में सर्वसम्मत है, और इस्लाम के विरोधियों ने भी इस पर विवाद नहीं किया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह किसी दूर की ऐसी बात की भविष्यवाणी नहीं जो किसी के प्रभाव से बाहर हो — यह **एक जीवित व्यक्ति के चुनाव के बारे में है जिसने इसे अपने कानों से सुना**, और जो इस सन्देश को मिटा देने का सबसे अधिक इच्छुक था। उसके पास नौ वर्ष थे जिनमें वह एक वाक्य कह देता — दिखावे के तौर पर ही सही — और पाठ ढह जाता और उसी दिन सन्देश समाप्त हो जाता। **उस चुनौती को नौ वर्ष खुला छोड़ देना, और फिर उसका ठीक वैसे ही बन्द होना जैसा कहा गया था — यह ऐसा जोखिम है जो कोई मनुष्य नहीं उठाता।** इसमें यह भी जोड़िए कि सूरह ने वही फ़ैसला उसकी पत्नी पर भी सुनाया, और वह भी काफ़िर ही मरी। दो में से दो, एक साथ निशाने पर — और झुठलाने के नौ वर्ष के अवसरों के बाद।

मिस्रविद्या

15 यूसुफ़ के समय “बादशाह”, और मूसा के समय “फ़िरऔन”

और बादशाह ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, मैं उसे अपने लिए ख़ास कर लूँगा … और फ़िरऔन ने कहा: मुझे छोड़ो, मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ।

सूरह यूसुफ़ 54 — और सूरह ग़ाफ़िर 26

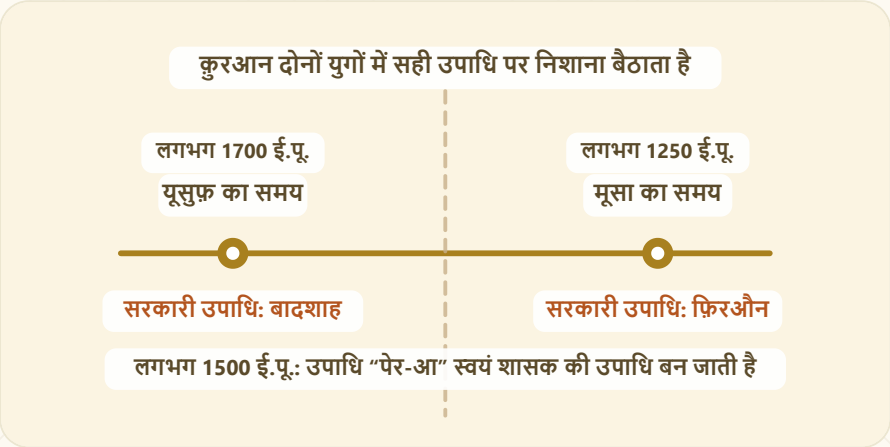

राजसी उपाधि का यह बदलना एक ऐसा तथ्य है जो चित्रलिपि के पढ़े जाने तक अज्ञात था

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन यूसुफ़ के समय के मिस्री शासक को **“बादशाह”** कहता है, और मूसा के समय के शासक को **“फ़िरऔन”** — और दोनों को कभी नहीं गड़बड़ाता। मिस्रविद्या कहती है कि यह ठीक-ठीक सही है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब में मिस्र के शासकों की उपाधियों का, या यह कि वे कब बदलीं, कोई ज्ञान न था। पूरे क्षेत्र में चलन यही था कि हर मिस्री शासक को बिना भेद किए “फ़िरऔन” कहा जाए। बल्कि **ख़ुद तौरात यूसुफ़ के शासक को बार-बार “फ़िरऔन” कहती है** — उत्पत्ति की पुस्तक में।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शब्द “फ़िरऔन” मिस्री **पेर-आ** से आया है, जिसका अर्थ है “महान घर” — यानी स्वयं महल, न कि शासक का व्यक्तित्व। पुराने और मध्य साम्राज्य भर में यह ऐसा ही रहा। **स्वयं शासक के लिए** उपाधि के रूप में इसका प्रयोग नए साम्राज्य से पहले नहीं हुआ — मोटे तौर पर ईसा से पन्द्रह सदी पूर्व थुतमोस तृतीय के शासनकाल से, और उसके बाद यह आम हो गया। यूसुफ़ का युग उससे पहले पड़ता है और मूसा का उसके बाद। आधुनिक मिस्रविद्या के सन्दर्भों में यह तय है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

निरन्तरता ही प्रमाण है। यदि यह संयोग होता तो लगभग तीस स्थलों में कम से कम एक बार तो दोनों उपाधियाँ गड्डमड्ड हो जातीं। फिर भी क़ुरआन यह भेद पूरी तरह बनाए रखता है। इससे भी प्रबल बात: यह **उस बाइबिली पाठ का खंडन करता है जो उस समय अहले-किताब में प्रचलित था** — और वही एकमात्र स्रोत है जिससे नक़ल का आरोप लगाया जाता है। यदि पहुँचाने वाला मनुष्य होता तो वह ग़लती भी साथ ले आता। और यह सुधार सही है, यह एक हज़ार वर्ष से भी अधिक बाद जाना गया — जब चित्रलिपि पढ़ी गई।

भ्रूणविज्ञान

16 अलक़ा: एक लटकी हुई चीज़ जो ख़ून चूसती है

उसने मनुष्य को अलक़ा से पैदा किया।

सूरह अल-अलक़ — आयत 2

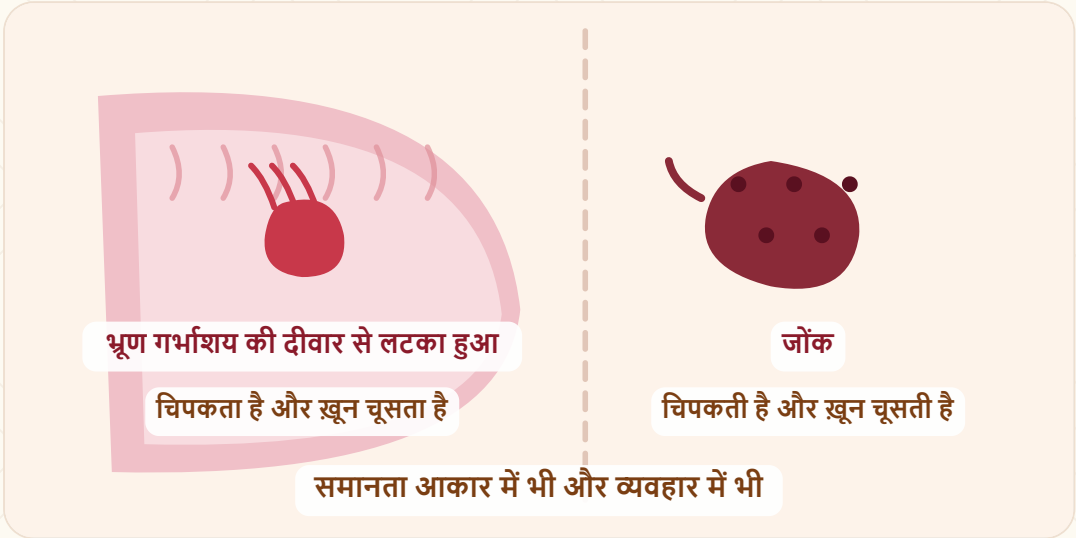

तीसरे सप्ताह का भ्रूण: उसका आकार और उसका काम, दोनों जोंक के आकार और काम हैं

सीधी-सादी बात में

यहाँ आया अरबी शब्द एक साथ तीन अर्थ रखता है: कोई **लटकी हुई** चीज़, ख़ून चूसने वाली **जोंक**, और **जमा हुआ ख़ून**। और इस चरण पर भ्रूण तीनों एक साथ है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

किसी ने तीसरे सप्ताह का भ्रूण देखा ही न था। वह दो मिलीमीटर से भी कम का होता है और सूक्ष्मदर्शी के बिना दिखाई नहीं देता। यह पता न था कि भ्रूण **गर्भाशय की दीवार से चिपककर उसी से पोषण लेता है**; प्रचलित धारणा यही थी कि वह किसी तरल में तैरता है और उसी से खाता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

छठे दिन ब्लास्टोसिस्ट गर्भाशय की झिल्ली में धँस जाता है और **उससे लटका हुआ** हो जाता है। फिर उसकी कोशिकाएँ माँ की रक्त-वाहिकाओं को खोल देती हैं, तो ख़ून उसके चारों ओर की जगहों में भर जाता है — यानी वह **शाब्दिक अर्थों में ख़ून चूसता है**। और तीसरे सप्ताह के भ्रूण की सूक्ष्मदर्शी तस्वीरें ऐसा आकार दिखाती हैं जो जोंक से बहुत मिलता-जुलता है — उसके मुड़ाव और पार्श्व खंडन तक।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही शब्द में तीन अर्थों का इकट्ठा हो जाना ही चमत्कार है। यदि केवल लटकना अभिप्रेत होता तो कोई दूसरा शब्द काफ़ी था; यदि केवल ख़ून अभिप्रेत होता तो ख़ून का शब्द चल जाता। पर यह एक शब्द एक साथ बता देता है: **स्थान** (दीवार से लटका हुआ), **पोषण** (ख़ून चूसना), **आकार** (जोंक जैसा), और **चारों ओर की चीज़** (जमे हुए ख़ून में लिपटा हुआ)। एक शब्द में चार सूक्ष्मदर्शी तथ्य — और वह भी एक निरक्षर व्यक्ति पर उतारा गया, सूक्ष्मदर्शी से एक हज़ार वर्ष पहले।

17

प्लेट विवर्तनिकी

पहाड़ चल रहे हैं और आप उन्हें जमा हुआ समझ रहे हैं

और तुम पहाड़ों को देखते हो, उन्हें जमा हुआ समझते हो, हालाँकि वे बादलों के चलने की तरह चल रहे हैं।

सूरह अन-नम्ल — आयत 88

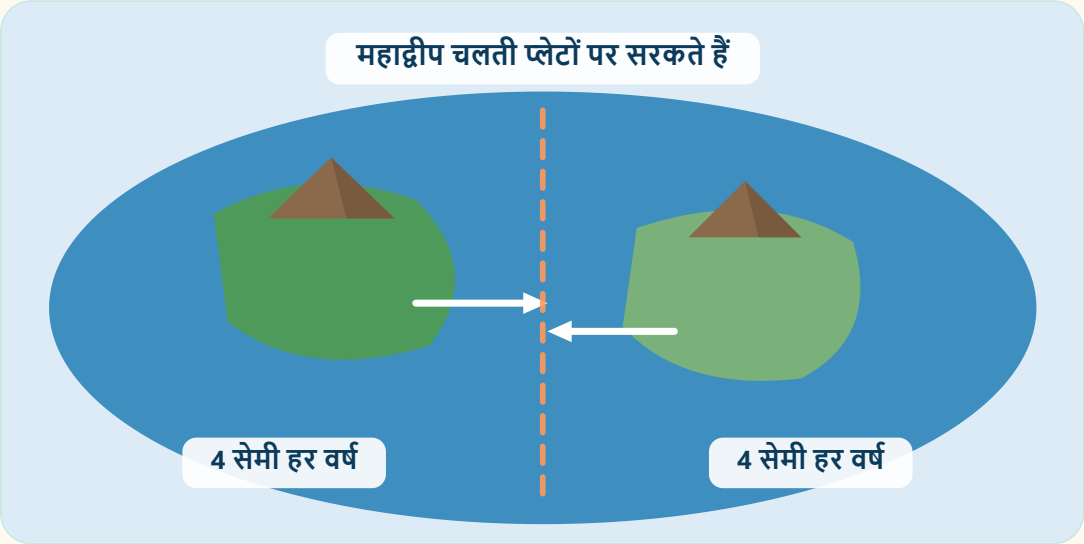

पूरे महाद्वीप चल रहे हैं, बहुत धीरे, और उन पर जो कुछ है वह सब उनके साथ चल रहा है

सीधी-सादी बात में

पहाड़ आपको ऐसे दिखते हैं मानो खड़े हों। सच्चाई यह है कि वे **चल रहे** हैं — इतने धीरे कि आपकी आँख पकड़ नहीं पाती, ठीक वैसे ही जैसे आप एक क्षण देखकर बादल को हिलता हुआ नहीं देख पाते।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धरती के हर मनुष्य के लिए पहाड़ पूर्ण स्थिरता का ही प्रतीक थे। "पहाड़ जैसा अटल" हर भाषा की कहावत है। किसी ने यह दावा नहीं किया कि उनके नीचे की ज़मीन स्वयं खिसक रही है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्लेट विवर्तनिकी, जो 1960 के दशक से स्थापित है: धरती की पपड़ी विशाल प्लेटों में बँटी है जो तैरती और खिसकती हैं, और महाद्वीपों तथा पहाड़ों को अपने साथ कुछ सेंटीमीटर प्रति वर्ष की गति से ले चलती हैं। आज यह गति उपग्रह से नापी जाती है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उपमा स्वयं ही प्रमाण है। "उन्हें जमा हुआ समझते हो" साफ़ कहता है कि उनका ठहराव **एक दृष्टि-भ्रम** है। फिर "बादलों के चलने की तरह चलना" — और बादल **क्षैतिज रूप से, धीरे, और एक पिंड की तरह** चलते हैं; वे न गिरते हैं न उछलते हैं। तो आयत एक वास्तविक गति का वर्णन करती है और यह भी बता देती है कि वह दिखाई क्यों नहीं देती। और इससे भी बारीक: पहाड़ अकेले नहीं चलते, वे **अपने चारों ओर की हर चीज़ के साथ** चलते हैं — बिलकुल बादलों की तरह।

18

खगोल विज्ञान

ब्रह्मांड हर क्षण बढ़ रहा है

और आकाश को हमने अपनी शक्ति से बनाया, और निस्सन्देह हम उसे निरन्तर फैलाते जा रहे हैं।

सूरह अज़-ज़ारियात — आयत 47

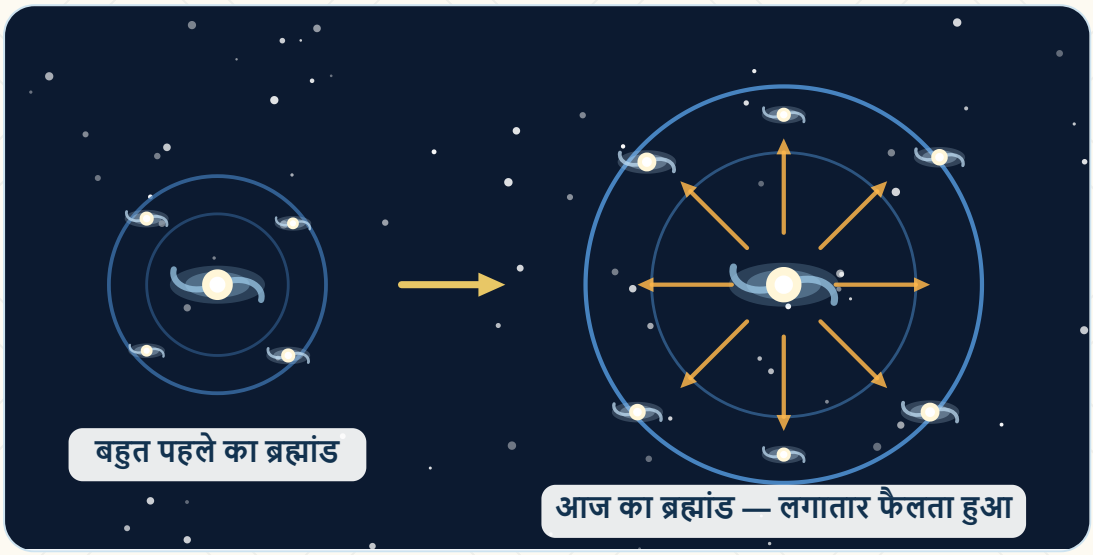

आकाशगंगाएँ एक-दूसरे से दूर होती जा रही हैं, जैसे फूलते गुब्बारे पर बने बिन्दु

सीधी-सादी बात में

कल्पना कीजिए एक गुब्बारा हो जिस पर बिन्दु बने हों, और फिर आप उसे फुलाएँ। हर बिन्दु अपने पड़ोसी से दूर हटता जाता है। ब्रह्मांड ठीक यही करता है: आकाश अपने जीवन के **हर सेकंड बढ़ता और चौड़ा होता** जाता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग — और बड़े-बड़े दार्शनिक तथा वैज्ञानिक भी — यही मानते थे कि ब्रह्मांड **स्थिर और अटल** है, एक ही नाप का, जो न बढ़ता है न घटता। यह धारणा बीसवीं सदी तक क़ायम रही; स्वयं आइंस्टीन ने अपने समीकरणों में एक बनावटी स्थिरांक जोड़ा ताकि ब्रह्मांड को ठहरा हुआ रखा जा सके।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1929 में एडविन हबल ने देखा कि दूर की आकाशगंगाओं का प्रकाश **लाल की ओर खिसका** हुआ है, यानी वे हमसे भाग रही हैं — और जितनी दूर हैं उतनी ही तेज़ भाग रही हैं। ब्रह्मांड फैल रहा है। 1998 में पता चला कि यह फैलाव **तेज़ होता जा रहा** है, और इसके खोजकर्ताओं को 2011 में नोबेल पुरस्कार मिला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो शब्द आया है वह कर्तृवाचक कृदन्त है, जो किसी **जारी और अटूट** क्रिया को बताता है, भूतकाल को नहीं। यानी फैलाव अभी हो रहा है। अरब के रेगिस्तान का एक निरक्षर व्यक्ति, जिसके पास न दूरबीन थी न वर्णक्रममापी, ऐसा वाक्य कहता है जो समूची मानवता की सर्वसम्मति के विरुद्ध है — और फिर इतिहास की सबसे बड़ी खगोलीय खोज आकर अक्षर दर अक्षर उसकी पुष्टि करती है। यह न संयोग से समझाया जा सकता है, न चतुराई से।

ब्रह्मांड विज्ञान

19 वे एक ही चीज़ थे — फिर अलग कर दिए गए

क्या इनकार करने वालों ने नहीं देखा कि आकाश और धरती आपस में जुड़े हुए एक पिंड थे, फिर हमने उन्हें अलग किया?

सूरह अल-अंबिया — आयत 30

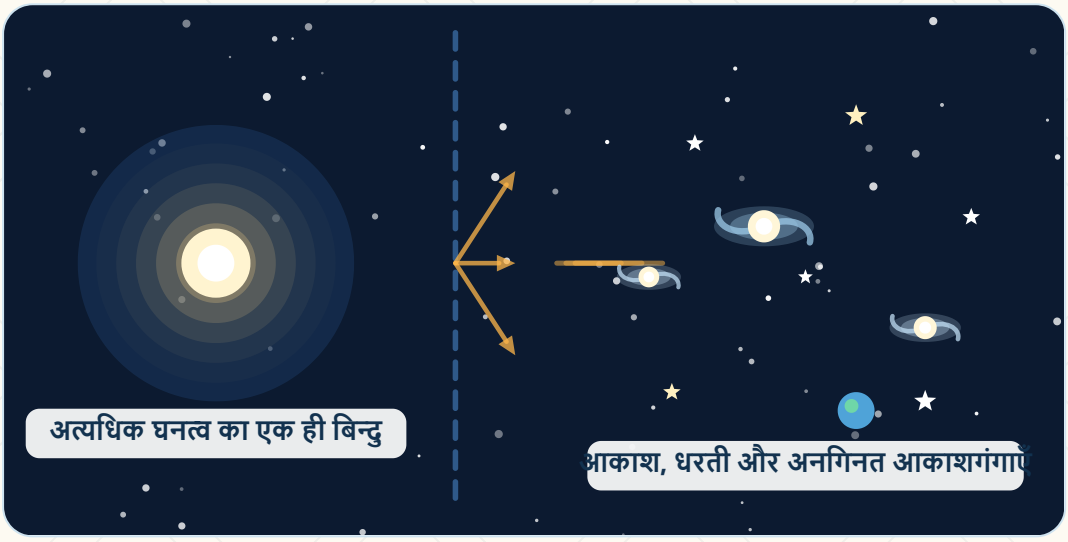

एक जुड़े हुए पिंड से लेकर आकाशगंगाओं से भरे फैलते हुए ब्रह्मांड तक

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन कहता है: आकाश और धरती पहले एक ही चीज़ बनकर **आपस में चिपके** हुए थे, और अल्लाह ने उन्हें फाड़कर अलग किया। ठीक वैसे ही जैसे एक छोटा-सा बीज खुलता है और उसमें से पूरा पेड़ निकल आता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

"ब्रह्मांड की कोई शुरुआत" — ऐसी कोई धारणा थी ही नहीं। मान्यता यह थी कि ब्रह्मांड **अनादि है, उसकी कोई शुरुआत नहीं**। और जिन्होंने कोई आरम्भ कल्पना किया उन्होंने लड़ते हुए देवताओं की कहानियाँ गढ़ीं, न कि किसी एक पिंड का भौतिक विभाजन।

आज विज्ञान क्या कहता है?

महाविस्फोट सिद्धान्त, जो आज दुनिया भर का मानक प्रतिरूप है: समूचा ब्रह्मांड **अत्यधिक घनत्व और ताप के एक ही बिन्दु** से शुरू हुआ, फिर वह फटा और फैला। यह तीन प्रमाणों पर खड़ा है: आकाशगंगाओं का दूर भागना; 1965 में खोजी गई **ब्रह्मांडीय सूक्ष्मतरंग पृष्ठभूमि**, जो उसी आरम्भ की बची हुई ऊष्मा है; और ब्रह्मांड में हाइड्रोजन तथा हीलियम का अनुपात।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

पहली अवस्था के लिए आया अरबी शब्द उस चीज़ को कहते हैं जो जुड़कर बन्द हो गई हो, और क्रिया का शब्द उसे फाड़कर खोलने का है। यह एक ऐसा सटीक वर्णन है जिसमें किसी दूसरी व्याख्या की गुंजाइश नहीं। और इससे अधिक महत्वपूर्ण: आयत इसे इनकार करने वालों के सामने **चुनौती के रूप में** रखती है — "क्या उन्होंने नहीं देखा" — और यह इस बात पर दाँव है कि एक दिन यह देख लिया जाएगा। और तेरह सदी बाद देख लिया गया; उसके दो खोजकर्ताओं को इस पर 1978 में नोबेल पुरस्कार मिला।

भूविज्ञान

20 पहाड़ धरती में गाड़ी हुई खूँटियाँ हैं

क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया, और पहाड़ों को खूँटियाँ?

सूरह अन-नबा — आयतें 6-7

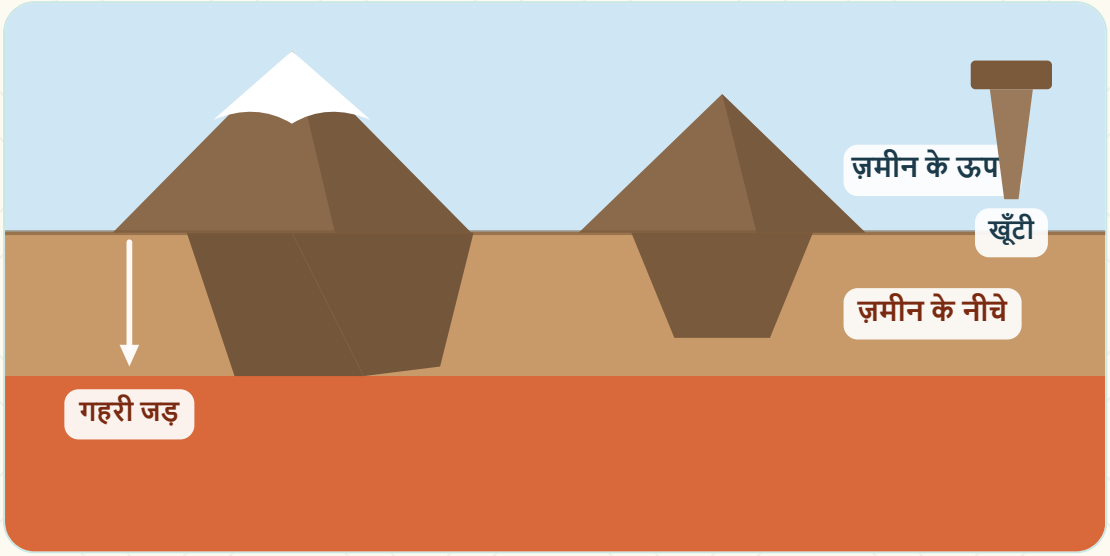

पहाड़ तम्बू की खूँटी जैसा है: दिखता थोड़ा है, और गड़ा हुआ हिस्सा कई गुना अधिक

सीधी-सादी बात में

जिस खूँटी से आप तम्बू गाड़ते हैं उसका थोड़ा हिस्सा दिखता है और बड़ा हिस्सा ज़मीन में गड़ा होता है। पहाड़ ठीक वैसे ही हैं: उनकी **ज़मीन के नीचे गहरी जड़ें** हैं, जो ऊपर दिखने वाले हिस्से से कई गुना हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के मन में पहाड़ चट्टान का एक ऐसा ढेला था जो धरती की सतह **पर** रखा हो, जैसे मेज़ पर पत्थर। किसी के पास यह जानने का कोई साधन न था कि उसके नीचे कोई विस्तार भी है, क्योंकि खुदाई उथले कुओं से आगे कभी गई ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

भूविज्ञान इन्हें **पर्वत-जड़ें** कहता है: हर पहाड़ पपड़ी में इतनी गहराई तक धँसा होता है जो प्रायः उसकी दिखाई देने वाली ऊँचाई का लगभग पाँच गुना होती है। और यही जड़ें पपड़ी को स्थिर रखती हैं और उसका हिलना सीमित करती हैं — इसी सिद्धान्त को समस्थिति (आइसोस्टेसी) कहते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

शब्द "खूँटी" न आकार की उपमा है न नोकदार रूप की। अरबी में खूँटी वह चीज़ है जिसकी पहचान उसका काम है: **एक ऐसा पिंड जिसका अधिकांश गड़ा होता है ताकि जो उसके ऊपर है उसे थामे रखे**। तो आयत पहाड़ों को दो ऐसे गुण देती है जो ज्ञात न थे: सतह के नीचे का विस्तार, और थामे रखना। और जो इससे पहले आया उस पर ध्यान दीजिए — धरती को "बिछौना" कहा, यानी वह चीज़ जो हिल सकती है — तो खूँटियाँ उसे थामने के लिए आती हैं।

समुद्र विज्ञान

21 दो समुद्र जो मिलते हैं और आपस में घुलते नहीं

उसने दो समुद्रों को छोड़ दिया कि वे मिलें; उन दोनों के बीच एक आड़ है जिसे वे लाँघते नहीं।

सूरह अर-रहमान — आयतें 19-20

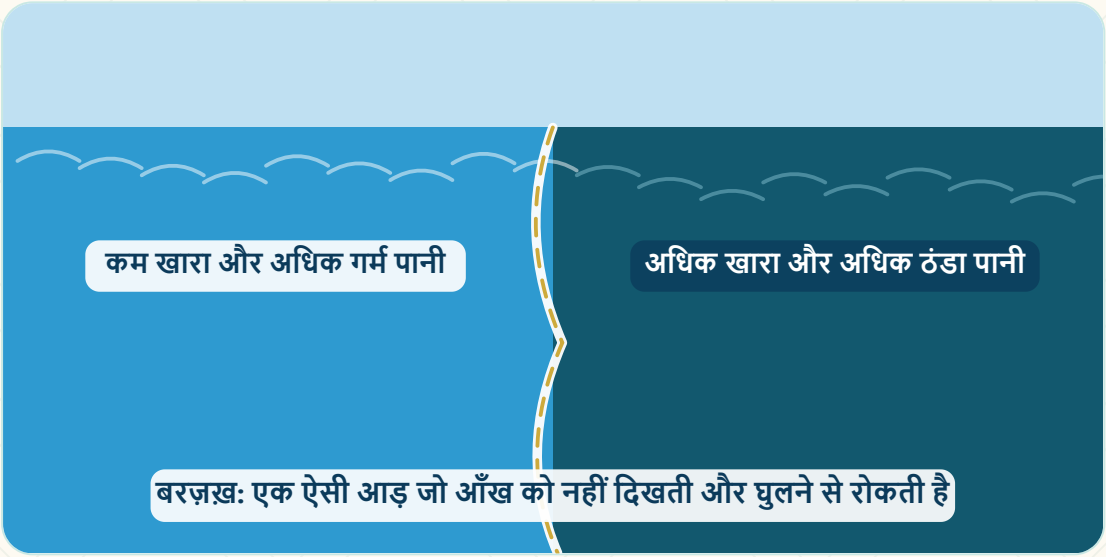

दो समुद्रों के बीच की विभाजक रेखा धरती की कई जगहों पर नंगी आँख से दिखाई देती है

सीधी-सादी बात में

जब दो अलग-अलग समुद्र मिलते हैं तो वे वैसे तुरन्त नहीं घुलते जैसा आप सोचेंगे। उनके बीच एक **आड़** बनी रहती है जो एक के पानी को दूसरे के पानी से रोके रखती है, तो हर समुद्र अपना रंग, अपना खारापन और अपना ताप थामे रहता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हर मनुष्य के लिए यह स्वतःसिद्ध था कि पानी पानी से मिलते ही घुल जाता है — जैसे पानी के दो प्याले मिल जाते हैं। पानी और पानी के बीच किसी "दीवार" की कल्पना किसी ने की ही न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

समुद्र विज्ञान **वास्तविक जल-अवरोधों** का अस्तित्व सिद्ध करता है, जिन्हें फ़्रंट और हैलोक्लाइन कहा जाता है: खारेपन, घनत्व और ताप का अन्तर एक सँकरा संक्रमण-क्षेत्र बना देता है जिसका अपना पृष्ठ-तनाव होता है और जो तेज़ मिश्रण को रोकता है। यह जिब्राल्टर जलडमरूमध्य और उत्तमाशा अन्तरीप पर नंगी आँख से देखा जा सकता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत केवल न घुलने पर नहीं रुकती; वह कारण भी बताती है: एक **आड़** — अरबी में वह पर्दा जो दो चीज़ों के बीच खड़ा हो। फिर उसका प्रभाव बताती है: दोनों में से कोई दूसरे पर नहीं चढ़ता। यह एक ऐसी परिघटना का वर्णन है जो खारेपन और घनत्व के यंत्रों से नापे जाने तक, यानी बीसवीं सदी तक, खोजी ही नहीं गई थी। और एक दूसरी आयत में वर्णन और भी तीखा है: एक आड़ और **एक रोक देने वाला पर्दा**।

22

जल के प्रकार

मीठा और सुपाच्य — और खारा और कड़वा

और वही है जिसने दो समुद्र छोड़े, यह मीठा और सुपाच्य और वह खारा और कड़वा, और उन दोनों के बीच एक आड़ और एक रोक देने वाला पर्दा रख दिया।

सूरह अल-फ़ुरक़ान — आयत 53

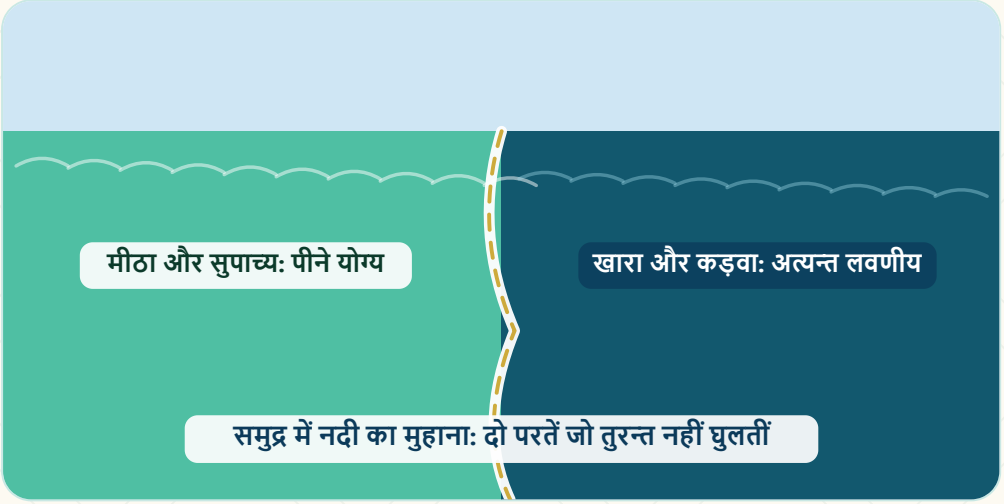

नदियों के मुहानों पर मीठा पानी खारे पानी के ऊपर तैरता है, और सीमा साफ़ दिखाई देती है

सीधी-सादी बात में

जब कोई मीठी नदी खारे समुद्र में गिरती है तो दोनों तुरन्त नहीं घुलते। उनके बीच एक **आड़** बनी रहती है जिसे उपग्रह साफ़ देख लेते हैं, और वह दसियों किलोमीटर तक फैली रहती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सबके लिए पानी तो पानी है, और वह सहज बुद्धि से पानी में घुल जाता है। यह पता न था कि भिन्न जलों के **भिन्न घनत्व और भिन्न पृष्ठ-तनाव** होते हैं जो उन्हें घुलने के बजाय परतों में बाँट देते हैं। रहा उनके बीच की चीज़ को "रोक देने वाला" पर्दा कहना — साधारण अवलोकन में उसका कोई समकक्ष ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

बड़ी नदियों के मुहानों पर — अमेज़न, मिसिसिपी, नील — मीठा पानी समुद्र के भीतर दसियों किलोमीटर तक जाता है और **अपना रंग तथा अपना घनत्व थामे रखता है**, और विभाजक रेखा अन्तरिक्ष से दिखाई देती है। कारण है घनत्व, खारेपन और ताप का अन्तर, जो एक सँकरी संक्रमण-परत बनाता है जिसे **हैलोक्लाइन** कहते हैं और जो मिश्रण को बहुत धीमा कर देती है। अन्तरिक्ष यात्रियों ने इस परिघटना की बार-बार तस्वीरें ली हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस आयत और सूरह अर-रहमान वाली आयत के बीच एक ऐसा बारीक अन्तर है जिसे केवल जानने वाला ही पकड़ेगा। वहाँ दोनों समुद्र खारे हैं, बस गुण भिन्न हैं, और विभाजक को एक ही शब्द से नाम दिया गया है: आड़। यहाँ — जहाँ मिलन **मीठे और खारे** के बीच है — एक दूसरा वर्णन जोड़ दिया गया है: **रोक देने वाला पर्दा**, यानी ज़ोर देकर कही गई, दुहराई गई रोक। और भौतिक कारण साफ़ है: मीठे और खारे पानी के बीच घनत्व का अन्तर दो खारे जलों के बीच के अन्तर से **कहीं अधिक** होता है, तो अलगाव भी अधिक तीखा और अधिक मज़बूत होता है। शब्दों का ज़ोर परिघटना के ज़ोर से ठीक-ठीक मेल खाता है।

ऊँचाई का शरीर-क्रिया विज्ञान

23 जितना ऊपर चढ़ेंगे, उतना सीना तंग होगा

और जिसे वह गुमराह करना चाहता है, उसका सीना तंग और भिंचा हुआ कर देता है, मानो वह आकाश में चढ़ रहा हो।

सूरह अल-अनआम — आयत 125

जितना ऊपर जाएँगे ऑक्सीजन उतनी कम होगी, तो साँस सँकरी होगी और घुटन बढ़ेगी

सीधी-सादी बात में

यदि आप किसी बहुत ऊँचे पहाड़ पर चढ़ें तो आपको लगेगा कि सीना भिंच रहा है और साँस लेना मेहनत का काम हो गया है। जितना ऊपर जाएँगे, सीना उतना तंग होता जाएगा। क़ुरआन इसे उस व्यक्ति के सीने की तंगी की **उपमा** बनाता है जो मुँह मोड़ लेता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस माहौल में कोई भी मनुष्य ज़्यादा से ज़्यादा किसी साधारण पहाड़ की चोटी तक पहुँचा था, और किसी ने ऊँचाई को साँस फूलने से **क्रमिक** रूप से नहीं जोड़ा था। बल्कि यह तो पता ही न था कि हवा का कोई भार या दबाव भी होता है; टॉरिचेली ने वायुमंडलीय दबाव 1643 तक नापा ही नहीं था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जितना ऊपर चढ़ेंगे, हवा का दबाव उतना कम होगा और ख़ून तक उतनी ही कम ऑक्सीजन पहुँचेगी। 3,500 मीटर पर वह समुद्र-तल के मान का लगभग 60 प्रतिशत रह जाती है, और एवरेस्ट की चोटी पर लगभग 33 प्रतिशत। परिणाम है साँस फूलना, सीने में जकड़न और सिर दर्द — जिसे **ऊँचाई की बीमारी** कहते हैं। इसी कारण विमानों में केबिन का दबाव बनाए रखने की व्यवस्था लगाई जाती है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही वाक्यांश में तीन बारीक बातें। पहली: चढ़ाई को सीने की तंगी से जोड़ना — यही अपने आप में। दूसरी: "भिंचा हुआ" वाला शब्द तंगी पर तंगी का अर्थ देता है — यानी तीव्रता में एक क्रम। तीसरी, और सबसे बारीक: "चढ़ने" के लिए जो अरबी क्रिया-रूप आया है वह तीव्रता वाला रूप है जो केवल ऊपर उठने का नहीं, बल्कि **ज़ोर लगाने और थोड़ा-थोड़ा करके जूझने** का अर्थ देता है। व्याकरणिक रूप स्वयं वही क्रम उठाए हुए है जिसका वर्णन आज शरीर-क्रिया विज्ञान करता है।

24 गर्भाधान कराने वाली हवाएँ — जो पौधों और बादलों को ब्याहती हैं

और हमने गर्भाधान कराने वाली हवाएँ भेजीं, फिर आकाश से पानी उतारा और उसे तुम्हें पिलाया।

सूरह अल-हिज्र — आयत 22

हवा पौधों को पराग से गर्भित करती है, और बादलों को आवेश तथा धूल से

सीधी-सादी बात में

हवा केवल चीज़ें हिलाती नहीं — वह **ब्याह कराती** है। वह पराग को एक फूल से दूसरे फूल तक ले जाती है ताकि वे फल दें, और धूल तथा बिजली का आवेश बादलों तक ले जाती है ताकि वे बरसें।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हवा धकेलने और उठा ले जाने की शक्ति भर थी, इससे अधिक कुछ नहीं: वह जहाज़ चलाती और धूल उड़ाती। उसका **गर्भाधान** में कोई काम है, यह ज्ञात न था; यह तो 1694 तक सिद्ध ही नहीं हुआ था कि पौधों में भी नर और मादा होते हैं — यह जर्मन वैज्ञानिक कामेरारियुस ने सिद्ध किया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हवा से परागण हज़ारों पौध-प्रजातियों का प्रजनन-साधन है — गेहूँ, चावल, मक्का, खजूर और चीड़। और बादलों में: हवा धूल तथा नमक के वे **संघनन-नाभिक** लेकर आती है जिनके चारों ओर जल-वाष्प इकट्ठा होकर बूँदें बनती हैं, और वही बादल के ऊपरी तथा निचले भाग के बीच बिजली के आवेश अलग करती है, जिससे बिजली कड़कती है और वर्षा उतरती है। उन नाभिकों के बिना बादल बरसता ही नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो अरबी शब्द आया है वह उस क्रिया से बना कर्तृवाचक कृदन्त है जो भाषा में **गर्भाधान और जोड़ा मिलाने** के लिए ही रखी गई है — वही शब्द खजूर के हाथ से किए जाने वाले परागण के लिए प्रयुक्त होता था, जिसे अरब केवल खजूर के लिए जानते थे। उस काम को **स्वयं हवा** से जोड़ देना एक ऐसी भूमिका स्थापित करना है जो ज्ञात ही न थी। और इससे भी बारीक: आयत गर्भाधान और फिर वर्षा के उतरने को तुरन्त एक के बाद एक रखती है — यानी हवा बादल को भी गर्भित करती है ताकि वह वर्षा दे। और यह शब्द दर शब्द आधुनिक मौसम विज्ञान है।

मौसम विज्ञान

25 आकाश में पहाड़, और उनमें ओले

और वह आकाश से, उसमें मौजूद पहाड़ों से, ओले उतारता है, और जिसे चाहता है उससे मारता है।

सूरह अन-नूर — आयत 43

कपासी-वर्षा मेघ: एक विशाल पिंड जो ऊपर की ओर इस तरह उठता है मानो आकाश में कोई पहाड़ हो

सीधी-सादी बात में

ओले हर बादल से नहीं गिरते। वे केवल उन विशाल बादलों से गिरते हैं जो **आकाश में पहाड़ों की तरह उठते** हैं, और धरती के सबसे ऊँचे पहाड़ से कई गुना ऊँचाई तक पहुँचते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ज़मीन से बादल क्षैतिज रूप से फैली हुई एक चादर जैसा दिखता है, पहाड़ों जैसा नहीं। बादल की ऊँचाई जानने का कोई साधन न था, और न यह समझ थी कि बादल भिन्न आकारों और भिन्न ऊँचाइयों के होते हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ओले विशेष रूप से **कपासी-वर्षा मेघ** में ही बनते हैं: आठ से पन्द्रह किलोमीटर ऊँचा एक खड़ा पिंड — एवरेस्ट से भी ऊँचा। उसके भीतर की ऊपर उठती धाराएँ एक जल-बूँद को बार-बार शिखर तक उठाती हैं, जहाँ वह परत दर परत जमती जाती है, यहाँ तक कि इतनी भारी हो जाए कि गिर पड़े। इसीलिए यदि आप किसी ओले को चीरें तो उसके भीतर पेड़ के तने के छल्लों जैसे छल्ले मिलते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह वाक्यांश चन्द शब्दों में तीन सूचनाएँ देता है: कि बादलों का एक **पर्वताकार, खड़ा रूप** होता है; कि ओले उनके **भीतर** हैं, उनके ऊपर नहीं; और कि वे **केवल इन्हीं से** गिरते हैं, दूसरे बादलों से नहीं। और यह विशिष्टता ही सबसे बारीक हिस्सा है, जिसे ज़मीन पर खड़ा कोई व्यक्ति जान ही नहीं सकता।

आनुवंशिकी

26 एक मिली-जुली बूँद

निस्सन्देह हमने मनुष्य को एक मिली-जुली बूँद से पैदा किया, ताकि हम उसे परखें, और हमने उसे सुनने वाला और देखने वाला बनाया।

सूरह अल-इंसान — आयत 2

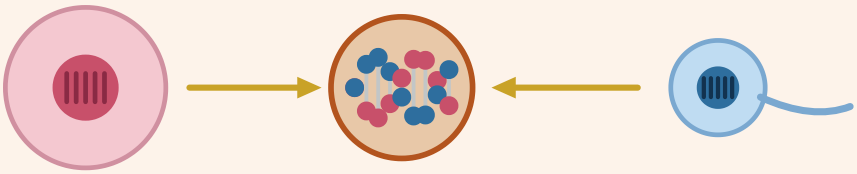

माँ से: 23 | **46 गुणसूत्र = एक नया मनुष्य** | **पिता से: 23**

अमशाज = घुले-मिले मिश्रण

पहली कोशिका एक चीज़ नहीं, बल्कि दो माता-पिता से आए दो आधों का मिश्रण है

सीधी-सादी बात में

मनुष्य किसी एक तरल से शुरू नहीं होता — बल्कि दो पदार्थों के **मिश्रण** से: आधा पिता से और आधा माता से, जो मिलकर एक नई चीज़ बन जाते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आम धारणा यही थी कि सन्तान केवल पुरुष के तरल से बनती है, और माता तो बस **एक बर्तन और एक मिट्टी है जिसमें बीज उगता है**। यह अरस्तू का स्पष्ट कथन है, और सदियों तक चिकित्सा पर इसी का राज रहा। स्त्री का अंडाणु 1827 तक खोजा ही नहीं गया था — यह कार्ल अर्न्स्ट फ़ॉन बेयर ने खोजा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

निषेचन: 23 गुणसूत्र लिए एक शुक्राणु 23 गुणसूत्र लिए एक अंडाणु से मिलता है, और एक ऐसी अकेली कोशिका बनती है जिसमें 46 गुणसूत्र होते हैं और जो समूचे मनुष्य का मूल है। इसलिए पहली बूँद दो बराबर अवयवों का **सच्चा मिश्रण** है, कोई एक अकेला पदार्थ नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो अरबी शब्द आया है उसका अर्थ है ऐसे मिश्रण जो इतने घुल-मिल गए हों कि एक को दूसरे से अलग न किया जा सके। और वह एक **एकवचन** संज्ञा का विशेषण है — यानी वह एक बूँद स्वयं मिश्रण है। यह अरस्तू के उस सिद्धान्त का सुधार है जिसने दो हज़ार वर्ष तक दुनिया पर शासन किया। और दूसरी जगहों पर बारीकी और बढ़ती है: मनुष्य "उछलते हुए पानी" से बनाया गया, और क़ुरआन नर-मादा के भेद को बूँद से जोड़ता है, गर्भाशय से नहीं।

आनुवंशिकी

27 नर और मादा — फ़ैसला पिता का है

> और यह कि उसी ने दो जोड़े पैदा किए, नर और मादा, एक बूँद से जब वह टपकाई जाती है।
>
> **सूरह अन-नज्म — आयतें 45-46**

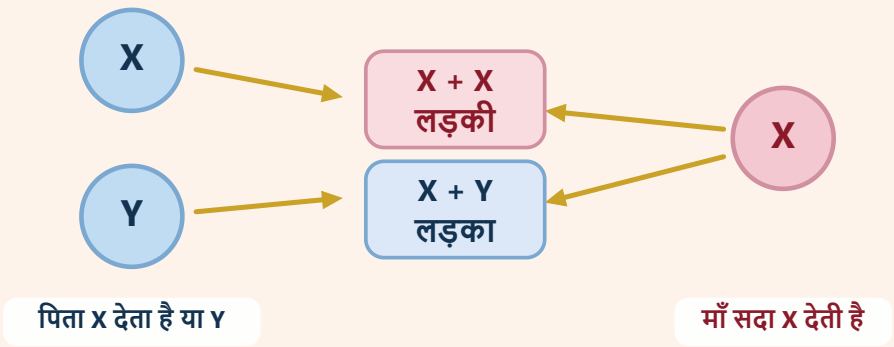

माँ के पास X के सिवा कुछ नहीं — तो फ़ैसला अकेले पिता का है

बच्चे का लिंग निषेचन के क्षण पर तय हो जाता है, उसी से जो शुक्राणु लिए हुए है

सीधी-सादी बात में

बच्चा लड़का है या लड़की? यह फ़ैसला कभी माँ की ओर से नहीं आता — यह **पिता** की ओर से आता है। माँ केवल एक ही प्रकार रखती है; पिता दोनों रखता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

बेटियाँ जनने पर स्त्रियों को दोष दिया जाता था — और कुछ समाजों में आज भी दिया जाता है — और पत्नी को इसलिए तलाक़ दिया जा सकता था कि वह "बेटे नहीं जनती"। अरस्तू ने तो इस विचार पर पूरा सिद्धान्त खड़ा कर दिया कि लिंग का फ़ैसला गर्भाशय की गर्मी और ख़ून की पक्वता करती है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

लिंग-गुणसूत्र: स्त्री XX है, पुरुष XY। अंडाणु सदा X लिए होता है, बिना किसी अपवाद के; शुक्राणु X भी ले जा सकता है और Y भी। यदि अंडाणु X वाले शुक्राणु से मिले तो सन्तान मादा होगी; यदि Y वाले से मिले तो नर। **लिंग पूरी तरह पिता की ओर से तय होता है।** यह 1905 में नेटी स्टीवंस ने खोजा।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत दोनों जोड़ों — नर और मादा — की रचना को **उस बूँद से जब वह टपकाई जाती है** जोड़ती है, और जो क्रिया आई है वह विशेष रूप से पुरुष के तरल की है। स्रोत बिना किसी दुविधा के नाम ले लिया गया। यदि यह पाठ मानवीय होता, और ऐसी संस्कृति में लिखा गया होता जो सन्तान के लिंग के लिए स्त्री को दोष देती थी, तो सुरक्षित रास्ता चुप्पी या सहमति था। इसके बजाय उसने **प्रचलित धारणा का सीधा खंडन किया और मामला पिता के ज़िम्मे डाल दिया** — और विज्ञान तेरह सदी बाद आकर उसकी पुष्टि करता है।

28 तीन अँधेरों में

वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों में बनाता है, एक रचना के बाद दूसरी रचना, तीन अँधेरों में।

सूरह अज़-ज़ुमर — आयत 6

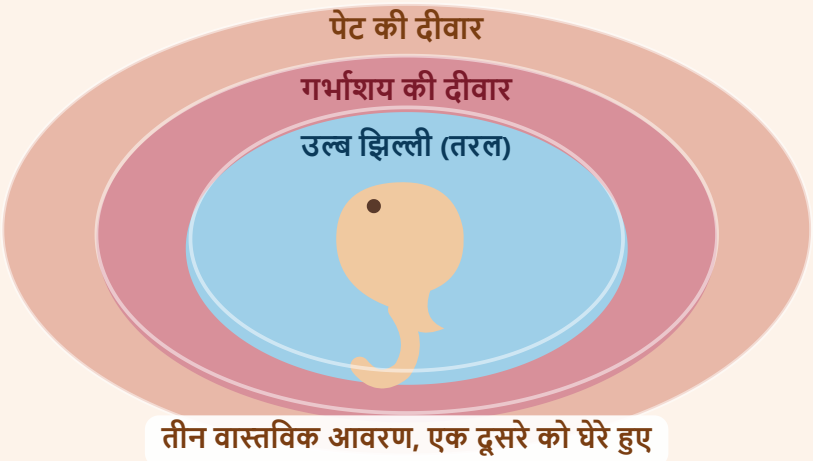

तीन परतदार परदे: पेट की दीवार, फिर गर्भाशय की दीवार, फिर भ्रूण की झिल्लियाँ

सीधी-सादी बात में

गर्भ का बच्चा एक अँधेरे कमरे में नहीं पड़ा होता — वह **तीन कमरों** में होता है, एक दूसरे के भीतर: माँ के पेट की दीवार, फिर गर्भाशय की दीवार, फिर वह तरल से भरी थैली जो उसे घेरे रहती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

गर्भवती स्त्रियों का कोई चीर-फाड़ न था और गर्भाशय की बनावट का कोई ज्ञान न था। सीधी धारणा यही थी कि बच्चा **एक अँधेरे** में है: अपनी माँ के भीतर। तीन निश्चित अँधेरे गिनाना एक सटीक दावा है, और उसके लिए परतों को एक-एक करके जानना पड़ता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

भ्रूण तीन क्रमिक परदों में बन्द है: **पेट की अगली दीवार**, फिर अपनी तीन माँसपेशी-परतों सहित **गर्भाशय की दीवार**, फिर **भ्रूण की झिल्लियाँ** (एम्नियन और कोरियन) और उनके बीच का तरल। इनमें से हर एक अपने आप में प्रकाश रोकता है, और वे बाहर से भीतर की ओर ठीक उसी क्रम में हैं जैसा कहा गया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

संख्या ही मामला तय कर देती है। क़ुरआन ने न "अँधेरे में" कहा, न ढीले-ढाले ढंग से "अँधेरों में", बल्कि निर्धारित किया: **तीन**। और संख्यात्मक दावा ग़लत हो तो तुरन्त झुठलाया जा सकता है। और वह एक दूसरे अत्यन्त सूक्ष्म वाक्यांश के साथ जुड़कर आया: "एक रचना के बाद दूसरी रचना" — यानी क्रमिक चरण, हर एक अपने से पहले वाले के बाद लाया गया। तो एक ही आयत **स्थान को उसकी परतों सहित** और **समय को उसके चरणों सहित**, दोनों का वर्णन कर देती है।

29

भ्रूणविज्ञान

चबाया हुआ लोथड़ा — जिस पर दाँतों के निशान हैं

फिर एक मांस के लोथड़े से, जिसका कुछ हिस्सा बना हुआ है और कुछ नहीं बना, ताकि हम तुम पर स्पष्ट कर दें।

सूरह अल-हज्ज — आयत 5

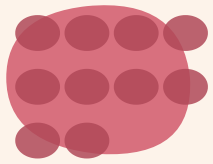

मुज़ग़ा

उभरे हुए खंडों वाला एक पिंड

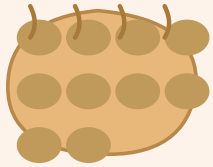

चबाई हुई गोंद का एक टुकड़ा

उस पर दाँतों के निशान

दोनों तस्वीरों की तुलना करें तो आकार की समानता चौंका देती है

चौथे सप्ताह का भ्रूण: उभरे हुए सोमाइट, मानो किसी चबाई हुई चीज़ पर दाँतों के निशान

सीधी-सादी बात में

अरबी शब्द *मुज़ग़ा* का अर्थ है **वह कौर जिसे आपने अपने दाँतों से चबाया हो**। इस चरण पर भ्रूण एक छोटा-सा पिंड है जो उभारों और नालियों से ढका है, जैसे किसी चबाई हुई गोंद पर दाँतों के छोड़े निशान।

उस समय लोग क्या मानते थे?

इस चरण का कोई ज्ञान ही न था। इसे कल्पना करने की कोई भी कोशिश भ्रूण को या तो ख़ून बताती या कोई नन्हा मानव-रूप। उसे **दाँतों के निशान लिए हुए किसी चबाई हुई चीज़** के रूप में बताना एक ऐसा विचित्र वर्णन है जो बिना देखे किसी के मन में आ ही नहीं सकता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

चौथे सप्ताह में भ्रूण की पीठ पर खंडों की एक शृंखला उभरती है, जिन्हें **सोमाइट** कहते हैं, और जिनके बीच गहरी नालियाँ होती हैं, जिससे भ्रूण किसी चबाए हुए टुकड़े जैसा दिखने लगता है। भ्रूणविज्ञानी कीथ मूर ने इस चरण के भ्रूण के बग़ल में एक चबाई हुई गोंद की तस्वीर ली, और समानता चौंकाने वाली थी। इन खंडों में से कुछ अंगों में बदल जाते हैं; बाक़ी लुप्त हो जाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो वाक्यांश इसके बाद आता है वह सबसे अधिक सूक्ष्म है: "बना हुआ **और न बना हुआ**" — यानी उसी एक लोथड़े के भीतर एक हिस्सा वह है जो कोई रचना बनता है और एक हिस्सा वह जो नहीं बनता। और यह ठीक-ठीक भ्रूणवैज्ञानिक तथ्य है: कुछ कोशिकाएँ ऊतकों और अंगों में विभेदित होती हैं, और बाक़ी एक नियोजित मृत्यु से मर जाती हैं जो अनावश्यक को हटा देती है (आज इसे एपोप्टोसिस कहते हैं)। एक ही पिंड के भीतर के विभाजन का वर्णन करना — और वह भी ऐसे समय में जब भ्रूण देखा ही नहीं गया था — अनुमान से नहीं समझाया जा सकता।

30

जीवन का उद्गम

हर जीवित वस्तु — पानी से बनी

और हमने हर जीवित वस्तु पानी से बनाई। तो क्या वे फिर भी ईमान नहीं लाएँगे?

सूरह अल-अंबिया — आयत 30

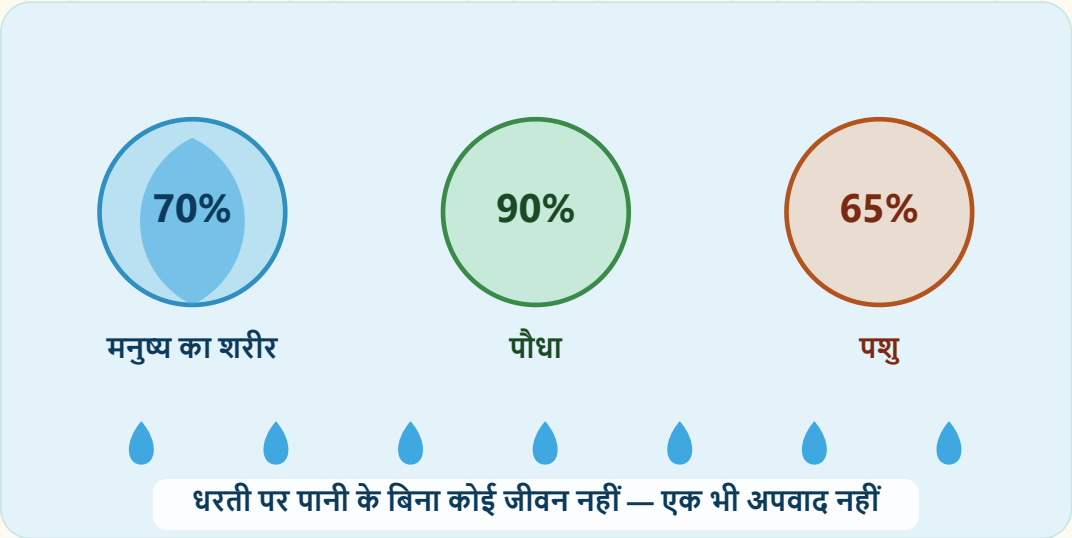

आज तक ज्ञात हर जीवधारी को पानी चाहिए और उसके बिना उसका अस्तित्व सम्भव नहीं

सीधी-सादी बात में

हर जीवित वस्तु — मनुष्य, पशु, पौधा, यहाँ तक कि सबसे छोटा जीवाणु — **पानी से बनी** है, और पानी के बिना जी नहीं सकती। आपका अपना शरीर लगभग सत्तर प्रतिशत पानी है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

एक बंजर रेगिस्तान में, जहाँ पानी दुर्लभ था और अधिकांश ज़मीन रेत और पत्थर थी, आख़िरी बात जो किसी के मन में आती वह यही होती कि पानी **हर** जीवित वस्तु का मूल है। दार्शनिक चीज़ों के मूल पर झगड़ते रहे — आग, हवा, मिट्टी, पानी — और किसी के पास ऐसा प्रमाण न था जो मामला तय कर दे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जीवित कोशिका — समूचे जीवन की इकाई — द्रव्यमान के हिसाब से लगभग 70% पानी है, और हर जैव-रासायनिक अभिक्रिया उसी के भीतर होती है। आज तक एक भी ऐसा जीव ज्ञात नहीं जो पानी के बिना चल जाए। इसीलिए किसी दूसरे लोक पर जीवन ढूँढ़ते समय अन्तरिक्ष एजेंसियाँ सबसे पहले **पानी** ही ढूँढ़ती हैं — उनका घोषित सूत्र ही है: "पानी के पीछे चलो।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार **"हर"** शब्द में है। आयत ने यह नहीं कहा कि पानी जीवन का एक कारण है, और न यह कि अधिकांश जीवित वस्तुएँ पानी से हैं — उसने पानी को बिना किसी अपवाद के हर जीवित वस्तु का मूल बना दिया। और यह **एक सार्वभौमिक नियम है, इसलिए झुठलाया जा सकने वाला**: कोई एक भी ऐसा जीव जिसे पानी की आवश्यकता न हो, इसे गिरा देता। विज्ञान चौदह सदियों से धरती के हर वातावरण में ढूँढ़ता रहा — बर्फ़ में, ज्वालामुखी छिद्रों में, गहरे समुद्र में, नाभिकीय संयंत्रों के भीतर — और एक भी अपवाद नहीं मिला।

जैव रसायन

31 हरे पेड़ के भीतर जमा की हुई आग

> वही जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग बनाई, तो देखो, तुम उसी से आग सुलगाते हो।
>
> **सूरह या-सीन — आयत 80**

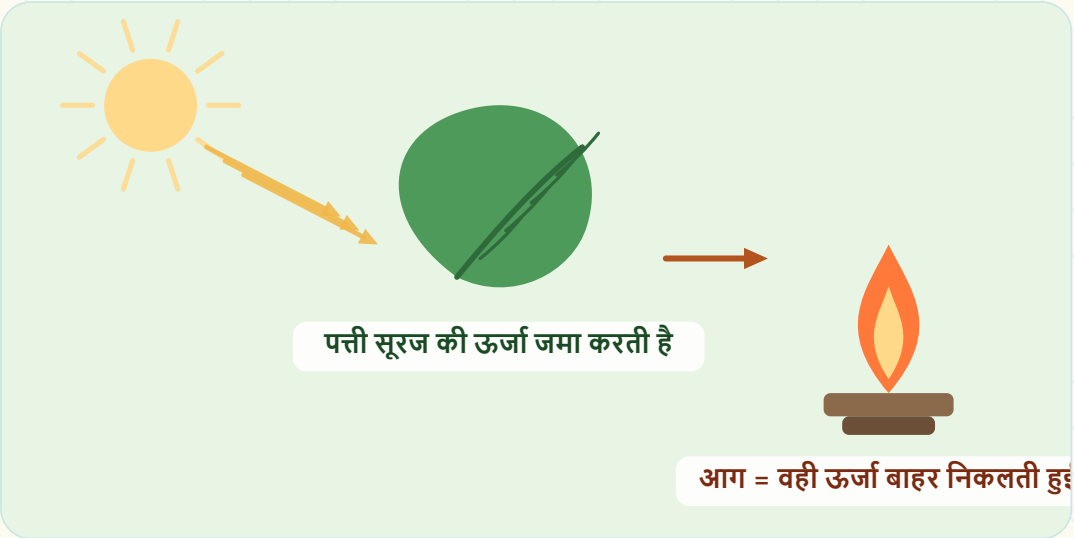

पेड़ सूरज की रोशनी को अपने भीतर जमा करता है, और आग उसे फिर छोड़ देती है

सीधी-सादी बात में

जो आग जलावन की लकड़ी में जलती है वह नई नहीं है — वह **स्वयं सूरज की वही रोशनी** है जिसे पेड़ ने तब जमा किया था जब वह हरा और ज़िन्दा था। जब आप लकड़ी जलाते हैं, तो आप एक पुराने, क़ैद सूरज को आज़ाद कर रहे होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हरा और गीला होना तो हर मन में आग का उलटा है: हरी टहनी नहीं जलती, सूखी जलती है। आग को ख़ास तौर पर **"हरे पेड़"** से जोड़ना रोज़मर्रा के अवलोकन का खंडन करता हुआ लगता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रकाश संश्लेषण: हरी पत्ती सूरज की रोशनी के फ़ोटॉन पकड़ती है और उन्हें शर्करा तथा सेलुलोज़ के अणुओं के बन्धों में जमा रासायनिक ऊर्जा में बदल देती है। और दहन ठीक इसकी उलटी प्रक्रिया है: वह उन बन्धों को तोड़कर ऊर्जा को प्रकाश और ताप के रूप में छोड़ देता है। हम जो भी ईंधन काम में लाते हैं — लकड़ी, कोयला, तेल, गैस — वह किसी हरे पौधे की जमा की हुई सौर ऊर्जा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

निर्धारण ही इसे चमत्कार बनाता है। आयत ने "पेड़ से आग" नहीं कहा, बल्कि "**हरे** पेड़ से" — और हरापन ठीक वही अवस्था है जिसमें प्रकाश संश्लेषण और संचय होता है। आग को उस चरण से जोड़ा गया जिसमें ऊर्जा **जमा की जाती** है, उस चरण से नहीं जिसमें वह जलाई जाती है। सूखी लकड़ी केवल उसी के बल पर जलती है जो उसने हरे रहते इकट्ठा किया था। यह किसी अवस्था और किसी परिणाम के बीच पूरी तरह सही कारण-सम्बन्ध है, और यह 1817 में क्लोरोफ़िल की खोज तक समझा ही नहीं गया था।

न्यायालयिक विज्ञान

32 उँगलियों के निशान — आपकी इकलौती पहचान

क्या मनुष्य समझता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी न कर सकेंगे? क्यों नहीं — हम तो उसकी उँगलियों के पोरों तक को ठीक-ठीक बना देने में सक्षम हैं।

सूरह अल-क़ियामह — आयतें 3-4

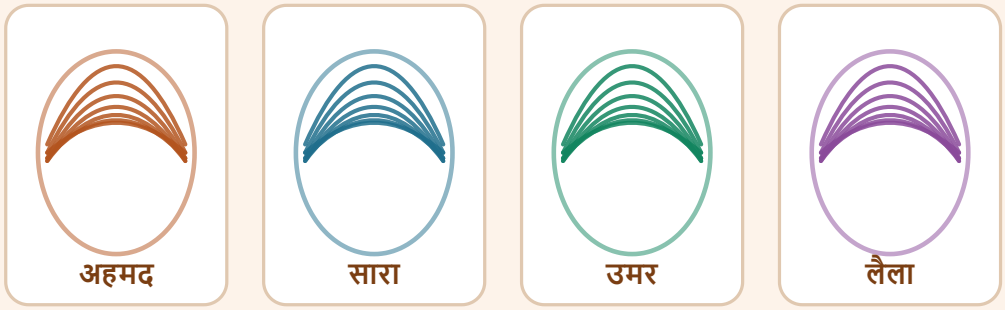

दो निशान कभी नहीं मिलते — जुड़वाँ के भी नहीं

आठ अरब लोग... आठ अरब अलग-अलग उँगलियों के निशान

सीधी-सादी बात में

आपकी उँगलियों के पोरों पर बारीक लकीरें हैं। ये लकीरें **किसी दूसरे मनुष्य में कभी नहीं दोहराई जातीं** — उस जुड़वाँ में भी नहीं जो बाक़ी हर बात में आपसे मिलता हो।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उँगलियों के पोर त्वचा का एक साधारण टुकड़ा थे; न कोई उन्हें देखता था न उन्हें विशिष्ट समझता था। किसी के मन में यह आया ही नहीं कि उनमें वह चीज़ है जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करती है। उँगलियों के निशान 1892 तक आधिकारिक रूप से पहचान के लिए इस्तेमाल नहीं हुए — और तब अर्जेंटीना में।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उँगलियों के पोरों की उभरी लकीरें गर्भ के दसवें सप्ताह में बनती हैं, जीनों और गर्भाशय के भीतर उल्बीय तरल के दबावों के एक जटिल पारस्परिक खेल से — और वे **बिलकुल अनन्य** निकलती हैं। वे जीवन भर अटल रहती हैं — न बदलती हैं न मिटाई जा सकती हैं, और ऊपरी त्वचा जल भी जाए तो वैसी ही लौट आती हैं। पूरी दुनिया की पहचान-व्यवस्थाएँ इन्हीं पर टिकी हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सन्दर्भ ही कुंजी है। आयत मुर्दों के जी उठने और हड्डियों के इकट्ठे किए जाने की बात कर रही है। जो इसे असम्भव समझता है उसे जवाब में यह अपेक्षित था: हाँ, हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी कर सकते हैं। पर जवाब कहीं अधिक सूक्ष्म चीज़ के साथ आया: "क्यों नहीं — हम तो उसकी **उँगलियों के पोरों** तक को ठीक-ठीक बना देने में सक्षम हैं।" शरीर के सारे अंगों में से **उँगलियों के पोरों** को चुन लेना — और वह भी ठीक उस जगह जहाँ बात किसी चीज़ को **हूबहू वैसा ही** लौटा देने की सामर्थ्य की हो रही है — अनन्यता और पहचान के ठिकाने की ओर इशारा है। और यह उसके बाद बारह सदी तक अज्ञात रहा।

33

उड़ान का विज्ञान

पंख फैलाए हुए, और उन्हें समेटते हुए

क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखा, पंख फैलाए हुए और उन्हें समेटते हुए? उन्हें कोई नहीं थामे हुए सिवाय अत्यन्त कृपाशील के।

सूरह अल-मुल्क — आयत 19

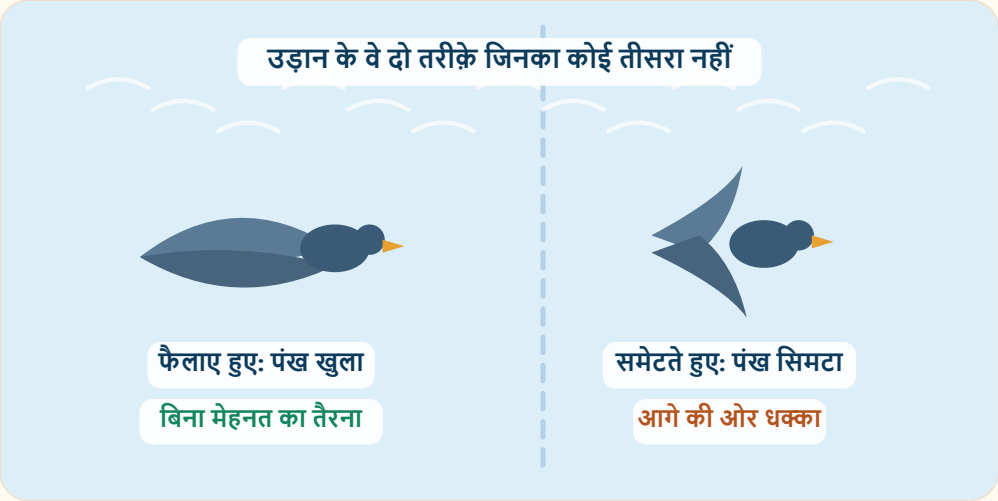

फैले पंख पर तैरना और समेटे हुए पंख से फड़फड़ाना: धरती की सारी उड़ान इन्हीं दो में से एक है

सीधी-सादी बात में

पक्षी केवल दो तरह से उड़ते हैं: या तो वे **अपने पंख फैला** लेते हैं और उन्हें हिलाए बिना हवा में तैरते हैं, या उन्हें **समेटकर** फड़फड़ाते हैं ताकि ख़ुद को आगे धकेलें। क़ुरआन ने दोनों के नाम ले लिए और तीसरा कुछ नहीं जोड़ा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उड़ान देखने की चीज़ थी, विश्लेषण की नहीं। न किसी ने उड़ान के दो प्रकारों में भेद किया, न यह जाना कि कौन-सा उत्थापन देता है और कौन-सा आगे का धक्का। सदियों तक मनुष्य पंख फड़फड़ाने की नक़ल करके उड़ने की कोशिश करता रहा, और असफल रहा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

वायुगतिकी पक्षियों की उड़ान को दो प्रकारों में बाँटती है, तीसरा कोई नहीं: स्थिर, फैले पंख पर **तैरना और मँडराना**, जो ऊपर उठती धाराओं का लाभ उठाता है, और **फड़फड़ाती उड़ान**, जिसमें पंख समेटकर और फैलाकर आगे का धक्का पैदा किया जाता है। अब तक बना हर विमान पहले ही सिद्धान्त पर टिका है — स्थिर, फैला हुआ पंख। मनुष्य उड़ने में तभी सफल हुआ जब उसने फड़फड़ाहट की नक़ल छोड़कर फैलाव अपनाया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उड़ान को दो प्रकारों तक सीमित कर देना पहली बारीकी है। दूसरी **व्याकरण** में है: "फैलाए हुए" कर्तृवाचक कृदन्त के रूप में आया है, जो एक ठहरी हुई, निरन्तर अवस्था बताता है, जबकि "समेटते हैं" वर्तमान काल की क्रिया के रूप में आया है, जो दोहराव और रुकावट बताता है। और भौतिक अन्तर ठीक यही है: फैलाना एक बनी रहने वाली अवस्था है, समेटना एक दोहराई जाने वाली गति। और तीसरी बारीकी: "फैलाए हुए" को "समेटते हैं" से पहले रखा गया — क्योंकि फैला हुआ पंख ही वह बुनियाद है जो उत्थापन पैदा करती है, और फड़फड़ाहट उस पर एक अतिरिक्त चीज़ है।

घाव चिकित्सा

34 गुफ़ा वालों को करवट दिलाना — और शय्या-व्रण से बचाव

और तुम उन्हें जागा हुआ समझते, हालाँकि वे सोए हुए थे। और हम उन्हें दाईं ओर और बाईं ओर करवट दिलाते रहते थे।

सूरह अल-कहफ़ — आयत 18

आज दुनिया के हर अस्पताल की शय्या-देखभाल की वही निर्धारित विधि

सीधी-सादी बात में

गुफ़ा वाले बहुत लम्बे समय तक सोए, और अल्लाह **उन्हें दाएँ-बाएँ करवट दिलाता रहा**। आज की चिकित्सा कहती है: जो रोगी बिना हिले पड़ा रहे उसे **घाव पड़ जाते हैं और मांस गलने लगता है** — और इसका एकमात्र उपाय करवट बदलना है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों की निगाह में नींद शुद्ध विश्राम थी, चाहे जितनी लम्बी हो, हानिरहित। यह पता न था कि **शरीर को एक ही मुद्रा में थामे रखना** ऊतकों को नष्ट कर देता है। इसलिए लम्बी नींद की कहानी में करवट दिलाने का ज़िक्र एक ऐसा विवरण लगता था जिसका कोई प्रयोजन नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शय्या-व्रण (दाब-व्रण): ये तब उठते हैं जब शरीर का भार किसी एक जगह पर दबाव डालता है और वहाँ का रक्त-प्रवाह काट देता है, तो कोशिकाएँ मरती हैं और त्वचा में घाव पड़ता है, फिर माँसपेशी में, फिर हड्डी तक। पूर्ण निश्चलता के **दो घंटों** के भीतर क्षति शुरू हो जाती है। यह लम्बे समय बिस्तर पर रहने की सबसे ख़तरनाक जटिलताओं में है और जान ले सकती है। और दुनिया की हर नर्सिंग-विधि में स्वीकृत बचाव यही है: **रोगी को हर दो घंटे में करवट दिलाइए, दाएँ और बाएँ**।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि आयत करवट का ज़िक्र न यूँ ही करती है, न कहानी की सजावट के तौर पर। वह इस सिलसिले में आता है कि **उनके शरीर उस लम्बी अवधि में सुरक्षित कैसे रहे** — और इसके लिए यह जानना पड़ता है कि निश्चल शरीर सड़ता है, और यह कि **करवट ही उपाय है**। और शब्द तो और भी सूक्ष्म हैं: "दाईं ओर और बाईं ओर" — और यह ठीक वही करवट की मुद्रा है जिसकी चिकित्सा सिफ़ारिश करती है (30 डिग्री का झुकाव), क्योंकि यह त्रिकास्थि और एड़ियों पर से दबाव हटा देती है, जो सबसे ख़तरनाक जगहें हैं। फिर उसी आयत में एक और विवरण: "**और उनका कुत्ता द्वार पर अपनी अगली टाँगें फैलाए हुए था**" — और अगली टाँगें फैलाना विश्राम की मुद्रा है, पहरे की नहीं, और कुत्ता यही करता है जब उसका लेटना लम्बा हो जाए।

35

लोहा

लोहा — उतारा गया, यहाँ बनाया नहीं गया

और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ी शक्ति है और लोगों के लिए फ़ायदे हैं।

सूरह अल-हदीद — आयत 25

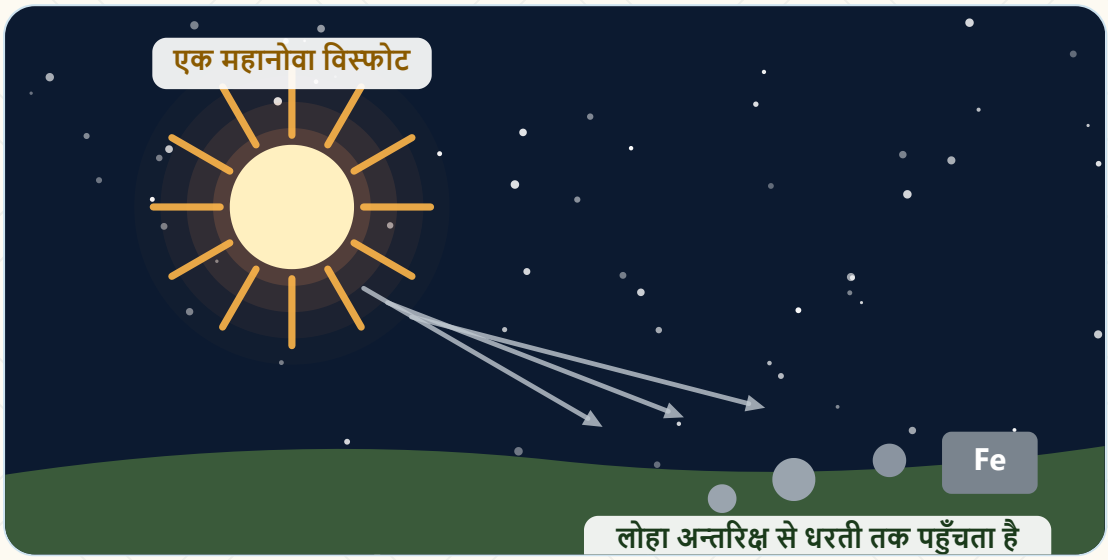

धरती का — और आपके ख़ून का — लोहे का हर परमाणु किसी तारे के भीतर जन्मा था

सीधी-सादी बात में

धरती का सारा लोहा, यहाँ तक कि आपके ख़ून का लोहा भी, यहाँ नहीं बना। वह **अन्तरिक्ष में विशाल तारों के विस्फोट** से आया, और फिर धरती पर गिरा। और क़ुरआन ने "हमने लोहा पैदा किया" नहीं कहा; उसने कहा: **"हमने उतारा"**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों की निगाह में धातुएँ ज़मीन से खोदकर निकाली जाती थीं: वे धरती की थीं और उसी की जाति की थीं। किसी विशेष धातु के **इस ग्रह के बाहर से आने** की कोई कल्पना ही न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

तारों के भीतर का नाभिकीय संलयन लोहे तक के तत्व बनाता है — और वहीं रुक जाता है, क्योंकि लोहा बनाने में **ऊर्जा ख़र्च होती है, निकलती नहीं**। इसलिए कोई साधारण तारा इससे भारी कुछ बना ही नहीं सकता। केवल महानोवा विस्फोट ही लोहे को अन्तरिक्ष में फेंकते हैं। हमारा ग्रह और उसका सारा लोहा उसी तारकीय धूल से इकट्ठा हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़ुरआन ने "उतारने" की क्रिया ख़ास तौर पर लोहे के साथ इस्तेमाल की, और वह भी ऐसे प्रसंग में जो रसूलों के भेजे जाने और किताबों के उतारे जाने की बात कर रहा है — यानी उस चीज़ के सन्दर्भ में जो **ऊपर से** आती है। और भौतिक सच्चाई शाब्दिक रूप से यही है। इसमें यह भी जोड़िए कि लोहे की परमाणु संख्या 26 है और द्रव्यमान संख्या 56, कि सूरह अल-हदीद क़ुरआन की 57वीं सूरह है, और कि मानक गिनती में यह 25वीं आयत है। पर सबसे प्रबल प्रमाण एक ही शब्द रहता है: "हमने उतारा।"

36

बाल चिकित्सा

दूध पिलाने के दो पूरे वर्ष

माताएँ अपने बच्चों को दो पूरे वर्ष दूध पिलाएँ, उसके लिए जो दूध पिलाने की अवधि पूरी करना चाहे।

सूरह अल-बक़रह — आयत 233

क़ुरआन — 1,400 वर्ष पहले

24 महीने

"दो पूरे वर्ष"

उसके लिए जो पूरा करना चाहे

विश्व स्वास्थ्य संगठन

24 महीने

"दो वर्ष या अधिक"

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत सिफ़ारिश

वही संख्या... चौदह सदियों के फ़ासले से

विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफ़ारिश अवधि और सिद्धान्त, दोनों में आयत से मेल खाती है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने स्तनपान की पूरी अवधि **दो पूरे वर्ष** तय की। और विश्व स्वास्थ्य संगठन आज ठीक इतनी ही अवधि की सिफ़ारिश करता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

दूध पिलाने की अवधि रिवाज और हालात के अनुसार क़ौमों में बहुत अलग-अलग थी — कुछ महीनों से लेकर कई वर्षों तक, बिना किसी वैज्ञानिक आधार के। बच्चे के विकास और रोग-प्रतिरोध के लिए आदर्श अवधि जानने का कोई साधन ही न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ़ **छह महीने तक केवल माँ का दूध**, फिर ऊपरी आहार के साथ-साथ **दो वर्ष या उससे आगे तक** जारी रखने की सिफ़ारिश करते हैं। यह सिद्ध हो चुका है कि माँ का दूध ऐसे प्रतिरक्षी लिए होता है जो बच्चे की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बनाते हैं, कि वह शिशु-मृत्यु, संक्रमण और मधुमेह घटाता है, और बेहतर बौद्धिक विकास से जुड़ा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बारीकी केवल संख्या में नहीं, बल्कि **उसके साथ लगी शर्त** में है: "उसके लिए जो दूध पिलाने की अवधि पूरी करना चाहे"। आयत ने दो वर्ष को कोई कठोर अनिवार्यता नहीं बनाया; उसने उन्हें **पूर्णता की सिफ़ारिश की गई ऊपरी सीमा** बनाया — और यह आधुनिक चिकित्सकीय सिफ़ारिश का ठीक-ठीक वही शब्द-विन्यास है ("दो वर्ष या अधिक", न कि "दो वर्ष अनिवार्य")। फिर उसने और लचीलापन जोड़ा: माता-पिता दोनों की आपसी रज़ामन्दी और परामर्श से जल्दी दूध छुड़ाना जायज़ है, और किसी दूसरी स्त्री से दूध पिलवाना भी जायज़ है। यह संख्या में और सिफ़ारिश की आत्मा में, दोनों में चिकित्सा से मेल खाती है।

प्रसूति विज्ञान

37 खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ

और खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ; वह तुम पर पकी हुई ताज़ा खजूरें गिराएगा। तो खाओ और पिओ और आँखें ठंडी रखो।

सूरह मरयम — आयतें 25-26

आज अन्तिम सप्ताहों में और प्रसव के बाद गर्भवती स्त्रियों के लिए खजूर की सिफ़ारिश की जाती है

सीधी-सादी बात में

एक स्त्री खजूर के पेड़ के नीचे अकेली बच्चे को जन्म देती है, और उससे कहा जाता है: **ताज़ा खजूरें खाओ**। आज की चिकित्सा कहती है कि प्रसव के समय और उसके बाद स्त्री जो कुछ खा सकती है उसमें खजूर सबसे अच्छी चीज़ों में है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ताज़ा खजूर एक जाना-पहचाना और बहुत पसन्द किया जाने वाला भोजन था, पर प्रसव में उसका कोई विशेष चिकित्सकीय प्रभाव ज्ञात न था। प्रसव के बाद स्त्री के लिए आम सलाह विश्राम, गर्मी और शोरबा थी। ठीक उस निर्णायक क्षण पर किसी एक ख़ास फल को चुन लेना एक चौंकाने वाला निर्धारण है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

समकक्ष-समीक्षित पत्रिकाओं में छपे नैदानिक अध्ययन दिखा चुके हैं कि गर्भ के अन्तिम सप्ताहों में खजूर खाना **प्रसव-पीड़ा की अवधि घटाता है और प्रसव-प्रेरण की आवश्यकता कम करता है**। खजूर में तेज़ी से सोख ली जाने वाली फ़्रक्टोज़ और ग्लूकोज़ भरपूर हैं — ठीक वही जो एक माँ को अपनी शक्ति ख़र्च हो जाने के बाद चाहिए — तथा पोटैशियम, लोहा और मैग्नीशियम भी; और उसमें ऐसे यौगिक होते हैं जो **ऑक्सीटोसिन** की तरह काम करते हैं, गर्भाशय को सिकुड़ने में मदद देते हैं और रक्तस्राव घटाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ तीन बातों पर ध्यान दीजिए। पहली, फल निर्धारित है — ख़ास तौर पर खजूर और कुछ नहीं, इस अवस्था के लिए सबसे उपयुक्त सम्भव भोजन। दूसरी, अवस्था निर्धारित है — "**पकी हुई ताज़ा खजूरें**", नरम और ताज़ी, सूखी नहीं, जो जल्दी सोख ली जाती हैं और पचने में आसान हैं। तीसरी, और सबसे विलक्षण: **तने को हिलाने** का आदेश — अपनी सबसे अधिक कमज़ोरी के क्षण में एक स्त्री को हिलने और ज़ोर लगाने का हुक्म दिया जा रहा है। आधुनिक चिकित्सा प्रसव-पीड़ा के दौरान हिलने-डुलने की सिफ़ारिश ठीक इसीलिए करती है कि वह प्रसव को तेज़ करता है। भोजन, गति और शान्त दिल ("आँखें ठंडी रखो") — एक पूरी की पूरी विधि।

38

पोषण विज्ञान

बहाया हुआ ख़ून और सूअर का मांस क्यों वर्जित हुए

कह दो: जो कुछ मेरी ओर वह्य किया गया है उसमें मैं किसी खाने वाले पर कुछ वर्जित नहीं पाता, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो, या बहाया हुआ ख़ून, या सूअर का मांस — क्योंकि वह अपवित्र है।

सूरह अल-अनआम — आयत 145

बहाया हुआ ख़ून

पनपने का आदर्श माध्यम जीवाणुओं के लिए और वह कचरा ढोता है

सूअर का मांस

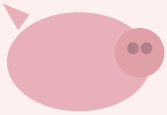

ट्राइकिनेला कृमि और फ़ीताकृमि तथा टॉक्सोप्लाज़्मा और संतृप्त वसा

मुर्दार

किसी रोग या ज़हर से मरा और उसका ख़ून उसी में बन्द है तो वह जल्दी सड़ता है

तीन निषेध... और तीन कारण जो चिकित्सा ने सदियों बाद सिद्ध किए

निषेध, उसके कारण के ज्ञान से चौदह सदी पहले आ गया

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने तीन चीज़ें वर्जित कीं: बहता हुआ ख़ून, सूअर का मांस, और वह पशु जो अपने आप मर गया हो। और आज विज्ञान दिखाता है कि इनमें से हर एक **रोग का ज्ञात वाहक** है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भोजन रिवाज, स्वाद और उपलब्धता से चुना जाता था। परजीवियों का, जीवाणुओं का, या पशुओं से मनुष्यों तक पहुँचने वाले रोगों का कोई ज्ञान न था। धरती की अधिकतर सभ्यताओं में सूअर का मांस बिना किसी हिचक के खाया जाता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ख़ून जीवाणुओं के पनपने का आदर्श माध्यम है, और वह उपापचयी कचरा, हार्मोन तथा विष गुर्दों की ओर ले जाता है। **सूअर** ट्राइकिनेला कृमि का प्रमुख वाहक है, जो माँसपेशी में पुटी बना लेता है और हलके पकाने में बच जाता है; तथा सूअर के फ़ीताकृमि का, जिसके लार्वा मस्तिष्क तक पहुँच सकते हैं; और टॉक्सोप्लाज़्मा का — इसके अलावा उसमें संतृप्त वसा भी अधिक है। **मुर्दार** किसी रोग या ज़हर से मरा हो सकता है, और उसका ख़ून उसके ऊतकों में ही बन्द रह जाता है, इसलिए वह जल्दी सड़ता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सूक्ष्म शर्त है "**बहाया हुआ**"। निषेध हर ख़ून पर नहीं पड़ा, बल्कि उस बहते ख़ून पर पड़ा जो ज़बह के समय बहाया जाता है। जो ऊतकों में पिरोया रह जाता है — मायोग्लोबिन — वह छूट गया, और वैसे भी उसे निकालने का कोई उपाय है ही नहीं। निषेध **ऐसी वैज्ञानिक बारीकी से तौला गया है जो न कम पड़ती है न हद से बढ़ती है**। यही बात ज़बह की विधि पर भी लागू है: उसमें गले की नसों को काटना ज़रूरी है ताकि सारा ख़ून निकल जाए — और मांस-सुरक्षा के मानक आज ठीक यही सिफ़ारिश करते हैं ताकि जीवाणु-भार घटे। एक ऐसे विज्ञान से मेल खाता पूरा क़ानून, जो अभी पैदा ही नहीं हुआ था।

39

कीट विज्ञान

वह चींटी जिसने बोलकर चेतावनी दी

> यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में आ पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा: ऐ चींटियो, अपने घरों में घुस जाओ, कहीं सुलैमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें।
>
> **सूरह अन-नम्ल — आयत 18**

एक चींटी अपनी बस्ती को चेताती है, और पूरी बस्ती अपने बिलों में सिमट जाती है

सीधी-सादी बात में

एक छोटी चींटी ने आती हुई सेना देखी और बाक़ी चींटियों को चेताया कि अपने घरों में चली जाएँ। और विज्ञान कहता है: चींटियाँ सचमुच **ख़तरे के संकेत भेजती** हैं, और पूरी बस्ती एक साथ प्रतिक्रिया करती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पुरानी धारणा में पशु एक गूँगा जीव था जिसकी न कोई भाषा थी न कोई संगठन। यह कि एक अकेली चींटी ऐसा वाक्य कह दे जिसमें **एक पुकार, एक आदेश, एक चेतावनी, एक कारण और आक्रमणकारी के लिए एक उज़्र** हो ("और वे जानते नहीं") — सुनने वाले को यह किसी तथ्यात्मक ख़बर से अधिक कोई प्रतीकात्मक कहानी लगती।

आज विज्ञान क्या कहता है?

चींटियाँ धरती के सबसे अधिक संगठित सामाजिक जीवों में हैं, और वे तीन प्रमाणित तरीक़ों से सम्पर्क करती हैं: **रासायनिक फ़ेरोमोन** — हर सन्देश का अपना पदार्थ है, जिसमें ख़तरे का फ़ेरोमोन भी है, जो इतनी तेज़ी से फैलता है कि बस्ती सेकंडों में प्रतिक्रिया करती है; **थपथपाहट और कम्पन**; और **ध्वनि** — यह खोजा गया कि चींटियों के पास एक रगड़-अंग होता है जो निश्चित अर्थ वाली ध्वनियाँ निकालता है, जिन्हें प्रयोगशाला में रिकॉर्ड करके विश्लेषित किया गया है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

छोटे-छोटे विवरण ही प्रमाण हैं। पहला: क्रिया "**कहा**" स्त्रीलिंग में आई है — और जो श्रमिक चींटियाँ बाहर निकलती हैं, पहरा देती हैं और चेतावनी देती हैं वे **सब मादा** हैं, जबकि नरों का सम्भोग के सिवा कोई काम नहीं और वे उसके बाद मर जाते हैं। दूसरा: "**अपने घरों**" में घुसने का आदेश — और चींटी का बिल सचमुच एक घर है, जो कक्षों, सुरंगों और भंडारों में बँटा होता है। तीसरा: "कहीं वे तुम्हें कुचल न डालें" — अरबी क्रिया का अर्थ तोड़ना है, और चींटी का शरीर एक कठोर बाह्यकंकाल है जो **पिचकता नहीं, टूटता है**। एक ही आयत में तीन बारीकियाँ।

40

खगोल विज्ञान एवं पंचांग

तीन सौ वर्ष, और नौ और

और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ वर्ष रहे, और नौ और बढ़ गए।

सूरह अल-कहफ़ — आयत 25

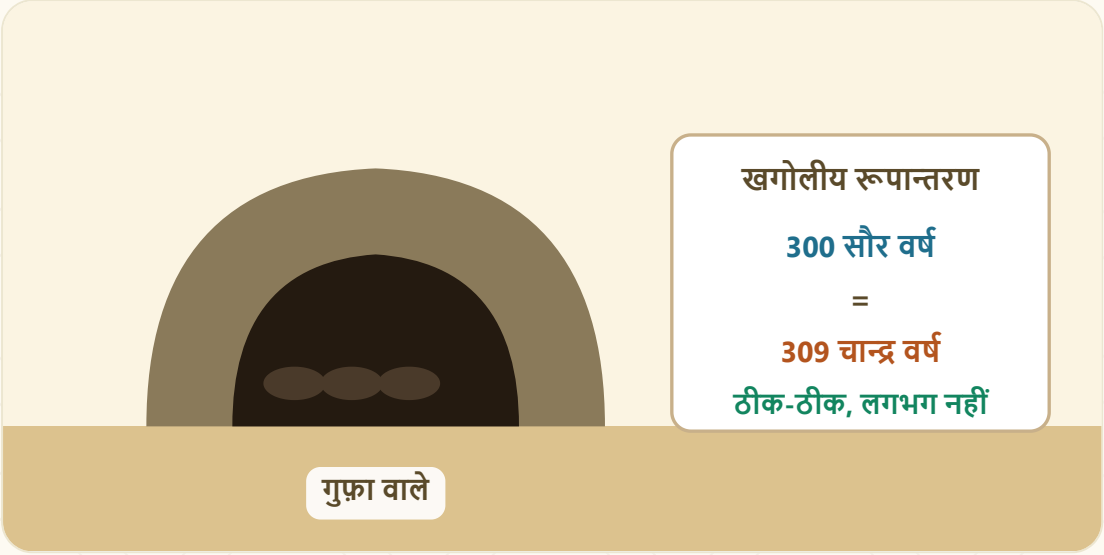

दो पंचांगों का अन्तर तीन शताब्दियों में ठीक नौ वर्ष बैठता है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने कहा वे **तीन सौ वर्ष** रहे, फिर जोड़ा: **"और नौ और बढ़ गए"**। कारण सुन्दर है: तीन सौ सौर वर्ष ठीक तीन सौ नौ चान्द्र वर्षों के बराबर होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग हर क्षेत्र में एक ही पंचांग इस्तेमाल करते थे और पंचांगों के बीच रूपान्तरण नहीं करते थे। किसी गोल संख्या के बाद "नौ" जोड़ना एक विचित्र, निरर्थक बढ़ोतरी लगती थी — कुछ पाठकों ने तो इसे संख्या के बारे में झिझक ही समझ लिया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सौर वर्ष 365.2422 दिन का है और चान्द्र वर्ष 354.367 दिन का। तो तीन सौ सौर वर्ष = 109,572.6 दिन। इसे चान्द्र वर्ष की लम्बाई से भाग दीजिए तो **309.2** चान्द्र वर्ष निकलते हैं। अन्तर ठीक नौ वर्ष है। गुफ़ा वाले रोमी माहौल में रहते थे जो सौर पंचांग इस्तेमाल करता था, जबकि क़ुरआन ऐसी क़ौम को सम्बोधित करता है जो चान्द्र पंचांग इस्तेमाल करती है — तो उसने आँकड़ा एक ही साथ दोनों पंचांगों में दे दिया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यदि संख्या मनमानी होती तो "तीन सौ वर्ष" कहकर रुक जाती, या "तीन सौ और कुछ" कहती। पर बढ़ोतरी **ठीक नौ के रूप में निर्धारित** होकर आई — और यही खगोलीय रूपान्तरण का ठीक-ठीक परिणाम है। और शब्दों पर ध्यान दीजिए: "तीन सौ वर्ष **और नौ और बढ़ गए**" — क्रिया बताती है कि ये नौ कोई और अवधि नहीं जो उन्होंने गुज़ारी, बल्कि **गिनती में बढ़ोतरी है, समय में नहीं**: अवधि एक ही है और संख्या पंचांग के साथ बदल जाती है। यही अकेला पठन है जो गणित और भाषा, दोनों में एक साथ टिकता है।

पुरातत्व

41 समूद, जिन्होंने पहाड़ों को तराशकर घर बनाए

और तुम पहाड़ों को तराशकर, कुशलता से, घर बनाते हो। ... और वे पहाड़ों को तराशकर घर बनाते थे, निश्चिन्त होकर।

सूरह अश-शुअरा 149 — और सूरह अल-हिज्र 82

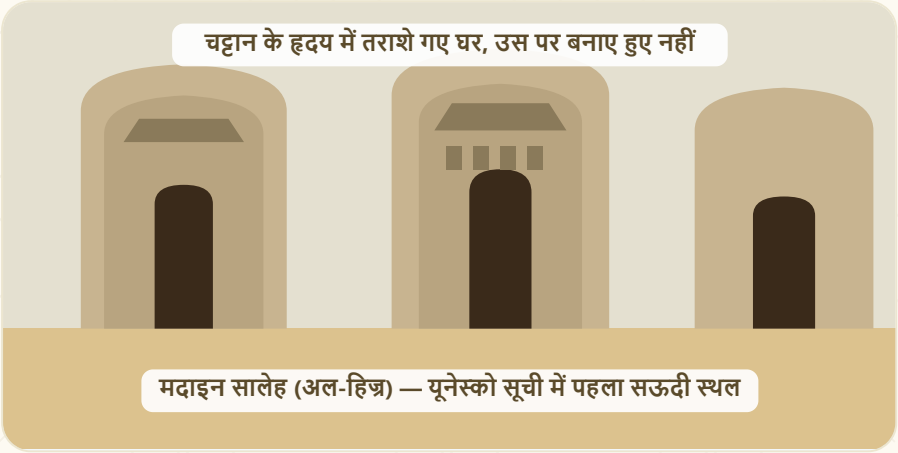

चट्टान के ऊपरी सिरे से नीचे की ओर काटे गए विशाल मुखपट — जिनमें एक भी ग़लती की गुंजाइश नहीं

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने कहा कि समूद की क़ौम ने **अपने घर पहाड़ों के भीतर तराशे** — पत्थर से बनाए नहीं, बल्कि पहाड़ को ही खोखला करके घर बना लिया। वे घर आज भी खड़े हैं और आगन्तुक उन्हें देखते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब में जो निर्माण ज्ञात था वह मिट्टी, पत्थर और खजूर की टहनियों का था। किसी पूरी सभ्यता का अपने घर पहाड़ों के शरीर में तराश लेना सुनने वालों के लिए एक अजनबी विचार था। और क़ुरआन ने एक ऐसी विशेष क़ौम का नाम लिया जिसका ज़िक्र न तौरात में है न यूनानी किताबों में, और उसे एक विशेष निर्माण-तकनीक से जोड़ दिया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उत्तरी सऊदी अरब के अल-उला में **मदाइन सालेह (अल-हिज्र)**: बलुआ पत्थर में तराशे गए 130 से अधिक मुखपट, जिनमें कुछ बीस मीटर से भी ऊँचे हैं, और जिनमें स्तम्भ, शीर्ष, कार्निस तथा समूदी और नबती शिलालेख हैं। 2008 में यह यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में दर्ज होने वाला पहला सऊदी स्थल बना। स्थल का नाम क़ुरआन में आया है: "और निस्सन्देह **अल-हिज्र वालों** ने रसूलों को झुठलाया।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो क्रिया आई है वही मामला तय कर देती है: "**वे तराशते हैं**", न कि "वे बनाते हैं"। अरबी में तराशना किसी ठोस पिंड में से पदार्थ निकालना है — जो बनाने का ठीक उलटा है। फिर निर्धारण: "**पहाड़ों में से**" — पहाड़ स्वयं ही घर की सामग्री है। यह एक ऐसी तकनीक का सटीक वर्णन है जिसकी सुनने वालों के आस-पास कोई मिसाल ही न थी। और उसने अर्थ से भरा एक मनोवैज्ञानिक विवरण भी जोड़ा: "**निश्चिन्त होकर**" — ये घर न गिरते हैं, न जलते हैं, और न कोई दुश्मन इन्हें ढा सकता है, क्योंकि वे स्वयं चट्टान हैं। और इसी से आयत की बात तीखी हो जाती है: सबसे बड़ी अभियान्त्रिक सुरक्षा भी उनके किसी काम न आई।

42

पुरातात्विक शिलालेख

खाई वाले, जिन्होंने ईमान वालों के लिए आग खोदी

मारे गए खाई वाले — ईंधन से भरी आग वाले — जब वे उसके पास बैठे हुए थे, और वे ईमान वालों के साथ जो कुछ कर रहे थे उसके गवाह थे।

सूरह अल-बुरूज — आयतें 4-7

एक ऐतिहासिक नरसंहार, जो यमनी शिलालेखों और समकालीन सुरयानी पत्रों में दर्ज है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने एक ऐसी क़ौम का ज़िक्र किया जिसने **एक लम्बी खाई** खोदी, उसमें आग जलाई, ईमान वालों को उसमें फेंका और बैठकर देखती रही। यह एक वास्तविक ऐतिहासिक घटना है जो पत्थर के शिलालेखों में दर्ज है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह घटना अरबों की किताबों में किसी भरोसेमन्द विस्तार के साथ दर्ज न थी, और मक्का में इसका कोई लिखित स्रोत उपलब्ध न था। यह किसी दूसरी क़ौम की, किसी पहले के समय की और किसी दूर की धरती की कहानी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इतिहास लगभग 523 ईस्वी के **नजरान** के नरसंहार की पुष्टि करता है, जब हिमयरी बादशाह **ज़ू नुवास** ने नजरान के ईसाइयों को सताया और जिन्होंने अपना धर्म छोड़ने से इनकार किया उन्हें जला दिया। यह घटना **हिस्न ग़ुराब के शिलालेख** और बिअर हिमा के हिमयरी शिलालेखों में, घटना के समकालीन **बेथ-अर्शम के शमऊन के सुरयानी पत्र** में, तथा बीज़ान्तीनी और इथियोपियाई स्रोतों में दर्ज है। अल-उला और बिअर हिमा में मिले शिलालेख उस अभियान और मारे गए लोगों की संख्याएँ दर्ज करते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

छोटे-छोटे विवरणों की बारीकी ही फ़ैसला करती है। अरबी शब्द "**उख़दूद**" का अर्थ है ज़मीन में एक लम्बी, सीधी दरार — कोई गोल गड्ढा नहीं। और यह खोदी गई खाइयों के वर्णन से मेल खाता है। "**ईंधन से भरी**" बताता है कि आग को नया ईंधन दिया जा रहा था, वह कोई संयोगवश लगी आग न थी। "**उसके पास बैठे हुए**" और "**गवाह**": अपराधी बैठकर देख रहे थे — और यह विवरण शमऊन के उस पत्र से मेल खाता है जो दर्ज करता है कि बादशाह स्वयं वध-स्थल पर उपस्थित था। और ध्यान दीजिए कि क़ुरआन ने न बादशाह का नाम लिया न क़ौम का — क्योंकि उद्देश्य शिक्षा है, इतिहास-लेखन नहीं।

43

पुरातत्व

सबा और बाँध का टूटना

फिर उन्होंने मुँह मोड़ लिया, तो हमने उन पर बाँध की बाढ़ भेज दी, और उनके दोनों बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें कड़वे फल और झाऊ थे।

सूरह सबा — आयत 16

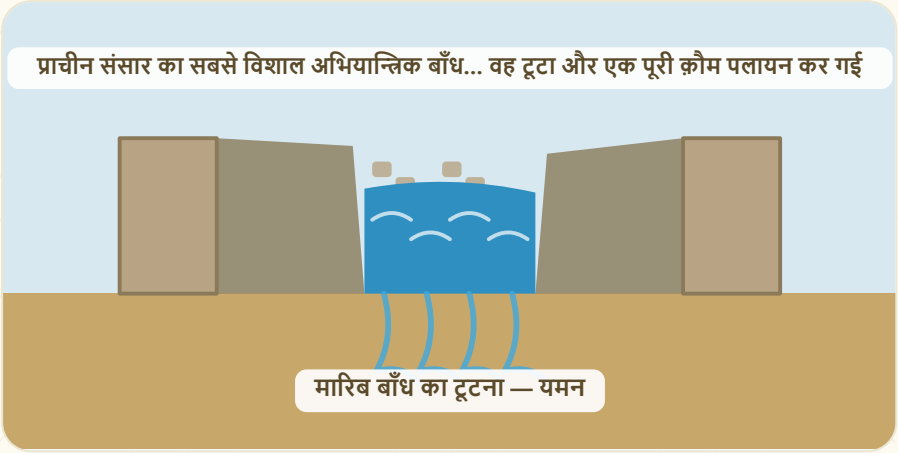

उस विशाल बाँध के अवशेष मारिब में आज तक खड़े हैं

सीधी-सादी बात में

यमन में **सबा** नाम का एक सम्पन्न राज्य था, जो एक बड़े बाँध के सहारे जीता था जो उसके बाग़ों को सींचता था। बाँध टूट गया, बाढ़ सब कुछ बहा ले गई, और बाग़ ऐसे कड़वे पेड़ों में बदल गए जो खाए नहीं जा सकते।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सबा अरबों की स्मृति में कविता और कहावत के एक नाम के रूप में जीवित था — "सबा वालों की तरह बिखर गए"। पर न कोई खोदे गए अवशेष थे न पढ़े जा सकने वाले शिलालेख। पश्चिमी इतिहासकार तो इस राज्य के अस्तित्व पर ही सन्देह करते थे और उसे आधी किंवदन्ती गिनते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मारिब का बाँध आज एक खड़ा हुआ स्मारक है: ईसा से लगभग आठवीं सदी पूर्व बना, लगभग 600 मीटर लम्बा, और लगभग दस हज़ार हेक्टेयर सींचता था। उसके टूटने की घटनाएँ स्थल पर मिले **सबाई मुसनद शिलालेखों** में दर्ज हैं — जिनमें अबरहा का प्रसिद्ध शिलालेख भी है जो 548 ईस्वी में बाँध की मरम्मत का वर्णन करता है। लगभग 570-580 ईस्वी के अन्तिम टूटने ने **पूरी-पूरी यमनी क़बीलों के उत्तर की ओर पलायन** का कारण बना — और यह पलायन अरब वंशावली तथा इतिहास में भली-भाँति ज्ञात है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत टूटने पर नहीं रुकी; उसने बाद में उस भूमि का जो हाल हुआ उसका वनस्पतिशास्त्रीय बारीकी से वर्णन किया: "दो ऐसे बाग़ जिनमें **कड़वे फल, झाऊ और थोड़े-से बेर के पेड़**"। पहला कड़वी काँटेदार झाड़ी है, दूसरा झाऊ की एक क़िस्म, तीसरा बेर — और ये ठीक-ठीक **शुष्क, लवणीय वातावरण के पौधे** हैं जो सिंचाई रुक जाने और मिट्टी के खारी हो जाने पर खेती की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। फिर उसने कहा "और **थोड़े-से** बेर के पेड़" — यानी ठीक उसी जगह कमी बताई जहाँ बतानी चाहिए थी, क्योंकि तीनों में बेर सबसे उपयोगी है और सबसे दुर्लभ भी।

पुरातत्व

44 फ़िरऔन का शरीर — एक निशानी बनाकर सुरक्षित रखा गया

तो आज हम तुझे तेरे शरीर सहित बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद आने वालों के लिए एक निशानी बने।

सूरह यूनुस — आयत 92

तीन हज़ार वर्ष से भी पुराना एक शरीर... आज भी मौजूद

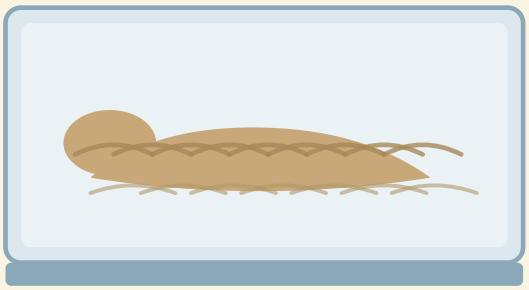

क़ाहिरा संग्रहालय — शाही ममियों का कक्ष

फ़िरऔन का शरीर आज शीशे के पीछे रखा है, जहाँ लोग उसे अपनी आँखों से देखते हैं

सीधी-सादी बात में

जब फ़िरऔन समुद्र में डूबा, तो अल्लाह ने कहा कि वह **उसके शरीर** को सुरक्षित रखेगा ताकि बाद में आने वाले उसे देखें और नसीहत लें। वह शरीर आज एक संग्रहालय में मौजूद है जहाँ दुनिया भर से लोग आते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जो आदमी समुद्र में डूबता है उसका शरीर नहीं बचता: मछलियाँ उसे खा जाती हैं, या वह सड़ जाता है, या रेत में खो जाता है। जब यह आयत उतरी तो एक भी अरब को शाही ममीकरण या फ़राऊनों की क़ब्रों के बारे में कुछ पता न था। बल्कि चित्रलिपि भाषा ही पूरी तरह भुला दी गई थी, और वह 1822 तक पढ़ी ही नहीं गई थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1881 में दैर अल-बहरी में शाही ममियों का भंडार मिला, फिर 1898 में अमेनहोतेप द्वितीय की क़ब्र, जिससे नए साम्राज्य के फ़राऊनों के शरीर सामने आए। **मेरनेप्ताह** का शरीर — जो निर्गमन के फ़िरऔन के लिए सबसे प्रसिद्ध दावेदार है — क़ाहिरा के संग्रहालय में सुरक्षित है। एक्स-रे जाँच से ऐसे निष्कर्ष सामने आए जो किसी हिंसक मृत्यु तथा खोपड़ी और गर्दन की चोटों से मेल खाते हैं, और जाँचने वालों ने त्वचा पर नमक के जमाव भी दर्ज किए।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत ने केवल "हम तुझे बचा लेंगे" नहीं कहा; उसने निर्धारित किया: "**तेरे शरीर सहित**" — केवल शरीर, आत्मा के बिना। और यह किसी व्यक्ति के बचाव और उसके शव के बचे रहने के बीच एक सूक्ष्म भेद है। फिर उसने कारण भी बताया: "**ताकि तू अपने बाद आने वालों के लिए एक निशानी बने**" — यानी शरीर का बचा रहना ही उद्देश्य है; उसे देखे जाने के लिए तैयार किया जा रहा है। और यह ऐसे रेगिस्तान में उतरा जिसके लोग न ममियों को जानते थे न क़ब्रों को — उन क़ब्रों के खोले जाने और उनके निवासियों के शीशे के कक्षों में रखे जाने से बारह सौ वर्ष पहले।

45

पाठ की सुरक्षा

वे पांडुलिपियाँ जिन्हें कार्बन ने प्रमाणित किया

निस्सन्देह हमने ही यह उपदेश उतारा, और निस्सन्देह हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं।

सूरह अल-हिज्र — आयत 9

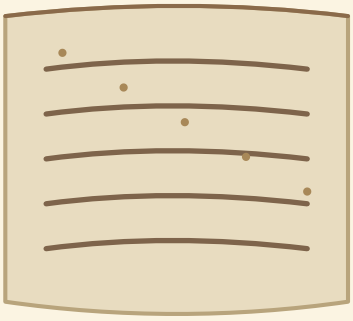

बर्मिंघम विश्वविद्यालय — ब्रिटेन

बर्मिंघम की पांडुलिपि

कार्बन-14 से तिथि-निर्धारण

568 – 645 ई.

95% सम्भावना के साथ

उसका पाठ आज के मुसहफ़ से मेल खाता है

नबी ﷺ के जीवनकाल का या उसके ठीक बाद का चर्मपत्र — और उसका पाठ आज ही का पाठ है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने वादा किया कि वह सुरक्षित और अपरिवर्तित रहेगा। आज हमारे पास **रेडियोकार्बन से तिथि निर्धारित पांडुलिपियाँ** हैं जो मोटे तौर पर नबी ﷺ के समय तक पहुँचती हैं — और उनका पाठ आपके हाथ की प्रति का ही पाठ है, अक्षर दर अक्षर।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हर प्राचीन पुस्तक नक़ल और अनुवाद के दौरान जोड़, लोप और परिवर्तन की मार खाती है। सदियों तक हाथ से पहुँचाए गए किसी भी पाठ का यही स्वाभाविक भाग्य है। इसलिए पूर्ण सुरक्षा का दावा **ऐसा दावा था जिसे कोई भी भिन्न पांडुलिपि झुठला सकती थी**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

बर्मिंघम की पांडुलिपि: चर्मपत्र की कार्बन-14 जाँच 2015 में ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में हुई और तिथि **568 से 645 ईस्वी** के बीच, 95% सम्भावना के साथ, निर्धारित हुई। फिर सनआ का निचला पाठ, ट्युबिंगन की पांडुलिपि, समरक़न्द की प्रति, और इस्तांबुल तथा क़ाहिरा की बड़ी प्रतियाँ। शोधकर्ताओं ने — मुसलमान और ग़ैर-मुसलमान दोनों ने — इन पांडुलिपियों की तुलना आज प्रचलित क़ुरआन से की, और पाठ में सहमति लगभग पूर्ण निकली, सिवाय अक्षरों के आकार से जुड़े वर्तनी-भेदों के, जो न उच्चारण बदलते हैं न अर्थ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सुरक्षा केवल पांडुलिपियों पर नहीं टिकी, बल्कि **एक ऐसी दोहरी व्यवस्था पर टिकी जो मानव इतिहास में अनोखी है**: अत्यन्त सावधान लेखन, और **सीने में याद रखना, जो तवातुर के साथ पहुँचाया जाता है**। हर पीढ़ी में दूर-दूर के देशों में लाखों लोग, किसी एक सत्ता के अधीन हुए बिना, पूरा पाठ कंठस्थ रखते हैं — तो उनका एक अक्षर बदलने पर सहमत हो जाना व्यवहारिक रूप से असम्भव है। और पाठ ने स्वयं **अपने सबसे कमज़ोर क्षण में यह गारंटी घोषित की** — मक्का में एक सताया हुआ समुदाय। किसी पाठ का चौदह सदी तक बिना दो भिन्न प्रतियों के खड़े रहना — धरती की किसी दूसरी किताब में इसकी कोई मिसाल नहीं।

46

एक पूरी हुई भविष्यवाणी

तुम अवश्य मस्जिदे-हराम में निश्चिन्त होकर दाख़िल होगे

निस्सन्देह अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा स्वप्न दिखाया: तुम अवश्य मस्जिदे-हराम में दाख़िल होगे, यदि अल्लाह ने चाहा, निश्चिन्त होकर, अपने सिर मुँड़ाए और बाल कटाए हुए, बिना किसी डर के।

सूरह अल-फ़त्ह — आयत 27

यह तब उतरी जब मुसलमान बैतुल्लाह से लौटा दिए गए थे और उसमें दाख़िल न हो सके थे

मक्का की विजय — हिजरत का आठवाँ वर्ष

निश्चिन्त प्रवेश का वादा... और वह भी ठीक उस क्षण पर जब उन्हें रोका गया था

सीधी-सादी बात में

मुसलमानों को मक्का में दाख़िल होने से रोक दिया गया और वे टूटे हुए मन के साथ रास्ते से लौटा दिए गए। फिर एक आयत आई जिसने उनसे वादा किया कि वे **बैतुल्लाह में निश्चिन्त होकर दाख़िल होंगे**। दो वर्ष बाद वे विजेता बनकर मक्का में दाख़िल हुए, बिना डर और बिना लड़ाई के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हिजरत के छठे वर्ष हुदैबिया में मुसलमानों को बैतुल्लाह से लौटा दिया गया और क़ुरैश से ऐसी शर्तों पर सुलह हुई जिन्हें उनमें से बहुतों ने अन्यायपूर्ण समझा — यहाँ तक कि उमर ने कहा: "हम अपने दीन में यह ज़िल्लत क्यों क़बूल करें?" मक्का अपनी शक्ति के चरम पर था, और मुसलमान संख्या तथा साज़-सामान में कम। क्षितिज पर ऐसा कुछ न था जो किसी निकट विजय का संकेत देता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हिजरत के आठवें वर्ष (630 ईस्वी) में नबी ﷺ दस हज़ार के सिर पर मक्का में दाख़िल हुए, **बिना किसी उल्लेखनीय लड़ाई के**, और आम माफ़ी की घोषणा की: "जाओ, तुम आज़ाद हो।" मुसलमानों ने निश्चिन्त होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, और अपने सिर मुँड़ाए तथा बाल कटाए। यह इस्लामी इतिहास की सबसे भली-भाँति दर्ज घटनाओं में है, और सभी स्रोत इस पर एकमत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत के छोटे-छोटे विवरण ही उसे आशा से उठाकर भविष्यवाणी बना देते हैं। उसने केवल "तुम मक्का जीतोगे" नहीं कहा, बल्कि **प्रवेश का ढंग** भी निर्धारित किया: "**निश्चिन्त होकर**" — न कि किसी क्रूर युद्ध के बाद विजेताओं की तरह; "**बिना किसी डर के**" — पूर्ण सुरक्षा पर ज़ोर; "**अपने सिर मुँड़ाए और बाल कटाए हुए**" — यानी वे पूरे अनुष्ठान इत्मीनान से पूरे करेंगे, और यह केवल नगर पर पूरे नियंत्रण से ही सम्भव है। एक ही वाक्य में चार विवरण, और उनमें से हर एक पूरा हुआ।

एक क़बूल हुई दुआ

47 एक ऐसी घाटी जिसमें कोई खेती नहीं — आज धरती की सबसे भीड़ भरी जगह

ऐ हमारे रब, मैंने अपनी कुछ सन्तान को एक ऐसी घाटी में बसाया है जिसमें कोई खेती नहीं, तेरे आदरणीय घर के पास ... तो लोगों में से कुछ दिलों को उनकी ओर झुका दे, और उन्हें फलों से रोज़ी दे।

सूरह इब्राहीम — आयत 37

एक दुआ जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़ारों वर्ष पहले उठाई

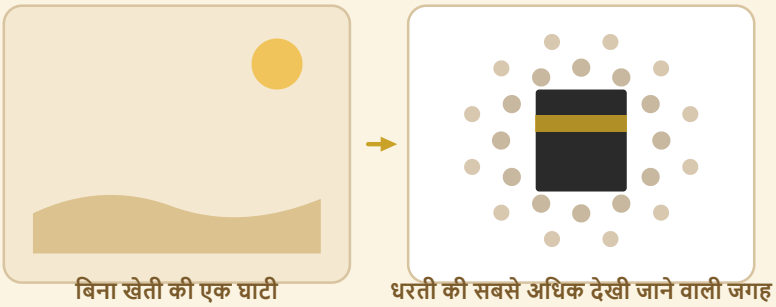

एक ऐसी भूमि जिसमें कुछ नहीं उगता... और जहाँ आपको सारी दुनिया के फल मिलते हैं

सीधी-सादी बात में

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी पत्नी और बच्चे को एक ऐसी घाटी में छोड़ते हुए दुआ की जिसमें **न पानी था न खेती**, कि अल्लाह लोगों के दिलों में उनके लिए लगाव डाल दे और उन्हें फल दे। वही घाटी आज **धरती के चेहरे पर सबसे अधिक देखी जाने वाली जगह** है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वह घाटी बंजर पहाड़ों के बीच नंगा रेगिस्तान थी — न कोई नदी, न कोई सोता, और उस समय कोई व्यापारिक मार्ग भी नहीं। उसमें ऐसा कुछ न था जो किसी को अपनी ओर खींचे। और दुआ के शब्द भी विचित्र हैं: उन्होंने न खेती माँगी न ज़मीन के लिए पानी, बल्कि दो अलग चीज़ें माँगीं: **झुकने वाले दिल**, और **फलों की रोज़ी**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आज का मक्का: अकेले हज के मौसम में चन्द दिनों के भीतर बीस लाख से अधिक लोग आते हैं, और उससे भी कई गुना लोग साल भर उमरा करते हैं। और एक अरब अस्सी करोड़ से अधिक लोगों के चेहरे **हर दिन पाँच बार** उसी की ओर मुड़ते हैं। उसकी ज़मीन नहीं बदली: वह आज भी बिना खेती की घाटी है। फिर भी उसके बाज़ारों में आपको सारी धरती के फल मिलते हैं, जो साल भर हर महाद्वीप से आते हैं। और ज़मज़म का कुआँ चार हज़ार वर्षों से एक रेगिस्तान के हृदय में बह रहा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार **स्वयं दुआ की बनावट** में है। अपने परिवार को रेगिस्तान में छोड़ते हुए किसी आदमी के लिए स्वाभाविक बात यही होती कि वह ज़मीन के उपजाऊ हो जाने या वर्षा के बरसने की दुआ करे। पर उन्होंने यह दुआ की कि **लोगों के दिल उनकी ओर झुक जाएँ** — यानी रोज़ी लोगों के रास्ते आए, मिट्टी के रास्ते नहीं। और वे सूक्ष्म भी रहे: "**लोगों में से कुछ दिल**", सारे लोग नहीं — क्योंकि यदि वे सबके लिए दुआ करते तो वह जगह उन्हें कभी समा ही नहीं सकती थी। फिर उन्होंने "आएँ" के बजाय "**झुक जाएँ**" कहा — और अरबी क्रिया का अर्थ है किसी चीज़ की ओर लगाव और खिंचाव से गिर पड़ना, न कि किसी मजबूर व्यक्ति का पहुँच जाना। और यह उस व्यक्ति का ठीक-ठीक वर्णन है जो काबा को पहली बार देखता है। इतनी बारीकी से गढ़ी गई एक दुआ, जो चार हज़ार वर्षों में अक्षर दर अक्षर पूरी हुई।

48

एक पूरी हुई भविष्यवाणी

सुराक़ा की कलाइयों में किसरा के कंगन

उन्होंने सुराक़ा बिन मालिक से कहा: तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम किसरा के दोनों कंगन पहनोगे?

बैहक़ी, इब्न अब्दुल-बर्र और अन्य की रिवायत

हिजरत के दिन

नबी ﷺ का पीछा किया जा रहा है और उनके सिर पर एक इनाम है

"तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम पहनोगे **किसरा के दोनों कंगन?**"

→

उमर की ख़िलाफ़त

किसरा के कंगन उसकी कलाइयों में सब लोगों के सामने

दोनों के बीच लगभग 15 वर्ष... और पूरब के सबसे बड़े साम्राज्य का पतन

जो आदमी सौ ऊँटों के लिए उन्हें क़त्ल करने निकला था... उसी से फ़ारस के ख़ज़ाने का वादा किया गया

सीधी-सादी बात में

सुराक़ा हिजरत के दिन इनाम की आस में नबी ﷺ का पीछा करते हुए निकला। नबी ﷺ ने उससे कहा: **तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम फ़ारस के बादशाह के दोनों कंगन पहनोगे?** वर्षों बाद उसने सचमुच उन्हें पहना, उमर बिन ख़त्ताब की ख़िलाफ़त में।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जिस क्षण ये शब्द कहे गए वह **पूरी सीरत का सबसे बेबस क्षण** है: नबी ﷺ अपने ही नगर से निकलते हुए, पीछा किए जाते हुए, अपनी सवारी और अपने साथी के सिवा कुछ न रखते हुए, और उनके पकड़े जाने पर सौ ऊँटों का इनाम रखा हुआ। उस समय फ़ारस धरती के दो सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक था, और उसके बादशाह ने नबी ﷺ का पत्र तिरस्कार से फाड़ दिया था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उमर बिन ख़त्ताब की ख़िलाफ़त में सासानी साम्राज्य गिरा और मदाइन फ़तह हुआ, और किसरा के ख़ज़ाने मदीना लाए गए। उमर ने सुराक़ा बिन मालिक को बुलाया और उसे **किसरा के कंगन, उसका ताज और उसकी पेटी** पहनाई, और उससे कहा: "कहो: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने ये चीज़ें किसरा बिन हुरमुज़ से उतारीं और बनू मुदलिज के एक बद्दू सुराक़ा बिन मालिक को पहना दीं।" यह रिवायत हदीस और इतिहास की किताबों में कई सनदों से आई है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह भविष्यवाणी तीन ऐसी चीज़ें इकट्ठी करती है जो अनुमान से एक साथ नहीं आ सकतीं: **एक नामज़द व्यक्ति** (सुराक़ा), **एक विशेष वस्तु** (किसरा के कंगन, कोई भी माले-ग़नीमत नहीं), और **एक विशाल राजनीतिक घटना** (फ़ारस का पतन और उसके ख़ज़ाने का अरबों तक पहुँचना)। और यह ऐसे आदमी से कही गई जो उस क्षण **पीछा करता हुआ दुश्मन** था, कोई साथी नहीं जिसे शुभ समाचार दिया जा रहा हो। यदि उद्देश्य उसे अपनी ओर मिलाना होता तो कहीं छोटा वादा कहीं बेहतर काम करता। एक पीछा किया जाता हुआ व्यक्ति, जिसके पास उस दिन कुछ भी न था, अपने पीछा करने वाले से धरती के सबसे बड़े साम्राज्य के ख़ज़ानों का वादा करे — यह उसी का कथन है जो ऐसे स्रोत के बारे में निश्चिन्त है जो मानवीय नहीं।

धरती का आकार

49 वह रात को दिन पर लपेटता है

उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ बनाया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है।

सूरह अज़-ज़ुमर — आयत 5

रात और दिन इस गोले के गिर्द एक ऐसे चक्कर में लिपटते हैं जो कभी रुकता नहीं

सीधी-सादी बात में

यहाँ आई अरबी क्रिया गेंद के शब्द से बनी है, और पगड़ी के लपेटने से — यानी **किसी गोल चीज़ के चारों ओर किसी चीज़ को लपेटना**। रात धरती के गिर्द ऐसे लिपटती है जैसे पगड़ी सिर के गिर्द। और लपेटना किसी गोल पिंड पर ही होता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हर जगह आम धारणा यही थी कि धरती एक चपटी सतह है, और रात दिन की **जगह ले लेती है** और उसे मिटा देती है। यहाँ तक कि जो यूनानी दार्शनिक उसे गोल मानते थे उन्होंने भी इसे रात और दिन के बीच की रेखा की किसी निरन्तर लिपटती गति से नहीं जोड़ा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

धरती एक गोला है (ध्रुवों पर थोड़ी चपटी), और सूरज सदा उसका आधा भाग रोशन करता है। धरती का घूमना **रात और दिन के बीच की विभाजक रेखा** को उसकी सतह पर बिना रुके सरकाता रहता है — यानी रात शाब्दिक अर्थों में गोले के गिर्द लिपटती है, और मिटती नहीं बल्कि खिसकती है। आप इसे धरती के किसी भी जीवंत उपग्रह-चित्र में अपनी आँखों से देख सकते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

रात और दिन के आगे-पीछे आने का वर्णन करने के लिए "गेंद" की जड़ से बनी क्रिया चुनना किसी चपटी सतह पर अर्थ ही नहीं रखता। और इससे भी सूक्ष्म: आयत लपेटने को **दोतरफ़ा, दोनों दिशाओं में** बनाती है — "वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है" — और ऐसा वर्णन वही करेगा जो किसी गोल पिंड पर एक निरन्तर घूर्णन देख रहा हो। और दूसरी जगह: "और उसके बाद उसने **धरती को बिछाया**" — अरबी क्रिया का अर्थ है गोलाई के साथ फैलाना, और इसी जड़ से शुतुरमुर्ग के अंडे का शब्द निकला है।

50

जल चक्र

वह आकाश जो लौटाता है

क़सम है उस आकाश की जो लौटाता है।

सूरह अत-तारिक़ — आयत 11

पानी वाष्प बनकर ऊपर जाता है और वर्षा बनकर लौटता है — एक बन्द चक्र जिसमें कुछ खोता नहीं

सीधी-सादी बात में

आकाश समुद्र से पानी वाष्प के रूप में लेता है, फिर उसे वर्षा बनाकर हमें **लौटा** देता है। आज आप जो भी बूँद पीते हैं वह आपसे पहले किसी ने पी थी, और आपके बाद कोई पिएगा। पानी ख़त्म नहीं होता; वह लौटता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा को **नया** पानी समझा जाता था जिसे अल्लाह आकाश के भंडारों से उतारता है, न कि ऐसा पानी जो स्वयं धरती से लौट रहा हो। समुद्र की वाष्प और गिरती वर्षा के बीच का सम्बन्ध ज्ञात न था; यूरोप में जल चक्र का पूरा वर्णन सत्रहवीं सदी तक नहीं हुआ था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जल चक्र: जल-राशियों से वाष्पन → बादल में संघनन → वर्षण → बहाव → फिर वाष्पन। धरती पर पानी की मात्रा **अरबों वर्षों से अटल** है, और बिना बढ़े-घटे चक्कर काटती रहती है। और वायुमंडल केवल पानी ही नहीं, ऊष्मा और रेडियो तरंगें भी लौटाता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही शब्द — "**लौटाना**" — पूरा अर्थ उठाए हुए है। अरबी में इसका अर्थ है **किसी चीज़ का वहीं लौट आना जहाँ वह थी**, केवल गिरना नहीं। आकाश को इस विशेषण से पुकारना यह कहना है कि जो कुछ उससे उतरता है वह पहले उसी की ओर चढ़ा था। यह दो शब्दों में पूरे जल चक्र का सार है। और दूसरी जगह इसकी पुष्टि है: "और हमने आकाश से **एक निश्चित मात्रा में** पानी उतारा" — एक तय, नापी हुई मात्रा जो बदलती नहीं।

जल चक्र

51 एक नपा हुआ पानी — न बढ़ता है, न घटता है

और हमने आकाश से एक निश्चित मात्रा में पानी उतारा, और उसे धरती में ठहरा दिया। और निस्सन्देह हम उसे ले जाने में भी सक्षम हैं।

सूरह अल-मोमिनून — आयत 18

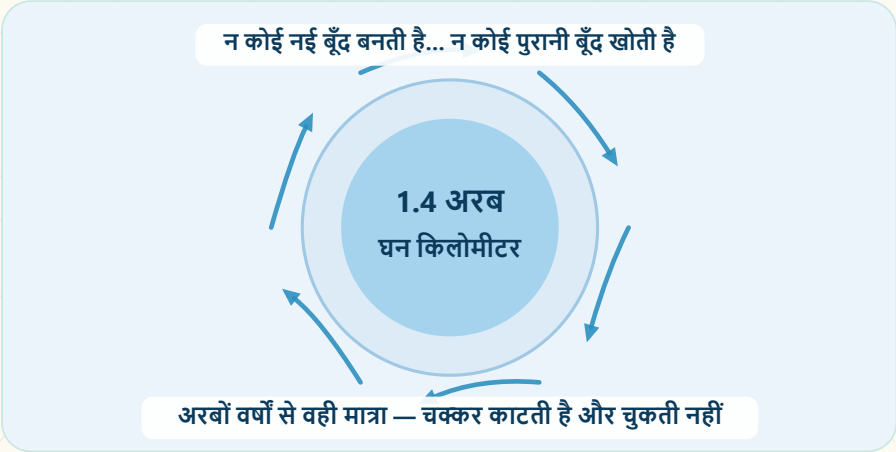

समूचे ग्रह पर पानी का एक अटल सन्तुलन

सीधी-सादी बात में

धरती पर पानी की मात्रा **अटल है: वह न बढ़ती है न घटती**। जो पानी किसी डायनासोर ने पिया था वही पानी आज आप पीते हैं। और आयत में "**एक निश्चित मात्रा में**" का अर्थ है: एक गिनी हुई, ठीक-ठीक मात्रा में।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा को नया पानी समझा जाता था जो आकाश के भंडारों से तब उतारा जाता है जब लोगों को ज़रूरत हो। **चक्कर काटती हुई एक बन्द, अटल मात्रा** का विचार किसी संस्कृति में था ही नहीं। सीधी धारणा तो यही बनती है कि समुद्र का पानी वाष्पन से खो जाता है और वर्षा एक ताज़ा बढ़ोतरी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

धरती पर पानी का आयतन लगभग **1.4 अरब घन किलोमीटर** आँका जाता है, और वह अरबों वर्षों से मोटे तौर पर अटल रहा है। वह वाष्प बनता है, संघनित होता है, गिरता है, बहता है और लौट आता है — एक ऐसे बन्द चक्र में जो न कुछ जोड़ता है न घटाता। वायुमंडल और चुम्बकीय क्षेत्र मिलकर जल-वाष्प को अन्तरिक्ष में भाग जाने से रोकते हैं — और मंगल पर ठीक यही नहीं हुआ, जिसका पानी वाष्प बनकर खो गया और पीछे एक मुर्दा रेगिस्तान छोड़ गया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

"**एक निश्चित मात्रा में**" यह शर्त ही चमत्कार है, और जब तक मात्रा अटल न हो इसका कोई अर्थ ही नहीं। यदि पानी हर बार गिरते समय नए सिरे से बनाया जाता, तो उसे नापने का कोई मतलब न होता। और उससे भी सूक्ष्म वह है जो आगे आया: "**और उसे धरती में ठहरा दिया**" — ठहराने का अर्थ है बने रहना और जमा होना, ख़र्च हो जाना नहीं; पानी धरती में थामा गया है, उसके द्वारा चुका नहीं दिया गया। फिर अन्त की चेतावनी: "**और निस्सन्देह हम उसे ले जाने में भी सक्षम हैं**" — यह सन्तुलन एक ऐसी नेमत है जो वापस ली जा सकती है। और वैज्ञानिक आज ठीक यही मंगल पर देखते हैं, उस लोक पर जिसने अपना सारा पानी खो दिया।

धरती का आकार

52 और धरती को — उसने गोलाई के साथ बिछाया

और उसके बाद उसने धरती को बिछाया। उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला।

सूरह अन-नाज़िआत — आयतें 30-31

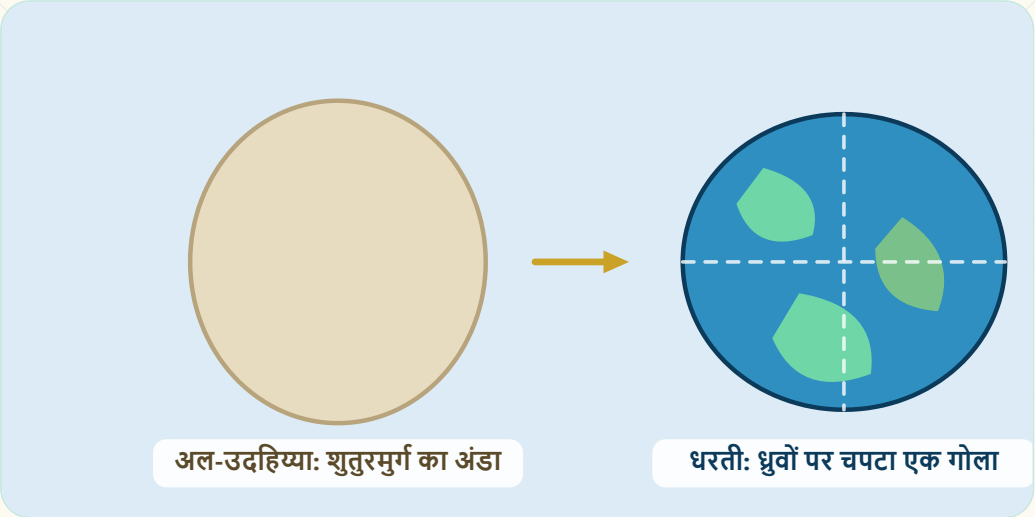

धरती कोई पूर्ण गोला नहीं, बल्कि थोड़ी चपटी है — शुतुरमुर्ग के अंडे जैसी

सीधी-सादी बात में

अरबी क्रिया *दहा* का अर्थ है किसी चीज़ को **गोलाई के साथ** बिछाना। इसी जड़ से उस गड्ढे का शब्द निकला है जिसमें शुतुरमुर्ग अंडा देता है, और स्वयं शुतुरमुर्ग के अंडे का भी। तो धरती आपके चलने के लिए बिछाई हुई है, और अपने असली रूप में गोल तथा चपटी है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आम लोगों के लिए धरती एक चपटी सतह थी और बस। और जो दार्शनिक उसे गोल मानते थे वे उसे **एक पूर्ण गोला** मानते थे। ध्रुवों पर चपटेपन का सुझाव किसी ने भी नहीं दिया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

धरती एक **चपटा गोलाभ** है: भूमध्य रेखा पर उसका व्यास ध्रुव से ध्रुव तक के व्यास से लगभग 43 किलोमीटर अधिक है, और कारण है उसका घूमना। न्यूटन ने इसे 1687 में सैद्धान्तिक रूप से सिद्ध किया, और फ़्रांसीसी अभियानों ने 1736 में इसे मैदान में नापा। जिस सटीक आकार को जिओइड कहते हैं वह सबसे अधिक अंडे के आकार के क़रीब है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भाषा ही मामला तय कर देती है। अरबी शब्दकोशों में *दहा* का अर्थ है बिछाना और फैलाना, और इसी जड़ से शुतुरमुर्ग के घोंसले और उसके अंडे के शब्द निकले हैं। जड़ स्वयं **बिछाने और अंडे जैसे आकार** को एक कर देती है। और ख़ास तौर पर इसी क्रिया को चुनना — "फैलाने" और "बढ़ाने" की उन दो साधारण क्रियाओं के बजाय जिन्हें क़ुरआन दूसरी जगहों पर दूसरे अर्थों में इस्तेमाल करता है — एक ही शब्द में दोनों अर्थ उठा लेता है। और कुंजी यह है कि अगली आयत बता देती है कि बिछाना किसलिए था: "उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला" — यानी बसने की तैयारी, न कि चपटा कर देना।

53

आधुनिक चिकित्सा

शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है

उनके पेटों से एक पेय निकलता है जिसके रंग अलग-अलग हैं, जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है।

सूरह अन-नहल — आयत 69

कच्चा शहद

जो चिकित्सा ने सिद्ध किया

- जीवाणुओं को मारता है
- घावों और जलनों का इलाज करता है
- बच्चों की खाँसी शान्त करता है
- प्रतिऑक्सीकारक और प्रतिशोथी
- आज अस्पतालों में इस्तेमाल होता है

चिकित्सकीय शहद की पट्टी यूरोप और अमेरिका में आधिकारिक रूप से स्वीकृत है

चिकित्सकीय शहद की पट्टियाँ आज दवाख़ानों में आधिकारिक अनुमति के साथ बिकती हैं

सीधी-सादी बात में

चौदह सौ वर्ष पहले क़ुरआन ने कहा कि शहद में **शिफ़ा** है। आज शहद अस्पतालों में उन घावों और जलनों के इलाज में इस्तेमाल होता है जिन्हें प्रतिजैविक ठीक नहीं कर सके।

उस समय लोग क्या मानते थे?

शहद एक मीठा और क़ीमती भोजन था, और लोक-अनुभव उसे कुछ फ़ायदों का श्रेय देता था। पर एक ईश्वरीय कथन के रूप में यह कहना कि उसमें **शिफ़ा** है, दूसरी बात है — ख़ास तौर पर जब वह एक कीड़े के पेट से निकलता हो, जिससे बुद्धि किसी लाभ की अपेक्षा ही न करे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शहद तीन क्रियाविधियों से एक प्राकृतिक प्रतिजैविक है: उसका शर्करा-घनत्व जीवाणुओं से पानी खींच लेता है और उन्हें मार देता है; उसकी अम्लीयता उनके पनपने से रोकती है; और उसमें मौजूद एंज़ाइम ग्लूकोज़ ऑक्सिडेज़ धीरे-धीरे और लगातार **हाइड्रोजन पेरॉक्साइड** बनाता है। आधिकारिक औषधि एजेंसियों ने पुराने घावों के लिए मनुका शहद की पट्टियों को मंज़ूरी दी है, और विश्व स्वास्थ्य संगठन बच्चों की खाँसी शान्त करने के लिए शहद की सिफ़ारिश करता है। फ़राऊनी क़ब्रों में मिला शहद तीन हज़ार वर्ष बाद भी खाने योग्य था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बारीकी की दो बातें लोक-अनुभव से नहीं समझाई जा सकतीं। पहली: "जिसके **रंग** अलग-अलग हैं" — आज यह ज्ञात तथ्य है कि शहद का रंग और उसके औषधीय गुण पौधे के स्रोत के साथ बदलते हैं, और इसीलिए उसका चिकित्सकीय प्रभाव भी भिन्न होता है। दूसरी: "उनके **पेटों** से निकलता है" — शहद वास्तव में **शहद-उदर** में बनता है, जो पाचक उदर से अलग एक भीतरी थैली है, और वहीं एंज़ाइम मिलाए जाते हैं, उसके बाद वह उगला जाता है। पाठ ने सही शारीरिक स्रोत ठीक-ठीक पहचान लिया।

54

सूरज की गति

सूरज दौड़ रहा है — वह ठहरा हुआ नहीं

और सूरज अपने ठहरने के ठिकाने की ओर दौड़ रहा है। यह उस प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ का निर्धारण है।

सूरह या-सीन — आयत 38

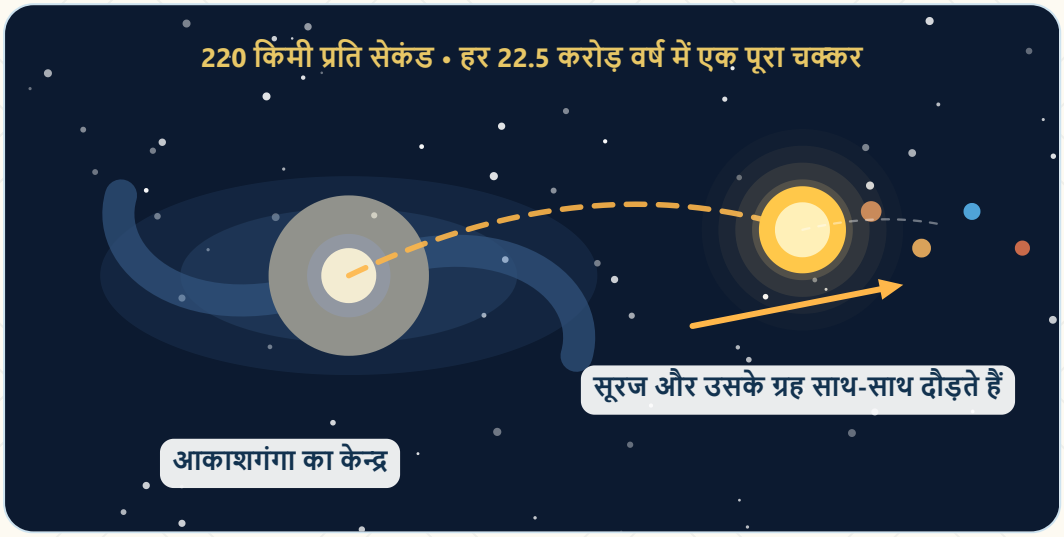

सूरज आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द तैरता है, और अपने सारे ग्रहों को साथ घसीटता है

सीधी-सादी बात में

सूरज खड़ा नहीं है। वह विशाल गति से **दौड़** रहा है, और धरती तथा सारे ग्रहों को अपने साथ घसीटता है — हमारी आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द एक यात्रा पर।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग सूरज को उगते और डूबते देखते थे, और समझते थे कि उसकी गति बस धरती के गिर्द एक चक्कर है। फिर आधुनिक युग आया और उसने कहा: नहीं, घूमती तो धरती है, और **सूरज इस मंडल के केन्द्र में स्थिर है**। सत्रहवीं और अठारहवीं सदी भर यही स्थापित विज्ञान था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सूरज सचमुच चलता है, और तीन प्रमाणित गतियों से: वह लगभग हर 25 दिन में अपनी धुरी पर घूमता है; वह आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द लगभग **220 किलोमीटर प्रति सेकंड** की गति से दौड़ता है, और एक चक्कर 22.5 करोड़ वर्ष में पूरा करता है; और वह आकाश में एक बिन्दु की ओर भी बढ़ रहा है जिसे सौर शीर्ष कहते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस विडम्बना पर ध्यान दीजिए: आयत तब उतरी जब लोग मानते थे कि सूरज उनके गिर्द घूमता है, और उसने कहा कि सूरज दौड़ता है। फिर एक ऐसा युग आया जिसने उसकी हर गति से इनकार किया और कहा "वह ठहरा हुआ है", तो आयत विज्ञान का खंडन करती हुई दिखने लगी। फिर एक और नए विज्ञान ने उसके लिए एक वास्तविक गति सिद्ध की जो **किसी की कल्पना से भी बड़ी** थी। एक ही पाठ जो विज्ञान के दो पूरे पलटावों के आर-पार अटल खड़ा रहा — और यही अपने आप में एक प्रमाण है।

वायुमंडल

55 एक छत जो आपकी रक्षा करती है, और आप उसे देख नहीं सकते

और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया, फिर भी वे उसकी निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं।

सूरह अल-अंबिया — आयत 32

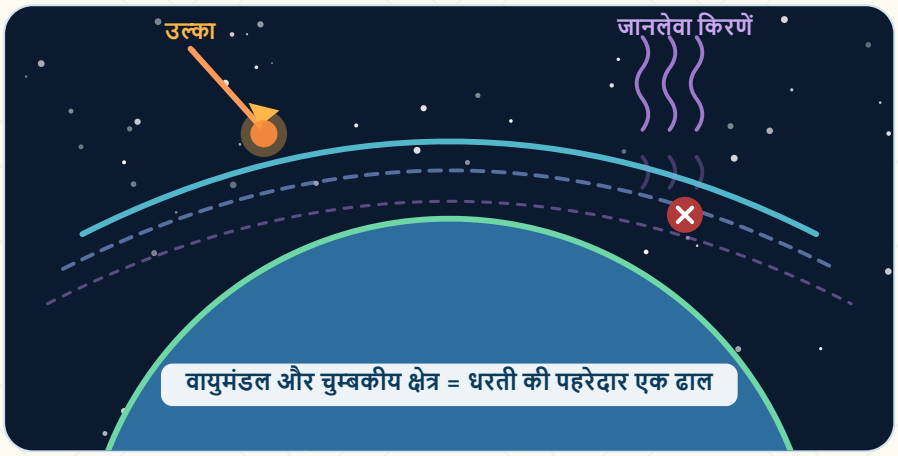

हर दिन हज़ारों उल्काएँ आप तक पहुँचने से पहले जल जाती हैं, जब आप अपने घर में सो रहे होते हैं

सीधी-सादी बात में

आपके सिर के ऊपर एक ऐसी छत है जिसे आप देख नहीं सकते, और वह आपकी रक्षा करती है। हमारी ओर लपकती उल्काएँ पहुँचने से पहले उसी में जल जाती हैं, और वह मार डालने वाली किरणों को रोक देती है। **उसके बिना धरती का हर जीव मर जाता।**

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के लिए "आकाश" या तो ख़ाली शून्य था या एक ठोस गुम्बद जिसमें तारे जड़े हैं। किसी के मन में यह आया ही नहीं कि हमारे ऊपर **एक अदृश्य परत है जो रक्षा का काम करती है**। जलता हुआ टूटता तारा उनकी निगाह में गिरता हुआ तारा था, न कि किसी ढाल में जलती हुई उल्का।

आज विज्ञान क्या कहता है?

वायुमंडल हर दिन अनुमानतः सौ टन अन्तरिक्षीय पदार्थ को पहुँचने से पहले ही जला देता है। ओज़ोन परत जानलेवा पराबैंगनी विकिरण का लगभग 99% सोख लेती है। और धरती का चुम्बकीय क्षेत्र **सौर पवन** को धकेल देता है, जो वरना धरती से उसकी हवा और पानी छीन ले जाती — ठीक वैसे ही जैसे मंगल के साथ हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

"छत" और "सुरक्षित" इन दो शब्दों को जोड़ देना ही इसे चमत्कार बनाता है। छत पूर्ण ढँकने का संकेत देती है, और अरबी कर्मवाचक कृदन्त बताता है कि वह **स्वयं भी सुरक्षित है और अपने नीचे वालों की रक्षा भी करती है**। फिर आगे का वाक्य आया: "फिर भी वे उसकी निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं" — यानी इस छत में **निशानियाँ** हैं जिन्हें लोग नज़रअन्दाज़ करेंगे। यह स्पष्ट संकेत है कि उसमें ऐसे अजूबे हैं जो अभी खोजे नहीं गए। और ऐसा ही हुआ: ओज़ोन 1913 तक खोजी नहीं गई थी, और रक्षक चुम्बकीय क्षेत्र 1958 तक।

56

उल्काएँ

वे टूटते तारे जो आकाश की पहरेदारी करते हैं

और निस्सन्देह हमने निकटतम आकाश को दीपकों से सजाया, और उन्हें शैतानों पर मारने के लिए गोले बनाया।

सूरह अल-मुल्क — आयत 5

उल्का तब जलती है जब वह गोली से भी तेज़ वायुमंडल में घुसती है

सीधी-सादी बात में

आयत तारों और चमकते पिंडों को एक साथ दो काम देती है: **आकाश की सजावट**, और **वे गोले जो ऊपर की ओर चोरी से चढ़ने की कोशिश करने वाले को खदेड़ देते हैं**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

टूटते तारे अरबों के लिए "गिरते तारे" थे, और दूसरी संस्कृतियों में किसी बादशाह की मृत्यु या किसी बड़ी घटना के संकेत। यह पता न था कि वे **ठोस पिंड हैं जो रगड़ से जलते हैं**। बल्कि आधिकारिक विज्ञान उन्नीसवीं सदी तक इनकार करता रहा कि आकाश से पत्थर गिर सकते हैं, और फ़्रांसीसी अकादमी ऐसा कहने वालों का उपहास करती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उल्कापिंड चट्टानी और धात्विक पिंड हैं जो दसियों किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से वायुमंडल में घुसते हैं, और उनमें से अधिकतर हवा के दबाव और ताप से पूरी तरह जल जाते हैं। रोज़ाना घुसने वाला द्रव्यमान लगभग **सौ टन** आँका जाता है। उल्कापिंडों का गिरना वैज्ञानिक रूप से 1803 में फ़्रांस की लेग्ल घटना के बाद स्थापित हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत ने आकाशीय पिंडों के दो भिन्न काम अलग किए: स्थिर सजावट, और **चलता हुआ गोला**। जो अरबी शब्द आया है उसका अर्थ विशेष रूप से पत्थरों से मारना है — न रोशनी से, न आग से। आकाश से जलते हुए गिरने वाली चीज़ को फेंका हुआ पत्थर बताना — और वह भी ऐसे समय में जब आधिकारिक विज्ञान सदियों बाद तक भी इनकार करता रहा कि आकाश में पत्थर होते ही हैं — ऐसा वर्णन है जो संयोग नहीं हो सकता।

पुरातत्व

57 जुल-क़रनैन का बाँध — लोहा और पिघला हुआ ताँबा

मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ — यहाँ तक कि जब उसने दोनों पहाड़ों के बीच बराबर कर दिया तो कहा: धौंको। यहाँ तक कि जब उसने उसे आग बना दिया तो कहा: मेरे पास पिघला हुआ ताँबा लाओ कि मैं उस पर उँडेल दूँ।

सूरह अल-कहफ़ — आयत 96

गर्म लोहे पर पिघला ताँबा उँडेलना दरारें भर देता है और जंग से बचाता है

सीधी-सादी बात में

जुल-क़रनैन ने दो पहाड़ों के बीच एक दीवार बनाई: उसने **लोहे के तख़्ते** ठूँसे, फिर आग जलाई यहाँ तक कि वे लाल हो गए, फिर उन पर **पिघला हुआ ताँबा** उँडेल दिया। और यह ठीक-ठीक वही विधि है जिससे एक अत्यन्त कठोर मिश्रधातु बनती है जिसे जंग नहीं लगती।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धातुओं का ज्ञान सरल था: लोहा गर्म करके पीटा जाता, ताँबा साँचों में ढाला जाता। **दो धातुओं को एक ही ढाँचे में जोड़ देने** का विचार किसी निर्माण-तकनीक के रूप में ज्ञात न था, और न यह ज्ञात था कि एक को दूसरे पर तब क्यों उँडेला जाए जब वह गर्म हो।

आज विज्ञान क्या कहता है?

गर्म लोहे पर पिघला ताँबा उँडेलना कुछ वैसा ही है जैसे **ब्रेज़िंग**: तरल ताँबा केशिका क्रिया से टुकड़ों के बीच की दरारों में घुस जाता है, उन्हें कसकर बाँध देता है और हवा बाहर निकाल देता है। परिणाम एक ठोस, जुड़ा हुआ पिंड है जिसमें कोई ख़ाली जगह नहीं। और ताँबे की परत **लोहे को हवा और नमी से अलग कर देती है और इस तरह जंग रोकती है** — यही आज इस्तेमाल होने वाली धातु-परत चढ़ाने का सिद्धान्त है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चरणों का क्रम ही चमत्कार है, और यह ऐसा अभियान्त्रिक क्रम है जिसमें किसी दूसरी तरतीब की गुंजाइश नहीं: 1) **लोहे के तख़्ते** — अरबी शब्द का अर्थ एक बड़ा पिंड है, तो भार उठाने वाला ढाँचा लोहा है। 2) **धौंको** — तापमान बढ़ाने के लिए हवा देना, और भट्ठी में धौंकनी ठीक यही करती है। 3) **यहाँ तक कि उसने उसे आग बना दिया** — लोहा उस लाल ताप तक पहुँचा जिस पर वह जुड़ाव क़बूल करता है। 4) **फिर उस पर पिघला ताँबा उँडेलना**। यदि ताँबा ठंडे लोहे पर उँडेला जाता तो कोई जुड़ाव बनता ही नहीं। पाठ उँडेलने से पहले की ताप-अवस्था का वर्णन करता है — और यही पूरी प्रक्रिया का हृदय है।

58

कक्षाएँ

न सूरज चाँद को जा पकड़ सकता है

न सूरज के लिए यह सम्भव है कि वह चाँद को जा पकड़े, और न रात दिन से आगे निकल सकती है, बल्कि हर एक अपनी-अपनी कक्षा में तैर रहा है।

सूरह या-सीन — आयत 40

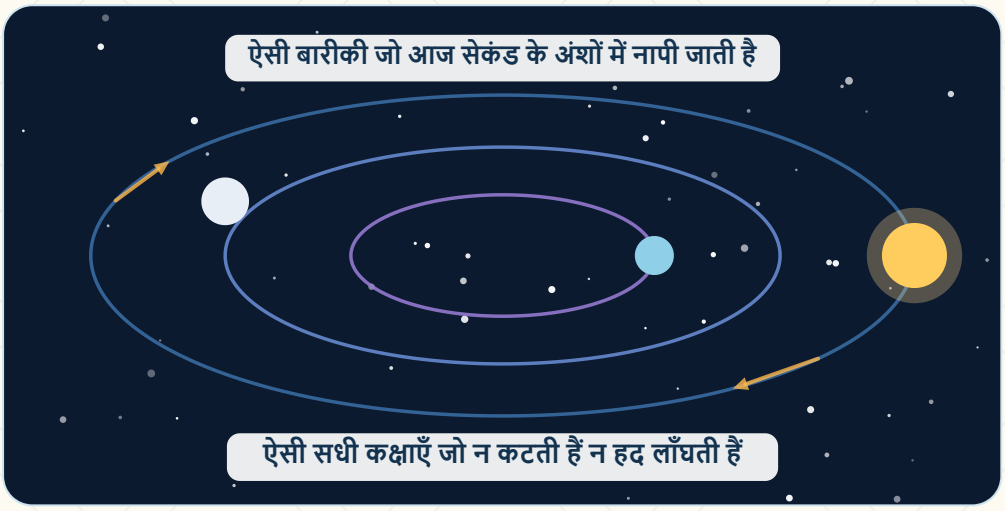

हर पिंड अपने ही रास्ते पर बना रहता है, न उसे पार करता है न किसी दूसरे तक पहुँचता है

सीधी-सादी बात में

आकाशीय पिंड विशाल गति से चलते हैं, फिर भी **उनमें से कोई किसी दूसरे से नहीं टकराता**, और रात न दिन से आगे निकलती है न पीछे रहती है। एक ऐसी व्यवस्था जो पलक झपकने भर को भी नहीं लड़खड़ाती।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आकाशीय पिंडों की गति का, उनकी कक्षाओं का, या उनकी गति के नियमों का कोई ज्ञान न था। ग्रहणों को क्रोध या चेतावनी बताया जाता था, न कि **ऐसी नियत घड़ियाँ जिन्हें सदियों पहले गिना जा सकता है**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आकाशीय पिंडों की कक्षाएँ ऐसी बारीकी से नियंत्रित हैं जो खगोलविदों को चकित करती है। धरती सूरज के गिर्द अपनी कक्षा में 30 किलोमीटर प्रति सेकंड चलती है, और चाँद धरती के गिर्द घूमता है, और कोई टक्कर नहीं होती। व्यवस्था की बारीकी इतनी है कि **आज से एक हज़ार वर्ष बाद के किसी ग्रहण की तिथि सेकंड तक गिनी जा सकती है**। सारा अन्तरिक्ष-नौवहन इसी नियमितता पर खड़ा है: आज छोड़ा गया एक यान सात वर्ष बाद किसी ग्रह से पहले से गिने हुए बिन्दु पर जा मिलता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

"**यह सम्भव ही नहीं**" यही बारीकी का बिन्दु है। वह केवल घटित होने का नहीं, बल्कि **सम्भावना** का इनकार करता है — यानी व्यवस्था स्वयं इसकी इजाज़त नहीं देती, न कि बस संयोग से ऐसा होता नहीं। और **भौतिक नियम** का अर्थ ठीक यही है। फिर विवरण देखिए: उसने सूरज के चाँद तक पहुँचने का इनकार किया — और वे दोनों दो भिन्न कक्षाओं में हैं; और रात के दिन से आगे निकलने का इनकार किया — और ये दोनों धरती के घूमने से निकलते हैं। भिन्न कारणों वाली दो परिघटनाएँ, एक ही नियम के नीचे इकट्ठी: "**हर एक अपनी-अपनी कक्षा में तैर रहा है**" — दोनों का कारण एक ही है: हर पिंड अपने ही रास्ते पर थामा हुआ।

59

सूक्ष्म सन्तुलन

तुम रहमान की रचना में कोई बेतरतीबी नहीं देखोगे

जिसने सात आकाश परतों में बनाए। तुम रहमान की रचना में कोई बेतरतीबी नहीं देखोगे। तो फिर निगाह दौड़ाओ — क्या तुम्हें कोई दरार दिखती है?

सूरह अल-मुल्क — आयत 3

- गुरुत्वाकर्षण: ज़रा-सा बढ़ जाता तो ब्रह्मांड पिचक जाता
- नाभिकीय बल: ज़रा-सा घट जाता तो एक तत्व भी न बनता
- ब्रह्मांड का आरम्भिक घनत्व: कल्पना से परे एक सन्तुलन
- श्याम-ऊर्जा स्थिरांक: भौतिकी की सबसे बारीक संख्या

"तो फिर निगाह दौड़ाओ — क्या तुम्हें कोई दरार दिखती है?"

ब्रह्मांड के स्थिरांक ऐसी सीमा पर सधे हैं जो किसी विचलन को सहन नहीं करती

सीधी-सादी बात में

आयत आपको चुनौती देती है कि ब्रह्मांड में निगाह डालिए और उसमें **कोई दोष, दरार या कमी** ढूँढ़िए। फिर दोहराती है: दूसरी बार देखिए। और आज विज्ञान कहता है कि ब्रह्मांड के स्थिरांक ऐसी बारीकी से सधे हैं जिस पर बुद्धि मुश्किल से विश्वास करती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ब्रह्मांड को एक आम, सौन्दर्यपरक निगाह से देखा जाता था। "भौतिक स्थिरांक" की कोई धारणा ही न थी, और न ऐसे ब्रह्मांड की जो संख्याओं पर टिका हो, और उनमें से किसी एक में ज़रा-सा बदलाव सब कुछ गिरा दे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आधुनिक भौतिकी इसे **सूक्ष्म सन्तुलन** कहती है। यदि गुरुत्वाकर्षण बल का मान ज़रा-से अंश से भिन्न होता, तो या तो तारे बनते ही नहीं या ब्रह्मांड तुरन्त ढह जाता; यदि प्रबल नाभिकीय बल एक छोटे-से अंश से भिन्न होता, तो न कार्बन होता न ऑक्सीजन; और श्याम-ऊर्जा स्थिरांक को **समूची भौतिकी की सबसे बारीकी से सधी हुई संख्या** कहा जाता है। बड़े भौतिकविदों ने इसे स्वीकार किया है — उनमें फ़्रेड हॉयल भी, जिन्होंने कहा कि जो उन्होंने देखा वह ऐसा लगता था मानो "किसी परम बुद्धि ने भौतिकी से छेड़छाड़ की हो"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत केवल एक कथन नहीं, बल्कि **जाँचने और जाँच दोहराने का स्पष्ट निमंत्रण** है: "तो फिर निगाह दौड़ाओ", फिर "दो बार और निगाह दौड़ाओ"। यानी वह इस बात पर दाँव लगाती है कि और क़रीब से देखना **उसकी पुष्टि करेगा, उसे पलटेगा नहीं**। और शाब्दिक रूप से यही हुआ: अवलोकन के यंत्र जितने सूक्ष्म होते गए, सन्तुलन उतना ही प्रकट होता गया। "**दरार**" का अरबी शब्द फटन और टूट का है, और "**बेतरतीबी**" का अर्थ है अव्यवस्था और असन्तुलन। तो आयत ब्रह्मांड से दो गुणों का इनकार करती है: अनुपात में दोष और ढाँचे में दरार — और कोई भौतिकविद् जब किसी ब्रह्मांडीय प्रतिरूप को परखता है तो ठीक यही ढूँढ़ता है।

60

प्रकाश और समय

तारों के स्थानों की क़सम — तारों की नहीं

तो मैं तारों के स्थानों की क़सम खाता हूँ — और निस्सन्देह यह एक बड़ी क़सम है, यदि तुम जानो।

सूरह अल-वाक़िआ — आयतें 75-76

तारे का प्रकाश वर्षों चलता है, तो आप उसका पुराना स्थान देखते हैं, वह नहीं जहाँ वह अब है

सीधी-सादी बात में

जब आप रात में किसी तारे को देखते हैं, तो आप तारे को नहीं देख रहे होते! आप **वह प्रकाश देख रहे होते हैं जो उससे वर्षों पहले चला था**, शायद हज़ारों वर्ष पहले। हो सकता है वह तारा बुझकर ख़त्म भी हो चुका हो, और आप उसे अब भी देख रहे हों।

उस समय लोग क्या मानते थे?

किसी के मन में यह आया ही नहीं कि प्रकाश की कोई गति भी होती है। प्रकाश तुरन्त, समय के बाहर, दिखाई देता था। तारा वही था जो आप देखते थे, उसी जगह जहाँ आप उसे देखते थे, और बात ख़त्म।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रकाश की गति लगभग 3,00,000 किलोमीटर प्रति सेकंड है — तेज़ ज़रूर, पर **सीमित**। सूरज के बाद सबसे नज़दीकी तारा 4.2 प्रकाश-वर्ष दूर है, और जो कुछ हम नंगी आँख से देखते हैं उसमें कुछ हज़ारों प्रकाश-वर्ष दूर है। तो आज रात जो आकाश आप देखते हैं वह **पुरानी तस्वीरों का एक अलबम** है, जिसका हर तारा किसी अलग समय का है। ऐसे तारे सचमुच देखे गए हैं जिनके विस्फोट सदियों पहले हुए और जिनका प्रकाश अब भी हम तक पहुँच रहा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़सम स्वयं तारों की नहीं, बल्कि **उनके स्थानों की** खाई गई — और यह ऐसा निर्धारण है जिसका कोई प्रयोजन ही नहीं जब तक किसी तारे और उसके स्थान के बीच कोई वास्तविक अन्तर न हो। फिर अगली आयत इसे साफ़ कह देती है: "और निस्सन्देह यह एक बड़ी क़सम है, **यदि तुम जानो**" — यानी इस क़सम की महानता किसी ऐसे ज्ञान पर टिकी है जो सुनने वालों के पास न था। एक पाठ जो खुलकर कह रहा है: यहाँ एक भेद है जिसे तुम बाद में जानोगे। और वह जान लिया गया।

61

पारिस्थितिकी

तुम्हीं जैसे समुदाय

और धरती पर चलने वाला कोई जीव नहीं, और न अपने दोनों पंखों से उड़ने वाला कोई पक्षी, मगर वे तुम्हीं जैसे समुदाय हैं।

सूरह अल-अनआम — आयत 38

ऐसे समाज जिनमें व्यवस्था, सम्पर्क, श्रम-विभाजन और सीख है

पशु बिखरे हुए व्यक्ति नहीं, बल्कि संगठित समाज हैं

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने पशुओं को **"समुदाय"** कहा — और समुदाय वह समूह है जिसकी कोई व्यवस्था, कोई भाषा और कोई परम्पराएँ हों। और उसने कहा कि वे "तुम्हीं जैसे" हैं। आज विज्ञान सिद्ध करता है कि पशुओं के अत्यन्त संगठित समाज होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पुरानी धारणा में पशु विशुद्ध रूप से सहजवृत्ति वाला था, न कोई संगठन, न सम्पर्क, न सीखना। उसके और मनुष्य के बीच की खाई निरपेक्ष थी। उसे "समुदाय" कहना — वह शब्द जो क़ानूनों और व्यवस्थाओं वाली क़ौमों के लिए इस्तेमाल होता है — विचित्र था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पशु-व्यवहार विज्ञान ने सच्चे समाजों का अस्तित्व सिद्ध किया है: चींटियों और मधुमक्खियों में कठोर श्रम-विभाजन; व्हेलों और डॉल्फ़िनों में जटिल सम्पर्क-भाषाएँ, जिनमें **क्षेत्रीय बोलियाँ** तक हैं; चिम्पांज़ियों में सीखकर पहुँचाई जाने वाली संस्कृतियाँ; पक्षियों में संगठित प्रवास और बारी-बारी से नेतृत्व; और पत्ती काटने वाली चींटियों में तो "कृषि" की व्यवस्था तक, जो भूमिगत बाग़ानों में कवक उगाती हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार दो शब्दों में है। "**समुदाय**": अरबी में एक संगठित समूह जिसकी कोई साझा चिन्ता हो, केवल झुंड नहीं। और "**तुम्हीं जैसे**": अपनी अलग व्यवस्थाओं वाले समाज होने में तुम्हारे जैसे — बुद्धि और नैतिक उत्तरदायित्व में नहीं। हाल तक आधिकारिक विज्ञान पशुओं को संस्कृति या भाषा देने से इनकार करता रहा और उसे अवैज्ञानिक मानवीकरण गिनता रहा — फिर प्रमाणों के आगे पीछे हट गया। रहा "अपने **दोनों पंखों से** उड़ने वाला" वाक्यांश, तो वह एक चौंकाने वाला निर्धारण है, जो उसे अलग कर देता है जो बिना पंखों के उड़ता है।

62

प्राणि विज्ञान

सबसे कमज़ोर घर — और मादा मकड़ी

जो लोग अल्लाह के सिवा दूसरों को संरक्षक बनाते हैं उनकी मिसाल उस मकड़ी जैसी है जो एक घर बनाती है। और निस्सन्देह सबसे कमज़ोर घर मकड़ी का घर है।

सूरह अल-अनकबूत — आयत 41

उसका धागा इस्पात से मज़बूत... और उसका घर सबसे कमज़ोर घर

मकड़ी का घर

- अकेली मादा उसे बनाती है
- नर नहीं बनाता
- वह कभी-कभी नर को खा जाती है
- वह अपने बच्चों को खा जाती है
- एक ऐसा घर जिसमें सुरक्षा है ही नहीं

कमज़ोरी धागे में नहीं, बल्कि इस "घर" के भीतर के रिश्तों में है

सीधी-सादी बात में

मकड़ी का घर अकेली **मादा** बनाती है; नर का उसमें कोई हाथ नहीं। और वह सबसे कमज़ोर घर इसलिए नहीं कि धागा कमज़ोर है — बल्कि इसलिए कि वह **ऐसा घर है जिसमें न दया है न सुरक्षा**: मादा अपने साथी और अपने बच्चों तक को खा सकती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मकड़ी हर घर का जाना-पहचाना जीव है, और उसका जाला कमज़ोरी की एक सीधी-सादी तस्वीर। पर जाला कौन बनाता है — नर या मादा — इसका भेद, और जाले के भीतर चलने वाला यह भक्षण, ज्ञात न थे — ये ऐसे विवरण हैं जो केवल सावधान वैज्ञानिक अवलोकन में ही दिखते हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मकड़ी के जाले **विशेष रूप से मादाएँ ही बनाती हैं**; अधिकतर प्रजातियों में नर मकड़ी शिकार का जाला बुनती ही नहीं, बल्कि मादा की तलाश में भटकती है। दर्जनों प्रजातियों में मादा सम्भोग के बाद नर को मार देती है और खा जाती है, और दूसरी प्रजातियों में बच्चे अपनी माँ को खा जाते हैं या वह उन्हें खा जाती है। रहा स्वयं धागा, तो वह ज्ञात सबसे मज़बूत पदार्थों में है: अपने भार के हिसाब से इस्पात से भी मज़बूत।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यदि कमज़ोरी धागे की मज़बूती में होती, तो विज्ञान इस पाठ को झुठला देता, क्योंकि मकड़ी का रेशम प्रकृति की सबसे कठोर चीज़ों में सिद्ध हो चुका है। पर आयत **घर** की बात करती है, धागे की नहीं, और अरबी में घर का अर्थ परिवार, ठिकाना और सुरक्षा है। पूरा सन्दर्भ **एक ऐसे बिगड़े रिश्ते** का है जो अपने थामने वाले के किसी काम नहीं आता। तो वर्णन सामाजिक रूप से सूक्ष्म है, भौतिक रूप से नहीं। और इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि क्रिया स्त्रीलिंग में आई: "**वह** एक घर बनाती है" — क्योंकि बनाती वही है, नर नहीं।

सूक्ष्म जीव विज्ञान

63 एक पंख में रोग है और दूसरे में दवा

यदि तुममें से किसी के पेय में मक्खी गिर जाए तो उसे पूरी डुबो दे फिर निकाल दे, क्योंकि उसके एक पंख में रोग है और दूसरे में दवा।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

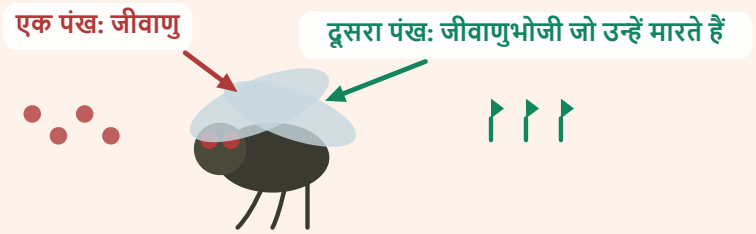

जीवाणुभोजी (Bacteriophages): ऐसे विषाणु जो जीवाणुओं के सिवा कुछ नहीं मारते

1915 में खोजे गए — और आज इलाज के तौर पर इस्तेमाल होते हैं

जीवाणुभोजी धरती के सबसे अधिक संख्या वाले जीव हैं, और उनका एकमात्र काम जीवाणुओं को मारना है

सीधी-सादी बात में

मक्खियाँ कीटाणु ढोती हैं — यह तो ज्ञात है। पर हदीस कुछ और कहती है: वह **उन कीटाणुओं को मारने वाली चीज़** भी ढोती है। और विज्ञान ने सचमुच ऐसे सूक्ष्मदर्शी जीव खोजे हैं जिनका एकमात्र काम जीवाणुओं का शिकार करना है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जीवाणुओं का कोई ज्ञान ही न था — वे 1676 तक देखे ही नहीं गए थे, ल्यूवेनहोक के सूक्ष्मदर्शी से। तो मक्खियों के ढोए हुए किसी "रोग" की बात करना कीटाणु सिद्धान्त से एक हज़ार वर्ष पहले की बात है। और उसके साथ-साथ **दवा** का होना — इसे समझने के लिए तो कोई ढाँचा ही मौजूद न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जीवाणुभोजी (बैक्टीरियोफ़ेज): सूक्ष्म विषाणु जो केवल जीवाणुओं को संक्रमित करते और मार डालते हैं, जिन्हें 1915 में ट्वोर्ट और 1917 में देरेल ने खोजा। वे **धरती के चेहरे पर सबसे अधिक संख्या वाले जीव** हैं, और वे वहीं केन्द्रित होते हैं जहाँ जीवाणु भरपूर हों — यानी मक्खियों पर और उनके ठिकानों में। वे सचमुच आम घरेलू मक्खी पर पाए गए हैं। फ़ेज-चिकित्सा आज एक स्थापित चिकित्सकीय विशेषज्ञता है, जो उन मामलों में इस्तेमाल होती है जहाँ प्रतिजैविक असफल हो जाएँ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

हदीस ने केवल दवा का ज़िक्र नहीं किया; उसने **एक व्यावहारिक विधि** बताई: पूरी डुबोना। और महत्व यहीं है — क्योंकि डुबोने का कोई अर्थ ही नहीं जब तक जीवाणु-रोधी तत्व को असर करने के लिए तरल में छोड़ना ज़रूरी न हो। फिर **दो पंखों** के बीच का भेद: एक हानि लिए हुए और दूसरा उपाय। यह ऐसा विभाजन नहीं जो शब्द गढ़ने वाले के मन में आए; अपेक्षित शब्द तो यही थे कि "मक्खी में रोग भी है और दवा भी"। हर एक को एक विशेष पंख से जोड़ देना एक परखा जा सकने वाला निर्धारण है — और विज्ञान आकर उसकी पुष्टि करता है।

धरती की पपड़ी

64 वह धरती, जो दरारों वाली है

क़सम है उस आकाश की जो लौटाता है, और उस धरती की जो फटती है।

सूरह अत-तारिक़ — आयतें 11-12

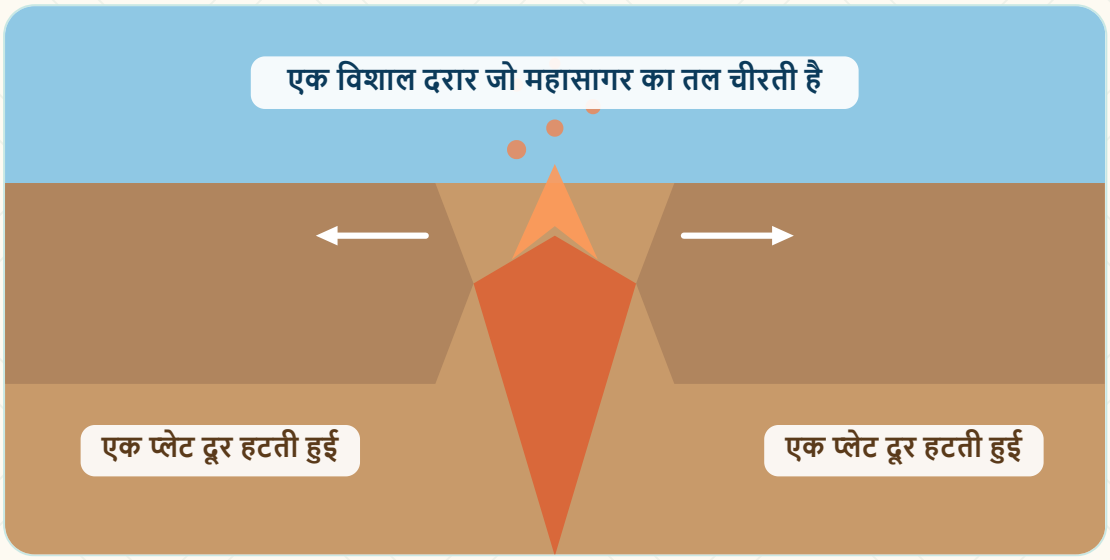

महासागरों के नीचे समूची धरती को लपेटती दरारों की एक शृंखला, 65,000 किलोमीटर लम्बी

सीधी-सादी बात में

धरती कोई ठोस, अटूट गोला नहीं है। उसकी पपड़ी **फटी हुई** है — उसमें विशाल दरारें हैं जो समूचे ग्रह के गिर्द लिपटी हैं, और जिनमें से गहराइयों का पिघला पत्थर ऊपर उठता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धरती को एक अकेला ठोस, जुड़ा हुआ पिंड समझा जाता था। समूची धरती को "दरारों वाली" — यानी फटी हुई — कहने का उस समय किसी के अनुभव में कोई अर्थ ही न था; जो दरारें दिखती थीं वे सूखी ज़मीन के चिटकने या घाटियों की तलहटी से अधिक कुछ न थीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इसे **मध्य-सागरीय कटक** कहते हैं: लगभग 65,000 किलोमीटर लम्बी ज्वालामुखी दरारों की एक शृंखला, जो समूचे ग्रह के गिर्द टेनिस गेंद की सिलाई की तरह घूमती है। उसमें से पिघला पदार्थ ऊपर उठता है और नई पपड़ी बनाता है। यह 1950 के दशक तक खोजी नहीं गई थी, और सोनार यंत्रों से खोजी गई।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ क़सम धरती का वर्णन **एक समग्र, अन्तर्निहित गुण** से करती है: "वह धरती जो फटती है" — जैसे किसी ऐसी जगह को "पेड़ों वाली" कहा जाता है जिसका स्वभाव ही पेड़ उगाना हो। वह किसी आकस्मिक दरार की बात नहीं करती, बल्कि दरार को स्वयं ग्रह का एक गुण बना देती है। और भूवैज्ञानिक तथ्य ठीक यही है: धरती एक ऐसा ग्रह है **जिसकी पपड़ी स्वभाव से ही टूटी हुई है**, और भूकम्पों, ज्वालामुखियों तथा महाद्वीपों की गति का मूल यही है।

65

समुद्रतल के ज्वालामुखी

वह सुलगाया हुआ समुद्र — पानी के नीचे की आग

क़सम है उस पर्वत की, और एक लिखी हुई किताब की ... और उस सुलगाए हुए समुद्र की।

सूरह अत-तूर — आयतें 1-6

धरती की 80% से अधिक ज्वालामुखी सक्रियता समुद्रों की सतह के नीचे होती है

सीधी-सादी बात में

समुद्र के नीचे आग जल रही है! महासागरों के तल पर ज्वालामुखी और छिद्र हैं जो चार सौ डिग्री का पानी उगलते हैं। तो समुद्र **सुलगाया हुआ** है — नीचे से आग दिया हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पानी और आग ऐसे विपरीत हैं जो मिल ही नहीं सकते — यह हर मनुष्य के लिए स्वतःसिद्ध है। समुद्र तो ठंडक और बुझाने का ही प्रतीक है। समुद्र को "सुलगाया हुआ" कहना सुनने वालों को एक ऐसी अस्पष्ट अभिव्यक्ति लगती थी जिसका वास्तविकता में कोई समकक्ष ही न हो।

आज विज्ञान क्या कहता है?

महासागरों के नीचे एक विशाल ज्वालामुखी शृंखला दौड़ती है, और धरती का 80% से अधिक ज्वालामुखी उद्गार पानी के नीचे होता है। 1977 में **तापजलीय छिद्र** खोजे गए, जो 400 डिग्री से ऊपर का पानी उगलते हैं जो तीव्र दबाव के कारण उबलता नहीं। और इन आगों के चारों ओर एक पूरा पारितंत्र है जो सूरज की रोशनी पर बिलकुल निर्भर नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अरबी क्रिया का अर्थ है **भट्ठी को धौंकना और उसे आग से भर देना** — और इसी जड़ से आया है "और जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे"। वर्णन सुलगाने के बारे में स्पष्ट है, भरने या बहने के बारे में नहीं। और सुलगाए हुए समुद्र की क़सम तूर पर्वत की क़सम और बैतुल-मामूर की क़सम के बीच आई है — यानी वास्तविक, मौजूद चीज़ों के बीच। तो वह एक उपस्थित सच्चाई की क़सम खा रही है, जिसे मनुष्य ने 1,350 वर्ष बाद उघाड़ा।

66

एक पूरी हुई भविष्यवाणी

निस्सन्देह हम मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिए तुम्हें काफ़ी हैं

निस्सन्देह हम मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबले में तुम्हें काफ़ी हैं — वे जो अल्लाह के साथ कोई और पूज्य ठहराते हैं। तो वे शीघ्र ही जान लेंगे।

सूरह अल-हिज्र — आयतें 95-96

नामज़द विरोधियों से काफ़ी हो जाने का वादा — और वे काफ़ी कर दिए गए

अल-आस	अल-अस्वद	अल-अस्वद	वलीद	अल-हारिस
मर गया	मर गया	मर गया	मर गया	मर गया

सीरत की किताबों में नाम लिए गए पाँच सरग़ना... सब हिजरत से पहले मर मिटे

मक्का में मज़ाक़ के सरग़ना एक के बाद एक थोड़े ही समय में मर मिटे

सीधी-सादी बात में

मक्का में कुछ जाने-माने लोग थे जो नबी ﷺ का मज़ाक़ उड़ाने में सबसे आगे थे और उन्हें सताते थे। फिर एक आयत आई जिसने कहा: **हम उनके मुक़ाबले में तुम्हें काफ़ी हैं**। उसके थोड़े ही समय बाद वे सब मर मिटे, हर एक किसी अलग कारण से।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये क़ुरैश के सरदारों में से थे, हैसियत और दौलत वाले, अपनी शक्ति और प्रभाव के चरम पर। और नबी ﷺ तथा उनके साथी अपनी सबसे कमज़ोर हालत में थे: घिरे हुए और सताए हुए, न कोई सेना न कोई पनाह। उनकी हानि रोकने का कोई मानवीय साधन ही न था, उन्हें मिटा देने की तो बात ही दूर।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सीरत और इतिहास की किताबें — जिनमें सबसे पुरानी इब्न हिशाम की रिवायत में इब्न इसहाक़ की सीरत है — दर्ज करती हैं कि मज़ाक़ के सरग़ना पाँच थे, और वे सब हिजरत से पहले या उसके आस-पास थोड़े ही समय के भीतर मर मिटे, और वह भी ऐसे भिन्न-भिन्न कारणों से जिनमें कोई समानता नहीं: बीमारी, महामारी, एक दुर्घटना, एक चुभा हुआ काँटा, एक घाव जिसमें सड़न पड़ गई। उनमें से कोई भी उसके बाद इस दावत का विरोध करने बचा नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

पाठ में **एक गारंटी** है, केवल कोई दुआ या आशा नहीं। और गारंटी एक ऐसा वचन है जो टूट सकता है, और टूटते ही देने वाले को उसके विरोधियों के सामने तुरन्त नंगा कर देता है। यदि उनमें से एक भी वर्षों तक सताता और मज़ाक़ उड़ाता जीवित रह जाता, तो आयत उनके पक्ष में नहीं, उनके विरुद्ध एक दलील बन जाती। और इससे अधिक महत्वपूर्ण: यह ऐसा वादा है जो **नगर के सबसे कमज़ोर की ओर से सबसे ताक़तवर लोगों के विरुद्ध** किया गया — और यह नमूना पूरे क़ुरआन में दोहराया जाता है: "यह जत्था शीघ्र ही हार जाएगा और पीठ फेरकर भागेगा" बद्र से वर्षों पहले मक्का में उतरा, और नबी ﷺ ने उसे बद्र के दिन पढ़ा, और वैसा ही हुआ।

67

ब्रह्मांड का अन्त

आकाश यूँ लपेटा जाएगा जैसे काग़ज़ लपेटा जाता है

जिस दिन हम आकाश को यूँ लपेट देंगे जैसे लिखे हुए काग़ज़ों का पुलिन्दा लपेटा जाता है।
जैसे हमने पहली रचना शुरू की थी, वैसे ही उसे दोहराएँगे।

सूरह अल-अंबिया — आयत 104

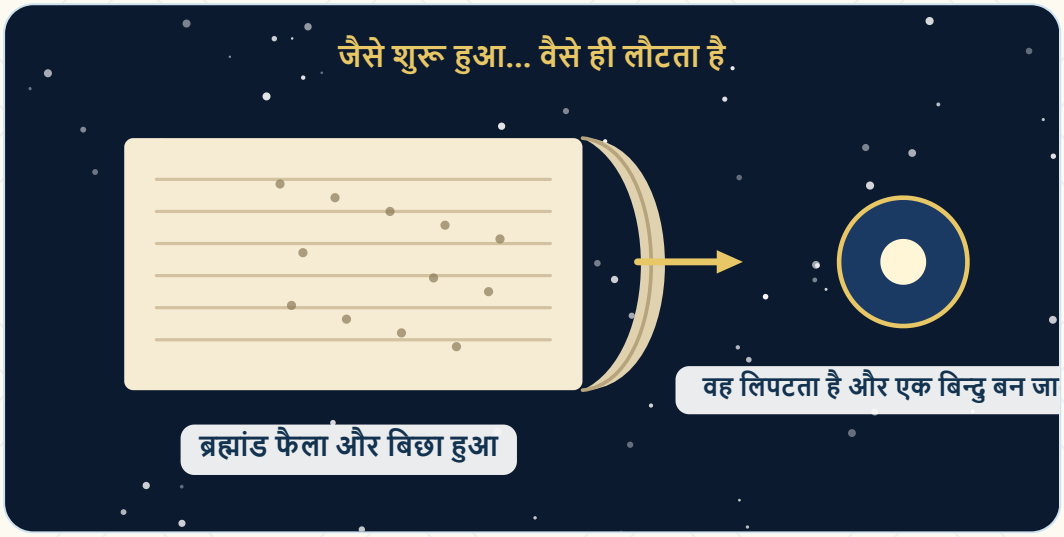

ब्रह्मांड एक बिन्दु से फैला... और एक बिन्दु में ही लिपट जाएगा

सीधी-सादी बात में

आयत कहती है कि ब्रह्मांड का अन्त एक **लिपटना** होगा — एक सिकुड़ना और लपेटा जाना, जैसे आप काग़ज़ की चादर लपेटते हैं। फिर वह एक चौंकाने वाली बात कहती है: यह अन्त ठीक **शुरुआत जैसा** होगा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

क्षितिज पर ऐसा कोई प्रश्न ही न था कि "ब्रह्मांड का अन्त कैसे होता है?", क्योंकि लोगों के मन में ब्रह्मांड अनादि और अनन्त था, न कोई शुरुआत न कोई अन्त। और अन्त के रूप को शुरुआत के रूप से जोड़ देने के लिए तो कोई ढाँचा ही मौजूद न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सैद्धान्तिक भौतिकी में ब्रह्मांड के अन्त के सबसे प्रसिद्ध परिदृश्यों में **महासंकुचन** है: गुरुत्वाकर्षण फैलाव पर हावी हो जाता है, और ब्रह्मांड अपने ही ऊपर सिकुड़ता जाता है जब तक अपनी मूल अवस्था — अत्यधिक घनत्व के एक बिन्दु — पर न लौट आए। यानी **अन्त शुरुआत का दर्पण-प्रतिबिम्ब है**।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार यहाँ आयत के दूसरे आधे भाग में है: "जैसे हमने पहली रचना शुरू की थी, वैसे ही उसे दोहराएँगे।" यह वाक्य एक नियम रख देता है: **अन्त का रूप = शुरुआत का रूप**। और ऐसा करके वह हमें परोक्ष रूप से बता देता है कि ब्रह्मांड अपनी शुरुआत में **लिपटा हुआ** था — एक बिन्दु में सिकुड़ा हुआ — और महाविस्फोट प्रतिरूप ठीक यही कहता है। एक ही आयत ने शुरुआत और अन्त दोनों एक साथ दे दिए, और वह भी ऐसे समय में जब किसी के मन में ब्रह्मांड की न कोई शुरुआत थी न कोई अन्त।

68

पल्सर

वह तारा जो खटखटाता है और छेदता है

क़सम है आकाश की और रात में आने वाले की — और तुम्हें क्या मालूम कि रात में आने वाला क्या है? — वह छेदने वाला तारा।

सूरह अत-तारिक़ — आयतें 1-3

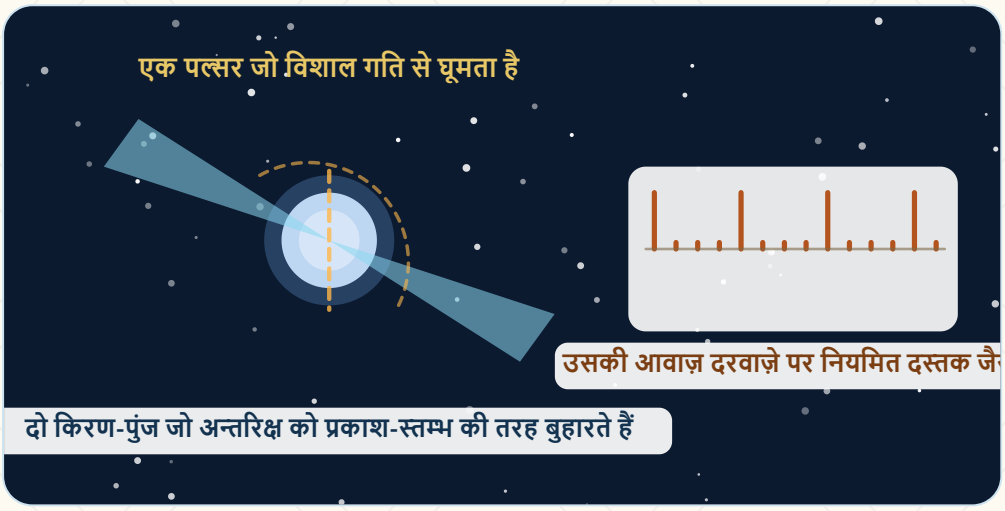

पल्सर नियमित स्पन्दन भेजता है, जैसे हथौड़े की चोटें जो कभी चूकतीं नहीं

सीधी-सादी बात में

कुछ तारे ऐसे संकेत भेजते हैं **जैसे दरवाज़े पर नियमित दस्तक**: खट... खट... खट... और वह भी मनुष्य की बनाई सबसे बारीक घड़ी से भी अधिक बारीकी के साथ। और क़ुरआन ने ऐसे तारे को "तारिक़" कहा — यानी वह जो खटखटाता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के लिए तारा प्रकाश का एक चुप, निश्चल बिन्दु था। न उसकी कोई ध्वनि थी, न स्पन्दन, न भेदन। खटखटाने के शब्द को — जो एक दोहराई जाने वाली, आवाज़ करती चोट है — आकाश के किसी तारे से जोड़ देना उस युग के किसी सुनने वाले के लिए निरर्थक बात थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1967 में खगोलविद जॉसलिन बेल ने अन्तरिक्ष से ऐसे रेडियो संकेत पकड़े जो चौंकाने वाली नियमितता से दोहराए जा रहे थे — इतने कि दल ने पहले उन्हें बुद्धिमान प्राणियों के सन्देश समझा और उनका नाम LGM-1 रखा। वे **पल्सर** निकले: फटे हुए तारों के अवशेष, जो हर सेकंड दसियों बल्कि सैकड़ों बार घूमते हैं और दो किरण-पुंज छोड़ते हैं जो अन्तरिक्ष को प्रकाश-स्तम्भ की तरह बुहारते हैं। जब उनके संकेत ध्वनि में बदले गए तो वे ठीक-ठीक **एक नियमित खटखटाहट** थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दोनों शब्द मिलकर कोई सन्देह नहीं छोड़ते: "तारिक़" = वह जो दोहराई जाने वाली खटखटाहट की ध्वनि पैदा करे, और "छेदने वाला" = वह जो भेदकर आर-पार निकल जाए। और पल्सर शाब्दिक रूप से दोनों वर्णनों को एक कर देता है: उसके संकेत एक नियमित खटखटाहट हैं, और वे हज़ारों प्रकाश-वर्ष छेदते हैं और आकाशगंगा की धूल के आर-पार हम तक पहुँचते हैं। बल्कि स्वयं क़सम के बाद एक चुनौती-भरा प्रश्न आया: "और तुम्हें क्या मालूम कि रात में आने वाला क्या है?" — यानी यह ऐसी चीज़ है **जिसे जानने का तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं**। और ऐसा ही रहा, 1967 तक।

69

ब्रह्मांड की बनावट

वह आकाश जो बुने हुए रास्तों वाला है

क़सम है उस आकाश की जो बुने हुए रास्तों वाला है।

सूरह अज़-ज़ारियात — आयत 7

ब्रह्मांड का महान मानचित्र: बिखरी आकाशगंगाएँ नहीं, बल्कि तन्तुओं और गाँठों का बुना हुआ वस्त्र

सीधी-सादी बात में

यदि आप समूचे ब्रह्मांड को बहुत दूर से देखें, तो आपको बिखरे हुए तारे नहीं दिखेंगे। आपको **बुने हुए कपड़े, या धागों के जाल** जैसा कुछ दिखेगा: आकाशगंगाओं के लम्बे तन्तु और उनके बीच विशाल काले शून्य। और यहाँ आया अरबी शब्द **ऐसी कसी हुई बुनाई जिसमें रास्ते दौड़ते हों** का अर्थ देता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के लिए आकाश एक चिकना गुम्बद था जिसमें प्रकाश के बिन्दु जड़े हों, न कोई बनावट, न कोई रूप, न कोई तरतीब। यह विचार कि ब्रह्मांड का कोई समग्र "आकार" भी होता है — यह तो मेज़ पर था ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पिछले दशकों में वेधशालाओं ने लाखों आकाशगंगाओं के त्रिविम मानचित्र बनाए (SDSS परियोजना और 2dF सर्वेक्षण), और परिणाम चौंकाने वाला था: आकाशगंगाएँ यूँ ही बेतरतीब नहीं बँटी हैं, बल्कि **ब्रह्मांडीय जाल** के रूप में सजी हैं — आकाशगंगाओं के विशाल तन्तु और दीवारें, जो विराट ख़ाली शून्यों को घेरे हुए हैं। और जो चित्र बनता है वह चौंका देने वाली हद तक बुने हुए वस्त्र से मिलता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ आया अरबी बहुवचन शब्दकोशों में किसी कसकर बुनी हुई चीज़ में गुँथे हुए रास्तों का अर्थ देता है, जैसे पानी की लहरें या रेत की सिलवटें। और आज इस्तेमाल होने वाला वैज्ञानिक शब्द ठीक यही है: **फ़िलामेंट्स (तन्तु)**। किसी अरबी शब्द का किसी आधुनिक वैज्ञानिक शब्द से इतने दुर्लभ और विशिष्ट अर्थ में, चौदह सदी बाद, मेल खा जाना — ऐसा संयोग से नहीं होता।

70

कृष्ण विवर

छिप जाने वाले, दौड़ने वाले, बुहार ले जाने वाले

तो मैं क़सम खाता हूँ उन छिप जाने वाले तारों की — जो दौड़ते हैं और बुहार ले जाते हैं।

सूरह अत-तकवीर — आयतें 15-16

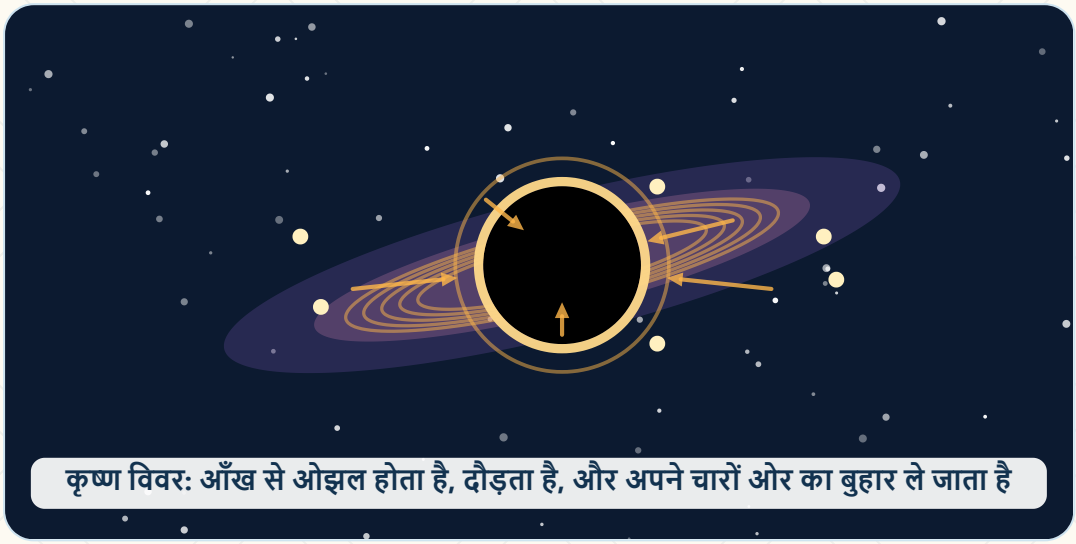

कृष्ण विवर अपने चारों ओर की गैस और तारों को किसी ब्रह्मांडीय झाड़ू की तरह निगल जाता है

सीधी-सादी बात में

अन्तरिक्ष में ऐसे पिंड हैं जिनमें तीन गुण हैं: वे **ओझल** हो जाते हैं और देखे नहीं जा सकते, वे विशाल गति से **दौड़ते** हैं, और वे अपने चारों ओर की चीज़ों को **बुहारकर** निगल जाते हैं। और अल्लाह यहाँ ठीक इन्हीं तीन गुणों की क़सम खा रहा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

दुनिया में कहीं भी किसी **अदृश्य** आकाशीय पिंड की कोई धारणा न थी। पिंड या तो दिखता था और इसलिए मौजूद था, या नहीं दिखता था और इसलिए मौजूद ही नहीं था। यह कि आकाश में कोई विराट चीज़ हो जिसे कोई आँख कभी न देखे, और जो अपने चारों ओर की चीज़ें निगल जाए — यह किसी ने कल्पना ही नहीं की।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कृष्ण विवर: इतने विशाल घनत्व वाले पिंड कि प्रकाश तक उनसे बच नहीं निकलता, इसलिए वे स्वभाव से ही **पूरी तरह अदृश्य** हैं। वे अपनी आकाशगंगाओं के भीतर घूमते और चलते हैं, और गैस, धूल तथा तारों को अपनी ओर खींचकर निगल जाते हैं। पहले कृष्ण विवर का सीधा चित्र 2019 में लिया गया (आकाशगंगा M87 में), और उनके अस्तित्व को सिद्ध करने वाले काम को 2020 में नोबेल पुरस्कार मिला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीनों शब्द चौंकाने वाली हद तक सूक्ष्म हैं: पहली जड़ का अर्थ है **ओझल होना और सिकुड़ना**; दूसरी का अर्थ है **दौड़ना, गति में होना**; तीसरी का अर्थ है **चारों ओर की चीज़ें समेटकर निगल जाना** (इसी से अरबी में झाड़ू का शब्द बना है, और उस माँद का भी जिसमें हिरण ओझल हो जाता है)। दो आयतों में तीन गुण, और वे सब एक ही ऐसी चीज़ पर लागू होते हैं जो बीसवीं सदी तक ज्ञात ही नहीं थी। और ध्यान रहे कि क़ुरआन में क़सम किसी महान चीज़ के सिवा कभी नहीं खाई जाती।

धरती की बनावट

71 धरती अपने बोझ बाहर निकाल देती है

> जब धरती अपने भूकम्प से हिला दी जाएगी, और धरती अपने बोझ बाहर निकाल देगी।
>
> **सूरह अज़-ज़लज़लह — आयतें 1-2**

भूकम्प और प्लेटों की गति ने ही धातुओं और तेल को हमारी पहुँच तक उठाया

सीधी-सादी बात में

आज हम जो सोना, धातुएँ और तेल निकालते हैं वे सब धरती के भीतर गहराई में दबे हुए थे। जिस चीज़ ने उन्हें सतह के पास उठाया वह लाखों वर्षों की **भूकम्प और धरती की हलचल** है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भूकम्प विशुद्ध आपदा था: ढहना, धँसना और मौत। किसी ने उसे किसी लाभ से या किसी भलाई के बाहर आने से नहीं जोड़ा। और "उसके बोझ" शब्द का उसके भीतर के ख़ज़ानों के अर्थ में सुनने वालों के लिए कोई स्पष्ट मतलब न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

दुनिया की अधिकतर आर्थिक खदानें **विवर्तनिक प्लेटों की सीमाओं** पर और भूकम्पीय तथा ज्वालामुखीय सक्रियता के क्षेत्रों में पड़ती हैं। प्लेटों की गति ही धातु-समृद्ध चट्टान को गहराइयों से ऊपर पपड़ी में धकेलती है, और गर्म तरल ही सोने और ताँबे को शिराओं में केन्द्रित करते हैं। इस सक्रियता के बिना धरती के सारे ख़ज़ाने सदा के लिए हमारी पहुँच से बाहर रह जाते।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत दो ऐसी घटनाओं को जोड़ती है जिन्हें साधारण बुद्धि नहीं जोड़ती: हिलना → बोझों का बाहर निकलना। और खनन-विज्ञान ठीक यही सिद्ध करता है। और "बोझ" शब्द चौंकाने वाली हद तक सूक्ष्म है: क़ीमती धातुएँ — सोना, प्लैटिनम, यूरेनियम — **तत्वों में सबसे घने** हैं, और अपने स्वभाव से ही धरती के केन्द्र की ओर धँसती हैं, इसलिए वे तभी ऊपर आती हैं जब कोई शक्ति उन्हें ऊपर धकेले। उन्हें ठीक उसी भौतिक गुण से पुकारा गया जो उन्हें अलग करता है।

72

विषाणु विज्ञान

एक मच्छर, और जो उससे आगे है

निस्सन्देह अल्लाह इस बात से नहीं शरमाता कि कोई मिसाल दे — एक मच्छर की, या उससे आगे जो कुछ है उसकी।

सूरह अल-बक़रह — आयत 26

"या उससे आगे जो है" = यानी जो उससे भी छोटा है

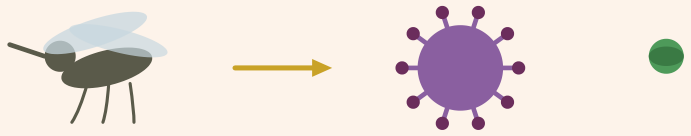

मच्छर	विषाणु	जीवाणु
आँख जो सबसे छोटी चीज़ देख सकती है	उससे दस लाख गुना छोटा	दोनों के बीच

जीवाणुओं और विषाणुओं के आगे नापा जाए तो मच्छर एक दैत्य है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने मिसाल के तौर पर वह सबसे छोटी चीज़ ली जिसे लोग देख सकते हैं — मच्छर — और फिर कहा: **"या उससे आगे जो कुछ है"**। और अरबी में "आगे" शब्द का अर्थ **छोटेपन में और आगे बढ़ जाना** भी हो सकता है: यानी और जो उससे भी छोटा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मच्छर सम्भव छोटेपन की आख़िरी हद था: वह सबसे छोटा जीव जिसे आँख देख सके और जिसके अंग वह अलग-अलग पहचान सके। उससे छोटा जीवन कल्पना से बाहर था, क्योंकि जो देखा न जा सके उसका अस्तित्व जाना ही नहीं जा सकता। और यही हाल सूक्ष्मदर्शी के आविष्कार तक बना रहा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मच्छर अपेक्षाकृत एक विशाल जीव है: लगभग 6 मिलीमीटर लम्बा। अकेले उसके शरीर में **लाखों जीवाणु** बसते हैं, और उस पर ऐसे विषाणु हैं जो जीवाणुओं से सैकड़ों गुना छोटे हैं। और एक अकेले मच्छर की बनावट अत्यन्त जटिल पाई गई है: सैकड़ों लेंसों वाली एक संयुक्त आँख, एक सूँड़ जिसमें छेदने, चूसने और रक्त-स्कन्दनरोधी पदार्थ भरने के छह अलग-अलग औज़ार हैं, और वे पंख जो हर सेकंड 600 बार फड़फड़ाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सन्दर्भ ही मामला तय कर देता है। आयत इस सिलसिले में आई है कि अल्लाह **छोटी चीज़ों** से मिसाल देने में नहीं शरमाता, और यह उनका जवाब है जिन्होंने मक्खी और मकड़ी के ज़िक्र का मज़ाक़ उड़ाया था। तो सन्दर्भ से मेल खाता पठन यही है: और न उससे भी **छोटेपन में आगे** जो कुछ है उससे। और यह प्रयोग शुद्ध अरबी है, जैसे कहा जाता है "यह आदमी अज्ञान में उससे भी आगे है"। तो पाठ परोक्ष रूप से उन जीवों के अस्तित्व की पुष्टि करता है जो उस सबसे छोटी चीज़ से भी छोटे हैं जिसे आँख देख सकती है — और वह भी ऐसे समय में जब मच्छर ही छोटेपन के मानव-ज्ञान की आख़िरी हद था।

भूविज्ञान

73 लूत की क़ौम — उसका ऊपरी हिस्सा नीचे कर दिया गया

तो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने उसके ऊपरी हिस्से को उसका निचला हिस्सा कर दिया, और उस पर तह-पर-तह पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाए।

सूरह हूद — आयत 82

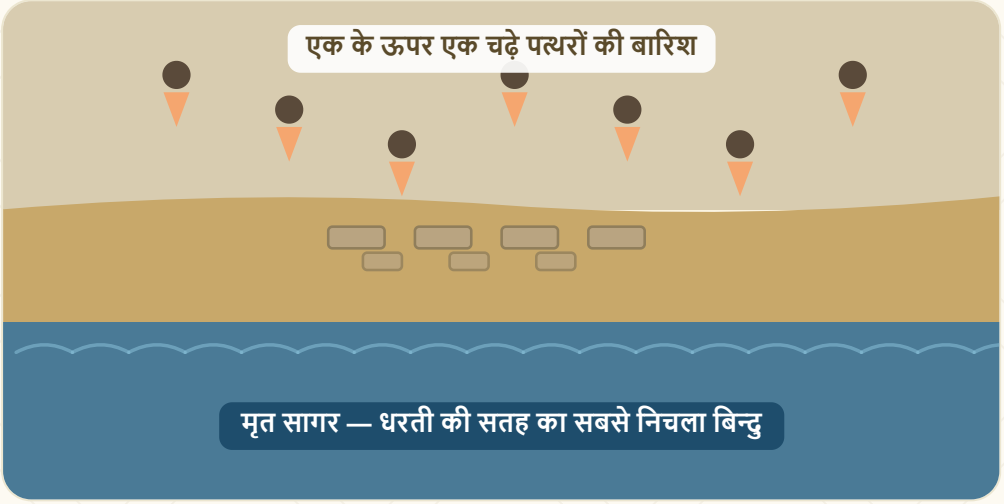

एक ऐसा क्षेत्र जो धँसा और उलट गया, फिर अत्यन्त खारे पानी में डूब गया

सीधी-सादी बात में

आयत कहती है कि लूत की क़ौम का नगर **उलट-पलट दिया गया**, और फिर उस पर एक के ऊपर एक कसे हुए पत्थर गिरे। और भूविज्ञान बताता है कि ख़ास तौर पर उसी क्षेत्र में ऐसा कैसे होता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धँसने और उलट जाने को विशुद्ध रूप से अदृश्य दंड समझा जाता था, जिसकी कोई प्राकृतिक क्रियाविधि न हो। यह पता न था कि यह क्षेत्र एक विशाल भूवैज्ञानिक भ्रंश पर बसा है, और न यह कि उसके नीचे गैसें, डामर और गन्धक भरे हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मृत सागर का क्षेत्र **मृत सागर रूपान्तर भ्रंश** पर पड़ता है — जो दुनिया के सबसे सक्रिय भूकम्पीय भ्रंशों में है — और वह इस ग्रह की सूखी ज़मीन का सबसे निचला टुकड़ा है। यह इलाक़ा प्राकृतिक डामर, गन्धक और ज्वलनशील गैसों से समृद्ध है। शोधकर्ताओं ने सुझाया है कि किसी प्रचंड भूकम्प ने **मिट्टी का द्रवीकरण और धँसाव** तथा उसकी परतों का उलट जाना पैदा किया, और साथ ही जलता हुआ पदार्थ उछला जो उसी क्षेत्र पर वापस गिरा। जॉर्डन के तल्ल अल-हम्माम में अचानक विनाश की एक परत मिली जिसमें विशाल तापमान पर पिघला हुआ काँच था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीन शब्द पूरा वर्णन उठाए हुए हैं। "**हमने उसके ऊपरी हिस्से को उसका निचला हिस्सा कर दिया**": परतों का पूर्ण ऊर्ध्वाधर उलटाव, केवल ढा देना नहीं — और धँसाव तथा उलटाव का भूवैज्ञानिक वर्णन यही है। "**पकी हुई मिट्टी के पत्थर**": एक ऐसा शब्द जो पत्थर और कड़ी हुई मिट्टी को जोड़ देता है। और "**तह-पर-तह**": एक के ऊपर एक परतों में कसे हुए — उस क्षेत्र की परतदार अवसादी चट्टान का एक सटीक वर्णन। पाठ एक सुसंगत प्राकृतिक क्रियाविधि का वर्णन करता है, कोई धुँधली कल्पना-चित्र नहीं।

74

पुरातत्व

इरम, स्तम्भों वाली — वह दबी हुई नगरी

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या किया — इरम, स्तम्भों वाली, जिसके जैसी कोई नगरी देशों में कभी बनाई ही नहीं गई थी?

सूरह अल-फ़ज्र — आयतें 6-8

हज़ारों वर्ष बाद रेत के टीलों के नीचे से स्तम्भ और एक क़िला निकल आए

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने **स्तम्भों** वाली एक महान नगरी का ज़िक्र किया जिसके जैसी कभी बनी ही नहीं थी, और कहा कि वह मिट गई। लोग उसे किंवदन्ती गिनते रहे... यहाँ तक कि उपग्रह रडार ने रेत के नीचे से उसके अवशेष उघाड़ दिए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

रुबुअ ख़ाली में अन्तहीन रेत के सिवा कुछ न था। पश्चिमी इतिहासकार "आद" और "इरम" को अरबों की किंवदन्तियों में गिनते थे, क्योंकि उनका न कोई निशान था न दूसरे स्रोतों में कोई ज़िक्र। और रेगिस्तान अपनी सतह से कोई भेद दिखाई नहीं देने देता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1992 में निकोलस क्लैप के नेतृत्व में एक दल ने नासा के अन्तरिक्ष यान के रडार-चित्र इस्तेमाल किए, और रेत के नीचे **प्राचीन क़ाफ़िला-मार्ग दिखाई दिए जो एक ही बिन्दु पर आ मिलते थे** — ओमान के ज़ुफ़ार प्रान्त के **शिस्र** में। खुदाई से एक अष्टकोणीय क़िला निकला जिसमें **ऊँची मीनारें** थीं, और एक ऐसी नगरी के अवशेष जो अपने नीचे के चूना-पत्थर के गड्ढे में धँस गई थी। दुनिया के अख़बारों ने इसकी घोषणा की: "उबार: रेतों का अटलांटिस"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़ुरआनी वर्णन ने उस नगरी को एक विशेष गुण दिया: "**स्तम्भों वाली**" — यानी खम्भे या ऊँची मीनारें। यह किसी भी नगरी का कोई आम गुण नहीं है; अरब की बस्तियाँ मिट्टी के घरों और तम्बुओं की थीं। फिर उसने जोड़ा: "**जिसके जैसी कोई नगरी देशों में कभी बनाई ही नहीं गई थी**" — यानी उसकी स्थापत्य-अनन्यता। और मीनारें सचमुच निकल आईं। और सबसे महत्वपूर्ण: क़ुरआन ने उसकी बात **वास्तविक इतिहास** के रूप में की, किंवदन्ती के रूप में नहीं, और वह भी ऐसे समय में जब किसी के पास उसका कोई प्रमाण न था — और यह चौदह सदियों तक उस पर एक आरोप बना रहा, जब तक रडार न आया।

75

मिस्रविद्या

हामान — एक नाम जो पत्थर से निकला

और फ़िरऔन ने कहा: ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊँची मीनार बना, शायद मैं रास्तों तक पहुँच जाऊँ।

सूरह ग़ाफ़िर — आयत 36

नाम उस चित्रलिपि में लिखा है जो 1822 से पहले पढ़ी ही नहीं गई

"हामान — पत्थर की खदानों के कारीगरों का प्रमुख"

एक प्राचीन मिस्री शिलालेख — वियना का हॉफ़ संग्रहालय

हामान का नाम और निर्माण में उसकी भूमिका लिए हुए एक चित्रलिपि कार्तूश

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने **हामान** नाम के एक व्यक्ति का ज़िक्र किया जो फ़िरऔन के साथ **निर्माण** का काम करता था। एक हज़ार वर्ष से भी अधिक बाद विद्वानों ने चित्रलिपि पढ़नी सीखी और यही नाम पाया — और उसका पद भी: पत्थर के कारीगरों का प्रमुख।

उस समय लोग क्या मानते थे?

चित्रलिपि भाषा चौथी सदी ईस्वी के आस-पास पूरी तरह मर गई, और धरती पर ऐसा कोई न बचा जो उसे पढ़ सके। प्राचीन मिस्र के अधिकारियों के नाम पूर्ण अँधेरे में चले गए। आलोचकों ने क़ुरआन पर गड्डमड्ड करने का आरोप लगाया और कहा कि हामान एस्तेर की पुस्तक की किसी बाबुली कहानी से उधार लिया गया नाम है, और मिस्र में उसका ज़िक्र एक ऐतिहासिक भूल है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1822 में शांपोलिओं ने रोज़ेटा शिला की मदद से चित्रलिपि पढ़ ली। वियना के हॉफ़ संग्रहालय द्वारा प्रकाशित प्राचीन मिस्री नामों की सूची में **हामान** नाम एक उत्कीर्ण पट्टिका पर आता है, और उसके साथ यह उपाधि जुड़ी है: **"पत्थर की खदानों के कारीगरों का प्रमुख"**। यानी वह व्यक्ति एक वास्तविक मिस्री था, और उसका पद विशेष रूप से पत्थर के निर्माण से जुड़ा था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सोचिए कि पाठ गढ़ने वाला किस गड्ढे में गिर सकता था। एक ऐसी सभ्यता के किसी गौण व्यक्ति का अजीब-सा नाम जिसकी भाषा मर चुकी थी, जो क़ुरआन में दस बार आया है और हर बार फ़िरऔन तथा मिस्र के साथ जुड़ा हुआ। और फिर उसी से, तमाम कामों में से, **एक मीनार बनाने** को कहा जाता है — और शिलालेख के अनुसार उस व्यक्ति का असली पेशा यही था। किसी जालसाज़ का एक भुला दिए गए नाम और उसके काम, दोनों पर एक साथ निशाना बैठा देना — और वह भी ऐसी भाषा में जिसे धरती पर कोई पढ़ ही न सकता था — कोई उचित सम्भावना नहीं। सदियों तक क़ुरआन पर लगा आरोप उसी के पक्ष में एक गवाही बन गया।

भाग दो

मुहम्मद ﷺ की वे भविष्यवाणियाँ जो सच निकलीं

दूर के भविष्य के बारे में कही गई बातें, जिन्हें उनके साथियों ने अपनी किताबों में लिख रखा, और फिर वे संसार की आँखों के सामने ठीक वैसी ही घटित हुईं जैसा उन्होंने कहा था — अक्षर दर अक्षर।

18 प्रमाण

विजय

76 क़ुस्तुन्तुनिया अवश्य फ़तह होगी

क़ुस्तुन्तुनिया अवश्य फ़तह होगी। कितना उत्तम होगा उसका सेनापति, और कितनी उत्तम होगी वह सेना।

अहमद और बुख़ारी की 'तारीख़' में रिवायत — कई विद्वानों ने सहीह ठहराया

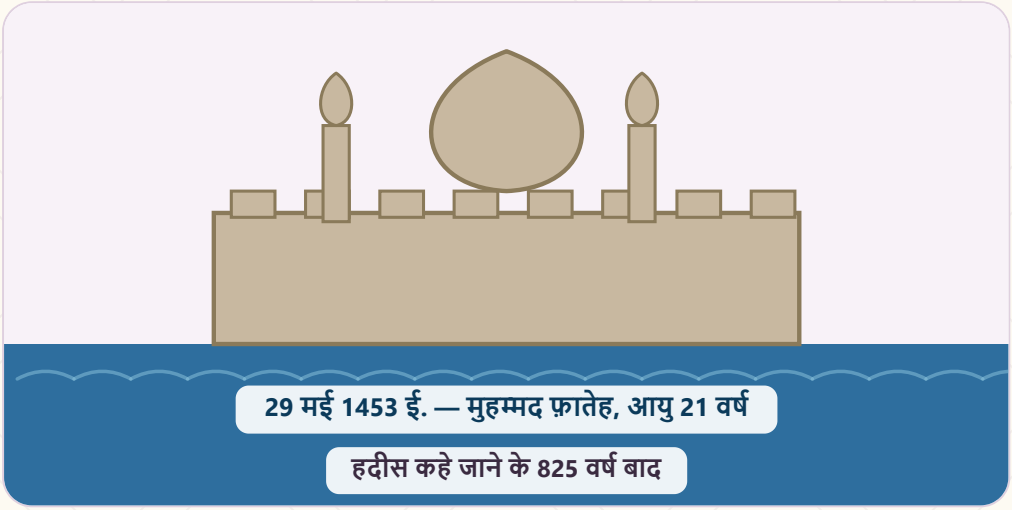

क़ुस्तुन्तुनिया: प्राचीन संसार का सबसे दुर्भेद्य क़िलाबन्द नगर

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि **क़ुस्तुन्तुनिया फ़तह होगी**, और उस सेनापति तथा उसकी सेना की प्रशंसा की जो उसे फ़तह करेगा। आठ सदी से भी अधिक बाद सुल्तान मुहम्मद फ़ातेह ने उसे फ़तह किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुस्तुन्तुनिया **धरती के सबसे शक्तिशाली ईसाई साम्राज्य की राजधानी** थी और मौजूद सबसे भारी क़िलाबन्द नगर: विशाल आकार की तिहरी दीवारें, लोहे की ज़ंजीर से बन्द बन्दरगाह, और तीन ओर समुद्र। वह सदियों में बीस से अधिक घेराबन्दियाँ झेल चुकी थी। और कहने वाले उस क्षण मदीना में थे, और उनके राज्य के पास कोई नौसेना थी ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

29 मई 1453 को सुल्तान मुहम्मद द्वितीय ने इक्कीस वर्ष की आयु में वह नगर फ़तह किया, और इसीलिए "फ़ातेह" कहलाए। उन्होंने एक ऐसी विशाल तोप इस्तेमाल की जिसके जैसी कभी देखी न गई थी, और ज़ंजीर को बचाकर निकलने के लिए **अपने जहाज़ ज़मीन पर से ले गए**, चिकने किए गए तख़्तों पर। यह घटना विश्व इतिहास की सबसे प्रसिद्ध घटनाओं में है और उसे मध्ययुग के अन्त का चिह्न माना जाता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

हदीस विजय की घोषणा पर नहीं रुकी; उसने **विजेता और उसकी सेना की पहले से प्रशंसा की** — और इससे दाँव और बढ़ जाता है, क्योंकि यह पाठ की सच्चाई को ऐसे व्यक्ति के चरित्र से बाँध देता है जो अभी पैदा ही नहीं हुआ। मुसलमान सेनापति आठ सदी तक उस सम्मान के लिए होड़ करते रहे: मुआविया, सुलैमान बिन अब्दुल-मलिक और हारून अर-रशीद — सबने उसकी घेराबन्दी की और असफल रहे — और **हर असफल कोशिश हदीस को झुठलाने का अवसर थी, उसकी पुष्टि का नहीं**। फिर विजय इक्कीस वर्ष के एक नौजवान के हाथों आई, और ऐसी तकनीक से जिसकी किसी ने कल्पना भी न की थी।

77

साम्राज्यों का पतन

जब किसरा मिट जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा नहीं

जब किसरा मिट जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा नहीं, और जब क़ैसर मिट जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर नहीं। उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, उन दोनों के ख़ज़ाने अवश्य अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएँगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

यह तब कहा गया जब वे शक्ति के चरम पर थे

फ़ारस और रोम शासन कर रहे हैं
ज्ञात संसार के आधे पर
और मुसलमान मदीना में
बिना धन का एक नवजात राज्य

→

और वैसा ही हुआ जैसा उन्होंने कहा

यज़्दगर्द, अन्तिम किसरा
फ़ारस मिट गया और फिर न लौटा
और रोम ने शाम तथा मिस्र खो दिए
और दोनों के ख़ज़ाने बैतुल-माल में

कहने और घटने के बीच: तीस वर्ष से भी कम

दो साम्राज्य जिन्होंने सदियों राज किया... एक ख़त्म हुआ और दूसरा पीछे हट गया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि जब **फ़ारस का बादशाह मरेगा तो उसके बाद उस जैसा कोई बादशाह नहीं आएगा**, और यही रोम के बादशाह के साथ भी, और यह कि उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च होंगे। और सब कुछ वैसा ही हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

फ़ारस और रोम निर्विवाद रूप से **दुनिया की दो महाशक्तियाँ** थीं, जिन्होंने पूरब और पश्चिम आपस में बाँट रखे थे, और जिनकी सेनाएँ तथा ख़ज़ाने गिनती से बाहर थे। मुसलमान उस समय मदीना में एक छोटा-सा समुदाय थे, ख़न्दक़ में घिरे हुए और भूख से पेट पर पत्थर बाँधे हुए। और ठीक उसी क्षण ये शब्द कहे गए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सासानी राज्य 651 ईस्वी में **यज़्दगर्द तृतीय** के मारे जाने के साथ सदा के लिए गिर गया, और फ़ारस के किसी बादशाह ने फिर कभी वह उपाधि नहीं धारण की। रहा रोम, तो उसका राज्य तुरन्त मिटा नहीं, पर उसने **शाम, मिस्र और उत्तरी अफ़्रीक़ा खो दिए** और पीछे हट गया, और क़ैसर का उन भूमियों पर फिर कभी अधिकार नहीं रहा। किसरा के ख़ज़ाने उमर की ख़िलाफ़त में मदीना लाए गए और बाँटे गए, तो उन्होंने कहा: "जिस क़ौम ने यह पहुँचा दिया वह सचमुच अमानतदार है।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दोनों वाक्यों के बीच के बारीक अन्तर पर ध्यान दीजिए। किसरा के बारे में कहा गया "उसके बाद कोई किसरा नहीं" — और **फ़ारस बिलकुल ख़त्म हो गया**। क़ैसर के बारे में वही कहा गया — और **रोम ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि इस्लाम की भूमियों से पीछे हट गया**। और यह हदीस के सन्दर्भ से मेल खाता है: बात यह हो रही है कि उस भूमि पर कौन राज करता है और उसके लिए कौन झगड़ता है। और इससे भी सूक्ष्म: हदीस ने **ख़ज़ानों को, भूमि को नहीं**, धुरी बनाया: "उन दोनों के ख़ज़ाने अवश्य अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएँगे" — और यही वह वाक्य है जिस पर उन्होंने क़सम खाई। धरती के दो सबसे धनवान बादशाहों की दौलत का वादा — और वह भी ऐसे व्यक्ति की ओर से जिसे अपना रात का खाना नहीं मिल रहा था।

78

आन्तरिक कलह

अम्मार को विद्रोही गिरोह क़त्ल करेगा

अफ़सोस अम्मार पर — उसे विद्रोही गिरोह क़त्ल करेगा। वह उन्हें जन्नत की ओर बुलाएगा और वे उसे आग की ओर बुलाएँगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

मदीना की मस्जिद बनते समय कहा गया — सन् 1 हिजरी

सन् 1 हिजरी — **36 वर्ष** — **सन् 37 हिजरी**

अम्मार ईंटें ढोते हुए — **सिफ़्फ़ीन में क़त्ल हुए**

जिस दिन यह घटा, हदीस दोनों गिरोहों के बीच निर्णायक दलील बन गई

यहाँ तक कि उन्होंने उसी लड़ाई में उससे बहस की

हिजरत के पहले वर्ष कही गई एक भविष्यवाणी, जो छत्तीस वर्ष बाद पूरी हुई

सीधी-सादी बात में

मस्जिद बनाते समय नबी ﷺ ने अम्मार बिन यासिर के बारे में कहा कि **उन्हें एक अन्यायी गिरोह क़त्ल करेगा**। छत्तीस वर्ष बाद अम्मार सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में क़त्ल हुए — और लोगों को पता चल गया कि विद्रोही कौन है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये शब्द तब कहे गए जब मुसलमान **मदीना के आरम्भ में एक ही, प्रेम से भरा समुदाय** थे, न कोई कलह न कोई फूट, और उनमें से हर एक अपने हाथों मस्जिद बना रहा था। यह विचार कि मुसलमान आपस में लड़ेंगे, और कोई बड़ा सहाबी मुसलमानों के ही हाथों क़त्ल होगा — किसी के मन से सबसे दूर की बात थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अम्मार बिन यासिर सन् 37 हिजरी में सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में, नब्बे वर्ष से ऊपर की आयु में, अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पक्ष में क़त्ल हुए। **जब यह मालूम हुआ कि वे क़त्ल हो गए तो शाम की सेना में भारी बेचैनी फैल गई**, क्योंकि हदीस उनमें प्रसिद्ध और प्रचलित थी। यह हदीस दोनों सहीह संग्रहों में दर्ज है और सहाबा के एक समूह से इतनी सनदों से रिवायत हुई है कि तवातुर के दर्जे तक पहुँच जाती है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस भविष्यवाणी की सबसे प्रबल बात यह है कि **दोनों झगड़ते पक्ष इसे जानते थे और इससे दलील देते थे** — तो यह घटना के बाद लिखी गई कोई ख़बर नहीं, बल्कि दशकों पहले से प्रचलित एक ख़बर है, इतनी कि उसका पूरा होना दोनों सेनाओं में से एक में सच्चा संकट पैदा कर गया। यदि हदीस सिफ़्फ़ीन के बाद गढ़ी गई होती, तो जिस पक्ष की वह निन्दा करती है वह उसे कभी क़बूल न करता। और नबी ﷺ ने **एक विशेष व्यक्ति**, **उसकी मृत्यु का ढंग** (क़त्ल, बीमारी नहीं), और **उसके क़ातिलों का वर्णन** (एक विद्रोही गिरोह — यानी अन्यायी मुसलमान, काफ़िर नहीं) — तीनों बताए। तीन बन्धन, तीनों एक साथ पूरे।

राजनीति

79 मेरा यह बेटा एक सरदार है

मेरा यह बेटा एक सरदार है, और शायद अल्लाह इसके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा दे।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

यह तब कहा गया जब हसन एक नन्हे बच्चे थे

न दो गिरोह न कोई लड़ाई
और पूरी उम्मत एक
और वह बच्चा अभी बालिग़ भी न था
और उसका कोई पद भी न था

→

सन् 41 हिजरी — एकता का वर्ष

उम्मत दो सेनाओं में बँट गई
हसन सुलह के लिए पद छोड़ देते हैं
तो मुसलमान एक हो गए
और उसका नाम पड़ा: एकता का वर्ष

उन्होंने ख़िलाफ़त सक्षम होते हुए छोड़ दी — और ख़ून बहने से बचा लिया

आरम्भिक इस्लामी इतिहास की सबसे बड़ी सुलह, और उसका कर्ता बालिग़ होने से पहले ही नाम ले लिया गया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने अपने नाती हसन को गोद में उठाया जब वे नन्हे बच्चे थे, और कहा: **अल्लाह इनके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा देगा**। लगभग चालीस वर्ष बाद उन्होंने ठीक यही किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

समुदाय में उस समय दो गिरोह थे ही नहीं — वह अपने नबी के पीछे एक ही समुदाय था। और जिस बच्चे के बारे में यह कहा गया वह अभी बालिग़ भी न हुआ था, और किसी को नहीं पता था कि वह क्या बनेगा। हदीस एक साथ तीन अज्ञात बातें बताती है: कि समुदाय **बँटेगा**, कि वह बँटवारा **एक सुलह पर ख़त्म होगा**, और कि वह विशेष बच्चा ही उसे कराने वाला होगा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सन् 41 हिजरी में, अली रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल के बाद, हसन के हाथ पर ख़िलाफ़त की बैअत हुई, और उनके साथ एक बड़ी सेना थी। फिर उन्होंने **मुसलमानों का ख़ून बचाने के लिए उसे मुआविया को सौंप दिया**, और वर्षों की लड़ाई के बाद समुदाय एक ही व्यक्ति के पीछे एक हो गया। उस वर्ष को समूचे इस्लामी इतिहास में **"एकता का वर्ष"** कहा जाता है। हदीस सहीह बुख़ारी में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सोचिए कि यह एक वाक्य कितनी बातें माँगता है: ऐसे समुदाय में **आने वाली कलह** की पुष्टि जो अभी बँटा ही नहीं, **उसे ख़त्म करने वाले व्यक्ति** की पहचान जब वह अभी बोलता तक नहीं, और **ढंग** का निर्धारण — सुलह, युद्ध में विजय नहीं। और आख़िरी बात सबसे चौंकाने वाली है: जिस आदमी के पास सेना और वैधता हो उसके लिए स्वाभाविक रास्ता तो लड़ना है। नबी के नाती का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में करना जो सक्षम होते हुए पीछे हट जाएगा — **और वह क़दम जिस पर उनके अपने कुछ अनुयायियों ने उन्हें उलाहना दिया** — और फिर इसी को "सरदारी" और "सुलह" कहना, हर राजनीतिक अपेक्षा के विरुद्ध एक फ़ैसला है। और वह शब्द दर शब्द पूरा हुआ।

राजनीति

80 ख़िलाफ़त तीस वर्ष — फिर बादशाहत

मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त तीस वर्ष है; फिर उसके बाद बादशाहत होगी।

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

ठीक तीस वर्षों में पाँच ख़लीफ़ा... फिर शासन-व्यवस्था बदल गई

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि नुबूवत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त केवल **तीस वर्ष** रहेगी, और उसके बाद शासन एक वंशानुगत बादशाहत में बदल जाएगा। और गणित ठीक-ठीक सही निकला।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धरती पर हर जगह शासन-व्यवस्थाएँ वंशानुगत बादशाहतें थीं: फ़ारस, रोम, हबशा और यमन। क्षितिज पर कोई दूसरी व्यवस्था थी ही नहीं। किसी ऐसी व्यवस्था को जो अभी शुरू भी नहीं हुई **वर्षों में एक आयु** दे देना, और फिर यह कहना कि वह किसी और चीज़ में बदल जाएगी — यह एक ख़तरनाक निर्धारण है, जो गिनती और हिसाब के लिए खुला पड़ा है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ख़िलाफ़त नबी ﷺ के देहान्त से सन् 11 हिजरी में शुरू हुई: अबू बक्र दो वर्ष तीन महीने, फिर उमर साढ़े दस वर्ष, फिर उस्मान लगभग बारह वर्ष, फिर अली लगभग पाँच वर्ष, फिर हसन लगभग छह महीने, जब तक उन्होंने सन् 41 हिजरी में पद नहीं छोड़ दिया। **कुल: ठीक तीस वर्ष।** फिर शासन एक ऐसी बादशाहत बन गया जो उमय्यों में और फिर अब्बासियों में विरासत से चला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह एक ऐसी संख्या है जो **नापी जा सकती है और झुठलाई जा सकती है**, न कि कोई आम वर्णन जिसमें व्याख्या की गुंजाइश हो। यदि अवधि दो वर्ष अधिक या कम चलती, तो मामला खुल जाता। और इससे भी विलक्षण: हदीस ने यह नहीं कहा कि "फिर इस्लाम ख़त्म हो जाएगा" और न यह कि "फिर कुफ़्र छा जाएगा" — उसने कहा "फिर **बादशाहत**", यानी शासन के रूप में बदलाव, राज्य के बने रहते हुए। और ठीक यही हुआ: इस्लामी राज्य बना रहा और फैलता गया, पर शासक चुनने का तरीक़ा बदल गया। राजनीतिक वर्णन में ऐसी बारीकी जो संख्या की बारीकी से किसी तरह कम नहीं।

81

नगर और निर्माण

भेड़ चराने वाले ऊँची इमारतों में होड़ करते हुए

यह कि लौंडी अपनी मालकिन को जनेगी, और यह कि तुम नंगे पाँव, नंगे बदन, कंगाल भेड़ चराने वालों को ऊँची इमारतों में होड़ करते देखोगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — जिब्रील वाली हदीस

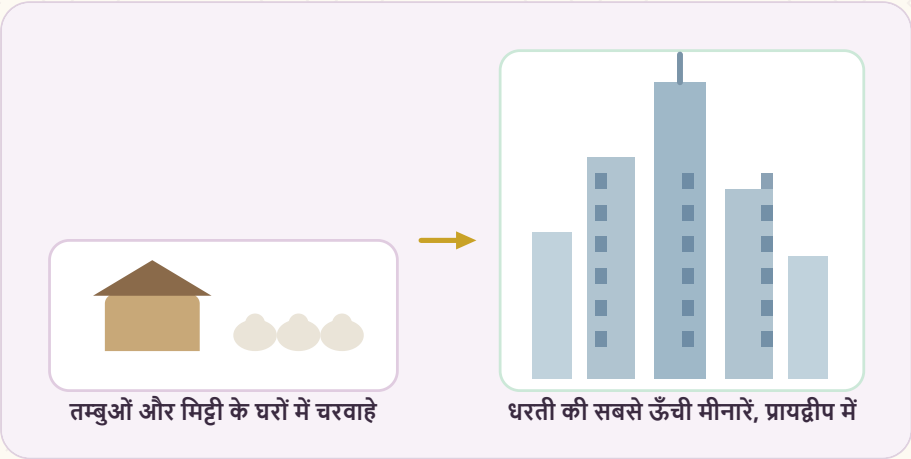

आज दुनिया की सबसे ऊँची इमारत उसी रेगिस्तान में खड़ी है जिसके घर कभी बाल और मिट्टी के थे

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने ख़बर दी कि अन्तिम युग की निशानियों में यह होगा कि **ग़रीब, नंगे पाँव चरवाहे** ऊँची इमारतें उठाने में होड़ करेंगे। और आज आप यही अपनी आँखों से देख रहे हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब प्रायद्वीप उस समय धरती का सबसे ग़रीब बसा हुआ क्षेत्र था: न कोई नदी, न खेती, न कोई ज्ञात खनिज। उसके लोग चरागाह के पीछे चलने वाले चरवाहे थे, उनके घर बाल और मिट्टी के थे और कभी एक मंज़िल से ऊपर नहीं। किसी ने कल्पना भी नहीं की कि यह भूमि एक दिन दौलत और निर्माण का केन्द्र बन जाएगी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रायद्वीप में 1930 के दशक में तेल मिला, और दो पीढ़ियों के भीतर उसकी हालत बदल गई। आज दुबई में **बुर्ज ख़लीफ़ा** 828 मीटर ऊँचा खड़ा है, दुनिया की सबसे ऊँची इमारत; निर्माणाधीन **जेद्दा टॉवर** एक किलोमीटर से ऊपर जाता है; और मक्का के **अबराज अल-बैत** धरती की सबसे विशाल इमारतों में हैं। "सबसे ऊँची" के लिए होड़ करना ख़ास तौर पर उसी क्षेत्र की एक घोषित विशेषता बन चुकी है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही वाक्य में तीन बन्धन इसे किसी आम सूत्र के बजाय एक भविष्यवाणी बना देते हैं। पहला, **करने वालों की पहचान** का निर्धारण — "नंगे पाँव, नंगे बदन, कंगाल भेड़ चराने वाले": बनाने वाले **स्वयं ग़रीब** हैं, न कि निर्माण की लम्बी परम्परा वाली कोई धनी क़ौम। दूसरा, क्रिया **"होड़ करना"** — एक पारस्परिक रूप जो विशेष रूप से **ऊँचाई में प्रतिद्वंद्विता** बताता है, केवल ऊँचा बनाना नहीं। तीसरा, कि यह **एक विराट बदलाव की निशानी** के तौर पर दिया गया, यानी ऐसी चीज़ जो साधारण से इतनी बाहर हो कि शुभ-अशुभ संकेत गिनी जाए। और जो कोई एक बंजर रेगिस्तान को देखकर यह भविष्यवाणी करे कि उसके लोग एक दिन धरती की सबसे ऊँची इमारत के लिए होड़ करेंगे, वह अनुमान से नहीं बोल रहा।

जलवायु और पर्यावरण

82 यहाँ तक कि अरबों की भूमि फिर चरागाहों और नदियों में लौट आए

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक धन इतना अधिक और उमड़ता हुआ न हो जाए, और जब तक अरबों की भूमि फिर चरागाहों और नदियों में न लौट आए।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

भूवैज्ञानिक प्रमाण सिद्ध करते हैं कि वह ऐसी थी... और फिर होगी

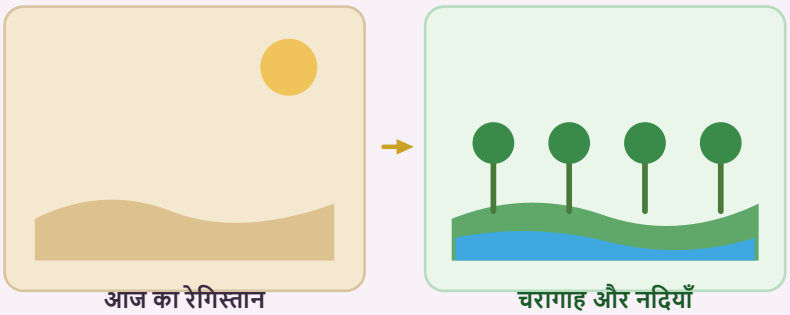

अरब की रेत के नीचे प्राचीन नदियों की तलहटियाँ हैं, जिन्हें उपग्रहों ने उघाड़ा

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि अरबों की भूमि हरे चरागाहों और बहती नदियों में **लौट** आएगी। और कुंजी शब्द है **"लौटना"** — यानी वह पहले ऐसी रही है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब प्रायद्वीप लिखित इतिहास से भी पहले से बंजर रेगिस्तान रहा है, और उसके लोग उसकी कोई दूसरी हालत जानते ही न थे। उसके सुदूर जलवायु-अतीत को जानने का कोई साधन ही न था। और यह कहना कि वह चरागाहों में लौट आएगी — **इसके लिए यह माँगना पड़ता है कि वह कभी चरागाह रही हो** — और ख़बर यहीं है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उपग्रहों और भूमि-भेदी रडार ने अरब की रेत के नीचे **प्राचीन नदी-तलहटियों का एक विशाल जाल** उघाड़ा है, जिन्हें जीवाश्म नदियाँ कहते हैं, और जिनमें सबसे बड़ी वादी अल-बातिन और वादी अर-रुम्मा हैं। पुरा-जलवायु अध्ययनों ने सिद्ध किया है कि प्रायद्वीप बार-बार आर्द्र युगों से गुज़रा (आख़िरी लगभग 6,000 वर्ष पहले) जिनमें झीलें, नदियाँ, चरागाह और बड़े पशु थे। वहाँ सूखी झीलों की तलहटियों के पास दरियाई घोड़े और मगरमच्छ की हड्डियाँ तथा पत्थर के औज़ार मिले हैं। और जलवायु-चक्र भविष्य में आर्द्रता के लौटने की भविष्यवाणी करते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही शब्द चमत्कार उठाए हुए है: **"लौटना"**। वह एक साथ दो बातों की पुष्टि करता है: एक ऐसे भूवैज्ञानिक **अतीत** की ख़बर जिसका किसी को कोई ज्ञान न था, और एक ऐसे **भविष्य** की भविष्यवाणी जो अभी आया नहीं। यदि उसने "बन जाएगी" कहा होता, तो वह केवल भविष्य के बारे में एक कथन होता। और स्वयं हदीस के भीतर के संकेत पर ध्यान दीजिए: उसने इसे "धन इतना अधिक और उमड़ता हुआ हो जाए" से जोड़ दिया — और वह आधा भाग तेल के ज़रिये सचमुच पूरा हो चुका है, और वही आज वहाँ के विशाल वनरोपण तथा कृषि परियोजनाओं को पैसा देता है।

ज्वालामुखी

83 एक आग जो हिजाज़ की भूमि से निकलेगी

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक हिजाज़ की भूमि से एक ऐसी आग न निकले जो बुसरा के ऊँटों की गर्दनें रोशन कर दे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

एक ऐतिहासिक ज्वालामुखी विस्फोट, जो स्रोतों में और लावा की परतों में दर्ज है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने ख़बर दी कि हिजाज़ की भूमि से एक ऐसी आग निकलेगी जिसका प्रकाश सैकड़ों किलोमीटर दूर शाम के नगर **बुसरा** तक पहुँचेगा। और यह 1256 ईस्वी में हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हिजाज़ एक रेगिस्तानी भूमि है जिसके लोगों ने अपने जीवन में कभी कोई ज्वालामुखी देखा ही न था। "ज्वालामुखी" शब्द ही उनके माहौल में अनजान था। और **निकलने की जगह** तथा **प्रकाश की पहुँच** को किसी दूसरे देश के एक विशेष नगर का नाम लेकर निर्धारित कर देना — ऐसा विवरण निश्चय के बिना कहा ही नहीं जाता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जुमादा अल-आख़िरा 654 हिजरी / जून 1256 ईस्वी में मदीना के पूर्व में **हर्रत रहत** में एक ज्वालामुखी फटा और लगभग पचपन दिन चलता रहा, और उसका लावा दसियों किलोमीटर बहा। उसके समकालीन इतिहासकारों — अबू शामा, क़ुर्तुबी, इब्न कसीर और नववी — ने उसका वर्णन किया और दर्ज किया कि **उसका प्रकाश बुसरा, तैमा और मक्का से देखा गया**, और लोग रात में उससे देखते थे। भूवैज्ञानिकों ने हर्रत रहत के लावा-प्रवाहों का अध्ययन किया और उनकी तिथि इसी घटना से जोड़ी है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

वर्णन की बारीकी पर ध्यान दीजिए: उसने केवल "एक बड़ी आग" नहीं कहा, बल्कि **दिखाई देने वाला असर** निर्धारित किया: "**बुसरा के ऊँटों की गर्दनें रोशन कर दे**"। और बुसरा दक्षिणी शाम का एक नगर है, मदीना से लगभग एक हज़ार किलोमीटर दूर। और ख़ास तौर पर **ऊँटों की गर्दनों** का विवरण तब तक विचित्र लगता है जब तक समझा न जाए: क्षितिज पर दूर की चमक उन्हीं चीज़ों को रोशन करती है जो क्षितिज-रेखा से ऊपर उठी हों, और क़ाफ़िले में सबसे ऊँची चीज़ ऊँट की गर्दन है। और छह सदी बाद इतिहासकारों ने ठीक यही वर्णन किया। यह घटना कई स्वतंत्र स्रोतों में दर्ज है और चट्टान में भूवैज्ञानिक रूप से पुष्ट है।

84

आधुनिक जीवन

समय आपस में सिमट आएगा

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक समय सिमट न जाए, यहाँ तक कि वर्ष महीने जैसा हो जाए, महीना सप्ताह जैसा, और सप्ताह दिन जैसा।

अहमद और तिर्मिज़ी की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

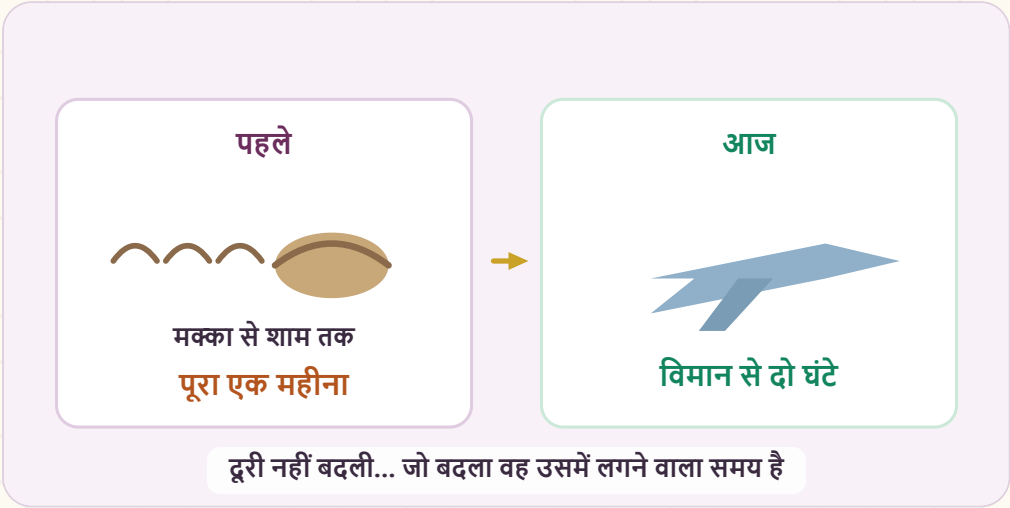

जो काम पहले एक महीना लेता था अब दो घंटे लेता है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि समय **आपस में सिमट आएगा**, यहाँ तक कि वर्ष महीने जैसा और महीना सप्ताह जैसा हो जाएगा। और हम यही जी रहे हैं: जिसे कभी महीने चाहिए थे उसे अब घंटे चाहिए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सृष्टि के आरम्भ से मानव-अनुभव में समय अटल था। ऊँट और घोड़े से यात्रा, महीनों रास्ते में रहने वाला पत्र, मौसमों बाद पहुँचने वाली ख़बर। यह कल्पना से बाहर था कि ये अनुपात कभी बदल भी सकते हैं — ये तो जीवन की अटल चीज़ों में थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जो रास्ता कोई क़ाफ़िला महीने में पार करता था उसे विमान दो घंटे में पार करता है। जो पत्र महीने लेता था वह अब एक सेकंड से भी कम में पहुँच जाता है। जिसके लिए पुस्तकालयों में जीवन भर खोज चाहिए थी वह मिनटों में हो जाता है। यह त्वरण समाजशास्त्र में **"समय-स्थान संपीडन"** नाम से अध्ययन का विषय बन चुका है, और यह एक स्थापित शब्द है जो परिवहन तथा संचार की गति का दूरी की अनुभूति पर पड़ने वाला असर बताता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार स्वयं शब्द-विन्यास में है। उसने न कहा "बरकत घट जाएगी" और न "ज़िन्दगी जल्दी गुज़र जाएगी" — और ये दोनों सम्भव तथा क़बूल करने योग्य पठन थे। उसने इसके बजाय **एक क्रमिक गणितीय अनुपात** का रूप इस्तेमाल किया: वर्ष → महीना, महीना → सप्ताह, सप्ताह → दिन, दिन → घंटा। यानी समय की इकाई हर क़दम पर लगभग दसवें हिस्से तक सिकुड़ती है। और अरबी क्रिया एक पारस्परिक रूप है जो सिरों के आपस में निकट आने का अर्थ देती है — यानी दूरियों के सिकुड़ने का एक सटीक वर्णन, न कि केवल बरकत के घटने का। और बीसवीं सदी में समाजशास्त्रियों का गढ़ा शब्द "समय-स्थान संपीडन" तो लगभग इस वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद ही है।

85

अर्थशास्त्र

धन इतना अधिक कि कोई सदक़ा लेने वाला ही न मिले

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक तुममें धन इतना अधिक और उमड़ता हुआ न हो जाए कि धन वाला इस बात से परेशान हो जाए कि उसका सदक़ा कौन क़बूल करेगा।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

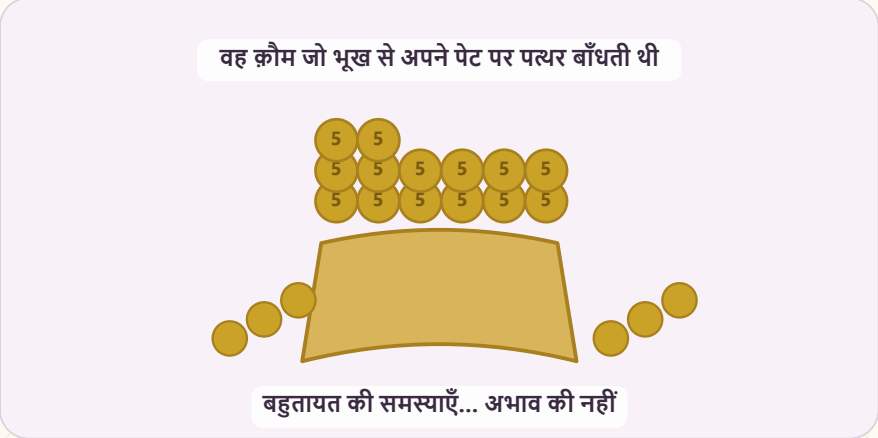

नबी ﷺ के पेट पर पत्थर बाँधने से... लेकर ऐसे अतिरेक तक जिसका कोई लेने वाला नहीं

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि एक समय आएगा जब धन इतना अधिक होगा कि **धन वाले को अपना सदक़ा क़बूल करने वाला कोई ग़रीब ढूँढ़ना मुश्किल हो जाएगा**। यह इतिहास में एक से अधिक बार हो चुका है, और आज भी हो रहा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये शब्द ऐसे समाज में कहे गए **जो सचमुच भूखा था**: सहाबा ने ख़न्दक़ के दिन पेट पर पत्थर बाँधे थे, और अहले-सुफ़्फ़ा को अपना बदन ढाँकने को कपड़ा तक न मिलता था। उस समय यह विचार कि धन इतना उमड़ पड़े कि कोई ग़रीब ही न मिले — कल्पना से बाहर था। और उस समय तक का समूचा मानव इतिहास अभाव का इतिहास था, बहुतायत का नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह **उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की ख़िलाफ़त** में स्पष्ट रूप से हुआ, यहाँ तक कि इतिहासकारों ने दर्ज किया कि उनके कारिन्दे धन लिए घूमते थे और कोई लेने वाला नहीं मिलता था, तो उन्होंने उससे ग़ुलाम आज़ाद कराए और बिन-ब्याहों के विवाह कराए। और हमारे अपने युग में: खाड़ी के वे देश जहाँ धन इतना उमड़ता है कि चुनौती **ज़कात के लेने वाले ढूँढ़ना** बन जाती है, अन्तरराष्ट्रीय दानी कोष जो ऐसे अतिरेक की घोषणा करते हैं जिसे वे अपने यहाँ बाँट ही नहीं पाते, और वे आधुनिक आर्थिक समस्याएँ जिनके नाम **"अति-उत्पादन"** और "अति-उपभोग" हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भविष्यवाणी यहाँ "लोग अमीर हो जाएँगे" नहीं है — जो एक साधारण अपेक्षा होती — बल्कि एक पूरी तरह उलटा समीकरण है: **कि लेना नहीं, देना समस्या बन जाए**। और यह समाज की बनावट में एक उलटाव है, केवल हालात का सुधरना नहीं। और जिस अरबी क्रिया का अनुवाद "परेशान हो जाए" है वह सूक्ष्म है: उसका अर्थ है उसे चिन्ता में डालना और उसका मन घेर लेना — तो समस्या मनोवैज्ञानिक और प्रबन्धकीय है, भौतिक नहीं। और समकालीन ज़कात-कोषों का ठीक यही वर्णन है जब वे ऐसे अतिरेक की घोषणा करते हैं जिसे भेजने की कोई जगह नहीं। और यह ऐसे लोगों से कहा गया जिन्हें अपनी रोज़ की रोटी नहीं मिलती थी।

विजय

86 तुम मिस्र फ़तह करोगे — तो उसके लोगों के साथ भलाई करना

तुम मिस्र फ़तह करोगे, वह भूमि जिसमें क़ीरात का नाम लिया जाता है। तो जब तुम उसे फ़तह करो तो उसके लोगों के साथ भलाई करना, क्योंकि उनका एक अहद है और एक रिश्तेदारी भी।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

मिस्र: नबी ﷺ ने उसके बारे में उसकी विजय से बीस वर्ष से भी अधिक पहले हिदायत दे दी

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि मुसलमान **मिस्र फ़तह करेंगे**, और उसमें दाख़िल होने से पहले ही उन्हें उसके लोगों के साथ भलाई करने की हिदायत दी। और उसकी एक पहचान भी बताई: कि वह ऐसी भूमि है जहाँ **क़ीरात** चलता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मिस्र उस समय एक क़िलाबन्द रोमी प्रान्त था, और इस्लामी राज्य एक नई चीज़ थी जो अभी प्रायद्वीप से बाहर निकली भी न थी। अरब मिस्र को व्यापार के ज़रिये जानते थे और उसकी व्यवस्थाओं के ब्योरे नहीं जानते थे। और किसी देश के लोगों के बारे में **उसकी विजय से पहले** हिदायत देना, यह साफ़ कह देना है कि वह फ़तह होगा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मिस्र सन् 20 हिजरी में उमर की ख़िलाफ़त के दौरान अम्र बिन अल-आस के हाथों फ़तह हुआ। रहा **क़ीरात**, तो वह यूनानी-मिस्री मूल की एक माप-इकाई है, जो आज तक मिस्र में ज़मीन के लिए (एक क़ीरात = फ़ेद्दान का 1/24) और सोने के लिए (21 और 24 कैरट) इस्तेमाल होती है। यह एक ऐसी इकाई है **जो इस चलन के साथ किसी दूसरे अरब देश में इस्तेमाल नहीं होती**। इतिहासकार यह दर्ज करते रहे कि मिस्र के लोग इसी शब्द से पहचाने जाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो पहचान बताई गई वही प्रमाण है: "**वह भूमि जिसमें क़ीरात का नाम लिया जाता है**"। और यह ऐसे देश के लोगों के किसी स्थानीय चलन से पहचान कराना है जिसमें मुसलमान अभी दाख़िल भी नहीं हुए थे — ऐसा विवरण वही बताता है जो जानता हो। फिर उससे भी विलक्षण कारण: "क्योंकि उनका एक **अहद है और एक रिश्तेदारी भी**" — और रिश्तेदारी से मुराद हाजरा हैं, इस्माईल अलैहिस्सलाम की माँ, जो मिस्री थीं, और मारिया क़िब्तिया, नबी ﷺ के बेटे इब्राहीम की माँ। तो हिदायत एक वास्तविक वंश-सम्बन्ध पर टिकी है। किसी क़ौम के साथ भलाई की हिदायत, उनके देश के फ़तह होने से बीस वर्ष पहले — और वह भी ऐसे व्यक्ति से जिसके पास कहने के दिन कोई सेना ही न थी।

नामज़द व्यक्ति

87 उवैस क़रनी — एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन जिसे उन्होंने कभी देखा ही नहीं

तुम्हारे पास यमन वालों की कुमुक के साथ उवैस बिन आमिर आएगा, मुराद से, फिर क़रन से। उसे कोढ़ था और वह उससे ठीक हो गया सिवाय एक दिरहम भर जगह के। उसकी एक माँ है जिसकी वह बहुत सेवा करता है।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

पाँच निशानियाँ, पहले से निर्धारित

- उसका नाम: उवैस बिन आमिर
- उसका क़बीला: मुराद, फिर क़रन
- उसे कोढ़ था और वह ठीक हो गया
- उसमें से एक दिरहम भर जगह बाक़ी रही
- अपनी माँ का सेवक, और कुछ नहीं

उमर ने उसे वर्षों बाद इन सभी निशानियों के साथ पाया

उमर बिन ख़त्ताब हज के मौसमों में उसके बारे में पूछते रहे यहाँ तक कि उसे पा लिया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया **जिसे उन्होंने कभी देखा न था और कभी मिले न थे**: उसका नाम, उसका क़बीला, यह कि वह एक बीमारी से ठीक हो चुका है सिवाय एक सिक्के भर के छोटे-से धब्बे के, और यह कि वह अपनी माँ की सेवा करता है। फिर उमर ने उसे इन सब निशानियों के साथ पा लिया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उवैस यमन का एक गुमनाम व्यक्ति था, न कोई हैसियत न कोई शोहरत, और वह नबी ﷺ से कभी मिला ही नहीं (इसीलिए वह ताबिईन में गिना जाता है, सहाबा में नहीं)। यमन और मदीना के बीच लम्बी दूरी है, और वहाँ के अलग-अलग लोगों के हालात जानने का कोई साधन न था। और वर्णन में **एक अत्यन्त सूक्ष्म शारीरिक निशानी** भी है जिसे केवल वही जान सकता है जिसने उसे बिना कपड़ों के देखा हो।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु यमन वालों की कुमुक में उवैस के बारे में साल दर साल पूछते हुए निकलते रहे यहाँ तक कि उनसे मिले। उन्होंने उनका नाम और क़बीला पूछा, फिर कोढ़ के बारे में पूछा और मामला ठीक वैसा ही पाया जैसा बताया गया था, फिर पूछा: "क्या तुम्हारी माँ हैं?" उन्होंने कहा हाँ। तो उमर ने उनसे अपने लिए मग़फ़िरत की दुआ माँगी। यह पूरी कहानी **सहीह मुस्लिम** में है, और इस विषय पर रिवायत की गई सबसे भरोसेमन्द चीज़ों में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही व्यक्ति में पाँच स्वतंत्र निशानियाँ आ मिलीं। नाम और वंश पर तो कोई अनुमान लगाने वाला निशाना बैठा भी सकता था, पर चौथी निशानी निर्णायक है: "**उसे कोढ़ था और वह उससे ठीक हो गया सिवाय एक दिरहम भर जगह के**" — एक बीती हुई बीमारी का वर्णन, उससे ठीक होने का, और एक निर्धारित नाप के बचे हुए निशान का। एक ही निशानी में तीन सूचनाएँ, और वह भी किसी दूसरे देश के एक व्यक्ति के शरीर के बारे में। और विलक्षण बात यह है कि नबी ﷺ ने उमर को हिदायत दी कि **उससे दुआ माँगना** — तो अमीरुल-मोमिनीन वर्षों एक गुमनाम चरवाहे को ढूँढ़ते रहे कि वह उनके लिए मग़फ़िरत माँगे। यदि एक भी निशानी ग़लत होती, तो पूरी ख़बर सहाबा की आँखों के सामने ढह जाती।

88

नौसैनिक इतिहास

समुद्र पर सवार होने वाली पहली सेना

मेरी उम्मत की पहली सेना जो समुद्र के रास्ते अभियान करेगी उसने अपना बदला पक्का कर लिया ... फिर उन्होंने कहा: तुम पहलों में हो।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

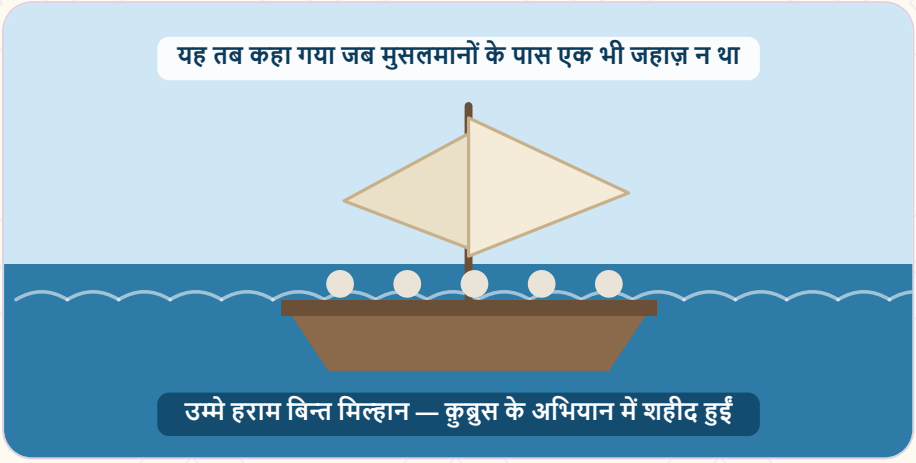

इस्लाम का पहला नौसैनिक अभियान — क़ुब्रुस (साइप्रस), 28 हिजरी

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने स्वप्न में अपनी उम्मत की एक सेना को **समुद्र पर सवार** देखा। उम्मे हराम ने उनसे दुआ माँगी कि वे उनमें हों, तो उन्होंने कहा: **"तुम पहलों में हो।"** और वैसा ही हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब ज़मीन के लोग थे, समुद्र के नहीं। उनके पास न जहाज़ थे न नौसैनिक युद्ध का कोई ज्ञान, और उनकी संस्कृति में समुद्र एक डरावनी चीज़ था जिससे बचा जाता था। बल्कि उमर बिन ख़त्ताब ने अपनी पूरी ख़िलाफ़त में समुद्री अभियानों की इजाज़त ही नहीं दी, लोगों के डर से। तो किसी इस्लामी नौसैनिक शक्ति की भविष्यवाणी अत्यन्त असम्भव थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सन् 28 हिजरी में उस्मान बिन अफ़्फ़ान ने मुआविया को समुद्र में जाने की इजाज़त दी, और पहला इस्लामी बेड़ा बना और उसने **क़ुब्रुस** पर छापा मारा। **उम्मे हराम बिन्त मिल्हान** रज़ियल्लाहु अन्हा उसके साथ निकलीं, और जब वे उतरीं तो उनके लिए एक सवारी लाई गई जिसने उन्हें गिरा दिया, और वे वहीं देहान्त पा गईं और वहीं दफ़्न हुईं। उनकी क़ब्र आज तक साइप्रस में हाला सुल्तान तेक्के के नाम से जानी जाती है, और लोग उसे देखने जाते हैं। यह कहानी दोनों सहीह संग्रहों में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक छोटे वाक्य में सूचना की तीन परतें। पहली: कि उम्मत की **कोई नौसैनिक सेना** होगी भी — एक रेगिस्तानी क़ौम जिसके पास जहाज़ ही नहीं। दूसरी: कि उसमें **एक विशेष स्त्री होगी** — वह स्त्री जो उस समय मदीना में थी और जिसके मन में समुद्र का कोई ख़्याल तक न था। तीसरी, और सबसे सूक्ष्म: कि वह **"पहलों"** में होगी, बाद वालों में नहीं — यानी ख़ास तौर पर **पहले ही अभियान** में, किसी बाद के छापे में नहीं। उन्होंने दुआ माँगी कि उस दूसरे गिरोह में हों जो उन्होंने देखा, तो उन्होंने कहा: "तुम पहलों में हो।" तो निर्धारण ठीक वहीं बैठा जहाँ रखा गया था। और वे उसी अभियान में देहान्त पा गईं, उस ख़बर के लगभग बीस वर्ष बाद।

89 ख़वारिज — और वह आदमी जिसका एक हाथ स्त्री के स्तन जैसा था

तुममें एक ऐसी क़ौम उठेगी जिसकी नमाज़ के आगे तुम अपनी नमाज़ को हक़ीर समझोगे … वे क़ुरआन पढ़ेंगे पर वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा; वे दीन से यूँ निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार के आर-पार निकल जाता है।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

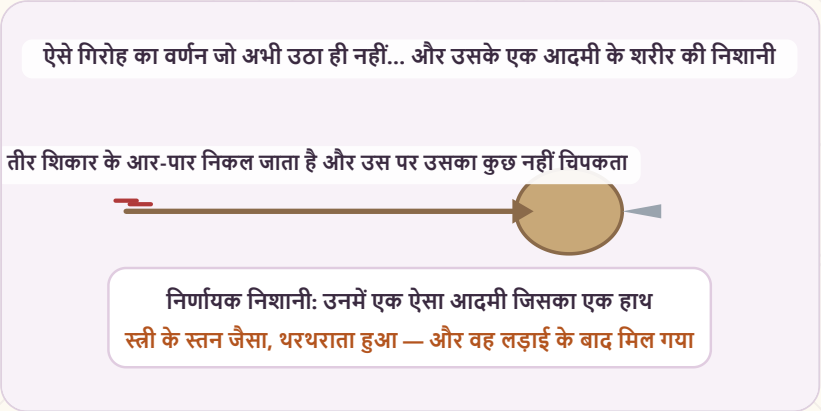

अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मारे गए लोगों में उसे ढूँढ़ने का हुक्म दिया, यहाँ तक कि वह मिल गया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने एक ऐसे गिरोह का वर्णन किया जो मुसलमानों में से उठेगा: बाहर से इबादत में कड़ा, क़ुरआन पढ़ने वाला, और फिर भी **दीन से निकल जाने वाला**। और उन्होंने एक निशानी बताई: उनमें एक ऐसा आदमी होगा जिसका एक हाथ विकृत और अधूरा होगा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

समुदाय में न कोई सम्प्रदाय था न कोई फूट। और यह विचार कि कोई क़ौम **कड़ी इबादत और दीन से निकल जाने को एक साथ जोड़ ले** — बाहर से अपने आप में विरोधाभासी था; अपेक्षा तो यही होती है कि भटका हुआ इबादत में लापरवाह हो, उसमें हद से बढ़ा हुआ नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ख़वारिज अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में प्रकट हुए, जो मुसलमानों को काफ़िर कहते और उनका ख़ून हलाल ठहराते थे, जबकि वे लम्बी नमाज़ों और अधिक तिलावत के लिए प्रसिद्ध थे। अली ने सन् 38 हिजरी में **नहरवान** में उनसे युद्ध किया। युद्ध के बाद उन्होंने उस वर्णित व्यक्ति को ढूँढ़ने का हुक्म दिया, और उसे मारे गए लोगों में ढूँढ़ा गया यहाँ तक कि वह मिल गया: एक ऐसा आदमी जिसका एक हाथ स्त्री के स्तन जैसा था। अली ने तकबीर कही और कहा: "अल्लाह ने सच कहा और उसके रसूल ने सन्देश पहुँचा दिया।" यह कहानी सहीह मुस्लिम में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उपमा स्वयं अत्यन्त सूक्ष्म है: "**वे दीन से यूँ निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार के आर-पार निकल जाता है**"। जब तीर किसी शिकार किए गए पशु के आर-पार निकल जाता है तो वह **साफ़ निकलता है, उस पर न ख़ून चिपका होता है न मांस** — यानी उस व्यक्ति का वर्णन जो दीन के आर-पार गुज़र जाता है और उसमें से कुछ भी साथ नहीं रखता, चाहे वह कितनी ही तेज़ी से गुज़रे। पर निर्णायक चीज़ है **शारीरिक निशानी**: एक विशेष व्यक्ति के हाथ में एक दुर्लभ विकृति, एक ऐसे गिरोह में जो अभी पैदा नहीं हुआ, एक ऐसे युद्ध में जो अभी लड़ा नहीं गया। और यह ऐसी निशानी है **जिसकी तुरन्त जाँच हो सकती थी** — इसीलिए अली ने स्वयं उसे मारे गए लोगों में ढूँढ़ा। यदि वह न मिलती, तो ख़बर एक पूरी सेना के सामने ढह जाती।

90 एक ऐसी क़ौम जिसकी आँखें छोटी और चेहरे चौड़े हैं

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम से न लड़ो जिसके जूते बालों के हैं, और जब तक तुम तुर्कों से न लड़ो — छोटी आँखों वाले, लाल चेहरों वाले, चपटी नाकों वाले, मानो उनके चेहरे तह-पर-तह चढ़ी हुई ढालें हों।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

ऐसी क़ौम का सूक्ष्म नस्ली वर्णन जिसे अरबों ने उस दिन देखा ही न था

"छोटी आँखें · चौड़े चेहरे · चपटी नाकें"

मंगोल आक्रमण — सातवीं हिजरी सदी

मध्य एशिया की क़ौमों के नाक-नक़्श, अरबों के उन्हें देखने से सदियों पहले वर्णित

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने एक ऐसी क़ौम का वर्णन किया जिससे मुसलमान लड़ेंगे, और **उनके चेहरों का आकार** बताया: छोटी आँखें, चौड़े गोल चेहरे, छोटी चपटी नाकें। और ये मध्य एशिया की क़ौमों तथा मंगोलों के नाक-नक़्श हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्रायद्वीप के अरब केवल ख़ुद को, रोमियों को, फ़ारसियों को और हबशियों को देखते थे — और इन सबके नाक-नक़्श इस वर्णन से बिलकुल अलग हैं। एशियाई घास-मैदानों की क़ौमें फ़ारस से भी आगे सुदूर पूरब में थीं, और उनकी कोई ख़बर प्रायद्वीप तक नहीं पहुँचती थी। अरबों और उनके बीच न कोई सम्पर्क था, न कोई युद्ध, न कोई व्यापार।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हदीस ने तीन ऐसे शारीरिक लक्षण बताए जो आज पूर्वी और मध्य एशिया की क़ौमों के विशिष्ट लक्षण माने जाते हैं: **एपिकैन्थिक वलन के साथ सँकरी पलक-दरार**, **उभरी गाल-हड्डियों वाला चौड़ा चपटा चेहरा**, और **छोटी, नीची पुल वाली नाक**। और लड़ाई सचमुच हुई: सातवीं इस्लामी सदी का मंगोल आक्रमण, जिसने 656 हिजरी में बग़दाद तबाह किया और फिर 658 हिजरी में **ऐन जालूत** में पराजित हुआ। और उससे पहले मुसलमान पहली सदी से ही मावराउन्नहर में तुर्कों से लड़ते आए थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह एक **मानवशास्त्रीय** वर्णन है, न कोई राजनीतिक या सैनिक। और वह किसी एक ऐसे लक्षण पर नहीं रुका जिस पर संयोग से निशाना बैठ जाए, बल्कि **चार साथ-साथ आने वाले लक्षण** इकट्ठे किए, जो मिलकर एक विशेष चेहरे का प्रकार बनाते हैं जिसे आज जनसंख्या-विज्ञान जानता है। और अन्तिम उपमा अत्यन्त सूक्ष्म है: "मानो उनके चेहरे **तह-पर-तह चढ़ी हुई ढालें** हों" — और खाल की परतों से मढ़ी ढाल चौड़ी, गोल और थोड़ी उभरी हुई हो जाती है। अरब के रेगिस्तान का एक व्यक्ति चीन के भी आगे रहने वाली किसी क़ौम के नाक-नक़्श बताए, और फिर यह ख़बर दे कि उसकी उम्मत उनसे लड़ेगी — इसमें अनुमान का कोई हिस्सा ही नहीं।

समाज

91 वे शराब पिएँगे और उसे किसी और नाम से पुकारेंगे

मेरी उम्मत के कुछ लोग अवश्य शराब पिएँगे, और उसे उसके नाम के सिवा किसी और नाम से पुकारेंगे।

अबू दाऊद और इब्न माजा की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

नाम बदलता है... और हक़ीक़त एक ही रहती है

निषेध से बचने के लिए नाम बदलना — एक परिघटना जिसका वर्णन हदीस ने उसके घटने से पहले किया

नाम बदल जाता है ताकि वर्जित चीज़ लेना आसान हो जाए

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि उनकी उम्मत के कुछ लोग शराब पिएँगे, पर वे **उसे शराब नहीं कहेंगे** — वे उसे दूसरे नाम देंगे ताकि वह गले उतर जाए और उसे जायज़ ठहराया जा सके।

उस समय लोग क्या मानते थे?

शराब को खुलेआम उसके अपने नाम से पुकारा जाता था और कविता में उस पर गर्व किया जाता था। न कोई उससे शरमाता था न किसी को उसका नाम छिपाने की ज़रूरत थी। तो हदीस एक विशेष **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक व्यवहार** की भविष्यवाणी करती है: कि लोग निषेध को मानेंगे और फिर नाम बदलकर उससे बच निकलेंगे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह समाजशास्त्र और भाषाविज्ञान में **"शिष्टोक्ति"** नाम से देखी जाने वाली एक परिघटना है: किसी चीज़ का नाम बदल देना ताकि उसका असर हलका हो जाए या किसी निषेध से बच निकला जाए। हमारी दुनिया मिसालों से भरी है: "स्पिरिट", "स्वास्थ्य-मदिरा", अल्कोहल वाले "ऊर्जा पेय", "किण्वित इमली", और "अल्कोहल-मुक्त बीयर" जिसमें फिर भी उसका एक अंश होता है। यही सिद्धान्त सूद के लिए ("ब्याज", "निवेश प्रतिफल") और दूसरी वर्जित चीज़ों के लिए भी इस्तेमाल होता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भविष्यवाणी यहाँ किसी **कर्म** की नहीं, बल्कि **एक भाषाई चाल** की है — और यह कहीं अधिक बारीक और कठिन बात है। "कुछ लोग शराब पिएँगे" कहना तो एक अपेक्षित कथन है। पर **बच निकलने का तरीक़ा** निर्धारित कर देना — हुक्म से इनकार नहीं, बल्कि नाम बदल देना — एक ऐसी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक क्रियाविधि का वर्णन है जो उस समाज में दिखाई तक नहीं देती थी। और आज वह समाज-भाषाविज्ञान का एक पूरा अध्याय है। और यह उस दूसरी हदीस से मेल खाता है जो उसकी निन्दा करती है जो "अपने दिए हुए किसी नाम से हराम को हलाल कर ले" — एक ही नियम, चाहे उसके रूप कितने ही हों।

92

सभ्यताएँ

तुम अपने से पहले वालों के रास्तों पर अवश्य चलोगे

तुम अपने से पहले वालों के रास्तों पर अवश्य चलोगे, बालिश्त दर बालिश्त और हाथ दर हाथ, यहाँ तक कि यदि वे किसी गोह के बिल में घुसे तो तुम भी उनके पीछे घुसोगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

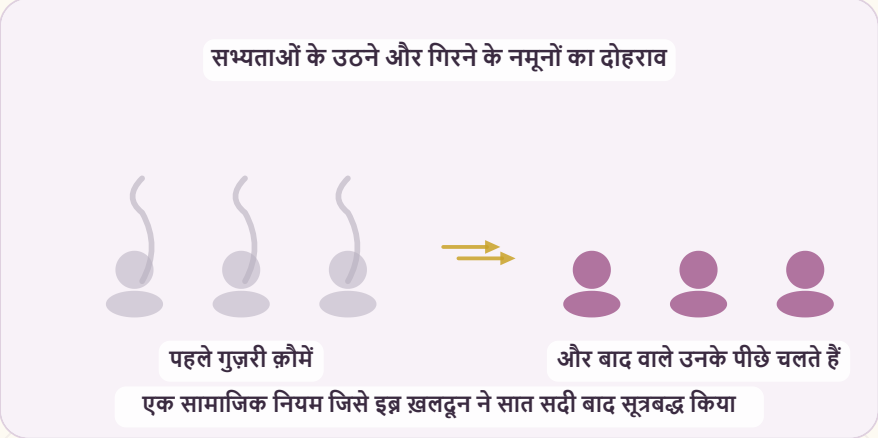

क़ौमें अपने पूर्ववर्तियों की ग़लतियाँ ऐसी हद तक दोहराती हैं कि इतिहासकार चकित रह जाते हैं

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि यह उम्मत अपने से पहले की क़ौमों की **क़दम-दर-क़दम** नक़ल करेगी, यहाँ तक कि उन बेतुकी बातों में भी जिनसे कोई लाभ ही नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्रचलित धारणा यही थी कि हर क़ौम का अपना रास्ता होता है, और मुसलमान अपने दीन के कारण उन चीज़ों में गिरने से अलग रखे गए हैं जिनमें दूसरे गिरे। बिना किसी अपवाद के सभी क़ौमों की चाल पर शासन करने वाले किसी "नियम" की कोई धारणा ही न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह वही चीज़ है जिसे ऐतिहासिक समाजशास्त्र **सभ्यताओं के चक्र** कहता है। इब्न ख़लदून ने सात सदी बाद अपने "मुक़द्दिमा" में इसे सूत्रबद्ध किया, और इसी पर ओस्वाल्ड श्पेंग्लर तथा अर्नोल्ड टॉयनबी ने बीसवीं सदी में अपने सिद्धान्त खड़े किए: **क़ौमें उत्थान, विलासिता और विघटन के एक-जैसे चरणों से गुज़रती हैं**, और अपने पूर्ववर्तियों की ग़लतियाँ लगभग अनिवार्य ढंग से दोहराती हैं। समाजशास्त्रियों ने व्यक्तिगत व्यवहार में भी एक समानान्तर परिघटना देखी है जिसे उन्होंने **झुंड-व्यवहार** नाम दिया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बारीकी अन्तिम वाक्य में है: "**यहाँ तक कि यदि वे किसी गोह के बिल में घुसे तो तुम भी उनके पीछे घुसोगे**"। हदीस उस नक़ल की बात नहीं कर रही जो लाभदायक हो — वह तो उचित और प्रशंसनीय होती — बल्कि **उसकी नक़ल की जिसमें न कोई लाभ है न कोई अर्थ**, बल्कि जिसमें साफ़ नुक़सान है। और समाजशास्त्री आज ठीक इसी का वर्णन करते हैं जब वे उन व्यवहार-फ़ैशनों की बात करते हैं जो बिना किसी तर्कसंगत कारण के समाजों को बहा ले जाते हैं। और क्रिया के ज़ोरदार क़सम-रूप पर भी ध्यान दीजिए: यह इस बात की पुष्टि है कि ऐसा होगा, न कि किसी सम्भावना से चेतावनी। और ऐसा हुआ है, ऐसे कि कोई इनकार नहीं कर सकता।

93

शक्ति-सन्तुलन

क़ौमें एक-दूसरे को बुलाएँगी — और बाढ़ का कूड़ा

क़रीब है कि क़ौमें तुम्हारे विरुद्ध एक-दूसरे को यूँ बुलाएँ जैसे खाने वाले अपने थाल की ओर एक-दूसरे को बुलाते हैं। किसी ने कहा: क्या उस दिन हमारी कमी के कारण? उन्होंने कहा: नहीं, तुम उस दिन बहुत होगे, पर तुम बाढ़ के कूड़े जैसे कूड़े होगे।

अबू दाऊद और अहमद की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

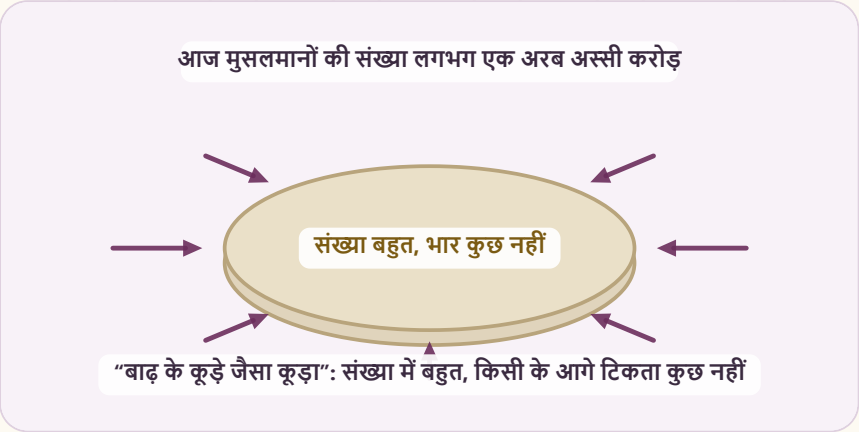

हदीस ने इनकार किया कि कारण संख्या की कमी होगी — और असली कारण बता दिया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि क़ौमें मुसलमानों के विरुद्ध एक-दूसरे को यूँ बुलाएँगी जैसे खाने वाले थाल की ओर बुलाते हैं। उनसे पूछा गया: कम होने के कारण? उन्होंने कहा: **नहीं, तुम बहुत होगे** — पर बिना किसी भार और बिना किसी असर के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वह समुदाय धरती की सबसे बड़ी शक्ति बनने के रास्ते पर था। एक ही पीढ़ी के भीतर उसने फ़ारस, शाम, मिस्र और उत्तरी अफ़्रीक़ा खोल दिए। तो एक आने वाली कमज़ोरी की भविष्यवाणी — और वह भी **संख्या की बहुतायत के साथ** — घटनाओं की दिखाई देने वाली चाल से बिलकुल उलटी लगती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आज मुसलमानों की संख्या लगभग एक अरब अस्सी करोड़ है, यानी धरती की आबादी का लगभग एक चौथाई, और उनके पास दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा-भंडार तथा रणनीतिक भौगोलिक ठिकाने हैं। फिर भी वैश्विक वैज्ञानिक, औद्योगिक और आर्थिक उत्पादन में उनका हिस्सा उनकी संख्या के मुक़ाबले नगण्य है, और उनकी भूमियाँ धरती की सबसे अधिक संघर्षग्रस्त और परावलम्बी भूमियों में हैं। **संख्या मौजूद है; सभ्यता का भार अनुपस्थित है** — ठीक वही समीकरण जो हदीस ने बताया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस हदीस की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने **ग़लत व्याख्या का पहले से अनुमान लगाया और उसका स्पष्ट इनकार किया**। जब पूछा गया "क्या उस दिन हमारी कमी के कारण?" तो उन्होंने हाँ नहीं कहा — उन्होंने कहा "नहीं, तुम उस दिन बहुत होगे।" उन्होंने संख्या को समीकरण से बिलकुल बाहर कर दिया और स्थापित किया कि **दोष गुण में है, मात्रा में नहीं**। और **"बाढ़ के कूड़े"** की तस्वीर अत्यन्त सूक्ष्म है: कूड़ा वह झाग और टहनियाँ हैं जिन्हें बाढ़ अपनी सतह पर ढोती है, जो दिखने में भरपूर हैं पर भारहीन, जो कहीं टिकते नहीं, और जहाँ धकेले जाएँ वहीं जाते हैं, न कि जहाँ वे चाहें। फिर उन्होंने बाक़ी हदीस में कारण भी बता दिया: "कमज़ोरी... दुनिया की मुहब्बत और मौत से नफ़रत" — यानी एक मनोवैज्ञानिक निदान, कोई सैनिक नहीं।

भाग तीन

तौरात और इंजील की पूर्वसूचनाएँ

वे पाठ जो आज तक अहले-किताब के ग्रन्थों में लिखे हुए हैं, और एक आने वाले नबी का वर्णन करते हैं जिसका हुलिया समूचे इतिहास में केवल एक ही व्यक्ति पर बैठता है — और किसी पर नहीं।

12 प्रमाण

94

व्यवस्थाविवरण

उनके भाइयों में से एक नबी, तेरे जैसा

मैं उनके भाइयों में से उनके लिए तेरे जैसा एक नबी खड़ा करूँगा, और अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा; और वह उनसे वह सब कहेगा जो मैं उसे आदेश दूँगा।

व्यवस्थाविवरण — अध्याय 18, आयत 18

उनके भाइयों में से

बनी इसराईल इसहाक़ से
और उनके भाई इस्माईल की सन्तान
तो वह नबी अरबों में से है
बनी इसराईल में से नहीं

→

मूसा जैसा

एक पूरी शरीअत
एक पिता और एक माँ... जन्मे और मरे
नेता, योद्धा और विधायक
और अपनी क़ौम के साथ हिजरत करके निकले

"और अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा" — वह जो वह्य की जाए वही अक्षर दर अक्षर बोलता है

एक ही पाठ में तीन शर्तें: भाइयों में से, मूसा जैसा, और वही बोलने वाला जो उसके मुँह में डाला जाए

सीधी-सादी बात में

अल्लाह मूसा से एक आने वाले नबी का वादा करता है जिसमें तीन गुण होंगे: वह बनी इसराईल के **भाइयों** में से होगा, उनमें से नहीं; वह **मूसा जैसा** होगा; और वह **वही शब्द बोलेगा जो उसके मुँह में डाले जाएँगे**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यहूदी सदियों तक इस नबी का इन्तज़ार करते रहे, और जो भी प्रकट होता उससे उसके बारे में पूछते। यूहन्ना के सुसमाचार में उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से पूछा: "क्या तू एलियाह है?" उसने कहा नहीं। "क्या तू **वह नबी** है?" उसने कहा नहीं — और यह दिखाता है कि "वह नबी" एक विशेष तीसरा प्रतीक्षित व्यक्ति था, मसीह से भी अलग और एलियाह से भी अलग।

आज विज्ञान क्या कहता है?

तौरात की भाषा में "**उनके भाइयों**" का अर्थ है चचेरे भाई, एक ही पिता के बेटे नहीं — बनी इसराईल इसहाक़ से हैं, और उनके भाई इस्माईल की सन्तान हैं, यानी अरब। रहा "**तेरे जैसा**", तो सावधान तुलना मुहम्मद ﷺ तक पहुँचाती है: वे माता-पिता से सामान्य ढंग से पैदा हुए, उन्होंने विवाह किया और सन्तान हुई, वे एक पूरी शरीअत लाए, उन्होंने अपनी क़ौम का नेतृत्व किया और लड़े और शासन किया, वे अपने नगर से हिजरत करके गए, और उनका देहान्त स्वाभाविक ढंग से हुआ। और स्वयं व्यवस्थाविवरण अन्त में कहता है: "**और इसराईल में मूसा जैसा कोई नबी फिर नहीं उठा**" (34:10) — और यह बनी इसराईल के सारे नबियों को तुलना से बाहर कर देता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीसरी शर्त निर्णायक है: "**और अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा, और वह उनसे वह सब कहेगा जो मैं उसे आदेश दूँगा**"। यह ऐसे नबी का वर्णन है जो **शब्द दर शब्द लिखवाया गया पाठ** बोलता है, उसका आशय नहीं। और क़ुरआन का ठीक यही वर्णन है: "**और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता; वह तो बस एक वह्य है जो उतारी जाती है**"। और मुहम्मद ﷺ पर सबसे पहले जो उतरा वह ग्रहण करने का सीधा आदेश था: "पढ़।" फिर बाइबिली पाठ एक कड़ी चेतावनी पर बन्द होता है: "और ऐसा होगा कि जो कोई मेरे उन शब्दों को न सुनेगा जो वह मेरे नाम से कहेगा, मैं उससे उसका हिसाब लूँगा।" तो यह केवल कोई शुभ समाचार नहीं, बल्कि **पालन की अनिवार्यता** है।

95

व्यवस्थाविवरण

और वह फ़ारान पर्वत से जगमगा उठा

प्रभु सीना से आया, और सेईर से उन पर उदय हुआ; वह फ़ारान पर्वत से जगमगा उठा, और दस हज़ार पवित्र जनों के साथ आया।

व्यवस्थाविवरण — अध्याय 33, आयत 2

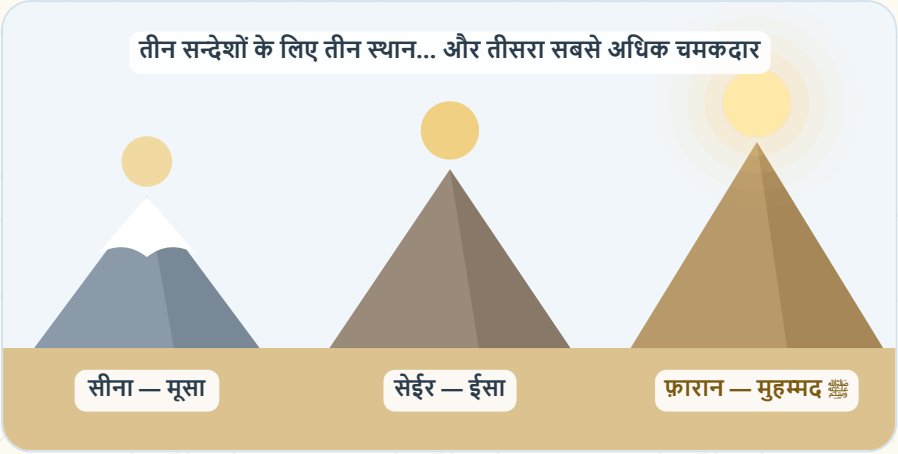

प्रकाश की तीन श्रेणियाँ: वह उदय हुआ... फिर वह जगमगा उठा

सीधी-सादी बात में

तौरात का एक पाठ क्रम से तीन पर्वतों के नाम लेता है: **सीना**, जहाँ अल्लाह ने मूसा से बात की; फिर **सेईर**, ईसा की भूमि; फिर **फ़ारान**। और फ़ारान — स्वयं तौरात के पाठ से — वह भूमि है जहाँ इस्माईल और उनकी सन्तान बसी: मक्का और उसके आस-पास।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यहूदी और ईसाई हज़ारों वर्ष से अपने ग्रन्थों में यह पाठ पढ़ते आए हैं। और जो समस्या वे कभी हल नहीं कर सके वह यह है: **तीसरी घटना क्या है?** प्रभु का सीना से आना तौरात है, और उसका सेईर से उदय होना इंजील — तो फ़ारान से क्या जगमगाया? उस क्षेत्र में बाक़ी दोनों के बराबर की कोई धार्मिक घटना घटी ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

फ़ारान स्वयं तौरात में एक निश्चित स्थान है। उत्पत्ति (21:21) इस्माईल के बारे में कहती है: "**और वह फ़ारान के जंगल में रहने लगा: और उसकी माँ ने मिस्र देश से उसके लिए एक पत्नी ली**।" तो यह उनके अपने ही पाठ से इस्माईल की सन्तान का देश है। मुसलमान भूगोलवेत्ता और बाइबिली शब्दकोश फ़ारान के जंगल को उत्तरी हिजाज़, सीना प्रायद्वीप और उनके बीच की भूमि में रखते हैं। और उस जंगल से किसी सार्वभौमिक सन्देश वाला कोई नबी नहीं निकला सिवाय मुहम्मद ﷺ के।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अर्थ क्रियाओं की श्रेणी में है, और वह इब्रानी में जान-बूझकर रखी गई है: "**आया**", फिर "**उदय हुआ**", फिर "**जगमगा उठा**" — और जगमगाना सबसे प्रबल और सबसे दूर तक फैलने वाला प्रकाश है। पाठ तीन सन्देशों को बढ़ते क्रम में रखता है और अन्तिम को सबसे अधिक चमकदार बनाता है। फिर वह जोड़ता है: "**उसके दाहिने हाथ से उनके लिए एक अग्निमय व्यवस्था निकली**" — यानी यह अन्तिम आगमन **एक शरीअत** लाता है, केवल कोई उपदेश नहीं। और मूसा के बाद पूरी शरीअत लाने वाले — इबादत, लेन-देन और न्याय पर शासन करने वाली — एकमात्र नबी मुहम्मद ﷺ हैं।

96

हबक्कूक

वह पवित्र जन फ़ारान पर्वत से

अल्लाह तेमान से आया, और वह पवित्र जन फ़ारान पर्वत से। उसका तेज आकाशों पर छा गया, और धरती उसकी स्तुति से भर गई।

हबक्कूक — अध्याय 3, आयत 3

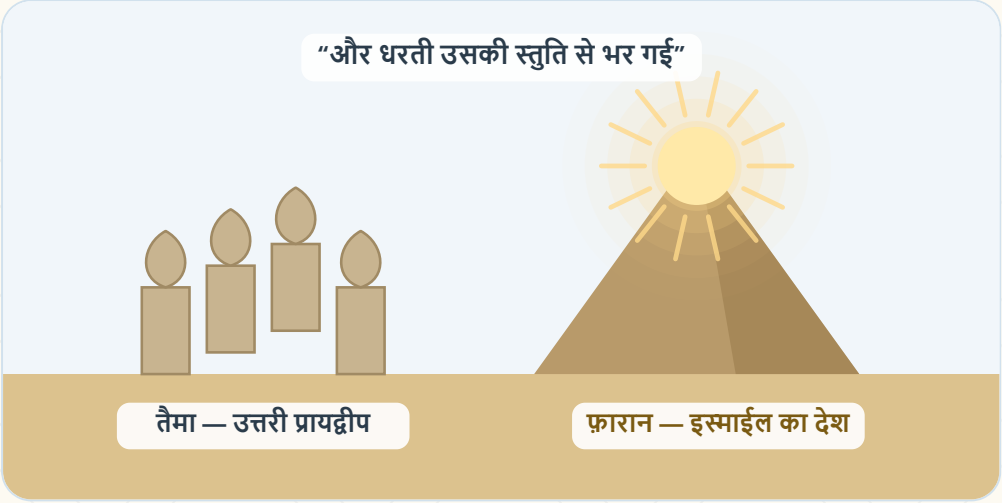

अरब के दो स्थान, जिनके नाम एक इब्रानी नबी ने ईसा-पूर्व युग में लिए

सीधी-सादी बात में

बनी इसराईल का एक नबी **अरब** के दो स्थानों का नाम लेता है: **तैमा** — जो आज तक प्रायद्वीप के उत्तर में एक जाना-माना नगर है — और **फ़ारान**, इस्माईल का देश। और वह कहता है कि पवित्र जन उन्हीं से आएगा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह पाठ अहले-किताब में व्याख्या के आगे टिका रहा। न तैमा बनी इसराईल की भूमि का हिस्सा है न फ़ारान, और उनके इतिहास में इनसे कोई नबी निकला ही नहीं। कुछ ने इसे सीना पर अल्लाह के आगमन का काव्यात्मक वर्णन पढ़ने की कोशिश की — पर यहाँ सीना का ज़िक्र है ही नहीं, और अरब के दो स्थानों का नाम स्पष्ट रूप से लिया गया है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

तैमा आज उत्तर-पश्चिमी सऊदी अरब का एक प्रसिद्ध नख़लिस्तान और पुरातात्विक नगर है, जो कभी हिजाज़ और शाम के बीच के क़ाफ़िला-मार्ग का एक प्रमुख पड़ाव था, और जहाँ ईसा-पूर्व युग के अवशेष तथा शिलालेख हैं। और **फ़ारान** इस्माईल का वही जंगल है जैसा उत्पत्ति कहती है। तो पाठ **एक ही निश्चित क्षेत्र** की ओर इशारा करता है: उत्तरी अरब प्रायद्वीप और हिजाज़। और यही वह जगह है जहाँ से मुहम्मद ﷺ का सन्देश निकला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दो बातें इस पाठ को संयोग से ऊपर उठा देती हैं। पहली, कि यह **फ़ारान का नाम लेने में व्यवस्थाविवरण के पाठ से मेल खाता है** — दो अलग युगों के दो अलग नबी एक ही जगह की ओर इशारा करते हैं। अपनी ही भूमि से बाहर की किसी जगह पर दो स्वतंत्र गवाहों का मिल जाना एक प्रबल प्रमाण है। दूसरी, पाठ का बाक़ी हिस्सा: "**और धरती उसकी स्तुति से भर गई**" — यानी इस आगमन का असर **सार्वभौमिक है, स्थानीय नहीं**। और उस भूमि से ऐसा कुछ नहीं निकला जिसने धरती को स्तुति से भर दिया हो, सिवाय इस्लाम के, जिसके ज़रिये दिन के हर घंटे हर महाद्वीप पर अज़ान और अल्लाह की तस्बीह बुलन्द होती है।

97

यशायाह

क़ीदार की बस्तियाँ — और सेला के निवासी

जंगल और उसके नगर अपनी आवाज़ बुलन्द करें, वे बस्तियाँ जिनमें क़ीदार बसता है: चट्टान के निवासी गाएँ, वे पहाड़ों की चोटियों से पुकारें।

यशायाह — अध्याय 42, आयत 11

तौरात में "क़ीदार" कौन है?

- क़ीदार इस्माईल का दूसरा बेटा है
- "और ये इस्माईल के बेटों के नाम हैं... नबायोत और क़ीदार"
- उत्पत्ति 25:13
- और क़ुरैश क़ीदार बिन इस्माईल की नस्ल से हैं

तो वह नया गीत अरबों की भूमियों से बुलन्द होता है

और सेला: मदीना मुनव्वरा के पास एक जगह जो आज भी इसी नाम से है

यशायाह क़ीदार की बस्तियों को एक नया गीत गाने के लिए पुकारता है

सीधी-सादी बात में

यशायाह कहता है: जंगल अपनी आवाज़ बुलन्द करे, **वे बस्तियाँ जिनमें क़ीदार बसता है**। और क़ीदार — तौरात के पाठ से — इस्माईल का बेटा है, और अदनानी अरबों का पूर्वज, जिनमें क़ुरैश भी हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यशायाह का बयालीसवाँ अध्याय एक ऐसे "बन्दे" की बात करता है जिसे अल्लाह चुनता है, जो क़ौमों तक न्याय पहुँचाता है, और जो तब तक न थकेगा न हिम्मत हारेगा जब तक धरती में सत्य स्थापित न कर दे। अहले-किताब उसकी पहचान पर मतभेद करते रहे हैं। पर स्वयं पाठ **स्थान** निर्धारित कर देता है: क़ीदार की बस्तियाँ और सेला।

आज विज्ञान क्या कहता है?

"**क़ीदार**" का नाम उत्पत्ति (25:13) में इस्माईल के बारह बेटों में आया है। और अदनानी अरब — जिनमें क़ुरैश और बनू हाशिम हैं — उन्हीं की नस्ल से हैं। और उत्तरी प्रायद्वीप के क्षेत्र को असीरी शिलालेखों में सचमुच "क़ेदार" कहा गया है। रहा "**सेला**" (जिसका अनुवाद "चट्टान" किया गया है), तो वह एक ज्ञात स्थान है: **जबल सल्अ**, जो मदीना से लगा हुआ है, जिसके पास अहज़ाब की ख़न्दक़ खोदी गई थी, और जो आज तक उसी नाम से खड़ा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अध्याय पहली आयत में "देखो मेरा बन्दा, जिसे मैं थामे हुए हूँ" से खुलता है — और "बन्दा" वह उपाधि है जो क़ुरआन में मुहम्मद ﷺ के साथ चलती है: "पवित्र है वह जो **अपने बन्दे** को रात में ले गया", "और जब **अल्लाह का बन्दा** उसे पुकारता हुआ खड़ा हुआ"। फिर दसवीं आयत कहती है: "**प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ**" — यानी एक नई शरीअत, पुरानी का नवीनीकरण नहीं। फिर वह इस गीत के लोगों की पहचान कराती है: क़ीदार की बस्तियाँ और सेला के निवासी — **दो विशुद्ध अरबी स्थान**, एक क़ुरैश का वंश और दूसरा मदीना का एक पर्वत। एक ही पाठ में नबी ﷺ का वंश, उनकी हिजरत का नगर, उनकी उपाधि "बन्दा", और एक नई शरीअत की पुकार — इन सबका इकट्ठा हो जाना ऐसा मेल है जो संयोग की गुंजाइश नहीं छोड़ता।

98

यशायाह

गधे का सवार और ऊँट का सवार

और उसने घुड़सवारों की एक जोड़ी वाला रथ देखा, गधों का एक रथ, और ऊँटों का एक रथ; और उसने बहुत ध्यान से, कान लगाकर सुना।

यशायाह — अध्याय 21, आयत 7

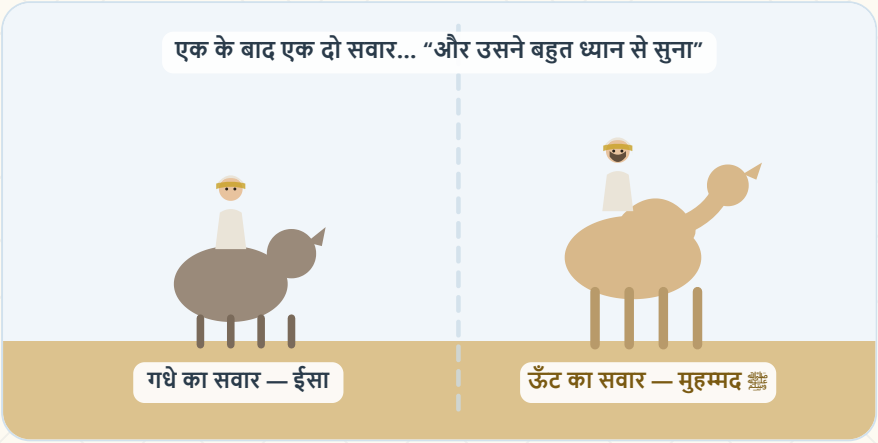

एक पाठ जो दो विशेष सवारों का नाम लेता है और उन्हें सुनने का आदेश देता है

सीधी-सादी बात में

यशायाह की पुस्तक का एक दर्शन जिसमें नबी **दो सवार** देखता है: एक गधे पर और दूसरा ऊँट पर, और उसे आदेश दिया जाता है कि उन्हें पूरे ध्यान से सुने।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अहले-किताब में इस पाठ की व्याख्या बाबुल के पतन के दर्शन के रूप में की जाती रही है। पर स्वयं दृश्य चौंकाने वाला है: दो विशिष्ट सवार, जिनकी पहचान उनकी सवारियों से कराई गई, और नबी को उन्हें सुनने का आदेश — और सुनना किसी सन्देश के लिए होता है, किसी युद्ध की ख़बर के लिए नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

गधे का सवार वह निशानी है जिसे अहले-किताब मसीह अलैहिस्सलाम के लिए पहचानते हैं। ज़कर्याह (9:9) कहता है: "देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है... नम्र, और गधे पर सवार", और सुसमाचार दर्ज करते हैं कि मसीह उसी भविष्यवाणी को पूरा करते हुए गधे पर सवार होकर यरूशलम में दाख़िल हुए। तो यदि पहला मसीह के रूप में स्थापित है, तो फिर **ऊँट का वह सवार** कौन है जो उनके बाद आया, और जिसे सुनने का आदेश नबी को वैसे ही दिया गया जैसे पहले को सुनने का? और ऊँट अरबों की सवारी है, और मसीह के बाद ऊँट वालों की किसी क़ौम से कोई नबी नहीं आया सिवाय मुहम्मद ﷺ के।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ताक़त **जोड़े और क्रम** में है। ऊँट के सवार का ज़िक्र अकेले नहीं हुआ कि कोई उसे किसी क़ाफ़िले का आम ज़िक्र कह दे — वह गधे के सवार के साथ एक ही दृश्य में, और ठीक उसके बाद, जोड़ा गया है। अहले-किताब यह मान चुके हैं कि "गधे का सवार" किसी विशेष व्यक्ति के लिए एक भविष्यसूचक निशानी है, तो उसी पाठ में उसके साथी का कोई निरर्थक विवरण होना चल ही नहीं सकता। और सुनने का आदेश — "**उसने बहुत ध्यान से, कान लगाकर सुना**" — बताता है कि जो आ रहा है वह **सुनी और मानी जाने वाली बात** है, कोई देखा जाने वाला दृश्य नहीं। और बाक़ी अध्याय में "**अरब पर भार**" का ज़िक्र है और ददान तथा तैमा के नाम हैं और "**क़ीदार का तेज**" — पूरा सन्दर्भ अरबी है।

यशायाह

99 मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ

और वह पुस्तक उसे दी जाती है जो पढ़ा-लिखा नहीं है, और कहा जाता है: कृपया इसे पढ़;
और वह कहता है: मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।

यशायाह — अध्याय 29, आयत 12

यशायाह 29:12		हिरा की गुफ़ा
"इसे पढ़"		"पढ़"
तो वह कहता है:	→	तो उन्होंने ﷺ कहा:
"मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ"		**"मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ"**
ईसा से सदियों पहले		सन् 610 ई.

वही आदेश... और वही उत्तर

एक दृश्य, जिसका वर्णन उसके घटने से एक हज़ार वर्ष से भी पहले हुआ

सीधी-सादी बात में

यशायाह का एक पाठ एक दृश्य का वर्णन करता है: एक पुस्तक ऐसे व्यक्ति को दी जाती है **जो पढ़ नहीं सकता**, और उससे कहा जाता है: "इसे पढ़।" वह उत्तर देता है: "मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।" और ठीक यही हिरा की गुफ़ा में हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह पाठ नबी ﷺ के जन्म से सदियों पहले अहले-किताब के ग्रन्थों में मौजूद था, और उसका कोई ऐसा पूरा होना न था जिसकी ओर इशारा किया जाता। वे उसे बनी इसराईल के अपनी ही किताब की समझ से अन्धे होने का प्रतीकात्मक संकेत पढ़ते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हिरा की गुफ़ा में, 610 ईस्वी में, जिब्रील मुहम्मद ﷺ के पास आए और कहा: "**पढ़**।" उन्होंने कहा: "**मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ**।" उन्होंने उन्हें दबाया और फिर कहा: "पढ़।" उन्होंने कहा: "मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ" — तीन बार। फिर वह्य उतरी: "अपने रब के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया।" यह घटना सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, और सीरत की सबसे प्रसिद्ध तथा सबसे स्थापित चीज़ों में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

मेल केवल अर्थ में नहीं, बल्कि **पूरे दृश्य की बनावट** में है: पढ़ने का आदेश, असमर्थता का उत्तर, और वह भी ऐसे व्यक्ति से जो पढ़ता ही नहीं। और इसके लिए एक अनिवार्य शर्त चाहिए: कि वह वादा किया गया नबी **निरक्षर हो, न पढ़ता हो न लिखता**। और यही वह गुण है जो क़ुरआन मुहम्मद ﷺ के बारे में बताता है और उसी को दलील बनाता है: "**और तुम इससे पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न अपने दाहिने हाथ से उसे लिखते थे; वरना झुठलाने वालों को सन्देह का मौक़ा मिल जाता**।" ध्यान दीजिए कि यहाँ निरक्षरता कोई दोष नहीं, बल्कि **प्रमाण** है: यदि वे पढ़ने-लिखने वाले होते, तो कहा जाता कि उन्होंने नक़ल की और उतारा। और यशायाह का पाठ उसी असमर्थता को एक निशानी बनाता है, कोई कमी नहीं।

100

श्रेष्ठगीत

और वह सम्पूर्णतः महमद्दीम है

हिक्को ममतक़्क़ीम वे-कुल्लो महमद्दीम; ज़ेह दोदी वे-ज़ेह रेई, बनोत येरूशालायिम।

श्रेष्ठगीत — अध्याय 5, आयत 16 (इब्रानी पाठ)

मूल इब्रानी पाठ

מַחֲמַדִּים

उच्चारण: महमद्दीम

और अनुवाद में इसे कर दिया गया: "सर्वथा मनोहर"

नाम पाठ में मौजूद है... और अनुवाद में ग़ायब हो गया

इब्रानी शब्द ठीक वैसा ही जैसा वह आज के मानक संस्करणों में खड़ा है

सीधी-सादी बात में

श्रेष्ठगीत के इब्रानी पाठ में शब्द **"महमद्दीम"** आता है — यानी नाम "मुहम्मद" के साथ इब्रानी का महत्ता-प्रत्यय "-ईम"। अनुवाद में उसे "सर्वथा मनोहर" कर दिया जाता है, और इस तरह नाम ग़ायब हो जाता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

श्रेष्ठगीत काव्यात्मक बिम्बों में एक प्रियतम का वर्णन करता है, और उसका वर्णन इसी शब्द पर बन्द होता है: "उसका मुख अत्यन्त मधुर है, **और वह सम्पूर्णतः महमद्दीम है**।" इस पाठ को अल्लाह और उसकी क़ौम के रिश्ते का प्रतीक समझा जाता रहा है, या सादा प्रेम-काव्य।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इब्रानी में प्रत्यय **"-ईम"** बहुवचन का भी है और महत्ता का भी — जैसे "एलोहीम", जो अल्लाह का एक नाम है और बहुवचन के रूप में है हालाँकि एक ही अभिप्रेत है। और इस शब्द की इब्रानी जड़ ח־מ־ד (ह-म-द) वही है जो अरबी की जड़ ह-म-द है। तो "महमद्दीम" अरबी में **मुहम्मद** से मेल खाता है, महत्ता के रूप में। यह शब्द आज भी मानक इब्रानी पाठ में मौजूद है, और कोई भी उसे देख सकता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दलील की ताक़त यह है कि नाम **मूल में बना हुआ है और मिटाया नहीं गया** — वह तो बस अनुवाद में घुल गया है। और ऐसा अक्सर होता है: वे व्यक्तिवाचक नाम जो अपनी भाषा में कोई अर्थ रखते हैं, अनुवाद कर दिए जाते हैं, और नाम खो जाता है। यदि किसी अरबी पाठ में नाम "अब्दुल्लाह" आए तो उसका अनुवाद "अल्लाह का बन्दा" हो जाएगा और वह व्यक्ति ग़ायब हो जाएगा। क़ुरआन कहता है कि उनका नाम ﷺ उनके यहाँ दर्ज है: "**वे जो उस रसूल का, उस निरक्षर नबी का अनुसरण करते हैं, जिसे वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं**", और यह कि ईसा ने "**अपने बाद आने वाले एक रसूल का शुभ समाचार दिया जिसका नाम अहमद है**"। तो क़ुरआन साफ़ कहता है कि **स्वयं नाम** उनके पास है — और वह इब्रानी पाठ में आज तक मौजूद है।

101

यूहन्ना का सुसमाचार

फ़ारक़लीत — एक दूसरा सान्त्वना देने वाला

और मैं पिता से प्रार्थना करूँगा, और वह तुम्हें एक दूसरा सान्त्वना देने वाला देगा, ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे।

यूहन्ना का सुसमाचार — अध्याय 14, आयत 16

दो यूनानी शब्द... उनके बीच एक ही अक्षर

παράκλητος	περικλυτός
पाराक्लेतोस	पेरिक्लुतोस
"सान्त्वना देने वाला"	"प्रशंसित / अहमद"

और सबसे पुरानी प्रतियों में कोई स्वर-चिह्न ही नहीं थे

ऐसी लिपि में दो शब्दों की गहरी समानता जिसमें स्वर-चिह्न थे ही नहीं

सीधी-सादी बात में

मसीह अलैहिस्सलाम ने अपने बाद एक **फ़ारक़लीत** के आने का वादा किया। यूनानी शब्द *पाराक्लेतोस पेरिक्लुतोस* से बहुत मिलता है, जिसका अर्थ है **"अत्यन्त प्रशंसित"** — यानी अहमद।

उस समय लोग क्या मानते थे?

फ़ारक़लीत की पहचान पर व्याख्याकार प्राचीन काल से मतभेद करते आए हैं। सबसे पुरानी यूनानी प्रतियाँ लगातार बड़े अक्षरों में, बिना अन्तराल और बिना स्वर-चिह्नों के लिखी जाती थीं, इसलिए रूप में इतने मिलते-जुलते दो शब्दों में नक़ल के दौरान गड्डमड्ड हो जाना पूरी तरह सम्भव है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यूहन्ना (अध्याय 14, 15 और 16) में मसीह ने फ़ारक़लीत के जो वर्णन दिए वे केवल किसी मनुष्य पर ही टिकते हैं: "**यदि मैं न जाऊँ तो वह सान्त्वना देने वाला तुम्हारे पास नहीं आएगा**" — यानी उसका आना मसीह के जाने पर निर्भर है, और जो आत्मा पहले से मौजूद हो उसे इसकी ज़रूरत न होती (सुसमाचार दर्ज करते हैं कि पवित्र आत्मा यूहन्ना के साथ उसकी माँ के गर्भ में थी और मसीह के साथ उनके बपतिस्मा पर)। और "**एक दूसरा सान्त्वना देने वाला**" — तो वह पहले ही की जाति का है, यानी उन्हीं जैसा एक नबी। और "**ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे**" — यानी एक ऐसी शरीअत जो बनी रहे और रद्द न हो।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अध्याय की सबसे प्रबल बात 16वें अध्याय की 13वीं आयत है: "**क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा; बल्कि जो कुछ सुनेगा वही कहेगा: और वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा।**" यह किसी वह्य पाने वाले नबी के सिवा किसी का वर्णन नहीं। इसकी तुलना क़ुरआन से कीजिए: "**और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता; वह तो बस एक वह्य है जो उतारी जाती है**" — लगभग वही वाक्य। फिर "**वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा**" — और यह तो इस किताब का एक पूरा भाग है: पूरी हुई भविष्यवाणियाँ। तो कार्यात्मक वर्णन मेल खाता है, नाम रूप में निकट है, और शर्त ("यदि मैं न जाऊँ") पूरी होती है।

102 वह तुमसे ले लिया जाएगा और किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा

इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, अल्लाह का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और ऐसी क़ौम को दिया जाएगा जो उसके फल लाए।

मत्ती का सुसमाचार — अध्याय 21, आयत 43

पाठ एक क़ौम की बात करता है, बनी इसराईल के किसी गिरोह की नहीं

बनी इसराईल		एक दूसरी क़ौम
नुबूवत उनमें लगातार सदियों तक "तुमसे ले लिया जाएगा"	→	"जो उसके फल लाए" उनकी नस्ल से नहीं "और एक क़ौम को दिया जाएगा"

जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने रद्द किया वही कोने का सिरा बन गया

नुबूवत का एक शाखा से दूसरी शाखा में जाना — स्वयं सुसमाचार के पाठ से

सीधी-सादी बात में

मसीह अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से कहा कि **अल्लाह का राज्य उनसे ले लिया जाएगा और किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा** जो वह करेगी जो उसे पसन्द है। यानी नुबूवत बनी इसराईल से निकलकर दूसरों की ओर चली जाएगी।

उस समय लोग क्या मानते थे?

नुबूवत अटूट सदियों से बनी इसराईल में थी: इब्राहीम, इसहाक़, याक़ूब, यूसुफ़, मूसा, दाऊद, सुलैमान, यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और दूसरे। वे मानते थे कि नुबूवत उनके वंश में सुरक्षित एक अधिकार है जो उनसे कभी नहीं जाएगा। और इसीलिए उन्होंने यह मानने से इनकार किया कि अरबों में से कोई नबी उठाया जाए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मुहम्मद ﷺ **इस्माईल की सन्तान** से भेजे गए — यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान की दूसरी शाखा से। तो नुबूवत इतिहास में पहली बार इसहाक़ की सन्तान से इस्माईल की सन्तान की ओर चली गई। और उनके ज़रिये एक नई क़ौम खड़ी हुई जो पहले थी ही नहीं, और जो धरती के सभी महाद्वीपों तक फैल गई। और क़ुरआन ठीक इसी बिन्दु पर उठने वाली उस ईर्ष्या की ओर इशारा करता है: "**या वे लोगों से इस बात पर ईर्ष्या करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया?**"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

शब्द **"क़ौम"** निर्णायक है। उन्होंने न कहा "तुममें से किसी गिरोह को दिया जाएगा" और न "किसी नेक बचे हुए हिस्से को" — उन्होंने कहा "**एक क़ौम को**", और यूनानी (एथ्नोस) का अर्थ है **एक दूसरी जाति**। इस पाठ से पहले उस अंगूर के बाग़ का दृष्टान्त है जिसके मज़दूरों ने अपने पास भेजे गए सन्देशवाहकों को मार डाला और फिर बेटे को भी मार डाला, तो वे इसी योग्य हुए कि वह उनसे छीनकर दूसरों को सौंप दिया जाए। और उसके तुरन्त बाद आता है: "**जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने रद्द कर दिया, वही कोने का सिरा बन गया**" — यानी वही रद्द की गई शाखा जिस पर इमारत टिकेगी। और इस्माईल की सन्तान नुबूवत के हर अभिलेख में छोड़ दी गई शाखा है — यहाँ तक कि उसी से नबियों का ख़ातम आया।

उत्पत्ति

103 बारह सरदार — और एक बड़ी क़ौम

और रहा इस्माईल, तो मैंने तेरी सुन ली: देख, मैंने उसे बरकत दी है, और उसे फलदायी बनाऊँगा, और उसे बहुत बढ़ाऊँगा; उससे बारह सरदार पैदा होंगे, और मैं उसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।

उत्पत्ति — अध्याय 17, आयत 20

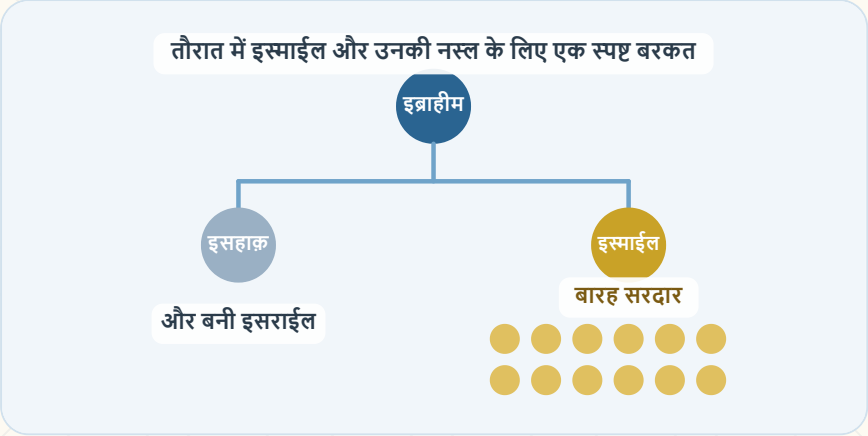

एक पाठ जो इस्माईल के लिए एक बरकत, एक वंश और एक बड़ी क़ौम की पुष्टि करता है

सीधी-सादी बात में

स्वयं तौरात दर्ज करती है कि अल्लाह ने **इस्माईल** को बरकत दी, और वादा किया कि उनकी पीठ से **बारह सरदार** निकलेंगे, और वह उन्हें **एक बड़ी क़ौम** बनाएगा। तो बरकत अकेले इसहाक़ तक सीमित नहीं है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

बनी इसराईल में यह धारणा फैली हुई थी कि पूरा वादा इसहाक़ और उनके वंश में है, और इस्माईल तथा उनकी सन्तान अहद से बाहर हैं। इसी आधार पर अरबी पक्ष से आने वाली हर भविष्यवाणी रद्द कर दी जाती थी। पर पाठ इस्माईल के लिए एक स्वतंत्र बरकत की पुष्टि में स्पष्ट है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इस्माईल के बारह बेटों के नाम उत्पत्ति (25:13-16) में आए हैं, और सूची इस पर बन्द होती है: "**अपनी-अपनी क़ौमों के अनुसार बारह सरदार**" — और ये वही ज्ञात उत्तरी अरब क़बीले हैं, और उनमें से कई के नाम असीरी शिलालेखों में आते हैं। रहा **एक बड़ी क़ौम** का वादा, तो वह इस्लाम में पूरा हुआ: एक ऐसी क़ौम जो इस्माईल के वंश से निकली और धरती के पूरब और पश्चिम तक पहुँची।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह पाठ उस बुनियादी दलील को ही ढा देता है जिसके सहारे मुहम्मद ﷺ की नुबूवत रद्द की जाती थी। यदि स्वयं तौरात इस्माईल के लिए **एक बरकत**, **एक बड़ा वंश** और **एक बड़ी क़ौम** की पुष्टि करती है, तो उनकी शाखा को नुबूवत से बाहर रखने का कोई आधार ही नहीं। और वादे के क्रम पर ध्यान दीजिए: बरकत, फिर फलना और बढ़ना, फिर बारह सरदारों में सरदारी, फिर **"एक बड़ी क़ौम"** — वह लक्ष्य जिस पर वह बन्द होता है। और उत्पत्ति (21:21) कहती है कि इस्माईल **फ़ारान के जंगल** में बसे — ठीक वही जगह जहाँ से व्यवस्थाविवरण के पाठ में प्रकाश "जगमगा उठा"। पाठ एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं और एक ही दिशा की ओर इशारा करते हैं।

एक तुलना

104 मूसा जैसा — वह तुलना जो फ़ैसला कर देती है

और इसराईल में मूसा जैसा कोई नबी फिर नहीं उठा, जिसे प्रभु ने आमने-सामने जाना।

व्यवस्थाविवरण — अध्याय 34, आयत 10

विशेषता	मूसा	मुहम्मद ﷺ
सामान्य जन्म	✔	✔
एक पिता और एक माँ	✔	✔
पत्नी और सन्तान	✔	✔
एक पूरी शरीअत	✔	✔
नेता और योद्धा	✔	✔
अपने नगर से हिजरत	✔	✔
स्वाभाविक मृत्यु	✔	✔

"तेरे जैसा" — और तौरात इनकार करती है कि वह बनी इसराईल से हो

सात गुण जो दो व्यक्तियों में मिलते हैं और किसी तीसरे में नहीं

सीधी-सादी बात में

तौरात ने **मूसा जैसे** एक नबी का वादा किया। और जब हम तुलना करते हैं तो पाते हैं कि वे गुण मुहम्मद ﷺ में मिलते हैं और किसी दूसरे नबी में नहीं मिलते।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अहले-किताब "मूसा जैसे नबी" का इन्तज़ार करते रहे और उसकी पहचान पर कभी एकमत नहीं हुए। बनी इसराईल का जो भी नबी इस पद के लिए पेश किया जाता है उसमें एक या अधिक शर्त पूरी नहीं होती: उनमें से कोई कोई नई शरीअत नहीं लाया, और किसी ने किसी राज्य का नेतृत्व या कोई युद्ध नहीं किया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मूसा और मुहम्मद ﷺ के बीच समानता के बिन्दुओं में हैं: माता-पिता से सामान्य ढंग का जन्म; विवाहित जीवन और सन्तान; **एक पूरी शरीअत** जो इबादत, लेन-देन, न्याय और दंड पर शासन करती है; एक क़ौम का नेतृत्व, युद्ध और शासन; उत्पीड़न की भूमि से स्थापना की भूमि की ओर **एक हिजरत**; अपने जीवनकाल में अपने दुश्मनों पर विजय; और स्वाभाविक मृत्यु तथा धरती में दफ़्न। और मूसा के बाद किसी दूसरे नबी में यह सब इकट्ठा नहीं मिलता।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

स्वयं तौरात ने दरवाज़ा बन्द कर दिया: "**और इसराईल में मूसा जैसा कोई नबी फिर नहीं उठा।**" यह एक स्पष्ट गवाही है कि वह वादा किया गया नबी **बनी इसराईल से नहीं है**, वरना पाठ अपना ही खंडन करने लगेगा। और जब इसे 18वें अध्याय की 18वीं आयत — "उनके **भाइयों** में से" — के साथ जोड़ा जाए तो निष्कर्ष अनिवार्य रूप से निकलता है: उनके चचेरे भाइयों में से एक नबी — इस्माईल की सन्तान। यहूदी इसे शुरू में समझते थे, इसीलिए क़ुरआन कहता है: "**और वे इनकार करने वालों पर विजय की दुआ माँगते थे — पर जब उनके पास वह आ गया जिसे वे पहचानते थे, तो उन्होंने उसका इनकार कर दिया**" — वे उसका इन्तज़ार करते थे और उसकी ख़बर देते थे, यहाँ तक कि वह उनके अपने वंश के सिवा कहीं और से आ गया।

इस भाग का सार

105 वे उसे अपने पास लिखा हुआ पाते हैं

वे जो उस रसूल का, उस निरक्षर नबी का अनुसरण करते हैं, जिसे वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।

सूरह अल-आराफ़ — आयत 157

क़ुरआन अकेले अपनी ओर नहीं, बल्कि उसी की ओर इशारा करता है जो अहले-किताब के हाथों में है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन साफ़ कहता है कि नबी ﷺ का वर्णन **उसी तौरात और इंजील में लिखा हुआ है** जो अहले-किताब के हाथों में है। और यह उनके लिए एक खुली चुनौती है कि वे अपनी किताबें खोलें और देखें।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मदीना, नजरान और यमन के यहूदियों तथा ईसाइयों के पास अपने ग्रन्थ थे और वे उन्हें पढ़ते थे, और उनमें उनके पाठों के विशेषज्ञ विद्वान भी थे। तो यह दावा कि नबी ﷺ का वर्णन उनकी किताबों में है — **उसी दिन झुठलाया जा सकता था** यदि उसका कोई आधार न होता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यहाँ जो पाठ गुज़रे — व्यवस्थाविवरण 18 और 33, हबक्कूक 3, यशायाह 21, 29 और 42, श्रेष्ठगीत 5, यूहन्ना 14 और 16, मत्ती 21, और उत्पत्ति 17 तथा 21 — **वे सब आज के मानक संस्करणों में मौजूद हैं**, और कोई भी पाठक किताब खोलकर उन्हें पढ़ सकता है। और आयत ने यह दावा भी नहीं किया कि नाम हर जगह खुलकर लिखा है; उसने कहा "**वे उसे पाते हैं**" — यानी वे उसका वर्णन और उसकी निशानियाँ पाते हैं और उन्हीं से उसे पहचानते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ताक़त यहाँ किसी और ही क़िस्म की है। क़ुरआन अपनी ओर से दलील नहीं देता; वह **विरोधी की अपनी किताब की ओर इशारा करता है**। और यह सबसे ख़तरनाक क़िस्म की दलील है और सबसे आसानी से रद्द की जा सकने वाली — उनके लिए इतना काफ़ी था कि वे अपने ग्रन्थ खोलें और उन्हें ख़ाली दिखा दें। फिर भी उनके जिन विद्वानों ने इस्लाम क़बूल किया उन्होंने ठीक इसी कारण किया — और उनमें मदीना के यहूदियों के रब्बी अब्दुल्लाह बिन सलाम भी थे। फिर क़ुरआन ने साहस में और आगे बढ़कर कहा: "**वे उसे यूँ पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं**" — और ऐसी तुलना वही करता है जो निश्चिन्त हो। और चौदह सदियों से इन पाठों का उनकी किताबों में बना रहना, जिन्हें शोधकर्ता पढ़ते और उन पर बहस करते हैं, स्वयं उसी चुनौती का आज तक चलता रहना है।

भाग चार

नबी ﷺ के प्रत्यक्ष चमत्कार

जो उनके साथियों ने अपनी आँखों से देखा और अटूट सनदों के ज़रिये हम तक पहुँचाया: उँगलियों के बीच से फूटता पानी, उनके लिए रोता खजूर का तना, और मक्का के ऊपर फटता चाँद।

16 प्रमाण

आकाश में एक निशानी

106 मक्का के ऊपर चाँद फट गया

क़ियामत निकट आ गई, और चाँद फट गया। और यदि वे कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं: यह तो चलता-फिरता जादू है।

सूरह अल-क़मर — आयतें 1-2

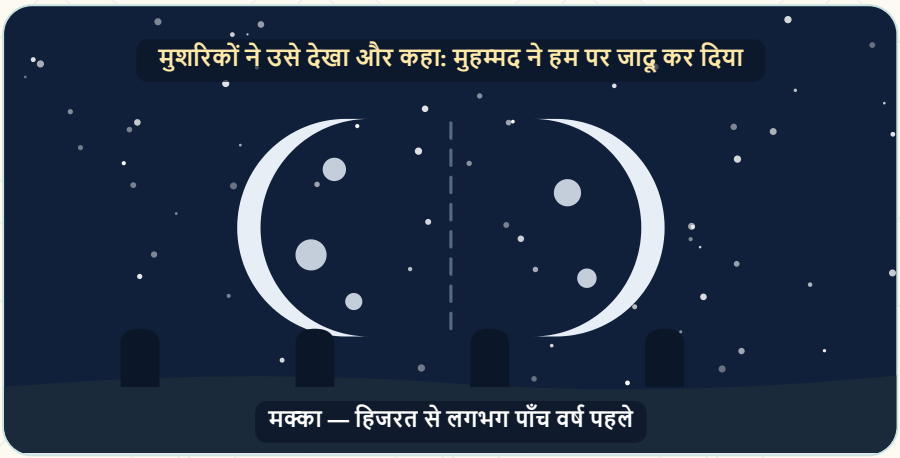

एक घटना जिसे मक्का के सभी लोगों ने देखा — ईमान वाले ने भी और इनकार करने वाले ने भी

सीधी-सादी बात में

चाँद आकाश में दो टुकड़ों में फट गया, यहाँ तक कि लोगों ने उनके बीच हिरा पर्वत देखा। और मुशरिकों ने यह इनकार नहीं किया कि उन्होंने देखा — उन्होंने कहा: **"मुहम्मद ने हम पर जादू कर दिया है।"**

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुरैश नबी ﷺ से उनकी सच्चाई सिद्ध करने के लिए कोई प्रत्यक्ष निशानी माँगते आ रहे थे। जब वह आई तो उन्होंने यह नहीं कहा "हमने कुछ नहीं देखा" — जो सबसे आसान और सबसे सुरक्षित उत्तर था — बल्कि जो देखा उसकी व्याख्या जादू से की। **और यह अपने आप में इस बात की स्वीकृति है कि वे उसके गवाह थे।**

आज विज्ञान क्या कहता है?

आयत **पूर्ण भूतकाल** में आई: "चाँद फट गया" — न कि "फटेगा"। चाँद के फटने की हदीस **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** में कई सनदों से कई सहाबा से रिवायत है: इब्न मसऊद, अनस, इब्न अब्बास, जुबैर बिन मुतइम और अली। और उनकी रिवायतें वर्णन में एकमत हैं: "यहाँ तक कि उन्होंने चाँद के दोनों टुकड़ों के बीच पहाड़ देखा"। हदीस के विद्वानों के अनुसार यह ख़बर तवातुर के दर्जे तक पहुँची है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

प्रमाण यहाँ अकेली घटना में नहीं, बल्कि **विरोधियों की प्रतिक्रिया** में है। यह आयत उन्हें मक्का में उनके जीते जी सुनाई गई, और उसमें कहा गया कि चाँद उनकी आँखों के सामने फटा। यदि ऐसा हुआ ही न होता तो उनके लिए सबसे आसान बात यही थी कि कह देते: "कब? हमने तो कुछ नहीं देखा।" और वे उन्हें झूठा सिद्ध करने के सबसे अधिक इच्छुक लोग थे, और उन पर कविता, जादू और पागलपन का आरोप लगाने से नहीं हिचके। फिर भी उन्होंने **इनकार के बजाय व्याख्या चुनी** — और यह सम्भव सबसे प्रबल गवाही है। और आयत ने स्वयं उनका उत्तर भी दर्ज कर दिया: "**और वे कहते हैं: यह तो चलता-फिरता जादू है**" — दलील और उसका जवाब, दोनों एक साथ दर्ज।

107 उनकी उँगलियों के बीच से फूटता पानी

उन्होंने अपना हाथ उस बर्तन में रखा, और पानी उनकी उँगलियों के बीच से सोतों की तरह फूटने लगा, और हमने पिया और वुज़ू किया। अनस से पूछा गया: तुम कितने थे? उन्होंने कहा: लगभग तीन सौ।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

वह बर्तन से नहीं फूटा... बल्कि उँगलियों के बीच से

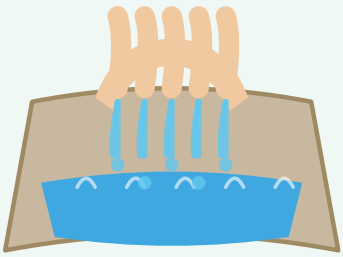

लगभग तीन सौ लोगों ने एक ही बर्तन से पिया और वुज़ू किया

एक दृश्य जिसे अनस बिन मालिक, जाबिर, इब्न मसऊद और दूसरों ने रिवायत किया

सीधी-सादी बात में

पानी ख़त्म हो गया और लोग प्यासे थे। तो नबी ﷺ ने अपना हाथ एक छोटे-से बर्तन में डाला, और **पानी उनकी उँगलियों के बीच से सोतों की तरह फूट पड़ा**, यहाँ तक कि पूरी सेना ने पिया और वुज़ू किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस जगह न कोई कुआँ था न कोई वर्षा। और रेगिस्तान में पानी जीवन और मृत्यु का मामला है। सैकड़ों लोगों को एक ही समय पानी चाहिए था। और एक छोटा बर्तन तो एक ही आदमी के वुज़ू और पीने के लिए भी काफ़ी न होता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना **दोनों सहीह संग्रहों** में अनस बिन मालिक, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और दूसरों से, अलग-अलग जगहों पर रिवायत है — हुदैबिया में, तबूक में और अन्यत्र। यह एक से अधिक बार हुई, और हज़ारों इसके गवाह बने। इब्न मसऊद कहते हैं: "हम निशानियों को बरकत गिनते थे, जबकि तुम उन्हें डर की चीज़ गिनते हो। हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक सफ़र में थे और पानी कम पड़ गया, तो उन्होंने कहा: कुछ बचा हुआ पानी ढूँढ़ो..."

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

विशिष्ट विवरण सोते की जगह है: **"उनकी उँगलियों के बीच से"**, बर्तन से नहीं। यदि कोई कोई ख़बर गढ़ना चाहता तो निकट बात यही होती कि कह देता बर्तन भर गया — वह अधिक सरल है। पर किसी मनुष्य के हाथ की उँगलियों के बीच से पानी का फूटना एक विचित्र और सूक्ष्म वर्णन है जो देखे बिना कहा ही नहीं जाता। और इससे भी महत्वपूर्ण है **गवाहों की संख्या**: अनस की रिवायत में "लगभग तीन सौ", और हुदैबिया के दिन जाबिर की रिवायत में एक हज़ार चार सौ। इतने लोगों के गवाह बनने के बाद रिवायत होकर दर्ज हो जाने वाली ख़बर, और उनमें से एक का भी इनकार न करना — ऐसी ख़बर उनके बाद गढ़ी नहीं जा सकती।

भोजन में बरकत

108 जौ का एक साअ जिसने एक हज़ार को पेट भर खिलाया

तो मैं उसे रसूलुल्लाह ﷺ के पास लाया ... और उन्होंने कहा: ख़न्दक़ वालों को बुलाओ। और वे एक हज़ार थे ... और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि उन्होंने खाया यहाँ तक कि उसे छोड़कर चले गए, और हमारी हाँडी वैसे ही उबल रही थी जैसी थी।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

ख़न्दक़ का दिन — जब लोग भूख से पेट पर पत्थर बाँधे हुए थे

सीधी-सादी बात में

जाबिर ने नबी ﷺ को एक छोटे-से खाने पर बुलाया जो चन्द लोगों के लिए काफ़ी था, और नबी ﷺ ने उन एक हज़ार लोगों को बुला लिया जो ख़न्दक़ खोद रहे थे। **सबने पेट भरकर खाया, और हाँडी फिर भी लबालब थी।**

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह घेराबन्दी के सबसे कठिन दिनों की बात है। मुसलमान भूखे थे, यहाँ तक कि नबी ﷺ ने स्वयं भूख से अपने पेट पर पत्थर बाँधा हुआ था। खाना जौ का एक साअ और एक छोटा बकरी का बच्चा था — जो केवल एक ही घर के लिए काफ़ी था। और जाबिर ने अपनी पत्नी से चुपके से अपने किए पर माफ़ी माँग ली थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पूरी हदीस **सहीह बुख़ारी** में है, जिसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने अपने और अपने ही हाल के बारे में रिवायत किया, और वह भी घर के सूक्ष्म ब्योरों के साथ: अपनी पत्नी से उनकी बातचीत, अपनी रुसवाई का डर, नबी ﷺ की यह हिदायत कि हाँडी आग से न उतारी जाए, और यह हुक्म कि उसमें से निकालकर बाँटा जाए और उसे खोला न जाए। और जाबिर अन्त में क़सम खाते हैं: "उन्होंने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि उन्होंने खाया यहाँ तक कि उसे छोड़कर चले गए, **और हमारी हाँडी वैसे ही उबल रही थी जैसी थी**" — अब भी खौलती और भरी हुई।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ऐसी घटना गढ़ी नहीं जा सकती, क्योंकि वह एक ही जगह और एक ही समय **एक हज़ार गवाहों** के सामने घटी। यदि यह झूठ होता तो सेना के सैकड़ों लोग इसका इनकार करते, और उनमें ताक में बैठे मुनाफ़िक़ भी थे। और इससे भी सूक्ष्म बात: रावी **अपनी ही शर्मिन्दगी** बयान करता है और यह डर कि खाना बहुत कम है — ऐसा विवरण कोई गढ़ने वाला, जो अपनी बड़ाई चाहता हो, कभी न जोड़ता। और सहीह संग्रहों में इसके कई समकक्ष हैं: तबूक का खाना, इब्नुल-जर्राह की खजूरें, और जाबिर के पिता का वह क़र्ज़ जो ऐसी खजूरों से चुकाया गया जो उसका दसवाँ हिस्सा भी न ढाँकतीं।

109

निर्जीव का रोना

वह खजूर का तना जो उनके लिए तड़प उठा

मस्जिद खजूर के तनों पर छाई हुई थी, और जब नबी ﷺ ख़ुतबा देते तो उनमें से एक तने के पास खड़े होते। जब उनके लिए मिम्बर बनाया गया ... तो हमने उस तने से गाभिन ऊँटनी के कराहने जैसी आवाज़ सुनी, यहाँ तक कि नबी ﷺ आए और उस पर अपना हाथ रखा तो वह शान्त हो गया।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

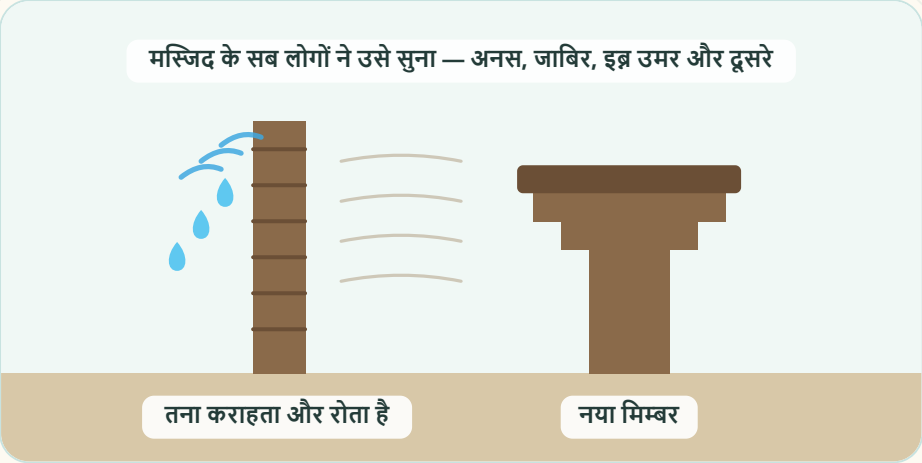

एक खजूर का तना जो अपने बच्चे से बिछड़ी ऊँटनी की तरह कराहा

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ खजूर के एक तने से टिककर ख़ुतबा देते थे। जब उनके लिए मिम्बर बनाया गया तो **वह तना रोया और कराहा** यहाँ तक कि मस्जिद में मौजूद हर व्यक्ति ने उसे सुना — तो वे उतरे और उसे गले लगाया, और वह शान्त हो गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

तना लकड़ी का एक सूखा टुकड़ा है जिसमें कोई संवेदना नहीं। उसका ऐसी सुनाई देने वाली आवाज़ निकालना जो अपने बच्चे से बिछड़ी ऊँटनी की आवाज़ जैसी हो — ऐसी कोई मिसाल ही नहीं। और उस दिन मस्जिद लोगों से भरी थी, और वह जुमा था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह बुख़ारी** में और अन्यत्र है, और कई सहाबा से बहुत-सी सनदों से रिवायत है: जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अनस बिन मालिक, अब्दुल्लाह बिन उमर, उबय्य बिन काब, सहल बिन साद, बुरैदा और दूसरे — यहाँ तक कि विद्वानों ने इसे **तवातुर** वाली रिवायतों में गिना है। हसन बसरी जब इसे रिवायत करते तो कहते: "ऐ मुसलमानो! लकड़ी का एक टुकड़ा रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत में उनके लिए तड़पता है; तुम उनके लिए तड़पने के अधिक हक़दार हो।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दलील की ताक़त यह है कि यह **मदीना की मस्जिद में जुमे के दिन** हुआ, यानी नगर के सबसे बड़े साप्ताहिक जमावड़े के सामने, न कि किसी एकान्त में या चन्द लोगों के सामने। बहुत-से सहाबा ने इसे रिवायत किया, हर एक ने अपने शब्दों में, और उन्होंने आवाज़ का वर्णन बहुत मिलते-जुलते शब्दों में किया — "गाभिन ऊँटनी के कराहने जैसी"। और अन्तिम विवरण ही ख़बर को कल्पना से ऊपर उठा देता है: कि **जब उन्होंने उस पर हाथ रखा तो वह शान्त हो गया**, और एक रिवायत में उन्होंने कहा: "यदि मैं उसे गले न लगाता तो वह क़ियामत तक तड़पता रहता।" एक ऐसी ख़बर जिसकी गवाह पूरी मस्जिद बनी, फिर जिसे दर्जनों सहाबा ने रिवायत किया, और उपस्थित लोगों में से किसी ने भी उसका इनकार नहीं किया।

इसरा

110 उन्होंने बैतुल-मक़दिस का वर्णन किया, जबकि उसे कभी देखा ही न था

पवित्र है वह जो अपने बन्दे को रात में मस्जिदे-हराम से उस दूरतम मस्जिद तक ले गया, जिसके आस-पास हमने बरकत रखी है।

सूरह अल-इसरा — आयत 1

उन्होंने सुबह क़ुरैश को बताया, और उन्होंने मस्जिद के बारे में दरवाज़ा-दर-दरवाज़ा पूछा

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ को रात में मक्का से बैतुल-मक़दिस ले जाया गया। जब उन्होंने क़ुरैश को बताया तो उन्होंने उन्हें झुठलाया, और **उनसे मस्जिद का वर्णन माँगा** — और उनमें ऐसे लोग भी थे जिन्होंने उसे देखा था। उन्होंने उन्हें वर्णन किया यहाँ तक कि उन्होंने कहा: "रहा वर्णन, तो उसे उन्होंने ठीक बताया।"

उस समय लोग क्या मानते थे?

मक्का और बैतुल-मक़दिस के बीच लगभग 1,200 किलोमीटर की दूरी है, जिसे क़ाफ़िला एक तरफ़ एक महीने में तय करता है। और नबी ﷺ ने **अपने जीवन में कभी बैतुल-मक़दिस देखा ही न था**। और मक्का में ऐसे बहुत-से व्यापारी थे जो शाम जा चुके थे और मस्जिद देख चुके थे तथा उसकी विशेषताएँ जानते थे। तो चुनौती अपने सबसे ख़तरनाक रूप में थी: **ऐसी जगह का वर्णन करना जिसे तुम्हारे विरोधी जानते हों और तुम न जानते हो**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना **दोनों सहीह संग्रहों** में और अन्यत्र है। बुख़ारी और मुस्लिम जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने कहा: "जब क़ुरैश ने मुझे झुठलाया तो मैं हिज्र में खड़ा हुआ, और अल्लाह ने बैतुल-मक़दिस मेरे सामने कर दिया, **और मैं उन्हें उसकी विशेषताएँ बताने लगा जबकि मैं उसे देख रहा था**।" एक दूसरी रिवायत में उन्होंने उनसे उसके दरवाज़ों की संख्या पूछी और उन्होंने गिनकर बता दी। फिर उन्होंने उन्हें उनके अपने एक क़ाफ़िले की ख़बर दी जो रास्ते में था, उसका वर्णन किया और उसके पहुँचने का समय बताया — और वह ठीक वैसे ही आया जैसा उन्होंने कहा था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह एक ही बैठक में **तुरन्त, सीधी और झुठलाई जा सकने वाली परीक्षा** है। उनसे किसी ऐसी अनुपस्थित और अज्ञेय चीज़ का वर्णन नहीं माँगा गया, बल्कि ऐसी जगह का **जिसे पूछने वाले जानते थे** और वे नहीं जानते थे। किसी एक विवरण में एक ही चूक उसी दिन पूरी दावत को गिरा देने के लिए काफ़ी थी। उन्होंने वर्णन की सटीकता स्वीकार की और फिर मुँह मोड़ लिया — जैसा हर निशानी के साथ उनकी आदत थी। पर सबसे प्रबल गवाही **क़ाफ़िले की ख़बर** है: उन्होंने उन्हें उनके अपने क़ाफ़िले की ख़बर दी कि वह कहाँ है और कब पहुँचेगा, और उन्होंने इन्तज़ार किया और उसे ठीक वैसा ही पाया जैसा उन्होंने कहा था, उसी दिन जो उन्होंने बताया था। एक स्वतंत्र सत्यापन, जो उनके अपने हाथों हुआ, नबी ﷺ के हाथों नहीं।

111

ग़ैब का ज्ञान

मारे जाने वालों के गिरने की जगहें

रसूलुल्लाह ﷺ हमें एक दिन पहले दिखा रहे थे कि बद्र वाले कहाँ गिरेंगे, और कह रहे थे: यह है वह जगह जहाँ कल फ़लाँ गिरेगा, यदि अल्लाह ने चाहा। और उनमें से एक भी उस जगह से नहीं हटा जहाँ रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ रखा था।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

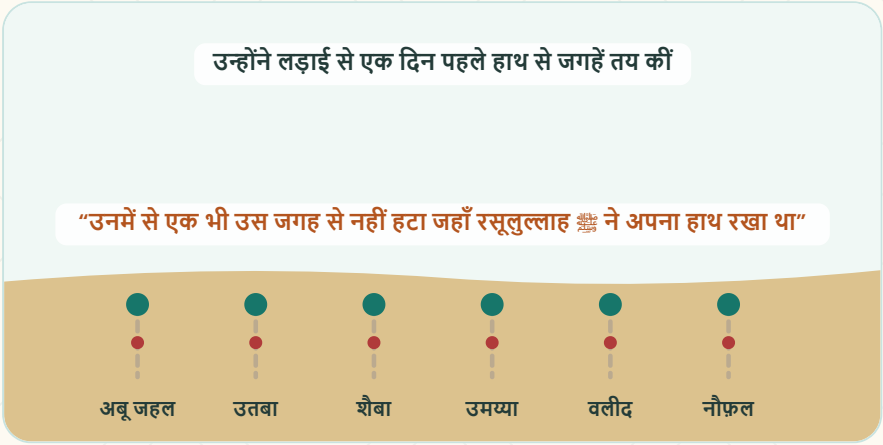

रेत पर निशान लगाए गए... और शव उन्हीं पर पाए गए

सीधी-सादी बात में

बद्र की लड़ाई से एक दिन पहले नबी ﷺ युद्धभूमि पर चले और अपने हाथ से ज़मीन की जगहों की ओर इशारा करते हुए कहते रहे: **यहाँ फ़लाँ मारा जाएगा, और यहाँ फ़लाँ**। जब लड़ाई हुई तो उनमें से एक भी उस जगह से आगे नहीं पड़ा जो उन्होंने बताई थी।

उस समय लोग क्या मानते थे?

बद्र पहला बड़ा टकराव था: मुसलमान तीन सौ से कुछ ऊपर थे और मुशरिक लगभग एक हज़ार। कोई यह निश्चित नहीं कर सकता था कि कौन जीतेगा, मारे जाने वालों के नाम और उनके गिरने की जगहें बताने की तो बात ही दूर। युद्ध में लोग हिलते हैं, झपटते हैं और भागते हैं; तो **ज़मीन का वह टुकड़ा तय कर देना जिस पर हर आदमी गिरेगा** — इसकी कोई मिसाल ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह मुस्लिम** में अनस बिन मालिक से और उमर बिन ख़त्ताब से है। अनस की रिवायत में: "वे कहने लगे: यह है वह जगह जहाँ कल फ़लाँ गिरेगा — और उन्होंने यहाँ और यहाँ ज़मीन पर अपना हाथ रखा। **और उनमें से एक भी उस जगह से नहीं हटा जहाँ रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ रखा था।**" और यह भी स्थापित है कि लड़ाई के बाद वे कुएँ पर खड़े होकर उन्हें नाम ले-लेकर पुकारते रहे: "ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ, क्या तुमने वह सच पाया जो तुम्हारे रब ने तुमसे वादा किया था?"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भविष्यवाणी यहाँ **घटने से पहले स्वयं ज़मीन पर दर्ज कर दी गई**, और पूरी सेना ने उसे देखा। और यह सभी ख़बरों में सबसे अधिक झुठलाई जा सकने वाली है: एक ही आदमी का कहीं और गिर जाना पूरी बात को तीन सौ गवाहों के सामने ढा देने के लिए काफ़ी था। और इसमें तीन चीज़ें इकट्ठी थीं: **व्यक्तियों के नाम लेना**, **यह कहना कि वे मारे जाएँगे** — यानी कि छोटी सेना जीतेगी — और **जगह को एक बालिश्त तक तय कर देना**। एक ही ख़बर में तीन बन्धन, और अगले ही दिन दोनों सेनाओं की आँखों के सामने पूरे।

एक पशु की शिकायत

112 वह ऊँट जो रोया और शिकायत की

जब उसने नबी ﷺ को देखा तो वह कराहा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। तो नबी ﷺ उसके पास आए और उसके कानों के पीछे हाथ फेरा तो वह चुप हो गया। फिर उन्होंने कहा: इस ऊँट का मालिक कौन है? ... क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते इस जानवर के बारे में जिसे अल्लाह ने तुम्हारे क़ब्ज़े में दिया है? इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और थका डालते हो।

अबू दाऊद की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

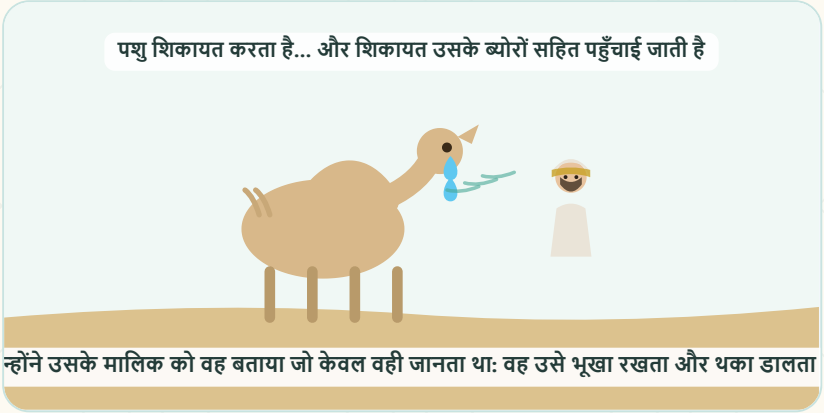

ऊँट चलकर उनके पास आया और उसकी आँखें बहने लगीं — सहाबा की आँखों के सामने

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ अंसार के एक व्यक्ति के चारदीवारी वाले बाग़ में दाख़िल हुए, और एक ऊँट **रोता हुआ** उनके पास आया। उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरा तो वह शान्त हो गया। फिर उन्होंने उसके मालिक को बुलाया और उससे कहा: **"इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और थका डालते हो।"**

उस समय लोग क्या मानते थे?

पशु न शिकायत करता है न समझा जाता है। और किसी आदमी का अपने ऊँट के साथ का व्यवहार उन दोनों के बीच का निजी मामला है; कोई नहीं जानता कि वह अकेले में उसके साथ कैसा सलूक करता है। तो ख़बर में एक साथ दो चीज़ें हैं: **किसी पशु की शिकायत समझना**, और **ऐसे भेद का ज्ञान जो केवल उसके मालिक को है**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस अबू दाऊद की सुनन और अहमद की मुसनद में अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से है, जिसे अलबानी और दूसरों ने सहीह ठहराया। और सहीह संग्रहों में इसके स्थापित समकक्ष हैं: **ख़ैबर की ज़हरीली बकरी** की हदीस, जिसने उन्हें बताया कि वह ज़हरीली है तो वे रुक गए और अपने साथियों को चेता दिया (बुख़ारी और मुस्लिम), और **उस भेड़िए की हदीस जिसने चरवाहे से बात की** और उसे नबी ﷺ के आने की ख़बर दी (अहमद की रिवायत, सहीह ठहराई गई)। अरब ऐसी चीज़ों के बारे में कुछ न जानते थे और उन्हें चकित पाते थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

घटना का व्यावहारिक परिणाम ही उसे उसका महत्व देता है। नबी ﷺ निशानी दिखाने पर नहीं रुके, बल्कि उसे **पशुओं पर दया का एक क़ानून** बना दिया: "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते इस जानवर के बारे में जिसे अल्लाह ने तुम्हारे क़ब्ज़े में दिया है?" और यह उनके अमल के एक पूरे अध्याय से मेल खाता है: पशुओं को यातना देने और उन्हें निशाना बनाने की मनाही, उस स्त्री की हदीस जो एक बिल्ली को बाँध रखने के कारण आग में गई, और वह आदमी जिसे एक कुत्ते को पानी पिलाने के कारण माफ़ कर दिया गया। यह सब सातवीं सदी ईस्वी में आए, ऐसे माहौल में जो अपने जानवरों के प्रति लापरवाह था — और दुनिया की पहली पशु-क्रूरता निवारण संस्था से एक हज़ार वर्ष से भी पहले — यह अपने आप में एक और संकेत है।

113

प्रकट सुरक्षा

वह ज़हरीली बकरी जिसने उन्हें बता दिया

ख़ैबर की एक यहूदी स्त्री ने उन्हें एक भुनी हुई बकरी पेश की जिसमें उसने ज़हर मिला रखा था ... उन्होंने उसका एक कौर लिया पर निगला नहीं और कहा: यह हड्डी मुझे बता रही है कि यह ज़हरीली है।

बुख़ारी, मुस्लिम और अबू दाऊद की रिवायत

एक स्त्री उन्हें परखना चाहती थी: यदि वे नबी हैं तो उन्हें बता दिया जाएगा; और यदि बादशाह हैं तो हम उनसे छूट जाएँगे

सीधी-सादी बात में

एक यहूदी स्त्री ने नबी ﷺ को एक भुनी हुई बकरी पेश की जिसमें उसने ज़हर डाल रखा था। जब उन्होंने एक कौर लिया तो **उसे निगला नहीं**, और कहा: "यह दस्ती मुझे बता रही है कि यह ज़हरीली है।"

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह ख़ैबर की विजय के बाद की बात है, और दुश्मनी खुली और सक्रिय थी। भुने हुए मांस में मिला ज़हर न देखने से पकड़ में आता है न सूँघने से। और स्त्री ने स्वयं पूछे जाने पर कहा कि वह जानना चाहती थी — **"यदि वे नबी हैं तो उन्हें बता दिया जाएगा, और यदि बादशाह हैं तो हम उनसे छूट जाएँगे"**। यानी उसने मामले को एक निर्णायक परीक्षा के रूप में गढ़ा था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** में तथा अबू दाऊद और दारिमी की सुनन में है, और अनस, अबू हुरैरा, जाबिर, इब्न अब्बास और दूसरों से है। स्त्री की अपनी स्वीकृति और इस काम में उसका उद्देश्य भी इसी में रिवायत है। और बिश्र बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु का देहान्त इसलिए हुआ कि उन्होंने चेतावनी से पहले अपना कौर निगल लिया था — ऐसा विवरण कोई गढ़ने वाला कभी न जोड़ता, क्योंकि यह दिखाता है कि उस निशानी ने हर हानि नहीं रोकी।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस घटना की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि **परीक्षा विरोधी ने गढ़ी** और अपनी शर्त पहले से घोषित कर दी: नुबूवत इसी से जानी जाएगी कि उन्हें ज़हर की ख़बर दी जाए। फिर शर्त ठीक-ठीक पूरी हुई, और उसने लोगों के सामने इसे स्वीकार किया। फिर मामले का भार और बढ़ गया: **नबी ﷺ ने उसे माफ़ कर दिया** — सबसे प्रसिद्ध रिवायतों में — और यह उस व्यक्ति का आचरण है जो निश्चिन्त हो, किसी डरे हुए बदला लेने वाले का नहीं। और वह अन्तिम विवरण जो रिवायत की ईमानदारी तय कर देता है वह है **एक सहाबी के देहान्त** का ज़िक्र उस ज़हर से; रिवायत ने घटना को सजाया नहीं और न उसे कोई पूरी विजय बनाया, बल्कि उसे उसकी मिठास के साथ उसकी कड़वाहट सहित बयान किया।

114

एक क़बूल हुई दुआ

वह वर्षा जो माँगने पर आई और माँगने पर रुक गई

उन्होंने अपने हाथ उठाए और कहा: ऐ अल्लाह, हमें वर्षा दे ... अल्लाह की क़सम, हमें आकाश में कोई बादल दिखाई नहीं देता था ... और उन्होंने अपना हाथ नीचे भी न किया था कि बादल पहाड़ों की तरह उठ आए, और वे उतरे भी न थे कि वर्षा उनकी दाढ़ी से बह रही थी।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

फिर उन्होंने दुआ की और वह रुक गई — और अकेले मदीना से हट गई

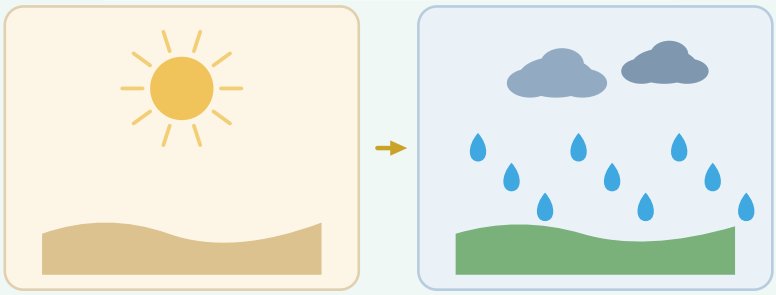

बिना बादल का साफ़ आकाश

पूरे एक सप्ताह की वर्षा

मदीना धूप में, और उसके चारों ओर सब कुछ बरसता हुआ — जैसा अनस ने वर्णन किया

सीधी-सादी बात में

जुमे के ख़ुतबे के दौरान एक आदमी सूखे की शिकायत लेकर आया, तो नबी ﷺ ने अपने हाथ उठाए और दुआ की — **जबकि आकाश साफ़ था और उसमें एक बादल तक न था**। उन्होंने अपना हाथ नीचे भी न किया था कि बादल उठ आए, और पूरे एक सप्ताह वर्षा होती रही यहाँ तक कि लोगों ने अधिक वर्षा की शिकायत की, तो उन्होंने दुआ की और वह रुक गई।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा की दुआ क़ौमों में एक प्राचीन रिवाज है, पर वह एक ऐसी प्रार्थना है जिसकी आशा की जाती है, कोई पूरा किया जाने वाला वादा नहीं। और साफ़ आकाश से क्षणों के भीतर वर्षा नहीं गिरती। और यह कि ऐसा **दो बार, उलटी दिशाओं में** हो — माँगने पर बरसना और फिर माँगने पर रुक जाना — यह संयोग की हर सम्भावना से आगे की बात है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **दोनों सहीह संग्रहों** में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से है। अनस ने दृश्य का वर्णन चौंकाने वाली बारीकी से किया: कि आकाश बिलकुल साफ़ था, कि बादल "पहाड़ों की तरह" उठे, और कि वर्षा अगले जुमे तक चली। फिर जब नबी ﷺ ने उसके थमने की दुआ की तो अनस ने कहा: **"वह रुक गई, और हम धूप में चलते हुए निकले"**, और एक दूसरी रिवायत में: "वह मदीना से यूँ हट गई जैसे कोई कपड़ा हट जाए" — यानी वर्षा **अकेले** मदीना से हटी और उसके चारों ओर बनी रही।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अन्तिम विवरण ही इस ख़बर की सबसे प्रबल चीज़ है। किसी दुआ के बाद वर्षा का गिरना — इसे कहा जा सकता था कि वह अपने मौसम से जा मिला। पर **उसका अकेले मदीना से हट जाना और उसके चारों ओर बने रहना** एक ऐसी परिघटना है जिसे संयोग से नहीं समझाया जा सकता, और मदीना के सारे लोगों ने उसे एक ही दिन अपनी आँखों से देखा। और दूसरी दुआ के शब्दों पर ध्यान दीजिए, जो अत्यन्त सूक्ष्म हैं: "**ऐ अल्लाह, हमारे चारों ओर, हम पर नहीं**" — उन्होंने वर्षा के बिलकुल उठ जाने की दुआ नहीं माँगी, बल्कि यह कि वह मदीना से हटकर उसके आस-पास की ओर मोड़ दी जाए, क्योंकि लोगों को उसकी ज़रूरत थी। और वह ठीक उसी सूक्ष्म रूप में पूरी हुई जिस रूप में माँगी गई थी।

115

चंगाई

अली की आँख — और क़तादा की आँख

उन्होंने उनकी आँखों में अपना लुआब लगाया और उनके लिए दुआ की, तो वे ऐसे ठीक हो गए मानो उन्हें कभी कोई तकलीफ़ थी ही नहीं।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

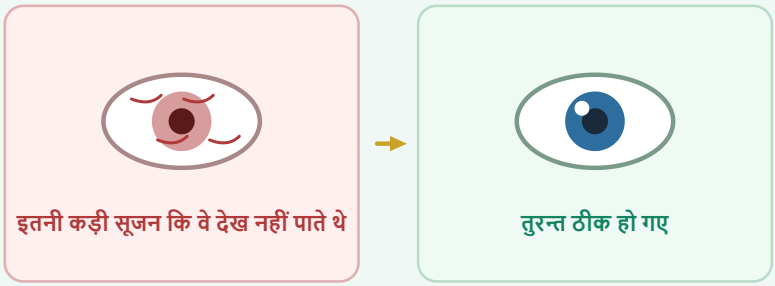

ख़ैबर के दिन — पूरी सेना की आँखों के सामने

अली की आँखें इतनी सूजी थीं कि वे मुश्किल से देख पाते थे; क्षणों बाद झंडा उनके हाथ में था

सीधी-सादी बात में

ख़ैबर के दिन नबी ﷺ ने कहा: **मैं कल झंडा ऐसे व्यक्ति को दूँगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है**। उन्होंने अली को बुलाया — जिनकी आँखें ऐसी बीमार थीं कि वे देख नहीं पाते थे — **और उनकी आँखों में अपना लुआब लगाया, तो वे तुरन्त ठीक हो गए**, और फिर ख़ैबर उन्हीं के हाथों खुला।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आँख की सूजन उस माहौल की एक जानी-मानी बीमारी थी, और उसका धैर्य और समय के सिवा कोई इलाज न था। वह क्षणों में ठीक नहीं होती। और यह घटना एक तनावपूर्ण सैनिक क्षण में हुई, जब सेना इन्तज़ार में थी और यह जानने को उत्सुक कि झंडा कौन उठाएगा — उमर ने कहा: "मैंने उस दिन के सिवा कभी सरदारी की इच्छा नहीं की।"

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **दोनों सहीह संग्रहों** में सहल बिन साद, अबू हुरैरा और सलमा बिन अल-अकवा से है। और इसका समकक्ष वह है जो **क़तादा बिन नोमान** रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख के बारे में उहुद के दिन स्थापित है — उनकी आँख पर ऐसी चोट लगी कि वह उनके गाल पर आ गिरी, और नबी ﷺ ने उसे अपने हाथ से वापस बिठा दिया और उनके लिए दुआ की, तो वही उनकी दोनों आँखों में बेहतर और तेज़ हो गई। यह बात उनके ख़ानदान में जानी जाती रही यहाँ तक कि उनके पोते ने ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के सामने उसका ज़िक्र किया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दो बातें इस घटना को महज़ दावे के दायरे से बाहर निकाल देती हैं। पहली, कि यह **जमावड़े के क्षण पर एक पूरी सेना के सामने** हुई, जब हर आँख झंडा उठाने वाले पर थी। दूसरी — और अधिक महत्वपूर्ण — कि चंगाई अपने आप में कोई लक्ष्य न थी, बल्कि **एक ज़िम्मेदारी निभाने की शर्त** थी: झंडा उन्हें तुरन्त सौंप दिया गया और वे लड़ने निकल पड़े, और क़िला उसी दिन उन्हीं के हाथों खुला। यदि वे सचमुच ठीक न हुए होते तो यह एक घंटे के भीतर खुल जाता। रही क़तादा की आँख, तो उसका निशान **दशकों तक दिखाई देता रहा** — एक ऐसी निशानी जिसे लोग उस व्यक्ति के चेहरे पर जीवन भर देखते रहे, कोई महज़ रिवायत की गई ख़बर नहीं।

116

हिजरत में सुरक्षा

सुराक़ा और उसका घोड़ा जो ज़मीन में धँस गया

जब मैं अपने घोड़े पर सवार था ... मेरा घोड़ा ठोकर खा गया और मैं गिर पड़ा ... फिर मैं दोबारा सवार हुआ, और जब वे दोनों नज़र आए तो उसके अगले पाँव घुटनों तक ज़मीन में धँस गए।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

एक पीछा करने वाला जो सौ ऊँटों के लिए निकला था... और अमान माँगता हुआ लौटा

सीधी-सादी बात में

सुराक़ा हिजरत के दौरान नबी ﷺ और अबू बक्र का पीछा करता हुआ निकला। और हर बार जब वह उनके क़रीब पहुँचता, **उसके घोड़े के पाँव ठोस ज़मीन में** घुटनों तक धँस जाते। उसे समझ आ गया कि उसे रोका जा रहा है, और उसने उनसे अमान माँगी।

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुरैश ने मुहम्मद ﷺ को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ लाने वाले के लिए सौ ऊँटों का इनाम रखा था। और सुराक़ा बनू मुदलिज का एक कुशल, मँजा हुआ घुड़सवार था, और वह क़ौम खोज लगाने तथा पद-चिह्न पढ़ने वालों की थी। दृश्य खुले रेगिस्तान में था जहाँ भागने की कोई जगह न थी, और उन दोनों के पास कोई पनाह न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पूरे ब्योरे सहित यह कहानी **सहीह बुख़ारी** में है, आयशा और अबू बक्र से आई हिजरत की लम्बी हदीस के भीतर, और **सुराक़ा स्वयं उसे रिवायत करता है** अपने इस्लाम क़बूल करने के बाद। उसने दर्ज किया कि उसका घोड़ा उसके नीचे एक से अधिक बार धँसा, कि उसने तीरों से क़ुरा निकाला और वह परिणाम निकला जो उसे नापसन्द था, और उसने उसकी अवहेलना की — और फिर, जब वह निराश हो गया, तो उसने पुकारकर अमान की पेशकश की और उन्हें राशन तथा सामान देने को कहा। नबी ﷺ ने उसके लिए अमान का एक पत्र लिखवाया, जिसे वह मक्का की विजय के दिन लेकर आया। और उसी क्षण उन्होंने उससे कहा: "तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम किसरा के दोनों कंगन पहनोगे?" — जिन्हें उसने बाद में पहना।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस ख़बर की सबसे प्रबल बात यह है कि **इसका रावी स्वयं विरोधी है**। सुराक़ा घटना के दिन मुसलमान न था; वह तो इनाम का लालची पीछा करने वाला था। उसने वर्षों बाद इस्लाम क़बूल किया और लोगों को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। और किसी विरोधी की अपने ही विरुद्ध गवाही, जिसमें वह अपनी असफलता और जो उसने देखा उसे स्वीकार करे, रिवायत के विद्वानों के यहाँ प्रमाण के सबसे ऊँचे दर्जों में है। और उस विचित्र विवरण पर भी ध्यान दीजिए जिसे कोई गढ़ता नहीं: कि घोड़ा **कई बार धँसा, एक बार नहीं**, और हर बार वह फिर कोशिश पर लौटा, यहाँ तक कि आख़िर में निराश हो गया। कोई पीछा करने वाला यदि कहानी गढ़ता तो उसे क़त्ल की कोशिश पर इस बार-बार की ज़िद के साथ कभी न बयान करता।

117

नुबूवत की निशानियाँ

सलमान फ़ारसी और तीन निशानियाँ

और उसने मुझसे उसका हुलिया बयान किया: वह सदक़ा नहीं खाता, तोहफ़ा क़बूल करता है, और उसके दोनों कन्धों के बीच नुबूवत की मुहर है।

अहमद और इब्न हिब्बान की रिवायत — सनद अच्छी

तीन निशानियाँ जिन्हें उन्होंने स्वयं परखा

- उन्होंने उन्हें सदक़ा पेश किया... तो उन्होंने नहीं खाया
- उन्होंने उन्हें तोहफ़ा पेश किया... तो उन्होंने उनके साथ खाया
- उन्होंने उनकी पीठ देखी तो नुबूवत की मुहर पाई

तो वे उसी बैठक में मुसलमान हो गए

एक व्यक्ति जिसने इन तीन निशानियों की तलाश में फ़ारस और शाम पार किए

वे निशानियाँ जो नुबूवत से पहले एक ईसाई संन्यासी से सुनी गईं... और फिर पाई गईं

सीधी-सादी बात में

सलमान फ़ारसी ने अपनी क़ौम का धर्म छोड़ा और सत्य की खोज में देश-देश घूमे, यहाँ तक कि एक संन्यासी ने उन्हें प्रतीक्षित नबी की तीन निशानियाँ सौंपीं। जब वे मदीना पहुँचे तो **उन्होंने तीनों निशानियाँ स्वयं परखीं और पाईं** — तो इस्लाम क़बूल कर लिया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

शाम और अन्य जगहों के अहले-किताब अरबों की भूमि में भेजे जाने वाले एक नबी का इन्तज़ार कर रहे थे, और वे उसकी निशानियाँ आगे पहुँचाते आए थे। सलमान फ़ारस से निकले और कई वर्ष संन्यासियों के बीच घूमते रहे, यहाँ तक कि उन्हें ग़ुलाम बनाकर बेच दिया गया और वे मदीना पहुँचे — हिजरत से वर्षों पहले।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह कहानी स्वयं सलमान से अहमद की मुसनद, इब्न हिब्बान की सहीह और इब्न इसहाक़ की सीरत में रिवायत है। उसमें वे खजूरें लाए और कहा: यह सदक़ा है। नबी ﷺ ने अपने साथियों से कहा: "खाओ", और ख़ुद नहीं खाया। फिर वे दूसरी खजूरें लाए और कहा: यह तोहफ़ा है। और उन्होंने उनके साथ खाया। फिर सलमान देखने के लिए उनके पीछे की ओर घूमे, और नबी ﷺ ने समझ लिया कि वे क्या चाहते हैं तो अपनी चादर पीठ से गिरा दी, और सलमान ने मुहर देखी, और उस पर गिरकर उसे चूमने और रोने लगे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह कोई ब्रह्मांडीय चमत्कार नहीं, बल्कि हर अर्थ में **एक व्यवस्थित वैज्ञानिक परीक्षण** है: पहले से निर्धारित परिकल्पनाएँ, हर एक के लिए एक प्रयोग, और एक परिणाम जिसे स्वीकार या अस्वीकार किया जाए। सलमान ने न किसी तार्किक दलील पर इस्लाम क़बूल किया न किसी भावना पर, बल्कि **तीनों शर्तें पूरी होने के बाद**। और उनमें सबसे सूक्ष्म दूसरी है: **सदक़े और तोहफ़े** के बीच का भेद — एक ऐसा शरई हुक्म जो ख़ास नबी ﷺ का है (सदक़ा उन पर हराम है, तोहफ़ा हलाल), और जिस पर कोई अनुमान से निशाना नहीं बैठा सकता। और कई रिवायतें दर्ज करती हैं कि संन्यासियों और रब्बियों ने नुबूवत से पहले ये निशानियाँ बताईं — उनमें बहीरा संन्यासी, ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल, और अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं।

एक क़बूल हुई दुआ

118 उन्होंने अनस के लिए दुआ की — और वे अंसार में सबसे धनी हो गए

ऐ अल्लाह, इसका माल और इसकी सन्तान बढ़ा दे और जो तूने इसे दिया है उसमें बरकत दे। अनस ने कहा: अल्लाह की क़सम, मेरा माल भरपूर है, और मेरी सन्तान तथा मेरी सन्तान की सन्तान आज लगभग सौ हैं।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

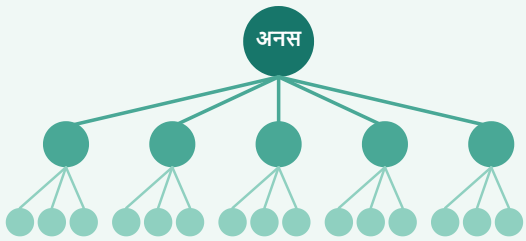

"और मेरी सन्तान तथा मेरी सन्तान की सन्तान आज लगभग सौ हैं"
और वे लगभग सौ वर्ष जिए — बसरा में देहान्त पाने वाले अन्तिम सहाबी

एक ग़रीब घर में की गई दुआ... जिसका पात्र जीवन भर उसके पूरे होने का गवाह बना

सीधी-सादी बात में

उम्मे सुलैम ने नबी ﷺ से अपने बेटे अनस के लिए दुआ माँगी, तो उन्होंने उनके लिए **भरपूर माल, बहुत सन्तान और बरकत** की दुआ की। और अनस ने यह सब अपनी आँखों से देखा और लोगों को बताया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अनस उस समय दस वर्ष के एक छोटे बालक थे, जिन्होंने दस वर्ष नबी ﷺ की सेवा की। उनका ख़ानदान न अंसार में सबसे धनी था न सबसे बड़ी संख्या वाला। और दुआ में **तीन निश्चित चीज़ें** थीं जिन्हें एक जीवन के बाद नापा जा सकता था: माल, सन्तान, और दोनों में बरकत।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **दोनों सहीह संग्रहों** में है। और स्वयं अनस दशकों बाद अल्लाह की क़सम खाकर उसका पूरा होना बयान करते हैं: "मेरा माल भरपूर है, और मेरी सन्तान तथा मेरी सन्तान की सन्तान आज लगभग सौ हैं।" एक रिवायत में, हज्जाज के बसरा आने से पहले उनकी सन्तान में से लगभग एक सौ बीस दफ़्न हो चुके थे। उनका बाग़ साल में दो बार फल देता था। और वे लगभग सौ वर्ष जिए, और **बसरा में देहान्त पाने वाले अन्तिम सहाबी** थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह किसी और ही क़िस्म का प्रमाण है: **एक ऐसी भविष्यवाणी जिसका पात्र स्वयं उसके पूरे होने का गवाह बनता है और उसे बयान करता है**। रावी ही लाभार्थी है और वही गवाह, और वह इसे बसरा में बयान करता है जहाँ उसके चारों ओर हज़ारों लोग हैं जो उसके हालात जानते हैं और उसकी सन्तान, उसके पोते और उसका माल देखते हैं। यदि उसने बढ़ा-चढ़ाकर कहा होता तो उसके अपने नगर के लोग उसे रद्द कर देते। और इसके कई स्थापित समकक्ष हैं: इब्न अब्बास के लिए समझ और क़ुरआन की व्याख्या की उनकी दुआ, तो वे "उम्मत के विद्वान" बन गए; साद बिन अबी वक़्क़ास के लिए दुआ कि उनकी दुआएँ क़बूल हों, तो उनकी दुआओं से डर लगने लगा; और उस व्यक्ति के विरुद्ध दुआ जिसने घमंड से बाएँ हाथ से खाया, तो वह उसे फिर कभी अपने मुँह तक न उठा सका। अलग-अलग लोगों के बारे में अलग-अलग ख़बरें, और हर एक अपने आप में झुठलाई जा सकने वाली।

119

निर्जीव की तस्बीह

वह खाना जो उनके सामने अल्लाह की तस्बीह करता था

हम खाने को तस्बीह करते सुनते थे जबकि वह खाया जा रहा होता था।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

खाने से आती एक आवाज़, जबकि वह खाया जा रहा हो

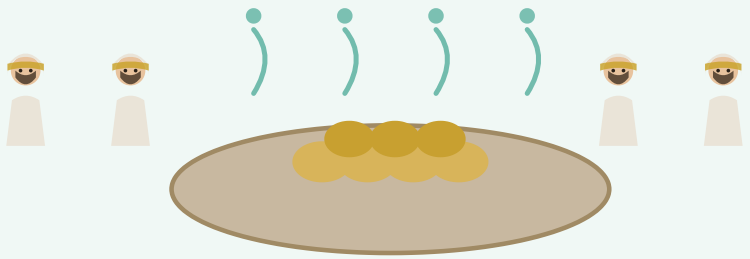

उपस्थित सबने उसे सुना — इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत

वे इन निशानियों को बरकत गिनते थे, डर की चीज़ नहीं

सीधी-सादी बात में

इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: **"हम खाने को तस्बीह करते सुनते थे जबकि वह खाया जा रहा होता था"** — यानी वे नबी ﷺ की मौजूदगी में खाने से आती तस्बीह की आवाज़ सुनते थे।

उस समय लोग क्या मानते थे?

निर्जीव चीज़ों की कोई आवाज़ नहीं होती। खाना चुपचाप खाया जाता है। उससे तस्बीह सुनाई देना ऐसी बात है जिसकी किसी के अनुभव में कोई मिसाल ही नहीं। और नबी ﷺ के सिवा किसी के बारे में ऐसा कुछ रिवायत नहीं हुआ।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह ख़बर **सहीह बुख़ारी** में है, इस्लाम में नुबूवत की निशानियों के अध्याय में। अब्दुल्लाह बिन मसऊद इसे बहुवचन में रिवायत करते हैं: "**हम सुनते थे**" — यानी एक दोहराया जाने वाला सामूहिक अवलोकन, कोई इकलौती अलग-थलग घटना नहीं। और इसका समकक्ष **कंकड़ियों की तस्बीह** की वह स्थापित ख़बर है जो उनकी हथेली में हुई, और उस पत्थर की जो मक्का में उन्हें सलाम करता था, जैसा सहीह मुस्लिम में जाबिर बिन समुरा से है: "मैं मक्का के एक पत्थर को जानता हूँ जो मुझे भेजे जाने से पहले मुझे सलाम करता था; मैं उसे अब भी जानता हूँ।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ताक़त बहुवचन और निरन्तर रूप में है: "**हम सुनते थे**"। यदि यह एक बार होता तो कहा जाता "हमने सुना"। जो रूप इस्तेमाल हुआ वह दोहराव और आदत बताता है — यानी यह उनके बीच एक जानी-पहचानी बात थी जिसे पूरा समूह जानता था। ऐसी बात ऐसे माहौल में गढ़ी नहीं जाती जहाँ सैकड़ों जीवित गवाह हों। और क़ुरआन इस पूरे विषय के पीछे का सामान्य सिद्धान्त बता देता है: "**और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा के साथ उसकी तस्बीह न करती हो, पर तुम उनकी तस्बीह समझते नहीं**" — तस्बीह हर चीज़ में निरन्तर है, और नबी ﷺ की मौजूदगी में जो हुआ वह **उसे सुनने से परदे का हटना** था, कोई नई चीज़ का पैदा होना नहीं।

120

एक वादा की गई सुरक्षा

अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे, और वे हम पर नहीं

अल्लाह की क़सम, वे तुम तक नहीं पहुँचेंगे जब तक मैं तुमसे पहले मर न जाऊँ ... और उन्होंने ﷺ ख़न्दक़ के दिन कहा: अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे और वे हम पर नहीं; हम उनके पास जाएँगे।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

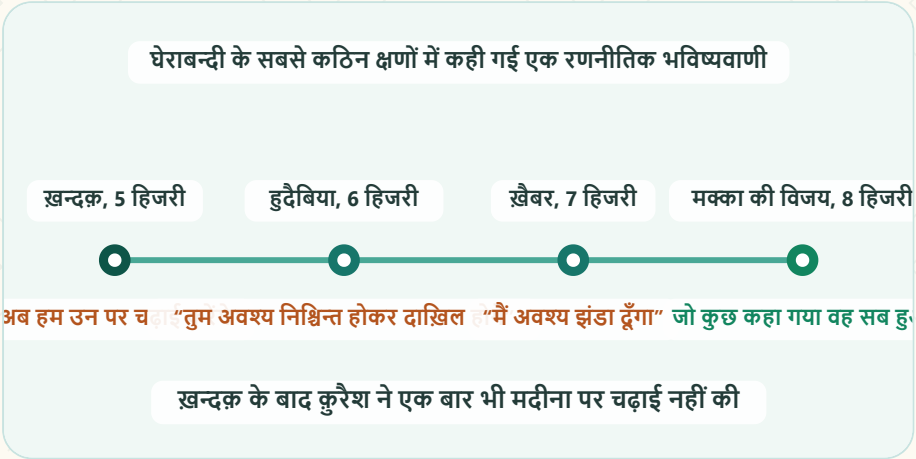

पहल का पूरा उलट जाना... और वह भी घटने से पहले घोषित

सीधी-सादी बात में

जब अहज़ाब की सेनाएँ मदीना से लौट गईं, तो नबी ﷺ ने कहा: **"अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे और वे हम पर नहीं; हम उनके पास जाएँगे।"** और उस दिन के बाद क़ुरैश ने मदीना पर फिर कभी हमला नहीं किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ख़न्दक़ की घेराबन्दी मुसलमानों पर गुज़री सबसे कठिन चीज़ थी। दस हज़ार लड़ाके मदीना को घेरे हुए थे, बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों ने भीतर से अहद तोड़ दिया था, और भूख, ठंड तथा डर था। क़ुरआन कहता है: "**और दिल गले तक आ पहुँचे, और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे**"। और ठीक उसी क्षण पहल के उलट जाने की घोषणा हुई।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह बुख़ारी** में है। और ठीक वैसा ही हुआ जैसा उन्होंने कहा: ख़न्दक़ (5 हिजरी) के बाद क़ुरैश एक बार भी मदीना पर चढ़ाई करने नहीं निकले। बल्कि मुसलमान ही पहल करने वाले बन गए: 6 हिजरी में हुदैबिया, फिर 7 हिजरी में ख़ैबर, फिर 8 हिजरी में मक्का की विजय, फिर हुनैन और तबूक। यह एक सैनिक तथ्य है जिस पर सीरत और इतिहास की सारी किताबें एकमत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह **एक रणनीतिक ख़बर है, कोई आध्यात्मिक नहीं**, और यही उसे विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक जाँच के लिए खुला रखता है। और वह **सबसे बुरे सम्भव क्षण** पर जारी हुई — जब हर संकेत उलटा कह रहा था। ज्ञात नियम यही है कि जो किसी दम घोंटती घेराबन्दी से बचकर निकले वह अपनी स्थिति सुधारने में लगता है, हमला करने में नहीं। और हदीस के शब्दों पर ध्यान दीजिए: उन्होंने यह नहीं कहा "हम विजयी होंगे" — जो एक आम बात है और हर चीज़ से मेल खा जाती — बल्कि **पहल के हस्तान्तरण** को निर्धारित किया: "हम उनके पास जाएँगे"। और यह अगले तीन वर्षों में सचमुच जो हुआ उसका सटीक वर्णन है: उसके बाद का हर अभियान मदीना से बाहर निकला, मदीना की ओर नहीं आया।

121

सार

हम इन ख़बरों पर भरोसा क्यों करें?

ऐ ईमान वालो, यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उसकी जाँच कर लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अनजाने में किसी क़ौम को हानि पहुँचा बैठो और फिर अपने किए पर पछताओ।

सूरह अल-हुजुरात — आयत 6

हदीस के विद्वानों के यहाँ ख़बर क़बूल करने के मानदंड

- एक अटूट सनद जिसमें हर रावी का नाम लिया जाता है
- हर रावी की ईमानदारी और उसकी याददाश्त — और उसकी एक दर्ज जीवनी
- ख़बर का अनियमितता और छिपे दोष से ख़ाली होना
- भरोसेमन्द रावियों का शब्द और अर्थ में एक-दूसरे से मेल खाना

एक ऐसा विज्ञान जिसकी किसी दूसरी क़ौम में कोई मिसाल नहीं

आलोचना का विज्ञान: लाखों रावियों के जीवन दर्ज किए गए और जाँचे गए

सीधी-सादी बात में

ये ख़बरें हम तक मुँह-दर-मुँह चलने वाली कहानियों की तरह नहीं पहुँचीं। वे **एक कठोर प्रलेखन-व्यवस्था** के ज़रिये पहुँचीं: हर ख़बर के साथ नामज़द रावियों की एक सनद है, और हर रावी की एक लिखित जीवनी है जो उसकी ईमानदारी और उसकी याददाश्त जाँचती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

इस्लाम से पहले की क़ौमों ने अपने नबियों की ख़बरें बिना सनदों के आगे पहुँचाईं। न यह ज्ञात है कि किसने किससे पहुँचाया, न यह कि वे कब लिखी गईं, और न यह कि पहुँचाने वाला भरोसेमन्द था या नहीं। और इसीलिए क़ौमों की किताबों में सहीह गढ़े हुए से घुल-मिल गया, और इतिहास किंवदन्ती से।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मुसलमानों ने **सनद का विज्ञान** और **आलोचना तथा प्रामाणीकरण का विज्ञान** गढ़ा, और लाखों रावियों की जीवनियाँ दर्ज कीं: हर एक का जन्म और देहान्त, उसके उस्ताद, उसके शागिर्द, उसकी यात्राएँ, उसकी याददाश्त की हालत, बुढ़ापे में उसका ज़ेहन बिगड़ा या नहीं, और जो उसने रिवायत किया उसकी दूसरों ने पुष्टि की या नहीं। रावियों की किताबें — जैसे तहज़ीबुल-कमाल और मीज़ानुल-एतिदाल — इसी के विशाल विश्वकोश हैं। जर्मन प्राच्यविद् श्प्रेंगर ने कहा कि मुसलमानों ने जीवनी का ऐसा विज्ञान पैदा किया जिसकी मिसाल दूसरी क़ौमें नहीं जानती थीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि इस भाग की ख़बरों में ऐसी विशेषताएँ साझा हैं जिनसे बच निकलना कठिन है: **उनका बड़ी संख्या में गवाहों के सामने घटित होना** — ख़न्दक़ में एक हज़ार, बद्र में तीन सौ, खजूर के तने की हदीस में एक पूरी मस्जिद; **उनका कई स्वतंत्र सनदों से रिवायत होना** ऐसे सहाबा से जिन्होंने उन्हें गढ़ने में कोई साँठगाँठ नहीं की; **उनमें ऐसी बातों का होना जो बड़ाई नहीं बढ़ातीं** — एक सहाबी का ज़हर से देहान्त, जाबिर का यह डर कि खाना बहुत कम है; और **विरोधियों का उन्हें रद्द करने के बारे में चुप रह जाना**, हालाँकि वे ऐसा करने के सबसे अधिक इच्छुक थे। और मानव इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसकी ख़बरें, बातें और काम इतनी बारीकी और इतने ब्योरे के साथ पहुँचाए गए हों।

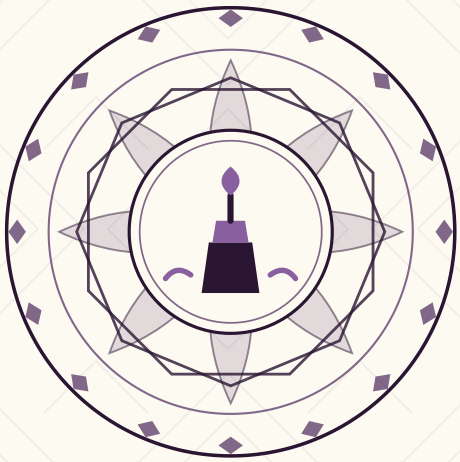

भाग पाँच

जिन्न, जादू और ग़ैब की दुनिया

एक वास्तविक संसार जिसकी ख़बर अल्लाह ने हमें दी, जिसकी गवाही हर क़ौम का इतिहास देता है, और जिसके प्रमाणित वाक़ियात नबी ﷺ के साथ, उनके साथियों के साथ, और हमारे अपने दिनों तक आम लोगों के साथ पेश आए।

18 प्रमाण

122 जिन्नों का एक गिरोह जिसने क़ुरआन सुना

> कह दो: मेरी ओर वह्य की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने सुना, और उन्होंने कहा: निस्सन्देह हमने एक अद्भुत क़ुरआन सुना, जो सही राह दिखाता है, और हम उस पर ईमान ले आए।
>
> **सूरह अल-जिन्न — आयतें 1-2**

जिन्न एक उत्तरदायी सृष्टि हैं: उनमें मुसलमान भी हैं और उनमें इनकार करने वाले भी

सीधी-सादी बात में

जिन्न एक वास्तविक सृष्टि हैं जिन्हें अल्लाह ने आग से बनाया। हम उन्हें नहीं देखते और वे हमें देखते हैं। और क़ुरआन में **उन्हीं के नाम से एक पूरी सूरह** है, जो बताती है कि उनके एक गिरोह ने क़ुरआन सुना और उस पर ईमान ले आया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब जिन्नों को जानते थे और उनसे डरते थे; बल्कि उनमें से कुछ **उनकी पनाह माँगते**, उनकी पूजा करते और अपनी यात्राओं में उनसे सुरक्षा माँगते थे — और स्वयं यह सूरह इसे दर्ज करती है: "और मनुष्यों में से कुछ लोग जिन्नों में से कुछ की पनाह माँगते थे, तो उन्होंने उनका बोझ और बढ़ा दिया।" वे उन्हें ग़ैब का ज्ञान देते थे और उन्हीं से अपनी भविष्यवाणी लेते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इस्लाम ने **न उनके अस्तित्व का इनकार किया न उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया** — उसने मामले को बारीकी से नियंत्रित किया: उसने उनके अस्तित्व की पुष्टि की एक ऐसी उत्तरदायी सृष्टि के रूप में जिसमें नेक भी हैं और बिगड़े हुए भी; उसने उनसे ग़ैब का ज्ञान निश्चित रूप से छीन लिया ("और हमने गुमान किया था कि मनुष्य और जिन्न अल्लाह के बारे में कभी झूठ नहीं कहेंगे", और "और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ कोई बुराई इरादा की गई है"); उसने **उनकी पनाह माँगने से रोका** और उसे शिर्क ठहराया; और उसने नजूमियों तथा भविष्यवक्ताओं के पास जाने से रोका। तो उसने वास्तविकता बनाए रखी और अन्धविश्वास तथा ग़ुलामी दोनों हटा दिए।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह **अपने आस-पास की हर चीज़ से अलग एक सन्तुलन** है। धर्म और संस्कृतियाँ या तो आत्माओं की दुनिया को ज्ञान और शक्ति का स्रोत बनाकर फुला देती हैं जिसकी पूजा और ख़ुशामद की जाए, या उसका बिलकुल इनकार करके उसे अन्धविश्वास ठहरा देती हैं। क़ुरआन ने एक तीसरा रास्ता लिया: **उसने अस्तित्व की पुष्टि की, पूजा मिटा दी, और ग़ैब के ज्ञान का इनकार किया**। यदि यह पाठ उस माहौल के किसी व्यक्ति ने गढ़ा होता, तो आसान रास्ता यही था कि वह उससे सहमत हो जाता जिसे लोग पहले से मानते थे और उसे अपने अधिकार के लिए इस्तेमाल करता — जैसा उससे पहले भविष्यवक्ता करते थे। इसके बजाय उसने भविष्यवाणी के पूरे व्यापार को ही ढा दिया, जो प्रायद्वीप की सबसे नफ़े वाली चीज़ों में था।

रचना का पदार्थ

123 बिना धुएँ की लपट से

> उसने मनुष्य को ठीकरे जैसी मिट्टी से बनाया, और जिन्नों को बिना धुएँ की लपट से बनाया।
>
> **सूरह अर-रहमान — आयतें 14-15**

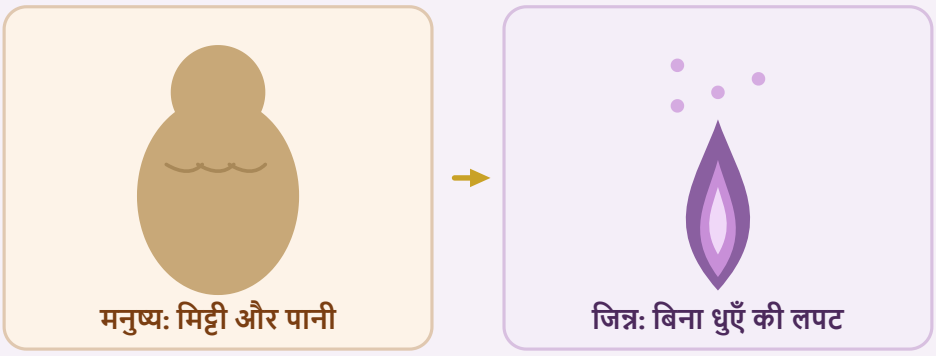

"मारिज" = वह शुद्ध, बेचैन लपट जिसमें कोई धुआँ नहीं

दो बिलकुल भिन्न पदार्थ — और इसीलिए एक दूसरे को नहीं देख सकता

सीधी-सादी बात में

हम **मिट्टी** से बने हैं, और जिन्न **शुद्ध, बेचैन आग** से जिसमें कोई धुआँ नहीं। और चूँकि पदार्थ भिन्न है, इसलिए आपकी आँख उन्हें पकड़ नहीं सकती — जबकि वे आपको देखते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जिन्नों के बारे में लोगों की धारणाएँ अनियंत्रित लोक-कल्पना थीं: भूत, प्रेत और डरावने आकार। उनकी रचना के पदार्थ की कोई परिभाषा न थी और न इसका कोई स्पष्टीकरण कि वे दिखाई क्यों नहीं देते। और यहाँ जो अरबी शब्द आया है वह एक सूक्ष्म पारिभाषिक शब्द है जो कम ही इस्तेमाल होता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अरबी शब्दकोशों में **मारिज** वह शुद्ध, घुली-मिली, बेचैन लपट है जिसमें कोई धुआँ नहीं। और यह ऊर्जा के किसी विशेष रूप का वर्णन है, किसी सघन भौतिक पिंड का नहीं। और आज विज्ञान मानता है कि **मानव आँख जो देखती है वह विद्युतचुम्बकीय वर्णक्रम के एक बहुत छोटे हिस्से** से आगे नहीं जाती (लगभग 400-700 नैनोमीटर), और यह कि ब्रह्मांड का लगभग 95% पदार्थ तथा ऊर्जा "श्याम" है, अदृश्य, और केवल अपने प्रभावों से ही पकड़ में आती है। तो ऐसे संसारों का अस्तित्व जिन तक हमारी इन्द्रियाँ नहीं पहुँचतीं, आज के वैज्ञानिक मन के लिए कोई अजनबी बात नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़ुरआन ने उनके न दिखाई देने का एक स्पष्ट कारण भी बताया, और वह अत्यन्त सूक्ष्म है: "**निस्सन्देह वह और उसका क़बीला तुम्हें वहाँ से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते**।" देखना एक ही दिशा में है, दोनों में नहीं — और इसके लिए **स्वयं बोध की प्रकृति** में अन्तर चाहिए, केवल छिप जाना या ओट में हो जाना नहीं। और रचना के दो पदार्थों के बीच का भेद क्षमताओं के अन्तर को समझा देता है: गति, भेदन, और रूप का बदलना। यह एक **आदि से अन्त तक भीतर से सुसंगत** व्याख्या है, न कि क़ौमों की किंवदन्तियों जैसी बिखरी हुई तस्वीरें।

124 जादू स्वयं नबी ﷺ पर चला

> रसूलुल्लाह ﷺ पर जादू किया गया, यहाँ तक कि उन्हें लगता कि उन्होंने कोई काम किया है जबकि उन्होंने नहीं किया ... एक कंघी में, कंघी से निकले बालों में और नर खजूर के गाभ में, और वह ज़रवान के कुएँ में था।
>
> **बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत**

मदीना का ज़रवान कुआँ — वह जगह जहाँ से जादू निकाला गया

सीधी-सादी बात में

जादू एक वास्तविक चीज़ है जिसका असर होता है, कोई कल्पना या भ्रम नहीं। और इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि **वह स्वयं नबी ﷺ पर हुआ**, यहाँ तक कि उन्हें लगता कि उन्होंने कोई काम किया है जबकि किया न होता — जब तक अल्लाह ने उन्हें उसकी जगह न बता दी और वह निकाल न लिया गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जादू इस क्षेत्र की हर सभ्यता में एक जाना-माना और फलता-फूलता पेशा था: बाबुल, मिस्र, यमन और अरब। जादूगर हैसियत, दौलत और प्रभाव वाला आदमी होता था। और नबी ﷺ के लिए यह छिपा लेना आसान था कि उन पर क्या बीता — क्योंकि किसी व्यक्ति की दावत को इससे बढ़कर कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाती कि यह कहा जाए कि उस तक जादू पहुँच गया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** में आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से है, और वह भी सूक्ष्म ब्योरों के साथ: जादूगर का नाम (लबीद बिन अल-आसम), जादू की सामग्री (कंघी, बाल और खजूर के गाभ का ग़िलाफ़), उसकी जगह (ज़रवान का कुआँ), उसके असर का वर्णन, और उसे कैसे निकाला गया। **अहले-सुन्नत इस पर एकमत हैं कि जादू की एक वास्तविकता और एक असर है**, और यह कि उसके असर ने न वह्य को छुआ न सन्देश पहुँचाने को — केवल उनके अपने दुनियावी मामलों को। और यह एक महत्वपूर्ण शर्त है जिसे विद्वानों ने बताया, क्योंकि सन्देश पहुँचाने में सुरक्षा अटूट है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

प्रमाण यहाँ एक दुर्लभ क़िस्म का है: **ऐसी ख़बर जिसका बाहरी अर्थ दावत लाने वाले को हानि पहुँचाता है, और जो फिर भी पहुँचाई और सुरक्षित रखी गई**। नबी ﷺ ने उसे छिपाया नहीं, उनके साथियों ने उसे दबाया नहीं, और हदीस के विद्वानों ने उसे मिटाया नहीं — बल्कि मुसलमानों की दोनों सबसे सहीह किताबों ने उसे दर्ज किया। और जो कोई धर्म गढ़ रहा हो वह अपने बारे में यह रिवायत नहीं करता कि किसी यहूदी का जादू उस पर चल गया। इसे ऐतिहासिक आलोचक **शर्मिन्दगी की कसौटी** कहते हैं: वह रिवायत जो अपने रावी को हानि पहुँचाती है उससे अधिक सत्य के निकट होती है जो उसे लाभ पहुँचाती है। और इस घटना का एक स्थायी फल भी निकला: **मुअव्विज़तैन**, यानी हर मुसलमान के लिए आज तक एक व्यावहारिक उपाय।

125

एक व्यावहारिक उपाय

मुअव्विज़तैन — हर मुसलमान का क़िला

कह दो: मैं पौ फटने के रब की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई ... और गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से, और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से जब वह ईर्ष्या करे।

सूरह अल-फ़लक़ — आयतें 1-5

एक दैनिक बचाव जिसकी कोई क़ीमत नहीं

उन्होंने ﷺ हुक्म दिया कि इन्हें हर नमाज़ के बाद और सोते समय पढ़ा जाए

दो सूरतें जो जादू और ईर्ष्या की बुराई से रक्षा के लिए उतारी गईं

सीधी-सादी बात में

जब जादू हुआ तो लोगों को बिना किसी उपाय के नहीं छोड़ा गया। दो छोटी सूरतें उतारी गईं — **अल-फ़लक़ और अन-नास** — जिनमें जादू से, ईर्ष्या से और शैतान के वसवसे से रक्षा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जब लोगों पर जादू होता तो वे उसे तोड़ने के लिए किसी दूसरे जादूगर की शरण लेते — यानी बुराई का इलाज उस जैसी ही बुराई से करते, और इस तरह जादूगरों से और अधिक चिपकते और उन्हें और अधिक देते। यही वह चक्र था जो भविष्यवक्ताओं और जादूगरों की रोज़ी चलाता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ हर रात सोने से पहले ये दोनों सूरतें अपने ऊपर पढ़ते, अपनी हथेलियों में फूँकते और उनसे अपना शरीर पोंछते थे, और वे बीमारों पर भी उन्हें पढ़ते थे (बुख़ारी और मुस्लिम)। उन्होंने उक़्बा बिन आमिर को हुक्म दिया कि उन्हें **हर नमाज़ के बाद** पढ़ें, और उनसे कहा: "पनाह माँगने वालों ने इन जैसी किसी चीज़ से कभी पनाह नहीं माँगी।" और सहीह हदीस में है: "जो अपने बिस्तर पर जाते समय आयतुल-कुर्सी पढ़े, उस पर अल्लाह की ओर से एक निगरान बना रहता है और सुबह तक कोई शैतान उसके पास नहीं आता।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि इस उपाय ने पूरे सामाजिक ढाँचे के साथ क्या किया। उसने जादू से रक्षा **सीधे हर व्यक्ति के अपने हाथ में** दे दी: छोटे-से शब्द जिन्हें एक बच्चा याद कर लेता है, बिना किसी बिचौलिए के, बिना किसी फ़ीस के और बिना किसी अनुष्ठान के। और इस तरह उसने जादूगरों तथा भविष्यवक्ताओं का अधिकार और उनका व्यापार जड़ से मिटा दिया। और यह वह नहीं करता जो लोगों पर अधिकार चाहता हो — वह तो इसका उलटा करता है। और सूरह की सबसे सूक्ष्म बात: "**गाँठों में फूँकने वालियाँ**" — यानी जादू के सबसे आम व्यावहारिक रूप का वर्णन: एक गाँठ बाँधना और उस पर फूँकना। और ठीक यही लबीद बिन अल-आसम के जादू में मिला: एक डोरी में ग्यारह गाँठें।

126

पुरातात्विक गवाही

बाबुल — और इतिहास की सबसे पुरानी जादू-पट्टिकाएँ

और उन्होंने उसके पीछे चलना शुरू किया जो शैतान सुलैमान के राज्य में पढ़ते थे। और सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, बल्कि शैतानों ने कुफ़्र किया, जो लोगों को जादू सिखाते थे और वह भी जो बाबुल में दो फ़रिश्तों पर उतारा गया था।

सूरह अल-बक़रह — आयत 102

ईसा से एक हज़ार से भी अधिक वर्ष पहले लिखे मंत्र और तावीज़

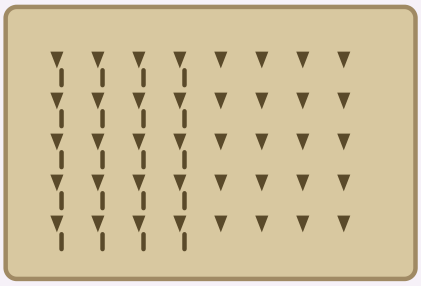

बाबुल की कीलाक्षर मिट्टी-पट्टिकाएँ — संग्रहालयों में सुरक्षित

इराक़ की उसी भूमि से जादुई पाठों के पूरे पुस्तकालय निकले

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने जादू को एक विशेष जगह से जोड़ा: **बाबुल**। और पुरातत्वविदों ने ठीक उसी भूमि से **प्राचीन संसार का सबसे बड़ा जादुई पाठ-संग्रह** निकाला।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जब क़ुरआन उतरा तो बाबुल उजड़ा हुआ और भुला दिया गया था, और सदियों से वीरान पड़ा था। और कोई कीलाक्षर लिपि पढ़ नहीं सकता था — वह पूरी तरह मर चुकी थी। तो जादू की शिक्षा को दुनिया की सारी राजधानियों में से **ख़ास तौर पर बाबुल** से जोड़ देना एक भौगोलिक और ऐतिहासिक निर्धारण है जो परीक्षा के लिए खुला है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कीलाक्षर लिपि उन्नीसवीं सदी में पढ़ी गई। तब सामने आया कि मेसोपोटामिया — जिसके हृदय में बाबुल था — **प्राचीन संसार का जादू, मंत्र और तावीज़ों का सबसे बड़ा केन्द्र** था। सबसे प्रसिद्ध खोजों में पट्टिकाओं की वह शृंखला है जिसे **मक़्लू** कहते हैं, जो जादू और उसके तोड़ पर नौ पूरी पट्टिकाएँ हैं, और शुर्पू, और मंत्रों, ज्योतिष तथा भविष्यकथन की हज़ारों पट्टिकाएँ। अकेले अशुरबनिपाल के पुस्तकालय में उनमें से सैकड़ों थीं। और इतिहासकार स्वीकार करते हैं कि बाबुल ही वह स्रोत था जहाँ से ये कलाएँ पूरे क्षेत्र में फैलीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भौगोलिक निर्धारण ही दलील का बिन्दु है। क़ुरआन ने केवल यह नहीं कहा "उन्होंने जादू सीखा" — उसने **उस देश का नाम लिया जहाँ से वह निकला**। और बारह सदी बाद वह देश जादुई पाठों के लिए धरती का सबसे समृद्ध पुरातात्विक स्थल सिद्ध हुआ। और इससे भी सूक्ष्म है **सुलैमान अलैहिस्सलाम को बरी करना**: "और सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया।" उस क्षेत्र में प्रचलित किंवदन्तियाँ — और बाद के यहूदी पाठ — जादू को सुलैमान से जोड़ती थीं और उन्हें जादूगरों का उस्ताद बनाती थीं। तो क़ुरआन आया **एक नबी को उससे बरी करता हुआ जो स्वयं अहले-किताब ने उनसे जोड़ रखा था** — उसका ठीक उलटा जो कोई उनसे उधार लेने वाला करता।

127 फ़िरऔन के जादूगर — और वे रस्सियाँ जो दौड़ती हुई लगीं

उसने कहा: बल्कि तुम्हीं डालो। तो अचानक उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादू से उसे ऐसी लगीं मानो दौड़ रही हों।

सूरह ता-हा — आयत 66

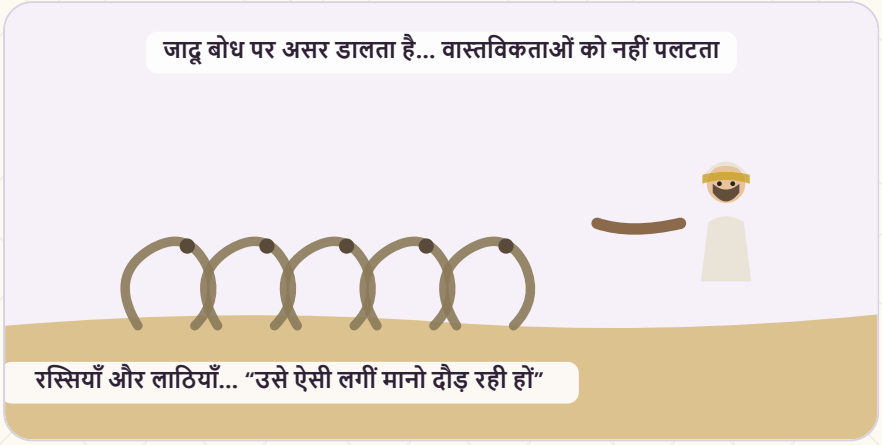

क़ुरआन जादू को आँख पर पड़ने वाला असर बताता है, कोई नई रचना नहीं

सीधी-सादी बात में

फ़िरऔन के जादूगर रस्सियाँ और लाठियाँ लेकर आए, और वे लोगों को **दौड़ते हुए साँप** दिखाई दीं। और शब्दों की बारीकी पर ध्यान दीजिए: "**उसे ऐसी लगीं**" — यानी वे बदलीं नहीं; देखने वाले का बोध प्रभावित हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्राचीन मिस्र में जादू अपने वैभव के चरम पर था, अपने पुरोहितों, अपने विद्यालयों और अपने दर्ज पाठों के साथ। और यह माना जाता था कि जादूगर **चीज़ों को सचमुच बदल देता है**: लाठी को साँप में और आदमी को जानवर में। और यह धारणा धरती की लगभग हर सभ्यता में छाई हुई थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन ने इस धारणा का स्पष्ट खंडन किया और जादू के असर को तीन दायरों तक सीमित कर दिया: **बोध और इन्द्रियों पर असर** ("उसे ऐसी लगीं", "उन्होंने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया"), **मनों और रिश्तों पर असर** ("वे उनसे वह सीखते हैं जिससे वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डालते हैं"), और **शरीर पर हानि के रूप में असर**। रहा **चीज़ों की वास्तविकता बदल देना**, तो उसका सीधा इनकार है। और यह उससे मेल खाता है जो आज मनोविज्ञान सुझाव, सम्मोहन और सामूहिक भ्रान्त-बोध के बारे में सिद्ध करता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बोध पर असर और **वास्तविकता में बदलाव** के बीच का भेद अत्यन्त सूक्ष्म है, और उस समय की संस्कृति उसे जानती ही न थी। और यही जादू पर इस्लामी रुख़ को अपने चारों ओर की हर चीज़ से अलग करता है: न तो कोई ऐसा पूर्ण इनकार जो अवलोकन को झुठला दे, न ऐसी कोई छूट कि जादूगर रचता और बदलता है। और मूसा के अपने चमत्कार में अन्तर पर ध्यान दीजिए: उनकी लाठी ने उनके बनाए को **निगल लिया** — एक वास्तविक निगलना। तो क़ुरआन में चमत्कार और जादू के बीच अन्तर यह है: **पहला वास्तविकता में बदलाव है, दूसरा आँख में**। और इसीलिए स्वयं जादूगर सबसे पहले ईमान लाए — क्योंकि वे अपनी ही कला की सीमाएँ सबसे अच्छी तरह जानते थे।

एक स्थापित घटना

128 वह शैतान जो तीन रातें अबू हुरैरा के पास आया

उसने कहा: मुझे छोड़ दो और मैं तुम्हें ऐसे शब्द सिखाऊँगा जिनसे अल्लाह तुम्हें लाभ देगा ... जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो आयतुल-कुर्सी पढ़ो ... नबी ﷺ ने कहा: उसने तुमसे सच कहा, हालाँकि वह झूठा है। वह एक शैतान था।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

रमज़ान के सदक़े के भंडार में तीन रातें दोहराई गई एक घटना

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने अबू हुरैरा को सदक़े का खाना पहरे में देने की ज़िम्मेदारी दी। कोई रात में उसमें से चोरी करने आया, और उन्होंने उसे लगातार तीन रातें पकड़ा। आख़िरी रात उस आदमी ने उन्हें **आयतुल-कुर्सी** सिखाई और कहा: यदि तुम इसे पढ़ोगे तो कोई शैतान तुम्हारे पास नहीं आएगा। फिर नबी ﷺ ने उन्हें बताया कि वह एक शैतान था।

उस समय लोग क्या मानते थे?

रात में खाने के भंडार पर पहरा देना एक साधारण बात है। अबू हुरैरा ने पहली बार उसे एक ग़रीब आदमी समझा, उस पर तरस खाया और छोड़ दिया। फिर यह तीन बार हुआ — और हर सुबह वे नबी ﷺ को बताते, और वे उनसे कहते: "**वह फिर आएगा**" — और वह फिर आया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना पूरी की पूरी **सहीह बुख़ारी** में है, आयतुल-कुर्सी की फ़ज़ीलत के अध्याय में। उसमें तीन महत्वपूर्ण बिन्दु हैं। पहला, कि नबी ﷺ ने **हर सुबह अबू हुरैरा को बता दिया कि वह आदमी उसी रात लौटेगा** — और वह लौटा। दूसरा, कि अन्तिम फ़ैसला एक अत्यन्त सूक्ष्म वाक्य में आया: "**उसने तुमसे सच कहा, हालाँकि वह झूठा है**" — यानी सूचना सही है हालाँकि कहने वाला स्वभाव से झूठा है। तीसरा, कि व्यावहारिक परिणाम **हर मुसलमान के लिए एक हथियार** बना: सोते समय आयतुल-कुर्सी।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस घटना की सबसे महत्वपूर्ण बात वह **तरीक़ा** है जो नबी ﷺ ने इस दुनिया से निपटने के लिए सिखाया। उन्होंने न घटना का इनकार किया न उसे डरावना बनाया; उन्होंने **सूचना को उसकी अपनी योग्यता पर परखा, उसके कहने वाले से नहीं**। और वाक्य "उसने तुमसे सच कहा हालाँकि वह झूठा है" ख़बरों की आलोचना का एक पूरा नियम है। फिर ध्यान दीजिए कि परिणाम **क़ुरआन की एक आयत** निकला जिसे हर कोई याद कर लेता है, न कोई अनुष्ठान, न कोई ताबीज़, न कोई मानवीय बिचौलिया। पूरी घटना इस पर ख़त्म होती है कि साधारण व्यक्ति स्वयं अपनी रक्षा कर सके — और यही वह धागा है जो इस पूरे भाग में हर चीज़ में चल रहा है।

129

साथी

हर मनुष्य के साथ एक साथी है

तुममें से कोई ऐसा नहीं जिसके साथ जिन्नों में से उसका साथी न लगा दिया गया हो। उन्होंने कहा: और आपके साथ भी, ऐ अल्लाह के रसूल? उन्होंने कहा: और मेरे साथ भी, सिवाय इसके कि अल्लाह ने उसके मुक़ाबले में मेरी मदद की और वह मुसलमान हो गया, तो वह मुझे केवल भलाई का ही हुक्म देता है।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

भीतरी संघर्ष की एक ऐसी व्याख्या जो बुरे ख़्यालों को उनकी सही जगह पर रख देती है

सीधी-सादी बात में

हर मनुष्य के साथ **जिन्नों में से एक साथी** है जो उसे बुराई का वसवसा डालता है। और यह उन बुरे ख़्यालों को समझा देता है जो आपके मन में अचानक आ जाते हैं, जिन्हें आप न चाहते हैं न क़बूल करते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग या तो हर गुज़रते ख़्याल को अपने ही ऊपर डाल लेते और आत्म-भर्त्सना में डूब जाते, या अपने सारे कामों को बाहरी शक्तियों पर डालकर ज़िम्मेदारी ही गिरा देते। ख़्याल और कर्म के बीच भेद करने वाली कोई नियंत्रित व्याख्या थी ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ ने इस वास्तविकता की पुष्टि की और फिर **उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण शर्तों से बाँध दिया**: कि साथी **वसवसा डालता है, मजबूर नहीं करता**; कि व्यक्ति **किसी गुज़रते ख़्याल पर पकड़ा नहीं जाता जब तक वह उस पर अमल न करे** ("अल्लाह ने मेरी उम्मत को उससे माफ़ कर दिया जो उनके मन कहते हैं, जब तक वे अमल या बात न करें"); और कि वसवसे की तीव्रता **ईमान की निशानी है, बिगाड़ की नहीं** — जब सहाबा ने उस वसवसे की शिकायत की जो वे पाते थे तो उन्होंने कहा: "**यह तो खुला ईमान है**", यानी उससे तुम्हारा घबरा जाना ही इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारे दिल सही-सलामत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस धारणा के मनोवैज्ञानिक असर को देखिए, और उसकी तुलना आज बहुत-से लोगों की हालत से कीजिए। जिसके मन में कोई घिनौना ख़्याल आ जाए और वह समझे कि वह उसकी अपनी सच्ची गहराइयों से आया है, वह अपने ही से डरने लगता है — और **धार्मिक विषयों वाले मनोग्रस्ति-बाध्यता विकार** में ठीक यही होता है। यह व्याख्या **जो तुम पर डाला जाता है** उसे **जो तुम चुनते हो** उससे अलग कर देती है, और फ़ैसला देती है कि पहले पर तुमसे हिसाब नहीं — बल्कि उससे तुम्हारी नफ़रत ही तुम्हारे सही-सलामत होने का प्रमाण है। फिर वह व्यावहारिक उपाय भी देती है: पनाह माँगो और रुक जाओ, और उससे बहस करते मत रहो। और यह उसके बहुत निकट है जो आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपचार घुसपैठिए ख़्यालों के लिए सुझाते हैं: उनसे बहस करके मत लड़ो, और अपनी पहचान उनसे मत गढ़ो।

130

ख़ून का बहाव

वह आदम की सन्तान में ख़ून की तरह दौड़ता है

निस्सन्देह शैतान आदम की सन्तान में ख़ून की तरह दौड़ता है।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

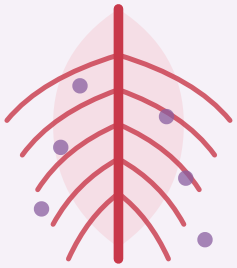

शरीर में कोई जगह ऐसी नहीं जो उसकी पहुँच से दूर हो

"ख़ून का बहाव" — सम्भव सबसे व्यापक उपमा

ख़ून बिना किसी अपवाद के शरीर की हर कोशिका तक पहुँचता है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने किसी व्यक्ति के भीतर शैतान की पहुँच को **ख़ून के दौड़ने जैसा** बताया — यानी वह तुममें हर जगह पहुँचता है, और कोई अंग उससे ख़ाली नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

रक्त-परिसंचरण ज्ञात ही न था। प्रचलित धारणा — जालीनूस का सिद्धान्त, जिसने पन्द्रह सौ वर्ष चिकित्सा पर राज किया — यह थी कि ख़ून यकृत में बनता है और सिरों पर ख़र्च हो जाता है, न कि यह कि वह **एक पूरा चक्कर लगाता** है, शरीर के हर हिस्से तक पहुँचता और लौट आता है। और यह 1628 तक खोजा नहीं गया था, विलियम हार्वे के हाथों, और 1661 में केशिकाओं की खोज से पूरा हुआ।

आज विज्ञान क्या कहता है?

परिसंचरण तंत्र केशिकाओं के ऐसे जाल के ज़रिये **शरीर की हर कोशिका** तक पहुँचता है जिसकी कुल लम्बाई लगभग एक लाख किलोमीटर है। शरीर में कोई जीवित ऊतक ऐसा नहीं जहाँ ख़ून न पहुँचे। तो पूर्ण, सर्वव्यापी भेदन की तस्वीर के लिए "ख़ून के दौड़ने" को चुनना **समूचे शरीर में सम्भव सबसे सूक्ष्म उपमा** है — और उसकी बारीकी की हद तब तक समझ में नहीं आती जब तक परिसंचरण न जान लिया जाए।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह उपमा यूँ ही नहीं चुनी गई होगी। यदि केवल निकटता अभिप्रेत होती तो कहा जाता "छाया की तरह" या "साँस की तरह" — और ये दोनों उस युग की धारणाओं के अधिक निकट हैं। पर अभिप्रेत था **सर्वव्यापकता और हर हिस्से तक भेदन**, और शरीर में यह गुण अकेले ख़ून में ही साकार होता है — एक ऐसा गुण जो दस सदी बाद तक ज्ञात ही न था। और उस व्यावहारिक उपयोग पर ध्यान दीजिए जो नबी ﷺ ने इस पर खड़ा किया: उन्होंने यह तब कहा जब वे रात में सफ़िया को मस्जिद से बाहर ले जा रहे थे, और दो आदमी गुज़रे और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गए, तो उन्होंने उन्हें रोककर कहा: "ठहरो; यह सफ़िया बिन्त हुयय है।" यानी उन्होंने उस नियम को **बुरे गुमान के उठने से पहले ही उसे अपने से हटाने** का कारण बना दिया — यह डर का नहीं, पारदर्शिता का सबक़ है।

131

नज़र

नज़र सच है — एक घटना जिसके गवाह सहाबा बने

नज़र सच है, और यदि कोई चीज़ तक़दीर से आगे निकल सकती तो नज़र निकल जाती। और जब तुमसे धोने को कहा जाए तो धो दो।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

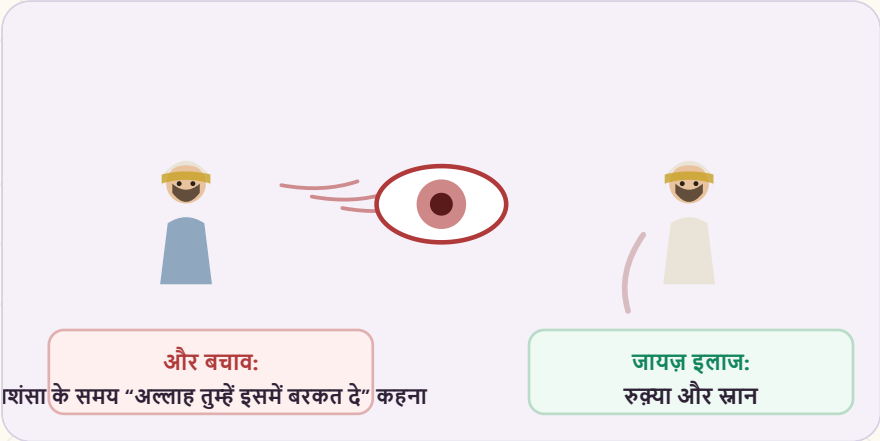

सहल बिन हुनैफ़ और आमिर बिन रबीआ की घटना — मालिक, अहमद और नसाई की रिवायत

सीधी-सादी बात में

"नज़र सच है" — यानी प्रशंसा या ईर्ष्या की एक निगाह सचमुच हानि पहुँचा सकती है। और मामला बिना किसी उपाय के नहीं छोड़ा गया: **पढ़ना और धोना**, और बचाव यह कि प्रशंसा करने वाला जब कोई चीज़ उसे भाए तो बरकत की दुआ कर दे।

उस समय लोग क्या मानते थे?

नज़र से अरब और दूसरे लोग डरते थे, और उसे ताबीज़ों, मनकों, तावीज़ों तथा हड्डियाँ और जानवरों की आँखें लटकाकर रोकते थे। यानी वे एक धारणा का सामना दूसरे अन्धविश्वास से करते थे, और उसकी क़ीमत चुकाते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रसिद्ध घटना मालिक ने मुवत्ता में और अहमद तथा नसाई ने रिवायत की: **सहल बिन हुनैफ़** ने स्नान किया, और **आमिर बिन रबीआ** ने उन्हें देखा और कहा: "मैंने आज जैसा कभी नहीं देखा, और न किसी परदानशीं कुँवारी की खाल" — और सहल वहीं बीमार पड़ गए। नबी ﷺ को बताया गया तो उन्होंने कहा: "**तुममें से कोई अपने भाई को क्यों मार डालता है? तुमने बरकत की दुआ क्यों न की?**" फिर उन्होंने आमिर को वुज़ू करने का हुक्म दिया और वह पानी सहल पर उँडेला गया — और सहल भले-चंगे उठ खड़े हुए। और यह सब **एक सफ़र में सहाबा के एक गिरोह की आँखों के सामने** हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस घटना में तीन बातें ठहरने योग्य हैं। पहली, कि **जिससे यह हुआ वह नफ़रत से भरा कोई ईर्ष्यालु न था** बल्कि मुहब्बत से भरा एक प्रशंसक था — और यह उस आम धारणा को उलट देता है कि नज़र केवल किसी दुश्मन से लगती है। दूसरी, कि उपाय **उसकी ओर से था जिससे यह हुआ, उसकी ओर से नहीं जिस पर पड़ी** — प्रशंसक धोता है और वह पानी पीड़ित पर उँडेला जाता है। और यह उन सारे अनुष्ठानों का उलटा है जो ताबीज़ पीड़ित पर बाँधते थे। तीसरी, और सबसे महत्वपूर्ण: कि नबी ﷺ ने **ताबीज़ों की सीधी मनाही की** ("जिसने ताबीज़ लटकाया उसने शिर्क किया") और उसकी जगह एक सरल, मुफ़्त, व्यावहारिक विकल्प दिया। तो उन्होंने परिघटना की पुष्टि की और उससे जुड़ा अन्धविश्वास एक ही साथ मिटा दिया — और यही इस पूरे भाग का नमूना है।

एक स्थापित अधीनता

132 सुलैमान और उनके अधीन किए गए जिन्न

और शैतानों में से वे भी थे जो उनके लिए गोता लगाते थे और इसके सिवा दूसरे काम भी करते थे। और हम ही उन पर निगरान थे।

सूरह अल-अंबिया — आयत 82

निश्चित, सीमित काम: गोता लगाना, मोती निकालना, और निर्माण करना

सीधी-सादी बात में

अल्लाह ने सुलैमान अलैहिस्सलाम के अधीन जिन्नों का एक गिरोह कर दिया जो उनके लिए काम करता था: **वे समुद्र में गोता लगाते थे और इमारतें बनाते थे**। यह अकेले उन्हीं का ख़ास चमत्कार है, और उन्होंने अपने रब से माँगा कि यह उनके बाद किसी को न मिले।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस क्षेत्र में प्रचलित किंवदन्तियाँ सुलैमान से जादू और शब्दों तथा तिलिस्मों के ज़रिये आत्माओं पर नियंत्रण जोड़ती थीं, जो जादूगरों को विरासत में मिलता। लोग इस विषय पर उनकी ओर मंसूब की गई किताबें फैलाते थे — और वे सब गढ़ी हुई और झूठी थीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन ने मामले को कड़ी शर्तों से नियंत्रित किया। पहली, कि यह अधीनता **केवल अल्लाह की इजाज़त से** थी, किसी जादुई ज्ञान से नहीं: "और जिन्नों में से वे भी थे जो **उनके रब की इजाज़त से** उनके सामने काम करते थे"। दूसरी, कि काम **भौतिक और सीमित** थे: गोता लगाना, निर्माण और ढोना — न ग़ैब का कोई ज्ञान न तक़दीर पर कोई नियंत्रण। तीसरी — और सबसे स्पष्ट — कि क़ुरआन ने स्वयं इसी कहानी के भीतर **जिन्नों का ग़ैब से अनजान होना** बता दिया: वे सुलैमान के देहान्त के बाद भी काम करते रहे जबकि वे अपनी लाठी पर टिके हुए थे, और उन्हें पता ही न चला कि उनका देहान्त हो गया, "और जब वे गिरे तो जिन्नों पर स्पष्ट हो गया कि यदि वे ग़ैब जानते होते तो इस अपमानित करने वाली यातना में न पड़े रहते"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस विलक्षण विरोधाभास को देखिए: जो कहानी जिन्नों को काम में लाने का सबसे बड़ा विज्ञापन बन सकती थी उसे **उनके ग़ैब न जान सकने का निर्णायक प्रमाण** बना दिया गया। वे जिन्न जो गोता लगाते और इमारतें बनाते थे, उन्हें यह तक पता न चला कि उनके सामने खड़ा व्यक्ति मर चुका है! यदि यह पाठ मानवीय होता, ऐसे माहौल में जो भविष्यकथन को ऊँचा उठाता था, तो वह उसी आयत में अपने ही हाथों अपनी किंवदन्ती न ढाता। और फिर सुलैमान ने दुआ की: "**और मुझे ऐसा राज्य दे जो मेरे बाद किसी को न मिले**" — तो हर उस व्यक्ति पर दरवाज़ा सदा के लिए बन्द हो गया जो बाद में जिन्नों पर हुक्म चलाने का दावा करे। जिस कहानी का हवाला जादूगर देते हैं वह सच में उनके दावे को ढाने वाली सबसे प्रबल चीज़ है।

133

आकाश की चोरी-छिपे सुनवाई

नुबूवत के बाद भविष्यकथन क्यों रुक गया?

और हमने आकाश को टटोला तो उसे कड़े पहरेदारों और जलते हुए शोलों से भरा पाया। और हम उसमें सुनने की जगहों पर बैठा करते थे, पर अब जो कोई सुनने की कोशिश करे वह अपने लिए ताक में बैठा एक जलता शोला पाएगा।

सूरह अल-जिन्न — आयतें 8-9

एक स्पष्ट सामाजिक घटना: नुबूवत के आरम्भ में भविष्यकथन का ढह जाना

सीधी-सादी बात में

भविष्यवक्ता ऐसी बातें बताते थे जो कभी-कभी सच निकलतीं, क्योंकि शैतान आकाश की ख़बरों में से कुछ सुन लेते और उनके कानों में डाल देते। जब नबी ﷺ भेजे गए तो **उन्हें इससे रोक दिया गया**, तो उनका स्रोत कट गया और उनका पेशा ढह गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भविष्यकथन प्रायद्वीप में एक पूरी सामाजिक संस्था थी: भविष्यवक्ता की हैसियत, दौलत और अधिकार होता था, झगड़ों में उसकी शरण ली जाती थी और छिपी चीज़ों के बारे में उससे पूछा जाता था। सबसे प्रसिद्धों में सतीह, शिक़्क़ और सवाद थे। और उनकी कभी-कभार की सटीकता ही उनकी हैसियत बचाए रखती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ऐतिहासिक स्रोत और सीरतें दर्ज करती हैं कि स्वयं भविष्यवक्ताओं ने **शिकायत की कि उनसे ख़बरें कट गई हैं** — नबी ﷺ के भेजे जाने पर — और उनमें से बहुतों ने अपने लोगों को यह बताया; बल्कि यह उनमें से कुछ के इस्लाम क़बूल करने के कारणों में था। और यह ऐतिहासिक रूप से देखा जा सकता है कि **पुराने अर्थ में भविष्यकथन इस्लाम के बाद प्रायद्वीप से लगभग पूरी तरह लुप्त हो गया**, जबकि वह सामाजिक जीवन का एक स्तम्भ था। और इसकी क्रियाविधि दोनों सहीह संग्रहों में स्थापित है: "तो वह उसे अपने से नीचे वाले के कान में डालता है... और वे उसके साथ सौ झूठ मिला देते हैं"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

नबी ﷺ मनाही पर नहीं रुके; उन्होंने **परिघटना का भेद ऐसे खोला कि वह भीतर से ही ढह जाए**। उनसे भविष्यवक्ताओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा: "वे कुछ भी नहीं।" लोगों ने कहा: पर वे कभी-कभी हमें ऐसी बात बताते हैं जो सच निकलती है। उन्होंने ﷺ कहा: "**सच्चाई का वह एक शब्द जिन्न उचक लेता है और अपने दोस्त के कान में टपका देता है, और वे उसके साथ सौ झूठ मिला देते हैं**।" और यह उसकी अत्यन्त सूक्ष्म व्याख्या है जिसे आज मनोविज्ञान **पुष्टिकरण-पक्षपात** कहता है: लोग एक निशाने पर बैठी बात याद रखते हैं और सौ चूकें भूल जाते हैं। तो उन्होंने भविष्यकथन को नंगे इनकार से नहीं, बल्कि उस सांख्यिकीय क्रियाविधि को नंगा करके मिटाया जिस पर वह टिका है — और यही वह दलील है जो आज विज्ञान ज्योतिष तथा भविष्यकथन के विरुद्ध देता है।

134 ऐ सारिया... पहाड़!

उमर ने मिम्बर पर होते हुए पुकारा: ऐ सारिया, पहाड़! ... सन्देशवाहक ने कहा: हमने उमर की आवाज़ सुनी, तो हमने अपनी पीठ पहाड़ की ओर कर ली, और अल्लाह ने हमें विजय दी।

बैहक़ी, इब्न असाकिर और अन्य की रिवायत — कई विद्वानों ने हसन ठहराया

एक करामत जिसे ताबिईन ने रिवायत किया और विद्वानों ने अपनी किताबों में आगे पहुँचाया

सीधी-सादी बात में

जब उमर बिन ख़त्ताब मदीना में जुमे का ख़ुतबा दे रहे थे, तो अचानक पुकार उठे: **"ऐ सारिया... पहाड़!"** और सारिया सैकड़ों मील दूर एक सेना के सेनापति थे। जब सेना लौटी तो उन्होंने कहा: हमने उमर की आवाज़ सुनी, तो हमने पहाड़ की ओट ली, और हम जीत गए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मदीना और युद्धभूमि के बीच ऊँटों पर सन्देशवाहकों के सिवा कोई सम्पर्क का साधन न था, और वे हफ़्तों लेते। ख़ुतबा मदीना के सारे लोगों के सामने दिया जा रहा था। और लोगों ने वह पुकार सुनी, उसे अजीब पाया, और उस समय उसका अर्थ नहीं समझ सके।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह ख़बर बैहक़ी ने "दलाइलुन-नुबूवा" में, इब्न असाकिर ने "तारीख़ दिमश्क़" में, अबू नुऐम, इब्नुल-असीर और दूसरों ने कई सनदों से रिवायत की। कई विद्वानों ने उसे उसकी सनदों के जोड़ से हसन ठहराया, और इब्न हजर, इब्न कसीर तथा इब्न तैमिया ने उसका ज़िक्र किया। यह पहुँचाई गई **सहाबा की करामतों** में सबसे प्रसिद्ध में है। और इसके समकक्ष स्थापित हैं: **अला बिन अल-हज़रमी** और उनकी सेना का दारीन की खाड़ी को पानी के ऊपर से पार करना; **ख़ालिद बिन वलीद** का ज़हर पीना और उससे कोई हानि न होना; और **साद बिन अबी वक़्क़ास** की दुआओं का क़बूल होना नबी ﷺ की उनके लिए की गई दुआ से।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार और करामत के बीच का भेद यहाँ एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। चमत्कार किसी नबी के साथ चुनौती और नुबूवत के प्रमाण के रूप में होता है; करामत किसी नेक व्यक्ति के साथ **बिना किसी चुनौती और बिना किसी दावे के** होती है। इसीलिए करामत न माँगी जाती है न उस पर गर्व किया जाता है, और जिसे वह मिले वह उस पर कोई दावा नहीं खड़ा कर सकता। और जो उसे ढूँढ़े और उससे रोज़ी कमाए वह उससे सबसे दूर का व्यक्ति है। और यही सिद्धान्त इस्लाम को उस हर चीज़ से अलग करता है जो आज "आध्यात्मिक ऊर्जा", "फ़तह" और "कश्फ़" के नामों से बेची और ख़रीदी जाती है। और जब उमर से उनकी पुकार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने मुँह फेर लिया और कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया — और करामत वालों का उसके प्रति यही रुख़ होता है।

एक अनिवार्य भेद

135 हर बीमारी आसेब नहीं है

ऐ अल्लाह के बन्दो, इलाज कराओ, क्योंकि अल्लाह ने कोई बीमारी ऐसी नहीं रखी जिसके लिए उसने कोई दवा न रखी हो, सिवाय एक बीमारी के: बुढ़ापा।

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी की रिवायत — सहीह

पहले: चिकित्सक के पास जाइए

- शारीरिक मिर्गी
- विटामिन की कमी
- ग्रन्थि का विकार
- जानी-मानी मानसिक बीमारियाँ
- नींद की कमी और थकान

फिर शरई रुक़्या

- क़ुरआन पढ़ा जाए, बिना बढ़ी-चढ़ी फ़ीस के
- न कोई अनुष्ठान न कोई धूप-लोबान
- न नाम पूछा जाए न माँ का नाम
- किसी स्त्री के साथ एकान्त नहीं
- और रोगी स्वयं अपने ऊपर पढ़े

जो इन नियमों को तोड़े वह ठग है, रुक़्या करने वाला नहीं

सही क्रम: पहले चिकित्सा, फिर रुक़्या अपनी सीमाओं के भीतर

सीधी-सादी बात में

इस्लाम ने आसेब और जादू की पुष्टि की, **पर उसने हर बीमारी को उनमें से नहीं ठहराया**। उसने पहले इलाज का हुक्म दिया, और क़ुरआन की तिलावत को ऐसी चीज़ बनाया जिसे बीमार स्वयं अपने ऊपर पढ़ता है, बिना किसी बिचौलिए के, बिना फ़ीस के और बिना अनुष्ठानों के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

इस्लाम से पहले क़ौमें अधिकतर बीमारियों को आत्माओं और शैतानों से जोड़ती थीं, तो बीमारों का इलाज अनुष्ठानों, जिन्नों के लिए बलियों और तावीज़ों से किया जाता था। और यह यूरोप में सदियों चलता रहा, यहाँ तक कि सत्रहवीं सदी में स्त्रियों को जादूगरनी के आरोप में जलाया जाता रहा। और मानसिक रोगियों के साथ आसेब-ग्रस्तों जैसा सलूक किया जाता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ ने इलाज का स्पष्ट हुक्म दिया और कहा: "**हर बीमारी की एक दवा है**"; उन्होंने शहद, पछना और कलौंजी इस्तेमाल की, और अपने साथियों के लिए निश्चित दवाएँ बताईं। उन्होंने कहा: "शिफ़ा तीन चीज़ों में है: शहद का एक घूँट, पछना लगाने वाले का चीरा, और आग से दाग़ना।" और उन्होंने साद बिन अबी वक़्क़ास के इलाज के लिए **एक चिकित्सक** भेजा। रही रुक़्या, तो विद्वानों ने उसके लिए तीन शर्तें रखीं: कि वह अल्लाह के शब्दों या उसके नामों से हो, समझ में आने वाली अरबी में हो, और उसे एक साधन माना जाए, अपने आप में कोई कर्ता नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यही सिद्धान्त लोगों को दो बड़ी हानियों से बचाता है। पहली: **किसी शारीरिक बीमारी का चिकित्सकीय इलाज छोड़ देना** इस धारणा में कि वह आसेब है — और इसने बहुतों की जान ली है। दूसरी: **ठगों के हाथों में पड़ जाना** जो डर का फ़ायदा उठाकर पैसा और इज़्ज़त दोनों लूट लेते हैं। इसीलिए नबी ﷺ यहाँ अत्यन्त कड़े रहे: "**जो किसी भविष्यवक्ता के पास जाए और उससे कुछ पूछे, उसकी चालीस रातों की नमाज़ क़बूल नहीं होगी**", और "**जो किसी काहिन के पास जाए और जो वह कहे उसे सच माने, उसने उसका इनकार किया जो मुहम्मद पर उतारा गया**"। तो जो दरवाज़ा एक वास्तविकता की पुष्टि के लिए खोला गया था **उसे शोषण के आगे कसकर बन्द कर दिया गया**। और जो भी रुक़्या करने वाला तुमसे तुम्हारा नाम और तुम्हारी माँ का नाम पूछे, या कोई जानवर, कोई निजी चीज़ या कोई बड़ी रक़म माँगे, वह ठीक वही ठग है जिससे नबी ﷺ ने चेताया।

136

इतिहास की गवाही

हर क़ौम ने इस संसार को जाना है

और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा: ऐ जिन्नों के गिरोह, तुमने मनुष्यों में से बहुतों को अपना बना लिया। और मनुष्यों में से उनके साथी कहेंगे: ऐ हमारे रब, हमने एक-दूसरे से फ़ायदा उठाया।

सूरह अल-अनआम — आयत 128

एक सार्वभौमिक मानवीय परिघटना, जिसकी कोई पूरी सांस्कृतिक व्याख्या नहीं

बाबुल	मिस्र	यूनान	भारत	चीन
शेदु	आख़ू	दाइमोन	भूत	क़ेई

ऐसी क़ौमें जिन्हें न समय ने जोड़ा न स्थान ने न भाषा ने... और वे सहमत निकलीं

एक अदृश्य, बुद्धिमान संसार में विश्वास हर ज्ञात सभ्यता में मौजूद है

सीधी-सादी बात में

इतिहास की हर क़ौम — बाबुल, मिस्र, यूनान, भारत, चीन तथा अफ़्रीक़ा और अमेरिका की क़ौमें — **बुद्धिमान, अदृश्य जीवों** के अस्तित्व को जानती थीं, और उन्हें अलग-अलग नाम देती थीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये क़ौमें एक-दूसरे से बहुत दूर थीं और एक-दूसरे को जानती ही न थीं; उनकी न कोई साझा भाषा थी न कोई व्यापार। फिर भी उनकी धारणाएँ चौंकाने वाली हद तक मिलती-जुलती थीं: बुद्धिमान जीव, खंडहरों और जंगलों में बसने वाले, हानि और मदद करने वाले, चढ़ावों से ख़ुश किए जाने वाले, कुछ नेक और कुछ बिगड़े हुए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मानवशास्त्री इसे **सांस्कृतिक सार्वभौमिक** कहते हैं: ऐसी परिघटना जो बिना किसी अपवाद के हर ज्ञात समाज में प्रकट होती है। और बुद्धिमान आत्मिक जीवों में विश्वास इसकी सबसे स्पष्ट मिसालों में है, और जॉर्ज मर्डक ने अपनी प्रसिद्ध सांस्कृतिक सार्वभौमिकों की सूची में इसे दर्ज किया। उनके नाम: बाबुल में "शेदु", मिस्र में "आख़ू", यूनानियों में "दाइमोन", भारत में "भूत", और अरबों में "जिन्न"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह यहाँ अपने आप में कोई निर्णायक प्रमाण के रूप में पेश नहीं किया जा रहा — अकेली सहमति सत्य स्थापित नहीं करती। पर यह **उस आम व्याख्या को रद्द कर देता है** कि जिन्न कोई अरबी अन्धविश्वास हैं जिसे क़ुरआन ने अपने माहौल से उधार लिया। यह परिघटना अरबों से हज़ारों वर्ष पुरानी है और उनसे कहीं आगे पूरे महाद्वीपों में फैली हुई है। और इससे भी सूक्ष्म बात: क़ुरआन ने **प्रचलित धारणा को आगे नहीं बढ़ाया, बल्कि उसे सुधारा**: सारी क़ौमें इन जीवों की पूजा करती थीं और उन्हें बलियाँ चढ़ाती थीं, और उसने इससे रोका और उसे शिर्क कहा; वे उन्हें ग़ैब का ज्ञान देती थीं, और उसने उसका निश्चित इनकार किया; वे उन्हें आधे देवता बनाती थीं, और उसने उन्हें **एक उत्तरदायी सृष्टि बनाया जिनका हिसाब वैसे ही होगा जैसे हमारा**। अस्तित्व के तथ्य में सहमति और हुक्म में पूरा मतभेद — और यही किसी सुधारक की निशानी है, किसी उधार लेने वाले की नहीं।

137

ग़ैब की सीमाएँ

पाँच चीज़ें जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता

निस्सन्देह अल्लाह ही के पास क़ियामत का ज्ञान है और वही वर्षा उतारता है और जानता है जो गर्भाशयों में है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा, और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस भूमि में मरेगा।

सूरह लुक़मान — आयत 34

ग़ैब का दरवाज़ा बन्द है — और दावा पहले से ही रद्द है

क़ियामत का समय · **वर्षा का उतरना** · **जो गर्भाशयों में है** · **कल की कमाई** · **मौत की भूमि**

जो इनमें से किसी एक के ज्ञान का दावा करे वह क़ुरआन के पाठ से झूठा है और इनमें न कोई नबी अपवाद है न कोई वली न कोई जिन्न

एक निर्णायक सीमा जो हर दावेदार के आगे रास्ता काट देती है

सीधी-सादी बात में

इस भाग में जो कुछ गुज़रा उसके बाद क़ुरआन दरवाज़ा कसकर बन्द कर देता है: **पाँच चीज़ें हैं जिन्हें अकेला अल्लाह ही जानता है**। तो जो इनमें से किसी के ज्ञान का दावा करे — वह जो भी हो — वह झूठा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भविष्यकथन, ज्योतिष, नक्षत्र-विद्या और राशिफल हर सभ्यता में फलते-फूलते पेशे थे। भविष्यवक्ता से ग़ैब के बारे में पूछा जाता और वह जवाब देता, और कभी-कभी निशाना बैठ जाता तो उसकी हैसियत और बढ़ जाती। ये आमदनी और प्रभाव के बड़े स्रोत थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ये पाँचों स्वयं आयत में नाम लेकर बताई गई हैं, और नबी ﷺ ने जिब्रील वाली हदीस में उन्हें **ग़ैब की पाँच कुंजियाँ** बताया (बुख़ारी की रिवायत)। और ध्यान दीजिए कि ये कोई धुँधली, अस्पष्ट बातें नहीं, बल्कि **परीक्षा के लिए खुली** हैं: इतिहास में कोई भी न क़ियामत का दिन तय कर सका, न निश्चय के साथ यह कह सका कि वर्षा होगी (पूर्वानुमान सम्भावनाएँ देते हैं, निश्चय नहीं), और न यह जान सका कि गर्भाशय में क्या है **पूरा-पूरा** — उसका भाग्य, रोज़ी, आयु और कर्म। रही अल्ट्रासाउंड से लिंग जान लेना, तो वह बन जाने के बाद जो प्रकट हो चुका उसे देखना है, उससे पहले का ग़ैब जानना नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह सीमा इस पूरे भाग का **सुरक्षा-वाल्व** है। जो कुछ पहले गुज़रा — जिन्नों, जादू, नज़र और करामतों की पुष्टि — वह ठगी और शोषण का एक चौड़ा दरवाज़ा खोल सकता था। तो यह आयत आई कि हर दावेदार के आगे पहले ही रास्ता काट दे: **जो तुम्हें तुम्हारा कल बताए वह झूठा है**, चाहे वह दूसरी बातों में कितना ही सच्चा लगे। और स्वयं नबी ﷺ को हुक्म दिया गया कि वे यह अपने बारे में घोषित करें: "**कह दो: मैं अपने लिए भी न किसी लाभ का अधिकार रखता हूँ न हानि का, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे। और यदि मैं ग़ैब जानता होता तो बहुत भलाई बटोर लेता**।" तो जो इस दीन को लाए उन्होंने **सबसे पहले अपने बारे में उसका इनकार किया** जिसका दावा उनके समय के भविष्यवक्ता करते थे। और कोई दावेदार जो अधिकार चाहता हो ऐसा नहीं करता।

138

व्यावहारिक सुरक्षा

आपका दैनिक क़िला — ऐसे शब्द जिनकी कोई क़ीमत नहीं

जो कोई शाम को कहे: मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई — उस रात उसे कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाएगी।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

1	2	3	4
आयतुल-कुर्सी	मुअव्विज़ात	सुबह के ज़िक्र	बिस्मिल्लाह
सोते समय	सुबह तीन बार	और शाम को	दाख़िल होते समय
सुबह तक एक निगरान बना रहेगा और कोई शैतान तुम्हारे पास नहीं आएगा	इन्हें जैसी किसी चीज़ से पनाह नहीं माँगी	"मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई" — उस रात उसे कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाएगी	तुम्हारे लिए कोई ठिकाना नहीं

न बिचौलिया, न फ़ीस, न अनुष्ठान — और हर किसी की पहुँच में

सहीह संग्रहों में स्थापित चार ज़िक्र, जो बाक़ी हर चीज़ से बेनियाज़ कर देते हैं

सीधी-सादी बात में

व्यक्ति को इस संसार के सामने निहत्था नहीं छोड़ा गया। नबी ﷺ ने उसे **छोटे-छोटे ज़िक्र दिए जिन्हें एक बच्चा याद कर ले**, जिन्हें वह स्वयं कहता है, बिना किसी बिचौलिए के, बिना पैसे के और बिना अनुष्ठानों के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जिन्नों और ईर्ष्या से सुरक्षा के लिए **एक बिचौलिया** चाहिए होता था: कोई भविष्यवक्ता, कोई जादूगर, या कोई ताबीज़ बाँटने वाला। लोग उसके लिए पैसा और बलियाँ देते थे, और ऐसी चीज़ों से चिपके रहते थे जिन्हें वे अपने बच्चों और अपने जानवरों पर लटकाते। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जो परावलम्बन और डर पैदा करती थी और उसे चलाने वालों को नफ़ा पहुँचाती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सहीह संग्रहों में स्थापित ज़िक्र बहुत हैं; सबसे प्रसिद्ध ये हैं: सोते समय **आयतुल-कुर्सी** — "तुम पर अल्लाह की ओर से एक निगरान बना रहेगा और कोई शैतान तुम्हारे पास नहीं आएगा"; सुबह-शाम तीन-तीन बार **मुअव्विज़तैन और सूरह इख़्लास** — "वे तुम्हें हर चीज़ से बचाने को काफ़ी होंगी"; **"मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई"** — "उस रात उसे कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाएगी"; **घर में दाख़िल होते और खाने पर अल्लाह का नाम लेना** — "तुम्हारे लिए न कोई ठिकाना है न रात का खाना"; और घर में **सूरह अल-बक़रह** पढ़ना — "उसमें कोई शैतान दाख़िल नहीं होता"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उस ढाँचे को देखिए जो इस दीन ने खड़ा किया, और उसकी तुलना उससे कीजिए जो पहले था। उसने सुरक्षा को **बिचौलिए की इजारेदारी** से हटाकर **हर व्यक्ति के अपने क़ब्ज़े** में दे दिया। मुसलमान को न किसी रुक़्या करने वाले की ज़रूरत है, न भविष्यवक्ता की, न ताबीज़ की, न किसी फ़ीस की — बस कुछ शब्द जिन्हें वह याद कर लेता है और स्वयं कहता है, और जो ग़रीब की पहुँच में उतने ही हैं जितने अमीर की। और यह ठगी की अर्थव्यवस्था को उसकी बुनियाद से ढा देता है, और उसकी जगह कोई वैकल्पिक अधिकार भी नहीं बिठाता। और ध्यान दीजिए कि ये सारे ज़िक्र **अल्लाह की पनाह माँगना हैं, जिन्नों या नामों की नहीं** — तो वे ठीक उसी क्षण तौहीद सिखाते हैं जिस क्षण वे रक्षा करते हैं। और यही जायज़ रुक़्या और बाक़ी हर चीज़ के बीच का असली अन्तर है।

इस भाग का सार

139 इस मामले में तराज़ू

और मनुष्यों में से कुछ लोग जिन्नों में से कुछ की पनाह माँगते थे, तो उन्होंने उनका बोझ और बढ़ा दिया।

सूरह अल-जिन्न — आयत 6

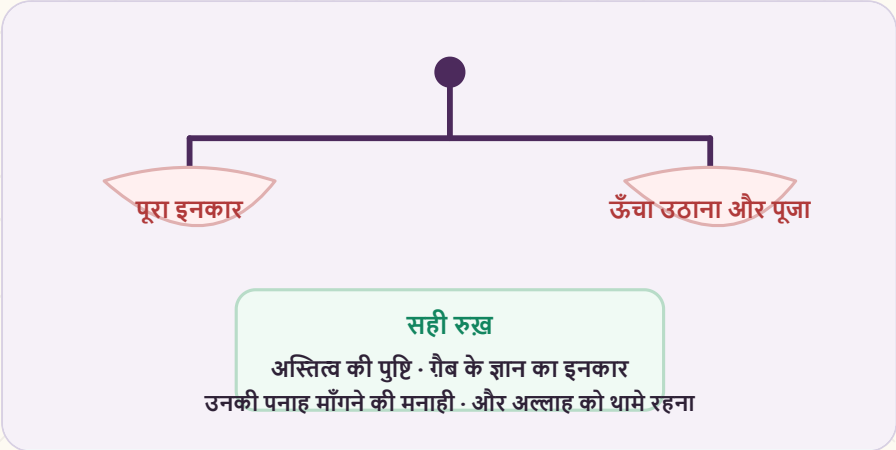

एक ऐसे इनकार के बीच जो वह्य को झुठला दे और ऐसी ऊँचाई के बीच जो शिर्क तक ले जाए

सीधी-सादी बात में

ग़ैब का संसार एक वास्तविकता है, पर उससे निपटने का **एक सूक्ष्म तराज़ू** है: हम न उसका इनकार करें कि जो अल्लाह ने हमें बताया उसे झुठला बैठें, और न उसे इतना ऊँचा उठाएँ कि शिर्क, डर और ठगी में जा पड़ें।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पुराने ज़माने के लोग एक अति में गिरे: ऊँचा उठाना, पनाह माँगना, बलियाँ और भविष्यकथन। और आज बहुत-से लोग दूसरी अति में गिरते हैं: उस हर चीज़ का इनकार जिसे आँख न देखे। और दोनों अतियाँ ग़लत हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन और सुन्नत ने जो रुख़ स्थापित किया वह पाँच ऐसे सिद्धान्त इकट्ठे करता है जो एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते: **उनके अस्तित्व की पुष्टि** — यह ग़ैब पर ईमान का हिस्सा है; **उनसे ग़ैब का ज्ञान छीन लेना** — तो न कोई भविष्यकथन न कोई ज्योतिष; **उनकी पनाह माँगने की मनाही** और उसे शिर्क ठहराना; **इलाज कराने का हुक्म** और दवा को अनुमान पर वरीयता देना; और **अल्लाह के ज़िक्र से सुरक्षा**, बिना बिचौलिए के, बिना फ़ीस के और बिना अनुष्ठानों के।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह पूरी व्यवस्था अपने समग्र रूप में ही प्रमाण है। यदि यह दीन उस माहौल के किसी व्यक्ति का काम होता, तो उसके लिए सबसे आसान — और सबसे नफ़े वाली — बात यही थी कि वह भविष्यकथन की प्रचलित लहर पर सवार हो जाता: ग़ैब का दावा अपने लिए करता, अपने अनुयायियों को एक बिचौलिया देता जिससे उन्हें रोज़ी मिलती, और लोगों के अनजान के डर पर एक आध्यात्मिक अधिकार खड़ा कर लेता। और बहुत-सी क़ौमों में धार्मिक संस्थाओं ने यही किया। पर जो इस दीन को लाए उन्होंने ठीक इसका उलटा किया: उन्होंने **अपने लिए ग़ैब के ज्ञान का इनकार किया**, **भविष्यकथन और ताबीज़ मिटा दिए**, **हथियार हर व्यक्ति के हाथ में मुफ़्त दे दिया**, और **रुक़्या करने वाले से पहले चिकित्सक का हुक्म दिया**। जो ऐसा करता है वह अपने लिए कोई अधिकार नहीं बना रहा — वह एक सन्देश पहुँचा रहा है जो उसे सौंपा गया है।

भाग छह

भाषा का चमत्कार और खुली चुनौती

सबसे बड़ा चमत्कार न आकाश में है न धरती में — वह स्वयं इस किताब में है: एक चुनौती जो चौदह सौ वर्षों से खुली पड़ी है और जिसे उठाने का साहस आज तक किसी ने नहीं किया।

12 प्रमाण

चुनौती

140 एक चुनौती जो तीन बार नीचे उतारी गई — और कभी उठाई नहीं गई

और यदि तुम्हें उसके बारे में सन्देह है जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है, तो उस जैसी एक सूरह ले आओ और अल्लाह के सिवा अपने गवाहों को बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।

सूरह अल-बक़रह — आयत 23

चुनौती क़दम-दर-क़दम नीचे उतरती है यहाँ तक कि सबसे कम सम्भव तक पहुँच जाती है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने अरबों को उस जैसा ले आने की चुनौती दी। जब वे असफल रहे तो उसने सीमा घटाई: दस सूरतें। जब वे फिर असफल रहे तो और घटाई: **एक ही सूरह**, चाहे तीन छोटी आयतों की हो। और आज तक कोई उसे नहीं ला सका।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब निर्विवाद रूप से **वाग्मिता की क़ौम** थे। कविता उनका रजिस्टर और उनका गर्व थी; उसके लिए उकाज़ और ज़ुल-मजाज़ में बाज़ार लगते थे, और बड़े क़सीदे काबा पर लटकाए जाते थे। उनमें इमरुल-क़ैस, ज़ुहैर, लबीद और तरफ़ा थे। और उनके पास इस दावत को सबसे आसान रास्ते से गिरा देने का हर कारण मौजूद था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

चौदह सदियाँ गुज़र गईं, और लोगों ने कोशिश की, और कुछ भी टिक न सका। जो कोई मुसैलिमा कज़्ज़ाब, इब्नुल-मुक़फ़्फ़ा और दूसरों की ओर मंसूब चीज़ें पढ़े वह उन्हें **किसी प्रतिद्वंद्वी के बजाय उपहास का पात्र** पाता है। और चुनौती आज भी खड़ी है, और आज साधन कहीं अधिक हैं: भाषा अकादमियाँ, विश्वविद्यालय, डिजिटल शब्दकोश और वे कम्प्यूटर जो शैली का विश्लेषण करते हैं। फिर भी एक भी ऐसा पाठ पेश नहीं हुआ जिसके बारे में उस भाषा के लोग कहें: यह उसके जैसा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दो बातें इस चुनौती को अनोखा बनाती हैं। पहली, **नीचे उतरता क्रम** — जो उसका उलटा है जो कोई चुनौती देने वाला आमतौर पर करता है। जो हद से बढ़कर दावा करता है वह सीमा ऊँची करता है ताकि वह पहुँच से बाहर रहे; इसने उसे तब तक नीचे किया जब तक वह सबसे कम सम्भव तक न पहुँच गई: **एक ही सूरह, चाहे क़ुरआन की सबसे छोटी**। दूसरी, कि उसने उन्हें **किसी को भी साथ लेने की छूट दी**: "और अल्लाह के सिवा अपने गवाहों को बुला लो" — सब मिलकर आ जाओ और जिसे चाहो बुला लो। फिर उसने एक दूसरी आयत में परिणाम पहले से घोषित कर दिया: "**पर यदि तुम न कर सके — और तुम कभी न कर सकोगे**" — भविष्य के बारे में एक ऐसा दावा जो कोई जुआरी करने की हिम्मत न करे।

141

निरक्षरता

तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे

और तुम इससे पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न अपने दाहिने हाथ से उसे लिखते थे; वरना झुठलाने वालों को सन्देह का मौक़ा मिल जाता।

सूरह अल-अनकबूत — आयत 48

यदि वे पढ़ते-लिखते होते तो झुठलाने वाले के पास एक दलील होती

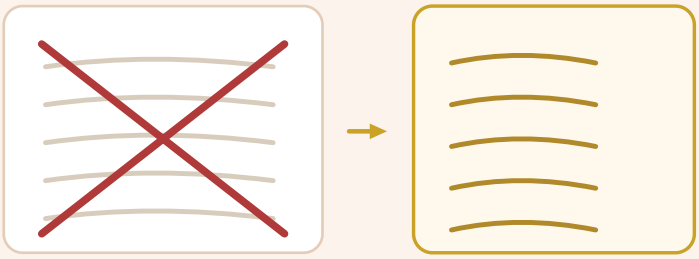

न पढ़ते हैं न लिखते हैं → **अरबी की सबसे वाग्मी किताब**

यहाँ निरक्षरता कोई दोष नहीं... वही तो प्रमाण है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ **न पढ़ सकते थे न लिख सकते थे**, और उन्होंने किसी से कोई शिक्षा नहीं ली। और आयत इसका ज़िक्र करती है और कारण भी बताती है: यदि वे पढ़ते और लिखते होते तो **लोग सन्देह करते** और कहते कि उन्होंने किताबों से नक़ल किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मक्का में लिखना दुर्लभ था और निरक्षरता आम। फिर भी मक्का में ऐसे लोग थे जो पढ़ते और लिखते थे, और प्रायद्वीप में किताबों तथा विद्वानों वाले यहूदी और ईसाई थे। तो यदि नबी ﷺ पढ़ने-लिखने वाले होते, तो आरोप तैयार होता और उसका कोई जवाब न होता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ की निरक्षरता उनकी सीरत के सबसे मज़बूती से स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों में है, और उनके अपने समय के विरोधियों ने उस पर विवाद नहीं किया — और वे नुक़्स ढूँढ़ने के सबसे अधिक इच्छुक लोग थे। उन्होंने **उन पर इसके सिवा हर चीज़ का आरोप लगाया**: उन्होंने कहा कवि, जादूगर, काहिन और पागल, और उन्होंने कहा "इन्हें तो बस एक आदमी सिखाता है" — और क़ुरआन ने जवाब दिया: "जिसकी ओर वे इशारा करते हैं उसकी ज़बान ग़ैर-अरबी है, और यह साफ़ अरबी ज़बान है।" यानी जिस आदमी की ओर वे इशारा करते थे वह ठीक से अरबी बोलता तक न था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ क़ुरआन **वह दलील पेश करता है जो उसके विरुद्ध दी जा सकती थी, और फिर उसे रद्द कर देता है**। और यह तरीक़ा वही अपनाता है जो निश्चिन्त हो। आयत कहती है: अजूबा यह नहीं कि यह किताब महान है, बल्कि यह कि वह **ऐसे व्यक्ति की ज़बान पर आई जो न पढ़ता है न लिखता**। और उसने दाँव और बढ़ा दिया: पाठ में पिछली क़ौमों की ख़बरें और सूक्ष्म ऐतिहासिक ब्योरे हैं, विरासत, न्याय और युद्ध पर पूरा क़ानून है, और ऐसी ब्रह्मांडीय बातों के वर्णन हैं जो अभी ज्ञात ही न थीं। और यह सब ऐसे व्यक्ति से जो एक पंक्ति तक न पढ़ सकता था। और "**वरना झुठलाने वालों को सन्देह का मौक़ा मिल जाता**" का अर्थ यही है — उनकी निरक्षरता ही वह चीज़ है जिसने सन्देह का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

विरोधाभास से मुक्ति

142 तेईस वर्ष — और एक भी विरोधाभास नहीं

तो क्या वे क़ुरआन पर विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो वे इसमें बहुत विरोधाभास पाते।

सूरह अन-निसा — आयत 82

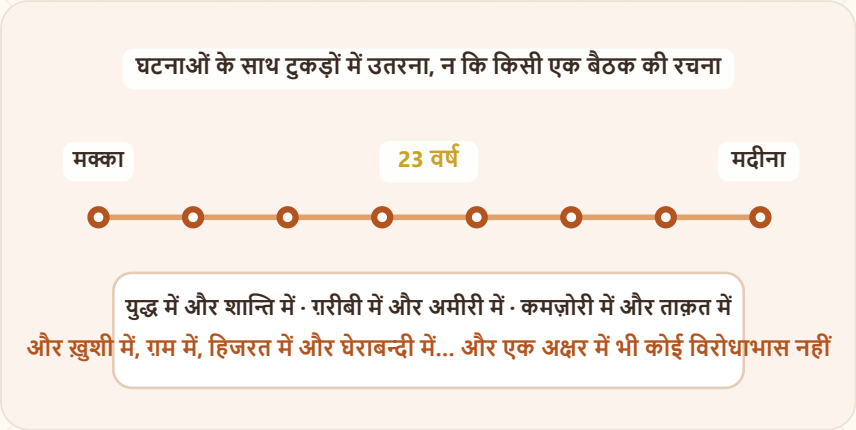

एक ऐसी किताब जो एक बैठक में न लिखी गई, जिसकी न समीक्षा हुई न संशोधन

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन **तेईस वर्षों में टुकड़ों-टुकड़ों में** उतरा, एक आयत और कुछ आयतें जैसे परिस्थितियाँ माँगतीं — युद्ध में और शान्ति में, कठिनाई में और आसानी में। फिर भी आप उसमें कोई विरोधाभास नहीं पाते, न कोई तरीक़े का बदलना, और न पहले कही किसी बात से कोई पलटना।

उस समय लोग क्या मानते थे?

किताबें एक बैठक में रची जाती हैं और फिर प्रकाशन से पहले उनकी समीक्षा और संशोधन होता है, तो उनके विरोधाभास हटा दिए जाते हैं। इसके विपरीत क़ुरआन लोगों को **उतरते ही** सुना दिया जाता था; वे उसे याद कर लेते और लिख लेते, और फिर जो गुज़र चुका उसे बदलने का कोई रास्ता ही न था। और जो कुछ मक्का में उतरा वह हिजरत से वर्षों पहले उसके विरोधियों के हाथों में था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आज कोई भी इसे स्वयं परख सकता है: वह बीस वर्षों में टुकड़ों-टुकड़ों में एक पाठ लिखे, जो अक़ीदे, क़ानून, इतिहास, नैतिकता, ब्रह्मांड और आत्मा से निपटता हो, और फिर अन्त में उसकी समीक्षा कराए और उसमें कोई विरोधाभास न पाए। शोधकर्ता — मुसलमान और दूसरे — चौदह सदियों से क़ुरआन में विरोधाभास ढूँढ़ते रहे हैं, और "क़ुरआन के कठिन स्थलों" तथा "भिन्न दिखती आयतों की व्याख्या" पर पूरी-पूरी किताबें लिखी गईं, और वे सब इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जो भिन्न दिखता है वह **विविधता का भेद है, विरोध का नहीं**।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत यहाँ **एक वैज्ञानिक, लागू किया जा सकने वाला मानदंड** देती है, कोई दावा नहीं। वह कहती है: यदि यह मानवीय होता तो **तुम इसमें बहुत विरोधाभास पाते**। और यह तार्किक रूप से सही है: बदलती परिस्थितियों में बीस वर्षों तक फैला कोई पाठ अपने लेखक की बदलती हालत का निशान अवश्य उठाएगा। और इससे भी विलक्षण बात यह है कि स्वर परिस्थितियों के साथ नहीं बदला: माफ़ी और दया की आयतें **विजय के बाद** उतरीं, उससे पहले नहीं, और धैर्य तथा वादे की आयतें **हार और घेराबन्दी में** उतरीं। यदि पाठ अपने लेखक की हालत का प्रतिबिम्ब होता, तो इसका उलटा अपेक्षित था।

143

एक विरोधी की गवाही

वलीद बिन मुग़ीरा की गवाही

अल्लाह की क़सम, उसमें एक मिठास है और उस पर एक रौनक़ है; उसका निचला हिस्सा भरपूर है और उसका ऊपरी हिस्सा फल देता है; और यह कोई मनुष्य नहीं कहता।

हाकिम और बैहक़ी की 'दलाइल' में रिवायत — सीरत की किताबों में प्रसिद्ध

यह क़ुरैश के सबसे समझदार और सबसे कट्टर दुश्मन ने कहा

"उसमें एक मिठास है... और उस पर एक रौनक़ है"

"और उसका निचला हिस्सा भरपूर है, और उसका ऊपरी हिस्सा फल देता है"

"और यह कोई मनुष्य नहीं कहता"

फिर वह पलटा और बोला: "यह तो बस चला आता हुआ जादू है"

उसने सच्चाई मान ली... फिर वह फ़ैसला चुना जो उसकी क़ौम को ख़ुश करे

सीधी-सादी बात में

वलीद बिन मुग़ीरा क़ुरैश के सबसे चतुर और वाणी के सबसे बड़े जानकारों में था, और इस दावत के सबसे कट्टर दुश्मनों में। जब उसने क़ुरआन सुना तो उसका वर्णन सबसे सुन्दर शब्दों में किया और कहा: **"यह कोई मनुष्य नहीं कहता।"** फिर उसकी क़ौम ने उस पर दबाव डाला तो उसने कहा: "यह तो बस चला आता हुआ जादू है।"

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुरैश हज के मौसम से पहले हाजियों से मुहम्मद ﷺ के बारे में कहने को एक ही बात ढूँढ़ रहे थे, तो वे वलीद के गिर्द इकट्ठे हुए क्योंकि वह उनमें सबसे समझदार और कविता तथा वाग्मिता का सबसे बड़ा जानकार था। उन्होंने उसके सामने रखा: काहिन? पागल? कवि? जादूगर? — और उसने **इनमें से हर एक को रद्द कर दिया**, और वह भी वाणी की कला से ही ली गई दलीलों से।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह कहानी सीरत और तफ़सीर की किताबों में प्रसिद्ध है, और उसके बारे में जो उतरा वह सूरह अल-मुद्दस्सिर में है: "**निस्सन्देह उसने सोचा और अन्दाज़ा लगाया। तो वह मारा जाए, कैसा अन्दाज़ा लगाया। फिर वह मारा जाए, कैसा अन्दाज़ा लगाया। फिर उसने देखा। फिर उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ा। फिर वह पीठ फेरकर घमंड में आ गया और बोला: यह तो बस चला आता हुआ जादू है।**" ये आयतें उसकी मानसिक दशा का ठीक-ठीक वर्णन करती हैं: सोचना, फिर अन्दाज़ा लगाना, फिर देखना, फिर त्योरी चढ़ाना, फिर घमंड में मुँह मोड़ना, फिर वह फ़ैसला जिससे उसने अपनी क़ौम को ख़ुश किया। और भविष्यकथन तथा कविता को रद्द करने की उसकी दलीलें उससे विस्तार से रिवायत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

किसी विरोधी की गवाही सबसे प्रबल गवाही है, ख़ास तौर पर जब वह **उसी क्षेत्र का विशेषज्ञ हो जिसके बारे में वह गवाही दे रहा है**। वलीद कविता का एक निर्णायक था जिसके सामने क़सीदे पेश किए जाते थे। और उसने क़ुरआन और उस हर चीज़ के बीच एक सूक्ष्म तकनीकी भेद किया जो बाहर से उससे मिलती-जुलती थी: उसने कविता के बारे में कहा, "मैं कविता को पूरा जानता हूँ... और यह कविता नहीं", और भविष्यकथन के बारे में, "यह न काहिन की बुड़बुड़ाहट है न उसका तुकान्त गद्य"। फिर उसने उसकी बनावट का वर्णन किया: "**उसका निचला हिस्सा भरपूर है और उसका ऊपरी हिस्सा फल देता है**" — उसकी सतह सुन्दर है और उसकी गहराई अर्थ से समृद्ध। और यह एक शत्रु विशेषज्ञ का तकनीकी वर्णन है, किसी प्रशंसक की तारीफ़ नहीं। और **अपनी क़ौम के दबाव में** उसका पलट जाना — जो स्वयं क़ुरआन में दर्ज है — खोल देता है कि वह इनकार एक सामाजिक रुख़ था, कोई बौद्धिक विश्वास नहीं।

144

अपनी ही एक विधा

न कविता, न गद्य, न काहिनों का तुकान्त

और यह किसी कवि की वाणी नहीं — तुम बहुत कम ईमान लाते हो। और न किसी काहिन की वाणी — तुम बहुत कम नसीहत लेते हो।

सूरह अल-हाक़्क़ा — आयतें 41-42

एक ऐसा पाठ जो अरबी के किसी भी ज्ञात साँचे में नहीं बैठता

सीधी-सादी बात में

अरबी में उच्च वाणी के तीन रूप थे: अपने छन्दों वाली **कविता**, स्वतंत्र **गद्य**, और **काहिनों का तुकान्त गद्य**। और क़ुरआन इनमें से कोई नहीं — वह अपनी ही एक विधा है जो अकेली खड़ी है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब धरती के सबसे बड़े जानकार थे कविता के छन्दों, मात्राओं और तुकों के, और किसी टूटी पंक्ति को सहज ही पकड़ लेते थे। वे काहिनों का तुकान्त गद्य जानते थे और उसकी बनावटीपन का मज़ाक़ उड़ाते थे। फिर भी **क़ुरआन पर उनका फ़ैसला बुरी तरह डगमगाता रहा**: उन्होंने कहा कविता, फिर जादू, फिर भविष्यकथन, फिर अगलों की कहानियाँ — और हर राय पिछली को काटती हुई।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन कविता से इसलिए अलग है कि वह **किसी छन्द और किसी तय तुक का पालन नहीं करता**; वह गद्य से इसलिए अलग है कि उसमें **एक भीतरी लय और नियमित विरामान्त** हैं; और वह तुकान्त गद्य से इसलिए अलग है कि काहिनों के तुकान्त में **लय के लिए शब्दों को खींचा-मरोड़ा जाता है**, जबकि क़ुरआन में विरामान्त अर्थ के पीछे चलते हैं, उस पर हुक्म नहीं चलाते। यह अरबी भाषा-अध्ययनों में और प्राच्यविद्या में, दोनों में एक स्थापित विषय है। प्राच्यविद् आर्बेरी ने कहा कि उसकी लय की उन भाषाओं में कोई मिसाल नहीं जिन्हें वे जानते थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

वर्गीकरण में विरोधियों का डगमगाना ही प्रमाण है। जब किसी कला के विशेषज्ञ किसी पाठ को अपनी ही कला की किसी श्रेणी में न रख पाएँ, और उस पर उनका फ़ैसला एक बैठक से दूसरी बैठक में अपना ही खंडन करने लगे, तो यह इस बात की निशानी है कि वह उस विधा से बाहर है जिसे वे जानते हैं। और क़ुरआन ने यही डगमगाहट उन्हीं के विरुद्ध दर्ज कर दी: "**देखो, वे तुम्हारे लिए कैसी-कैसी मिसालें गढ़ते हैं, तो वे भटक गए**।" फिर उसने उन्हें उसी कसौटी पर चुनौती दी जिसमें वे माहिर थे: न तलवार से न दौलत से, बल्कि **उसी कला में जिसमें वे धरती की हर दूसरी क़ौम से आगे थे**। और जो कोई किताब गढ़ता हो वह अपने विरोधियों को उसी मैदान में चुनौती देने का जुआ नहीं खेलता जिसमें वे सर्वोच्च हों।

145

उलाहना

एक ऐसी किताब जो अपने ही लाने वाले को उलाहना देती है

उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, क्योंकि उसके पास वह अन्धा आ गया। और तुम्हें क्या मालूम, शायद वह पवित्र हो जाता?

सूरह अबसा — आयतें 1-3

ऐसी आयतें जिनमें नबी ﷺ को खुला उलाहना है

"उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया" · "अल्लाह तुम्हें माफ़ करे; तुमने उन्हें इजाज़त क्यों दी?"

"किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उसके पास क़ैदी हों" · "और तुमने अपने मन में छिपा रखा"

फिर वे लोगों को नमाज़ में ऊँची आवाज़ से सुनाई जाती हैं

और याद की जाती हैं, लिखी जाती हैं, और कभी हटाई नहीं जातीं

जो कोई किताब गढ़ता है वह उसमें अपनी ही भर्त्सना नहीं डालता

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन में ऐसी आयतें हैं जो **स्वयं नबी ﷺ को उलाहना देती हैं** और उनके एक रुख़ को सुधारती हैं। ये आयतें नमाज़ में लोगों को ऊँची आवाज़ से सुनाई जाती हैं, बच्चे और बूढ़े उन्हें याद करते हैं, और वे कभी हटाई नहीं गईं और न कभी हलकी की गईं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जो नुबूवत का दावा करता है उसे **एक ऐसी पूरी छवि चाहिए जिसमें कोई दाग़ न हो**, और उसके दुश्मन किसी भी चूक की ताक में बैठे रहते हैं। तो ऐसे पाठ का उतरना जो उसे उलाहना दे और उसके फ़ैसले को ग़लत ठहराए, और फिर उसी का मस्जिद में सबके सामने पढ़ा जाना — यह हर राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक हिसाब के विरुद्ध है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मिसालें बहुत हैं और स्पष्ट: **पूरी सूरह अबसा** उन्हें इस पर उलाहना देती हुई कि वे एक अन्धे से मुँह मोड़कर क़ुरैश के सरदारों की ओर हुए; "**अल्लाह तुम्हें माफ़ करे; तुमने उन्हें इजाज़त क्यों दी?**" तबूक से पीछे रह जाने वालों को इजाज़त देने पर; "**किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उसके पास क़ैदी हों जब तक वह धरती में ख़ूब ख़ूँरेज़ी न कर ले**" बद्र के क़ैदियों पर; "**और तुमने अपने मन में वह छिपा रखा जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला था, और तुम लोगों से डरे, जबकि अल्लाह इसका अधिक हक़दार है कि तुम उससे डरो**"; और "**तुम उसे क्यों हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया?**" और आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा: यदि नबी ﷺ वह्य में से कुछ छिपाते, तो यही आयत छिपाते।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह इस भाग की सबसे प्रबल बौद्धिक दलीलों में है, और इसे इतिहासकार **शर्मिन्दगी की कसौटी** कहते हैं: वह पाठ जो अपने पहुँचाने वाले के हित को हानि पहुँचाए वह सत्य के अधिक निकट है। और ध्यान दीजिए कि उलाहना किन्हीं हाशिये की बातों पर नहीं, बल्कि **बड़े राजनीतिक और सैनिक फ़ैसलों** पर पड़ा: क़ैदियों के साथ सलूक, मुनाफ़िक़ों को दी गई इजाज़त, और उनके अपने घर की एक निजी स्थिति। इसमें एक और विवरण भी जोड़िए: क़ुरआन ने **कुछ प्रश्नों का उत्तर दिया और कुछ का नहीं**, बल्कि इफ़्क की घटना में नबी ﷺ से वह्य कई दिन रोक ली गई जबकि उनकी अपनी पत्नी पर आरोप था, यहाँ तक कि लोगों ने जो कहना था कह लिया। यदि मामला उनके अपने हाथ में होता तो वह एक दिन भी न टलता।

146

शैली का अन्तर

उनकी अपनी वाणी कभी क़ुरआन जैसी नहीं होती

और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता। वह तो बस एक वह्य है जो उतारी जाती है।

सूरह अन-नज्म — आयतें 3-4

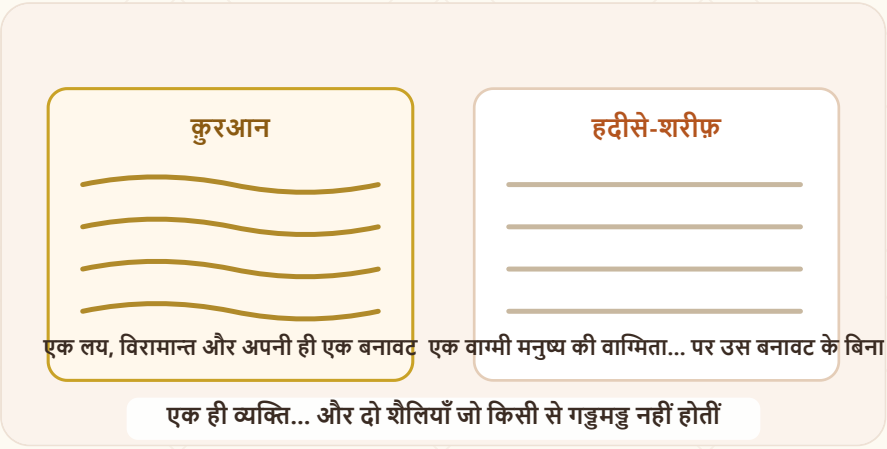

शैली-विश्लेषण दोनों को बिना किसी कठिनाई के अलग कर देता है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ अरबों में सबसे अधिक वाग्मी थे, और उनकी बातें वाग्मिता के शिखर पर हैं। फिर भी **उनकी वाणी किसी से भी कभी एक बार क़ुरआन से गड्डमड्ड नहीं हुई** — दोनों शैलियाँ साफ़ अलग हैं, और एक बार भी कोई हदीस ग़लती से क़ुरआन की ओर मंसूब नहीं की गई।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यदि क़ुरआन उनकी ﷺ अपनी रचना होता, तो उनकी पूरी वाणी में एक ही शैली होती — क्योंकि हर व्यक्ति एक शैली-छाप उठाए फिरता है जिससे वह बच नहीं सकता, ख़ास तौर पर बीस वर्षों में। और उनके साथी रोज़ाना दोनों सुनते थे, और दोनों उनके लिए एक क्षण को भी गड्डमड्ड नहीं हुए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शैली-मापन आज एक स्थापित विज्ञान है, जो शब्दों के वितरण, वाक्यों की लम्बाई और संरचनात्मक नमूनों को नापकर किसी पाठ को उसके लेखक से जोड़ता है। इसे क़ुरआन और हदीस पर लागू किया गया है और उनका अन्तर साफ़ है। सबसे स्पष्ट संरचनात्मक अन्तर: क़ुरआन **नियमित विरामान्तों** पर, सम्बोधन के बदलावों पर और सर्वनामों के बीच आवाजाही पर टिका है, और हदीस इस बनावट का पालन नहीं करती। और फिर क़ुरआन **स्वयं नबी ﷺ को हुक्म, मनाही और उलाहने से सम्बोधित करता है** और उन्हें "कह दो" का निर्देश देता है — तीन सौ से भी अधिक बार।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इसमें एक तीसरी श्रेणी भी जोड़िए: **हदीसे-क़ुदसी** — जो नबी ﷺ अपने रब से अर्थ में रिवायत करते हैं, और जो फिर भी **क़ुरआन नहीं गिनी जाती और नमाज़ में नहीं पढ़ी जाती**। तो हमारे पास एक ही व्यक्ति की कही हुई वाणी के तीन स्तर हैं, जो हुक्म और सलूक में तीखी तरह अलग हैं: क़ुरआन की तिलावत इबादत है, वही चुनौती का विषय है, और वह अक्षर दर अक्षर तवातुर से पहुँचाया गया है; हदीसे-क़ुदसी अर्थ में अल्लाह की ओर मंसूब है और नबी ﷺ के अपने शब्दों में रिवायत की जाती है; और नबवी हदीस उनकी अपनी वाणी है। और यह **सूक्ष्म तीन-स्तरीय भेद** पहले ही दिन से क़ायम है और कभी धुँधला नहीं हुआ। यदि यह सब एक ही मानवीय स्रोत से आता, तो यह अलगाव बीस वर्षों तक बनाए रखा ही नहीं जा सकता था।

संक्षिप्तता

147 और तुम्हारे लिए क़िसास में जीवन है

और तुम्हारे लिए क़िसास में जीवन है, ऐ बुद्धि वालो, ताकि तुम बचकर चलो।

सूरह अल-बक़रह — आयत 179

अरबों ने जो सबसे वाग्मी बात कही

"क़त्ल ही क़त्ल को सबसे अधिक रोकता है"

14 अक्षर

→

और क़ुरआन ने कहा

"और तुम्हारे लिए क़िसास में जीवन है"

अक्षर कम... और अर्थ कहीं अधिक

उसमें जीवन है, केवल क़त्ल का इनकार नहीं · और उसने लक्ष्य बताया, साधन नहीं
और उसने उसे न्यायपूर्ण क़िसास से बाँधा, खुले क़त्ल से नहीं

सैकड़ों में से एक मिसाल, जिनका अध्ययन वाग्मिता के विद्वानों ने किया

सीधी-सादी बात में

इस विषय पर अरबों को जिस सबसे वाग्मी बात पर गर्व था वह उनका यह कथन था: **"क़त्ल ही क़त्ल को सबसे अधिक रोकता है।"** फिर क़ुरआन **कम अक्षरों और कहीं अधिक समृद्ध अर्थ** वाला एक वाक्य लेकर आया: "और तुम्हारे लिए क़िसास में जीवन है।"

उस समय लोग क्या मानते थे?

"क़त्ल ही क़त्ल को सबसे अधिक रोकता है" अरबों में संक्षिप्तता का शिखर गिना जाता था और कहावत के तौर पर पेश किया जाता था। वे बड़े अर्थों को थोड़े शब्दों में समेटने में होड़ करते थे, और उसे वाग्मिता का सर्वोच्च दर्जा गिनते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

वाग्मिता के विद्वानों ने दोनों के अन्तर का विश्लेषण किया और सात से भी अधिक बिन्दु पाए। सबसे स्पष्टों में: कि क़ुरआन ने **जीवन** का ज़िक्र किया, जो प्रिय लक्ष्य है, जबकि कहावत ने क़त्ल का ज़िक्र किया, जो अप्रिय है; कि उसने उसे **"क़िसास"** से सीमित किया, यानी न्यायपूर्ण और वैध क़त्ल, जबकि कहावत ने क़त्ल को बिना शर्त छोड़ दिया तो उसमें अन्याय भी आ गया; कि उसने **पूरे समाज के लिए एक निरन्तर जीवन** की पुष्टि की, न कि केवल एक मामले का इनकार; कि उसने "क़त्ल" शब्द को दो बार दोहराने से बचाया; और कि वह नैतिक उद्देश्य पर बन्द हुआ: "ताकि तुम बचकर चलो"। और यह सब कम अक्षरों में।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ महत्वपूर्ण यह अकेली मिसाल नहीं, बल्कि **यह कि यह कोई अपवाद नहीं**। समूची अरबी वाग्मिता-विद्या — मआनी, बयान और बदीअ — पहले-पहल इसी कोशिश से उठी कि इस पाठ की अनुकरणीयता को समझाया जाए, और उसमें सैकड़ों किताबें लिखी गईं, बाक़िल्लानी की *इजाज़ुल-क़ुरआन* से लेकर अब्दुल-क़ाहिर जुर्जानी की *दलाइलुल-इजाज़* और *असरारुल-बलाग़ा* तक। यानी **एक पूरा मानवीय विज्ञान एक ही किताब का विश्लेषण करने के लिए खड़ा हुआ** — और धरती की किसी भाषा के इतिहास में इसकी कोई मिसाल नहीं। और आज तक शोधकर्ता उसमें से वह निकालते जा रहे हैं जो उनसे पहले वाले न निकाल सके।

समग्र वाणी

148 मुझे समग्र वाणी दी गई

मुझे समग्र वाणी के साथ भेजा गया।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

- **"दीन ख़ैरख़्वाही है"**
- **"न हानि पहुँचाना है न बदले में हानि"**
- **"कर्म तो नीयतों पर ही हैं"**
- **"मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें"**

चन्द शब्द... जिन पर फ़िक़्ह के पूरे-पूरे अध्याय खड़े किए गए

ऐसे सार्वभौमिक नियम जो हज़ारों मामलों को तरतीब दे देते हैं

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ की विशिष्ट विशेषताओं में यह था कि वे **थोड़े शब्द कहते जो बहुत अर्थ उठाए होते**। चन्द शब्दों की हदीसों पर फ़िक़्ह और क़ानून के पूरे-पूरे अध्याय खड़े किए गए हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

संक्षिप्त हिकमत हर क़ौम में जानी जाती है: अरबों की कहावतें, भारत के सूत्र, यूनानियों की सीखें। पर ये **आम नैतिक उपदेश** हैं, न कि ऐसे नियम जिन पर कोई समन्वित क़ानूनी व्यवस्था खड़ी की जाए। और किसी कहावत और किसी क़ानूनी सिद्धान्त के बीच का अन्तर बुनियादी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

एक मिसाल लीजिए: "**न हानि पहुँचाना है न बदले में हानि**" — अरबी में चार शब्द। इस पर इस्लामी फ़िक़्ह की एक पूरी शाखा खड़ी की गई, जो पड़ोस के रिश्तों, निर्माण, तलाक़, बिक्री, शुफ़ा, ग़स्ब, मिल्कियत और मालिक के अधिकारों की सीमा तक को समेटती है। वह उन **पाँच बड़े क़ायदों** में से एक बन गया जिन पर सारे फ़िक़्ही मकातिब घूमते हैं। और उसी जैसा है "कर्म तो नीयतों पर ही हैं", जिसे इमामों ने पूरे ज्ञान का एक तिहाई गिना, और जिसके बारे में शाफ़िई ने कहा कि वह फ़िक़्ह के सत्तर अध्यायों में दाख़िल होता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ऐसा सार्वभौमिक नियम गढ़ने की क्षमता जो एक ही साथ व्यापक भी हो और विशिष्ट भी किसी लम्बे पाठ के लिखने से कहीं अधिक कठिन है। नियम को वह सब समेटना होता है जो उसके नीचे आता है और वह सब बाहर रखना होता है जो नहीं आता, और उसे उन मामलों के आगे भी टिकना होता है जो उसके लेखक के मन में कभी आए ही नहीं। और आज विधायक इसी पर मेहनत करते हैं, और खंडों में पाठ निकालते हैं जिन्हें फिर हर वर्ष संशोधित करना पड़ता है। चार शब्दों का कोई पाठ चौदह सदी टिका रहे और ऐसी स्थितियों को समेट ले जो थीं ही नहीं — औद्योगिक प्रदूषण, डिजिटल हानि — यह ठहरने योग्य बात है। और ध्यान दीजिए कि हदीस स्वयं इसे किसी अर्जित योग्यता नहीं, बल्कि एक देन से जोड़ती है: "**मुझे भेजा गया** समग्र वाणी के साथ।"

149

कंठस्थीकरण

लाखों सीनों में बसी एक किताब

बल्कि वे स्पष्ट आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें ज्ञान दिया गया है।

सूरह अल-अनकबूत — आयत 49

मानव इतिहास में सबसे अधिक कंठस्थ की गई किताब

हर महाद्वीप और हर पीढ़ी में लाखों हाफ़िज़

हर सीने में एक जीवित प्रति — जिसे न जलाया जा सकता है न बदला जा सकता है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन अकेली किताबों में सुरक्षित नहीं रखा गया — बल्कि **लोगों के सीनों** में। और चौदह सदियों से हर पीढ़ी में उसे लाखों मनुष्य कंठस्थ करते आए हैं, और उनमें ऐसे बच्चे भी हैं जो अरबी बोलते तक नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्राचीन किताबें चन्द प्रतियों में रखी जाती थीं जो पुरोहितों और विद्वानों के पास होती थीं। यदि पुस्तकालय जल जाता या प्रति खो जाती तो किताब ही खो जाती — और बहुत-सी किताबों के साथ यही हुआ जो अब केवल अपने नामों से जानी जाती हैं। और निरक्षरता किसी भी पाठ के फैलने में एक बाधा थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आज क़ुरआन कंठस्थ करने वालों की संख्या लाखों में आँकी जाती है — इंडोनेशिया, नाइजीरिया, तुर्की, पाकिस्तान, अरब देशों, यूरोप और अमेरिका में। अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ होती हैं जिनमें वे उसे अक्षर दर अक्षर, सही हरकतों और तजवीद के साथ पढ़ने में होड़ करते हैं। और **उनमें से अधिकतर अरब नहीं हैं** — यानी वे ऐसी भाषा का पाठ कंठस्थ करते हैं जो उनकी मातृभाषा नहीं। मानव इतिहास की कोई दूसरी किताब ऐसी नहीं जानी जाती जो इतनी संख्या में और इतनी बारीकी से कंठस्थ की गई हो।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इसका असर **बदलाव की असम्भवता** पर ही महत्व रखता है। जो पाठ केवल किताबों में सुरक्षित हो उसे प्रतियों पर क़ब्ज़ा करके बदला जा सकता है। पर जो पाठ दूर-दूर के महाद्वीपों में लाखों लोगों को कंठस्थ हो, जो किसी एक सत्ता, किसी एक भाषा और किसी एक राज्य से बँधे न हों, और जो दिन में पाँच बार नमाज़ में पढ़ा जाता हो — उसका एक अक्षर बदल देना **व्यवहारिक रूप से असम्भव** है, क्योंकि वह पहली ही जमाअत की नमाज़ में खुल जाएगा। और आयत ठीक इसी की ओर संकेत करती है: "स्पष्ट आयतें **सीनों में**" — न कि "पन्नों में"। और यह "निस्सन्देह हमने ही यह उपदेश उतारा, और निस्सन्देह हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं" का व्यावहारिक साकार होना है, और वह भी एक ऐसी मानवीय क्रियाविधि से जो देखी और गिनी जा सकती है।

150

आयतों के विरामान्त

हर आयत उसी पर बन्द होती है जो उसके अनुकूल हो

और अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। और अल्लाह क्षमाशील, दयावान है। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

क़ुरआन भर में बिखरे विरामान्त

एक विरामान्त की जगह दूसरा रख दें तो अर्थ बिगड़ जाता है

दंड और सामर्थ्य का सन्दर्भ
"प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी" ✓

तौबा और क्षमा का सन्दर्भ
"क्षमाशील, दयावान" ✓

दुआ और शिकायत का सन्दर्भ
"सुनने वाला, जानने वाला" ✓

छह हज़ार से अधिक आयतें... और हर विरामान्त अपनी जगह पर

किसी आयत की विषय-वस्तु और उसे बन्द करने वाले अल्लाह के नाम के बीच एक सूक्ष्म सामंजस्य

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन की अधिकतर आयतें अल्लाह के दो सुन्दर नामों पर बन्द होती हैं। और विलक्षण बात यह है कि **हर विरामान्त अपनी आयत के विषय के ठीक अनुकूल है** — एक विरामान्त की जगह दूसरा रखकर देखिए, आप तुरन्त महसूस करेंगे कि कुछ बिगड़ गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरबी कविता पूरे क़सीदे में एक ही तुक निभाती है, और अक्सर **उसी के लिए शब्दों को खींचा-मरोड़ा जाता है** यहाँ तक कि पंक्ति में ऐसा शब्द भर दिया जाता है जिसकी उसे ज़रूरत ही नहीं। और यह एक ऐसा दोष है जिसे आलोचक पहचानते हैं। और काहिनों का तुकान्त गद्य तो इससे भी अधिक खींचा-तानी वाला था। तो नियमित विरामान्तों वाले किसी भी पाठ में ऐसी खींचातानी की अपेक्षा होगी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन में मामला ठीक उलटा है: **विरामान्त अर्थ के पीछे चलता है, उस पर हुक्म नहीं चलाता**। दंड और बदले की कोई आयत "प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला" पर बन्द होती है; तौबा की कोई आयत "क्षमाशील, दयावान" पर; दुआ की कोई आयत "सुनने वाला, जानने वाला" पर — क्योंकि दुआ करने वाले को यह चाहिए कि उसे सुना जाए और उसका हाल जाना जाए। और इस बारीकी की सबसे प्रसिद्ध मिसाल: चोरी की आयत "**प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी**" पर बन्द होती है — दंड लागू करने में प्रभुत्व और उसे क़ानून बनाने में तत्वदर्शिता; और जब उसके बाद तौबा की आयत आती है तो वह "**क्षमाशील, दयावान**" पर बन्द होती है। इस पर "फ़वासिल का विज्ञान" के नाम से पूरी-पूरी किताबें लिखी गई हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह ख़ुद करके देखिए: किसी भी भाषा का कोई लम्बा तुकान्त पाठ लीजिए और परखिए कि क्या हर तुक अपने वाक्य की विषय-वस्तु के ठीक अनुकूल है। आप निश्चित रूप से ऐसी जगहें पाएँगे जो छन्द या तुक के लिए भर दी गई हैं — और मानवीय काम में यह स्वाभाविक है। क़ुरआन में छह हज़ार से अधिक आयतें हैं, जिनमें से अधिकतर किसी विरामान्त पर ख़त्म होती हैं, और जो **तेईस वर्षों में टुकड़ों-टुकड़ों में** उतरीं, बिना किसी मसौदे और बिना किसी संशोधन के। इतनी संख्या में और उतरने के उस ढंग को देखते हुए इस सामंजस्य का क़ायम रहना किसी भाषाई कौशल से नहीं समझाया जा सकता, चाहे वह कितना ही बड़ा हो।

151

किताब का समापन

और अब — आप इस सबका क्या करेंगे?

हम उन्हें अपनी निशानियाँ क्षितिजों में भी दिखाएँगे और स्वयं उनके भीतर भी, यहाँ तक कि उन पर स्पष्ट हो जाए कि यही सत्य है। क्या तुम्हारे रब के बारे में यह काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का गवाह है?

सूरह फ़ुस्सिलत — आयत 53

15	16	22	24	18
आकाश	धरती	जीवन	इतिहास	ग़ैब

बहुत-से स्वतंत्र धागे... और सब एक ही दिशा की ओर इशारा करते हैं

उनके संयोग से इकट्ठे हो जाने की सम्भावना शून्य के क़रीब है

आपसे किसी एक प्रमाण के आगे झुकने को नहीं कहा जा रहा... बल्कि उन सबको एक साथ देखने को

सीधी-सादी बात में

आप किताब के अन्त तक पहुँच चुके हैं। यहाँ से गुज़रे हर प्रमाण से अकेले-अकेले बहस की जा सकती है। पर असली प्रश्न यह है: **इस बात की क्या सम्भावना है कि ये सब संयोग से एक ही व्यक्ति में आ मिलें?**

उस समय लोग क्या मानते थे?

इतिहास की हर क़ौम के पास कुछ न कुछ था जिसे वह ऊँचा उठाती थी। पर जो प्रश्न उन्हें अलग करता है वह यह है: क्या उसके पास ऐसा कुछ था जिसे **परखा और झुठलाया जा सके**? किंवदन्तियाँ न कोई तिथि से बँधी भविष्यवाणी देती हैं, न अपने ही युग के विज्ञान का खंडन करता कोई ब्रह्मांडीय वर्णन, और न कोई खुली चुनौती जो चौदह सदी खड़ी रहे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आपने यहाँ जो पढ़ा वह पाँच बिलकुल स्वतंत्र धागे हैं, जिनमें से कोई दूसरे पर निर्भर नहीं: **एक ब्रह्मांडीय वर्णन** जो अपने युग के विज्ञान का खंडन करता था और फिर सदियों बाद विज्ञान ने उसकी पुष्टि की; **पुरातात्विक गवाहियाँ** जो इनकार किए जाने के बाद ज़मीन से निकलीं; **तिथि सहित, निश्चित भविष्यवाणियाँ** जो कही गई बात के अनुसार पूरी हुईं; **स्वयं विरोधियों की किताबों के पाठ**, जो आज भी उनके हाथों में हैं; और **एक खुली भाषाई चुनौती** जो कभी उठाई नहीं गई। इनमें से एक धागा गिर भी जाए तो बाक़ी चार फिर भी खड़े रहते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ तर्क **स्वतंत्र प्रमाणों के जमा होने** का तर्क है, और यही अदालतों में और विज्ञान में समान रूप से लागू होता है। एक प्रमाण शायद एक सम्भावना हो, और दो शायद एक संयोग — पर ऐसे दर्जनों प्रमाण जो ऐसे क्षेत्रों से आते हों जिनके बीच कोई सम्बन्ध ही नहीं — खगोल विज्ञान, भूविज्ञान, चिकित्सा, पुरातत्व, इतिहास और भाषा — और सब एक ही दिशा की ओर इशारा करें, यह संयोग से नहीं समझाया जा सकता। और क़ुरआन आपसे अन्धा समर्पण नहीं माँगता; वह आपको सात सौ से भी अधिक जगहों पर देखने और सोचने की दावत देता है: "क्या वे देखते नहीं?", "क्या वे विचार नहीं करते?", "क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते?", "कह दो: अपना प्रमाण लाओ।" और उसने आपके सामने वह रख दिया जिसका उसने वादा किया था: **"हम उन्हें अपनी निशानियाँ क्षितिजों में भी दिखाएँगे और स्वयं उनके भीतर भी।"** और आपने देख लिया। बाक़ी अब अकेले आप पर छोड़ा जाता है।

समापन

आप सफ़र के अन्त तक पहुँच चुके हैं। समापन में कहने योग्य सबसे बड़ी बात शायद वही है जो कही नहीं जाती: यह किताब आपको किसी बात का पाबन्द नहीं बनाना चाहती। वह केवल इतना चाहती है कि जो सोचने के योग्य है उसे आपके सामने रख दे।

तीन सलाहें, यदि आप आगे बढ़ना चाहें

- **अपना ईमान किसी एक प्रमाण पर मत खड़ा कीजिए।** किसी भी अकेले प्रमाण से बहस की जा सकती है और उसे कमज़ोर किया जा सकता है। ताक़त **समूचे में** है, टुकड़ों में नहीं — जैसे बहुत से धागों से बटी हुई रस्सी: हर धागा अकेले टूट जाता है, और मिलकर वे पहाड़ थाम लेते हैं।
- **और विज्ञान को वह्य पर न्यायाधीश मत बनाइए।** विज्ञान बदलता है और उसके सिद्धान्त पलटते हैं, और यह उसका सम्मान है, दोष नहीं। यदि कोई निर्णायक पाठ किसी स्थापित वैज्ञानिक तथ्य से मेल खाए तो वह ऐसी गवाही है जिसे पेश करना चाहिए; और यदि न खाए, तो देखिए: क्या यह सिद्ध तथ्य है या अभी जाँच के अधीन कोई सिद्धान्त? और क्या यह निर्णायक अर्थ वाला पाठ है, या उसका हमारा अपना पठन?
- **और स्वयं क़ुरआन पढ़िए।** इस किताब की हर बात मूल स्रोत की ओर लौटाती है। जो दवा का असर जानना चाहे उसे वह पीनी चाहिए, केवल पर्चा पढ़कर सन्तोष नहीं कर लेना चाहिए।

"कह दो: मैं तुम्हें केवल एक बात की नसीहत करता हूँ — कि तुम अल्लाह के लिए खड़े हो जाओ, दो-दो और अकेले-अकेले, फिर सोचो।"

और हमारी अन्तिम पुकार यही है कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसारों का पालनहार है; और अल्लाह की शान्ति और बरकतें हों हमारे नबी मुहम्मद पर, और उनके परिवार तथा उनके सभी साथियों पर।

ये ख़बरें आईं कहाँ से?

इस किताब का हर पाठ अपने ही पृष्ठ पर अपने स्रोत से जोड़ा गया है। यह उन बुनियादों का सारांश है जिनका सहारा लिया गया, ताकि पाठक स्वयं जाँच सके।

पहला: ग्रन्थों के पाठ

- **क़ुरआन मजीद** — हर जगह सूरह का नाम और आयत की संख्या के साथ।
- **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** — अल्लाह की किताब के बाद सबसे कठोरता से प्रमाणित दो ग्रन्थ। इस किताब की अधिकतर रिवायतें इन्हीं से हैं, या दोनों में एक साथ मौजूद हैं।
- **सुनन और मुसनद के संग्रह** — अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्न माजा, मुसनद अहमद, मुवत्ता मालिक और सहीह इब्न हिब्बान — और हर रिवायत का दर्जा वैसा ही दर्ज है जैसा हदीस के विद्वानों ने दिया है।

दूसरा: प्राकृतिक विज्ञान और पुरातत्व

- **खगोल विज्ञान और भौतिकी** — महाविस्फोट, ब्रह्मांड का फैलाव, पल्सर, ब्रह्मांडीय जाल, कृष्ण विवर, और सार्वभौमिक स्थिरांकों का सूक्ष्म सन्तुलन।
- **भूविज्ञान और समुद्र विज्ञान** — प्लेट विवर्तनिकी, पर्वतों की जड़ें, मध्य-सागरीय कटक, तापजलीय छिद्र, आन्तरिक तरंगें, और जल में प्रकाश का अवशोषण।
- **चिकित्सा और भ्रूणविज्ञान** — मानक विश्वविद्यालयी सन्दर्भों में दिए गए भ्रूण के विकास के चरण, अग्र-ललाट प्रांतस्था के कार्य, त्वचा के पीड़ा-ग्राही, और विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफ़ारिशें।
- **पुरातत्व और इतिहास** — क़ाहिरा संग्रहालय की शाही ममियाँ, प्राचीन मिस्री शिलालेख, मदाइन सालेह, शिस्र (उबार) का स्थल, मारिब का बाँध, नजरान के हिमयरी शिलालेख, और बर्मिंघम की पांडुलिपि।

तीसरा: अहले-किताब के ग्रन्थ

इस किताब में तौरात और इंजील के जो अंश आए हैं, वे पुस्तक, अध्याय और आयत की संख्या के साथ उद्धृत किए गए हैं, और जहाँ आवश्यक हुआ वहाँ इब्रानी या यूनानी मूल का हवाला भी दिया गया है। हर पाठक स्वयं उन्हें जाँच सकता है।